शुक चरित्र प्रस्ताव

[बासठवां समय]

सुख विलास वर्णन ।

अरिल्ल ॥ उत्तर पष्य अषाढ पवित्रं । आर्द्रा मंडल मंडि नषित्रं ॥
दान भोग फल दूए लछि गत्तिय । विलसन राज करै नवनित्तिय
छं० ॥ १ ॥

पृथ्वीराज की मदान्धता ।

कवित्त ॥ इक जोवन धन मद्द । मद्द राजन मद वारुनि ॥
अरु मद देह अरोज । संग नव वनिता तारुनि ॥
अरु बंधन पति साह । पैज कनवज्ज संपूरिय ॥
एते मद राजनं । दुप दंदह करि दूरिय ॥
आनंद कंद उमगे तनह । संजोगी सर हंस सरि ॥
जानै न राज अस्तम उदय । मह्हि जोवन मानै रितु परि ॥छं०॥ २॥

पृथ्वीराज का अंतर महल में सभा करना और संयोगिता को अर्द्ध आसन देना ॥

आर्या ॥ आषाढ़े मासे दुतियानं । राज सभा नंडिय महिलानं ॥
सां इंछिनि दच्छिन पामारी । सील सुच पति व्रत संचारी ॥
छं० ॥ ३ ॥

पुच्छी मा जदि पुक्ति पंगानी । श्रीधाय वद्द प्राया प्रीयानी ॥
सिंघासन अर्द्ध आसन । दिन्नासी लच्छिय इह दानी ॥
मठी वित्तां करै । मन मे
छं० ॥ ४ ॥

इक प्रौढह इक्कह सुगधानं। दुहु लच्छन बंधे बं
इंछिनि प्रौढ पवित्र पुंआरी। मुगध संजोगिय प

दुविधि प्रीति राजन प्रति पारी। चतुरत्तन चिंत्यं
न्है बरनी ¹बहनि बर संच्यौ। विनय वल पंगज

मुख्य पटरानी इंछनी के हृदय में ईर्षा उत्प

खिपि नेनं सु चिन्ह विनानं। वसिकरि मोहि सु
तिय परिमान तिया परिजानं। इहां अंदेस जु

मैं विनया विनया वर संच्यौ। कनवज्जनि वसि
बान पंच धरि काम विनानं। धर धर धुक्कि परी

६

दू...। ॥ स्लरत ⁴खन्नी धव धवलि। रमनि रमे रति रंग ॥
...सम संजोगि आलिंगनह। अमन चित्त अति भ्रंग

...नी इंछनी का अपने पालतू सुग्गे
दुःख कहना।

सुरिल्ल ॥ छिन छिन... छिन किसलय तन तुट्टी। मन लोइन
अब्बुअ गढ़पति... सुअ अति ⁶संदुल। भोजन ताहि व

छं

चोटक ॥ भषि तंदुल मंजुल...यं मुषयं। क्रमयं क्रम कीर कहै
तवं इंछिनि इंछिनियं ⁷मिलयं। बसयं बस बास...

६

(१) ए. कृ. को.-बरुनी।
(४) ए. कृ. को.-बरन्नी।
(७) मो.-गिलनं-अलिनं।

ृगया म्रग मद्दन पान नयं । घन सार निहारन आननयं ॥
सना रस रचित दूअ चियं । रदनं छदनं पिन पीन पियं ॥
छं० ॥ १२ ॥
ावरी कुसुमं विसरंत नयं । श्रुति कुंडल लाल दुमाजनयं ॥
दुति मुत्तिय नासिकयं सुहयं । सुनि स्वामिनि स्वामि सुहं दुहयं ॥
छं० ॥ १३ ॥

सुग्गे का इंछनी की बातों पर रुष्ट हो जाना।

प दुप इंछिनि सु दुज। मन मंडिय सुनि कान॥
नोसे बातैं बहुत किय। करों पवरि चहुआन॥ छं० ॥ १४ ॥

: सुग्गे का कहना कि तू मुझे एक रात्रि के लिये संयोगिता के शयनागार में पहुंचा दे।

सुक उचरंत सु कीय। इंछि पस्सारि पवित्तिय ॥
नैत अनुजि अंजुलिय। सलप नंदनि अनुरत्तिय ॥
ामय अमय भरतार। हार हरनी उर जंपिय ॥
ामय उमय दुरजनिय। वाम विस्तरि [1]कर कंपिय ॥
नलसैन विसरि रस प्रिय प्रियनि। विरह विसरजन भ्रमन करि॥
ारम्य संजोगिय निसि निगम। महल मोह मंडिपहि धरि ॥
छं० ॥ १५ ॥

ौत वैर से संतप्त इंछनी का संयोगिता से संबंध बढ़ाना।

ृ चिय कर चिय निसि निगम। जाम दुनिसि गई विति ॥
क सुंदरि मंदिरनि मिल्ल। [2]पंजुलि प्रसन प्रतीति ॥ छं० ॥१६॥
ृत घात सों मन मिलै। और वैर मिट जाइ ॥
ृति वैर अंतर जलनि। दिन प्रति ग्रीषम लाइ ॥ छं० ॥ १७ ॥
ृ मिट्ठी वित्तां करै। मन में देत सराप ॥

कृ. को.-करु। (२) ए. कृ. को.- पंगुलि।

बंटै प्रेम सु प्रीय कौ। अंतर दरूक्कै आप ॥ छं० ॥ १८ ॥

एक दिन संयोगिता का सब रानियों का न्योता करना।

एक दिवस संजोगि ग्रह। महमानिय सब सौति ॥
आनि सुष्य प्रगटन मछर। अधिक [1]सपतनी होति ॥ छं०॥१९॥
सौति सुहागिनि सुष्य दिपि। लग्गैं नैन अँगार ॥
ज्यों ज्यों वह छंदा करै। त्यौं त्यौं करवत धार ॥ छं० ॥ २० ॥
* धन ग्रह बंढन मुत्ति नग। हेम पटंबर सार ॥
पुनि चिय प्रिय बंढन सुरति। लगै अधिक पग धार ॥छं० ॥ २१ ॥

सुग्गे की चातुरी का वर्णन।

लघुनराज ॥ अयं महे मयं जुरी। प्रसाद प्रेम मंजुरी ॥
उछंम पाट पानयं। सगुन्नं कीर जानयं ॥ छं० ॥ २२ ॥
सनूर निद्ध वासयं। प्रतीति रीति दासयं ॥
करं जु बंद सुंदरी। नरम्म द्रष्टि मंजुरी ॥ छं० ॥ २३ ॥
निगम्म वेद बादयं। वरन्न आदि सादयं ॥
सु चातुरी चितं चढं। पुछंति कीरयं पढं ॥ छं० ॥ २४ ॥
निरम्म रूप निद्धयौ। तिलक्क सोर सद्धयौ ॥
जुवत्ति रीति जानयं। हरम्य तुष्ट सानयं ॥ छं० ॥ २५ ॥

रानी इंछनी का पिंजरे को हाथ में लेकर संयोगिता के महल को जाना।

दूहा ॥ कर धर इंछनि कीर लिय। हीर मुत्ति जुत कंठ ॥
मन संजुल तंडुल दधहि। प्रेम पुच्छ भ्रम नट्ठ ॥ ॥ छं० ॥ २६ ॥
दुज पंजर बहु भांति रचि। अरु [2]जरीय जर भूल ॥
आडंबर जग रचई। भट वेस्या भ्रत भूल ॥ छं० ॥ २७ ॥
मुरिल्ल ॥ सषि संकुल सावक्किति सज्जिय। [3]ग्रिह ग्रिहस राज सद्रिग बद्दिय ॥
दाहिम्मिय समद मह्लिानिय। संजोइय भुवनह संपानिय ॥
छं० ॥ २८ ॥

---

(१) ए. कृ. को.-सपत्ती। * छन्द २१ मो. प्रति में नहीं है।
(२) ए. कृ. को. नरीन। (३) ए. कृ. को.-"ग्रह ग्रह राज सभा द्रग वद्दिय।

संयोगिता के महल का वर्णन।

वचनिका ॥ कचित् शृंगाराय। मुक्ति बंधन विहाराय ॥
नवन दृष्टि निहाराय। रंजनं घनसाराय ॥
मृगमदगंध उछाराय। अलि निवास उभाराय ॥
मृदु मंजरी रस सुराराय। एवं काम विहाराय ॥ छं० ॥ २९ ॥

संयोगिता का सब रानियों को उचित आदर देना।

सुरिल्ल ॥ द्रिग द्रिग सों रंजिय पंगानिय। आमन समरकंद दिय दानिय॥
जर जरीन चवरिय तिर चानिय। काजल कुंकुमयं कृत पानिय॥
छं० ॥ ३० ॥

पृथ्वीराज की दसों रानियों के नाम।

वचनिका ॥ प्रथम पुंडीर जादी। इंद्रावती राज सादी ॥
सुंदरी हमीर जानी। जबूं गिर इंछिनी मानी ॥
कूरम्भी पज्जून जाता। बलिभद्र नाम भ्राता ॥
कंजानी बड़ जन गज्जरी जाता। सदलासांमि राता ॥
हंस गमनी हंसावती सुजानी। दिवासी सरूपा सुमानी ॥
दाहिमी रूप रवनी। मत्त मातंग गमनी ॥
आदरं आदि राजा। वीनानं कंठ बाजा ॥ छं० ॥ ३१ ॥

पृथ्वीराज और संयोगिता के प्रेम का प्रभुत्व।

दूहा ॥ न्रप वर चामर सपि सरहि। वपु गुंजहि हर नच्छ ॥
कला केलि दिन दिन चढिय। सुक्षग सँजोई सिच्छ ॥ छं०॥३२॥
सुभ आदर रानिय सुपट। चरित चित्त चहुआन ॥
दुर दिन दाहिम्मिय महिल। किम किन्नौ पायान ॥ छं०॥ ३३ ॥
श्लोक ॥ सगुनं ज्येष्ठ जेष्ठानां। ज्येष्ठ रूपं सरूपिनां ॥
ज्येष्ठं पितु मान राजानां। ज्येष्ठा[1] मान विलोकनी ॥ छं०॥३४॥

(१.) को.- ए.-जेष्ट।

पृथ्वीराज का रनिवास में जाकर सब रानियों को देने के लिये वस्त्र आभूषण देना।

दूहा ॥ राजन उठि मन्निय महल। गहिलै गुरजन सथ्थ ॥
जु कछु चरित तिहि महिल किय। सुनहु सु बूझन कथ्थ ॥
छं० ॥ ३५ ॥

नग मुत्तिय बंटन बसन। तात संजोइय दत्त ॥
सहस असंषिन लष्पियौ। गनि को कहै निरत्त ॥ छं० ॥ ३६ ॥

रसावला ॥ छवी छवि पट्टं, अनेकं [1]निघट्टं।
मनी मुत्ति बट्टं, नगं नेम तट्टं ॥ छं० ३७ ॥
सु गंधं सु घट्ट……संजोगि सु ग्रेहीं[2]।
उछंगं सु देहीं…………॥ छं० ॥ ३८ ॥
अलष्पंग नानं, सु कोरी प्रमानं. सची सोभ रागं। द्रुतं देव वागं।
छं० ॥ ३९ ॥
अनंदं सु लागं, निसा कित्ति जागं। भुअं भान भागं, धुअं मत्त मागं॥
॥छं०॥४०॥
दिपंती सुहागं, [3]अवूरत्त रागं। * * * * ॥ छं० ॥४१ ॥

सब रानियों का परस्पर मिल कर अपनी अपनी विरह वेदना कहना।

दूहा ॥ अनु दिन सषि संकुल विकल। अकल केलि सुनि चंद ॥
बरष एक सषि सुष समझि। परषि प्रीति फुनि मंद ॥ छं०॥४२ ॥
परसप्पर मिलि बत्ति कहि। हम नहिं दिट्ठौ कंत ॥
बरष इक हम षम करी। नह लद्धी गति अंत ॥ छं० ॥ ४३ ॥
क्रम क्रम तट छंडै सरहि। बर छंडै रति जोर ॥
मति छंडै बिरह्न तनहा। गति पावस मति मोर ॥ छं० ॥ ४४ ॥

---

(१) कृ. को.-निहट्टं। (२) ए. कृ. को.-सुग्रहे। (३) ए. कृ. को.-अनूरत्त।

अरिल्ल ॥ पमद न सब किसु लच्छिन पिम्महि । दहियन रोस सुधारति [1]नेमहि॥
रमिय न निज निज पति क्रीला । बिन इंछिनि सब ग्रेह सुजानं॥
छं० ॥ ४५ ॥

रानी इंछनी का पृथ्वीराज और संयोगिता के प्रेम की परीक्षा करने के लिये संयोगिता को अपना सुआ देना और संयोगिता का उसे प्रसन्नता पूर्वक स्वीकार करना।

इंछिनि इंछिय अच्छनि रष्षन । राज संजोइय प्रेम परष्षन ॥
दुर्जं दिय हथ्थ प्रजंक संजोइय । निसि गति मोहि कथा सुनि तोइय॥
छं० ॥ ४६ ॥

दूहा ॥ दिय पामारि पवित्त सुक । लिय संजोइय वंदि ॥
पन प्रजंक टट्टन टरति । गति न कहै सुर सदि ॥ छं० ॥ ४७ ॥

संयोगिता का सुग्गे को अपने महल में ले जाना। उसकी शोभा वर्णन ।

चंद्रायन ॥ लीय सु दुज्ज संजोइय पत्तिय साल बर ।
जहां आभास सुभासहि मनि मानिक्क जर ॥
चित्त विचित्त विचित्त सु चित्तह रंजि रस ।
थंभ सुरंग अनूप अलंक्रत अंग तस ॥ छं० ॥ ४८ ॥
विधि विधि वास तरंग अनंग उछाह अति ।
मधु माधव किय वास सुभासित रंग रति ॥
जर पंजर कल धौतन उत्त विराजि मनि ॥
सुष आये षित ताम विरामित साल बनि ॥ छं० ॥ ४९ ॥
आर्या ॥ मिलि सा सुष्ष सयानं । मानि गानि अन्न उत्तिम विधानं ॥
सत्त विहंग विहंगर बानं । मज्जन संजोगि रचि रहि ठानं ॥
छं० ॥ ५० ॥

(१) ए. कृ. को.-मेनह ।

संयोगिता का स्नान करके नवीन वस्त्र आभूषण पहिनना। संयोगिता के अंगों का सौन्दर्य्य वर्णन।

मोतीदाम ॥ रचे सब मज्जन रज्जन ठान। निरंतर अंतर ग्रेह गुरान ॥
सजे सब भूषन पंगज अंग। कलेवर सानि सनेह सु ठंग ॥
छं० ॥ ५१ ॥

लहस्सिय कज्जल लोइन लोइ। अनंग उभार चब्यौ तन तोई ॥
धरे वर पट्ट कनक्कस रूअ। करे वर पट्ट सु घट्टित दूअ ॥
छं० ॥ ५२ ॥

सरोहिग पट्ट संजोगिय तास। मनों सजि पट्टर तिज्जय काम ॥
अनेक सुगंध सुबासित वार। सवी सब आनि सु-बंधिय धार ॥
छं० ॥ ५३ ॥

सने हरि आनि सुधा रस बास। बहू विध उस्वत अप्प सु राज ॥
जलप्पय वासन तज्जिय तिन्न। अरोहित पट्ट जिके चित चिन्ह ॥
छं० ॥ ५४ ॥

सुगंध सु धूप अनोपम वास। अनेक सु भांति विविद्ध विलास ॥
कनष्पय वुंद चुवै चर केस। तही भय तस्स सु रष्पहि रेस ॥
छं० ॥ ५५ ॥

उभै कुल उप्पर कच्च चुअंत। मनों सुति नागिनि संभु [1]युअंत ॥
कुचग्गलि केस सुभै सित लग्ग। सुधा सचि कुंभ सरप्प उरग्ग ॥
छं० ॥ ५६ ॥

विराजित भंति अलक्क सु मुष्प। मनों हरि बीहरि सम्मिय रुष्प ॥
तिलक्क सभाल रची रचि रेष। मनों मय ग्रेह दुआरनि देष ॥
छं० ॥ ५७ ॥

घनं भ्रुअ दूअ तिलक्कस रानि। जिते धर अड्डर लग्ग [2]सुतानि ॥
रचे जल कज्जल रेष सु भेष। मृषी भय काम जरे जनु एष ॥
छं० ॥ ५८ ॥

(१) ए. को.-पुअंत। (२) मो.-सुजांनि।

चलचल नेन सु नासिक रूअ । कुसुम्मह मधि कलरै [1]अलि दूअ॥
कटाच्छह सेत चलै सति वंक । नयै जनु बीर कचोल कनंक ॥
छं० ॥ ५९ ॥

तिलक्क जरावध वद्दन विंदु । सज्यौ रथ सारहि काम सु इंदु ॥
जुआ भ्रूअ कंध धरे कच एन । तटंकह चक्क जिते तिअ तेन ॥
छं० ॥ ६० ॥

चिवुक्कह विंद असेत सु वानि । प्रसारित कंज अली सिसु ठानि॥
सुनै जुरि आनि सु नग्ग सु घट्ट । जनों सजि काम जिते दुअ पट्ट॥
छं० ॥ ६१ ॥

रोमावलि वान मनंसथ तान । करै कुच ओट द्रिगं त्रिग[2]ठान ॥
रची वर मानिक [3]पुद्रनि रुच । मनोहरि रास सवैं ग्रह सुच ॥
छं० ॥ ६२ ॥

वने सव भूषन धारिय अत्ति । झनक्किय नूपुर घूघर गत्ति ॥
मनों वजि बाजिच काम स भूप । विजै कज वाज सवैं पुर नूप[4] ॥
छं० ॥ ६३ ॥

[5]तमो रसमो रस पूरिय मुष्य । वनै सव रास तजै भव दुष्य ॥
अनोपम रूप सिंगार वितूल । धरै कवि मत्त रहे गति भूल ॥
छं० ॥ ६४ ॥

संयोगिता का सेज पर जाना और सुग्गे को भी चित्रसारी में ले जाना।

चौपाई ॥ रचि श्रृंगार अनोपम रूपं । चातुरता गति मति आनूपं ॥
मंगहि इष्ट सुकं मति गत्ती । बिधि परजंक [6]संजोगि सपत्ती ॥
छं० ॥ ६५ ॥

दूहा ॥ गय गति इंछनि दीय दुज । लिय मन हरष सु जानि ॥
इह चातुरता दूत है । कहन सुनन परिमान ॥ छं० ॥ ६६ ॥

(१) ए.कृ.को-अति ।　　(२) ए.कृ.को-थानि ।
(३) ए.कृ.को.-पुद्रनि, पुद्रनि ।　　(४) मो.-नूर ।
(५) मो.-"तमोर सपूरिय मोरि समुष्य"　　(६) ए. कृ. को.-संजोइय ।

शैय्या सुखमा।

विराज ॥ प्रजंक सु जोई, तलप्प सु सोई। प्रसून समोही, कुंज सुप्प सोही॥ छं० ॥ ६७ ॥

धुत्र धूप रुद्ध, उत्र सुक्कि गंधं। प्रसंसं प्रसून, फलं वासि पूनं॥ छं० ॥ ६८ ॥

चिषा तुष्ट कामं, रति देव धामं। दुजं स्वस्तिमंचं, निरष्षै सुगंचं॥ छं० ॥ ६९ ॥

निसा दीप दानं। रतिं की प्रमानं। * * * ॥छं० ॥ ७०॥

रतिवर्णन।

कवित्त ॥ रस क्रीडत बिपरीत। चिंति दंपति दंपति रिति ॥
पंच पंच सुट्टए। पंच लग्गेति पंच पति ॥
उठिय बाल सज्जिय दुकूल। सुक पंजर सु धाम चित॥
हर हराट उप्पज्यौ। तजिय अक्कौट कान ह्रत ॥
धरि थान कंथ्थ सुक सौं कहिय। रहि न लज्ज लज्जी बिलग ॥
जग पुब्ब भाव भांवरि सु वत। सुबर बाल उट्ठी सु द्रिग ॥
छं० ॥ ७१ ॥

[1]ससि रुन्नी स्रग [2]वह्यौ। कह्यौ सुक सप्त दीप तन ॥
तम सु देव पुलि पंग। जोति संदीप छिनहि छिन ॥
हुई लज्ज अचलीय। कलिय सुद्ध गति जानं ॥
छिम छिम तमह रंतिपति। परसि पहु पंजलि थानं ॥
न्रप तुष्टि कास कमलारमन। भवन द्रष्टि रुचि रमन मन ॥
जिम जिम सु बिनय बिलसिय प्रबल। तिम तिम रुक बुद्धिय प्रमन॥
छं० ॥ ७२ ॥

दूसरी रात्रि का रति विलास वर्णन।

तारक ॥ * दुतिया दिन संझ बिजै कुल कम्म। सहचरि प्रौढ़ रमै रति रम्म॥
दुष्षम सुष पिम्म मनोहर रीति। बिलस्सिय आस भयं भव जीति॥
छं० ॥ ७३ ॥

(१) को.-समि। (२) को.-हहयौ। * मो.-प्रति में नहीं है।

युक्त ॥ आसीनी सज्जानी विग्यानी उल्लानी निरधानी थ्यानी उरथानी॥
वय न्यानी सम्मानी अलसंज तानी उद्दित न्यानी सपि आनी॥
पारस संजोइय सुष सुष मोहिय संतोहिय * *
* * * * * * छं० ॥ ७४ ॥

दूहा ॥ संकल अंकुलयं विपथ । चप कंकन उन पान ॥
प्रथम रवन रवनिय मिलिय । रति गति राजन थान ॥
छं० ॥ ७५ ॥

सुख सहवास का क्रमशः चाव और आनंद वर्णन ।

त्रोटक ॥ तन कंपन कुं पुनयं पुनयं । सनयं सनयं सिरयं धुनयं ॥
वलयं चलयं नकयं चकयं । अलि भारन मंजरियं भगयं ॥
छं० ॥ ७६ ॥

प्रियनं प्रियनेति पियूष पियं । धकयं धक छंडिन तोहि अयं ॥
लजनं रजनं भजनं भवनं । चतुरष्ट न तुष्ट रचै रवनं ॥छं०॥७७ ॥
कलिनं अलिनं ललिनं वयनं । सयनं [1]चलिनं चलिनं रचनं ॥
* * * । * * ॥ छं० ॥ ७८ ॥

दूहा ॥ सुनि संचल अंचिल रवनि । तन धर हरि दिढ कम्म ॥
सपि पारस [2]सारस व्रतन । नव कर बँधिलि अरम्भ ॥छं०॥७९॥

पारस ॥ नै व्रत सज्ज्या, जोवन पुज्ज्यां ।
.... छं० ॥ ८० ॥
सैसव साता, रम्मन कांता ॥
विलसिन तांता, सुर [3]तित आंता ॥ छं० ॥ ८१ ॥

दूहा ॥ अग्गिराज संजोगि सों । मानि चतुरभय चित्त ॥
एकादस पूरे अपँग । पंचम परसु सहित्त ॥ छं० ॥ ८२ ॥

एकम से लगा कर पूर्णिमा पर्य्यंत का रति वर्णन ।

चोटक ॥ हक्रितं हक्रितं क्रितयं क्रितयं । दह अंगुलि संसुपयं मितयं ॥
अमियं अपि वासन तं हितयं । मनं आप निषद्ध पतं चितयं ॥
छं० ॥ ८३ ॥

[१) ए. कृ. को.-सलिनं ।　(२) मो.-पारस ।　(३) ए. कृ. को.-सुरतिन ।

सुक द्रष्टिहि द्रष्टिनि छोह लजं। दिव दीपक अंचलयं जु भजं॥
दुतियं दिन केलि कला वरयं। चितयं चिष मंझि समावरयं॥
छं० ॥ ८४ ॥

उभयं दुति दीहनि चामरनं। दुति तीय दिनं सम तुष्ट रनं॥
षट षष्ठिय लज्जि सु नीर दियं। सत सत्तय पौमिनि प्रेम प्रियं॥
छं० ॥ ८५ ॥

चवदून दिनं दिनयं दिनयं। निज नोमिय नौरसयं भनयं॥
दसमी दिसि वड्डिय प्रीति घनं। दस एकह एक सु एक मनं॥
छं० ॥ ८६ ॥

रति द्वादस द्वादस देवतियं। दस तीनि सिआर घिलो कलियं॥
दस च्यारि चयं सुकयं सुकयं। सुभ पूनिम इंछिनि सो भषयं॥
छं० ॥ ८७ ॥

रति के अंत में दंपति की प्रफुल्लता और शोभा वर्णन।

कवित्त॥ देषि बदन रति रहस। बुंद कन [१]स्वेद सुभ्भ बर॥
चंद किरन मन मध्य। हथ्थ कुट्ठे जडु डुक्कर॥
सु कविचंद बरदाय। कहिय उप्पम श्रुति चालह॥
मनो मयंक मनमध्य। चंद पूज्यौ सुत्ताहय॥
कर किरनि रहसि रति रंग दुति। प्रफुलि कली कलि सुंदरिय॥
सुक कहै सु किय इंछिनि [२]सुनवि। पै पंगानिय सुंदरिय॥
छं० ॥ ८८ ॥

दूहा॥ अप्रापत प्रापति सु पति। कर संजोइय काम॥
उर आनंदिय अप्प वर। ते चिय पुज्जिय वाम॥ छं० ॥ ८९ ॥
सुष सुष मंडिग रति रवन। सुभ इंछिनि प्रति प्रात॥
गुरजन गुर लज्या दवन। विपथ बिकंपन गात छं० ॥ ९० ॥

इंच्छनी का सुग्गे से संयोगिता का रतिरास पूछना।

लज्जन लष्पन जन सजन। कहु सुक संकुल पंष॥
अनि रतु तु तन जंपनह। तं षिन षिन तं अष्षि॥ छं० ॥ ९१ ॥

(१) ए. क. को.-दीय। (२) मो.-श्रेद। (३) ए. कृ. को.-सुनहि।

सुग्गे का कहना कि यद्यपि ऐसा करना पाप है परंतु कहता हूं सुन ।

हसन गुरज्जन सवकि मुष । दूपन मुगध वधूनि ॥
फिरि फिरि फिरि पंजर परनि । मंजरि कलि हरि धनि॥छं०॥९२॥

संयोगिता के मुख की शोभा वर्णन ।

अरिल्ल ॥ सुनि इंछिनि [1]पंगी जु रवन्नी । धपत राज सुभ लाज मवन्नी ॥
आननयं काननयं कन्नी । पूनिम पूरनयं सुक व्रन्नी ॥ छं०॥९३॥

सुग्गे का पृथ्वीराज और संयोगिता का अंतरंग रास वर्णन करना और सखियों सहित इंच्छनी का चित्त दे सुनना ।

वाघा ॥ छंदम छंदयलं सुक छंदं । मो मंजीरनयं सुर मंदं ॥
वर किंकिन पंकित पुकारं । हक्कित क्रित्त सुर मुर उच्चारं ॥
छं० ॥ ९४ ॥

विपन पनोकनु मंथरि धीरं । पंडन कल पल करि अति भीरं ॥
कच ग्रहि रति रिझ्झन रंग रोरं । पंपुलितं ललितं गति मोरं ॥
छं० ॥ ९५ ॥

काकज पाल नयं सब दंधी । भाप छ उच्चरियं [2]मन सुंधी ॥
अम्रतयं म्रतयं भ्रम राजं । तंदुल मंदुलयं करि साजं॥ छं०॥९६॥
भूषन दूषनयं करि दूरं । उम्मन चुम्मनयं करि पूरं ॥
जं जं लोचनयं छिन जूरं । तंतं उच्चरियं मुष मूरं ॥ छं०॥९७॥
हं हं हं कुलयं कल लज्जी । चरबर चंच पुटी सुर सज्जी ॥
.... छं० ॥ ९८ ॥
[3]धर धर छत्तिय नच्छित लोलं । हर हर सावक्किय हसि बोलं ॥
दुंदुन मंदुनयं दुरि दुरियं । परिजय पंक पजंकनि सुरयं ॥
छं० ॥ ९९ ॥

---

(१) ए. कृ. को. पगिनि । (२) मो.-परि ।
(३) मो.-धर धर धर छतियन छिन लोलं ।

सरन मारयन प्रिय सरय । तिथि विधि पंच दसी दिन भरयं ॥
इहि विधि केलिनि पाइ जियन्नं । इति एकंत पुकारि पियन्नं ॥
छं०॥१००॥

कवित्त ॥ सुक्रिय वक्र कटाछय । श्रवन लग्गत ओपम थपि ॥
शिव कंद्रप द्रग कूप । श्रवन कन्या लेयन धुपि ॥
दुति तरंग उल्हसहि । फेरि ता कूपन माही ॥
तात रंग सागरह । पऱ्यौ मनु बुंद अथाही ॥
सुक कहै सुक्रिय इंछनि सुनहि । भ्रम्म अनेकन छंडि तत ॥
तारंग तंत तरुनी सु बर । सुबर बाल ऋतुट्टिय सुमति ॥छं०॥१०१॥

दूहा ॥ श्रुति राजन हुंक्रित हँसन । कुंचित हँसन नयन्न ॥
चुटि चाटंकन भगन किय । नग बिनु रहन मवन्न ॥छं०॥१०२॥

सुग्गे के दूतत्व की धृष्टता का कथन ।

कुंडलिया ॥ जो रस रसनन अनुदिनह । अधर दुराइ दुराइ ॥
सो रस दुज कन कन कह्यौ । सषिन सुनाय सुनाइ ॥
सषिन सुनाइ सुनाइ । हियै सुचि सुचि लज मन्नह ॥
सुथल बिथल थल कंपि । नेन लटकीय नहन्नह ॥
जियन मरन मिलि मेंन । कह्यौ अदभुत प्रिय रस ॥
ए रस अंतर भेद । प्रीय जानै चिय जौ रस ॥ छं० ॥ १०३ ॥

इंच्छनी का संयोगिता के गूढ अंगों के विषय में पूछना ।

दूहा ॥ फुनि पुच्छति इंछिनि सु कहि । सौति रूप मनि साल ॥
तौ पुच्छौं कैसी कहै । अंतरंग सु बिसाल ॥ छं०॥ १०४ ॥

सुग्गे का संयोगिता के प्रच्छन्न अंगों का वर्णन करना ।

कवित्त ॥ क्रिसल थूल सित असित । थान चव एक एक प्रति ॥
पानि पाइ कटि कमल । सथल रंजे सुच्छिम अति ॥
कुच मंडल भुज मूल । नितंब जंघा गुरुअत्तं ॥
करज हास गोक्रन्न । मांग उज्जल सा उत्तं ॥

कुच अग्र काच्च द्रिग मद्धि तिल्ल । स्यामा अँग सब्ब गवन ॥
षोडस सिंगार सारूव सजि । सांइ रँजै संजोगि तन ॥छं०॥१०५॥

सुग्गे का सम्पूर्ण शृंगार सहित संयोगिता के नख शिख का वर्णन करना ।

पद्धरी ॥ संजोग जोग जय संत तंठ । आनंद गान जिन करिय कंठ ॥
बर रचिय केस विचि सुमन पंति । विच धरे जमन जल गंग कंति॥
छं० ॥ १०६ ॥

सिर मद्धि सीस फूलह सुभास । किय जमन अद्ध सुर गिरि प्रकास॥
कुंडली मंडि बंदन स, चंद । कसतूर ढिगह घनसार बिंद ॥
छं० ॥ १०७ ॥

बर किरन भोम परसत प्रकार । मनों ग्रसित राह ससि सहित तार॥
ओपमा भूअ वेनी विसाल । नागिनी असित ससि सहत वाल ॥
छं० ॥ १०८ ॥

ओपमा भाव उच्चरि विरूप । मनुं ससी राह सित पय मजप ॥
सैसव्व मद्धि जोवन प्रवेस । देषियै नैन मग अति सुदेस ॥
छं० ॥ १०९ ॥

ओपम सु कव्वि बरदाय कीय । ज्यों ग्रेह उंच दिसि जल निदीय॥
सित असित सोभ द्रिग बर विसाल । कै ससिज प्रगटि तम मद्धि वाल॥
छं० ॥ ११० ॥

ओपम्म चंद नासिक विसाल । मनों अरै लरन रवि राह वाल ॥
ओपम्म अधर कवि कहि विदुष्प । उग्गरे अद्ध ससि चपि मजप ॥
छं० ॥ १११ ॥

सोभै सुरंग दंतनि सु पंति । कदलीन केत कै मुत्ति कंति ॥
कै तरु सु बिंब लुंबी सुरंग । ससि भूम गंग जल सिँचि अनंग ॥
छं० ॥ ११२ ॥

मधु मधुर बानि कलग्रंठ रह । आनँग अनेव केवल सु सह ॥
तारक्क तेज नग जटि सुरंग । ओपम्म चंद तिन कहि सु अंग ॥
छं० ॥ ११३ ॥

[1]वित्तह सत्त सब चित्र ह्वर । सेवहित सत ग्रह तप करूर ॥
नन धरै अरनि धारे सु तव्व । तिन मक्षिक्ष रहिग ससि कला सव्व॥
छं० ॥ ११४ ॥

कप्पोल कला कल नगज सीप । दुहु परी छोड़ मयुष समीप ॥
चिवली सुरंग विच पीति जोति । ओपम्म सुबर तित मक्षिक्ष होति॥
छं० ॥ ११५ ॥

उछराह रेह गुरु जोज गम्म । परदष्षि देत ससि देषि हम्म ॥
सुतियन माल कुच विच सुरंग । प्रतिव्यंव फलकि सुष उदिम अंग॥
छं० ॥ ११६ ॥

ससि श्रंग मीन विद्रुमनि चाहि। ससि सहत कढत अहि गंग मांहि॥
[2]जगमगत कंठ सिर कंठ केस । मनु अठ्ठ ग्रह चंपि ससि सीस वैसि॥
छं० ॥ ११७ ॥

नग माल लाल कुच पर विसाल । ओपम्म चंद चिंती सु साल॥
चिंतिय सु बैर बर सिंभ पुव्व । मनमथ्थ ऊक सुष फुंकि उच्च ॥
छं० ॥ ११८ ॥

निझरि सु माल उर वली भासि । ओपम्म चंद बरदाय तास ॥
बिय पंति सोम रचि अति सुलाह। ससि गहन चढत जनु न्वपति राह
छं० ॥ ११९ ॥

सोभै चिमाल कुच तट तरंग । जनु तिथ्थराज मँडलौ अनंग ॥
सोभै सुरंग कुंचकी वास । जनु संवरेह पटकुटी काम ॥छं०॥१२०॥
राजीव रोम राजै सु कंति । उत्तरन चढ़त पप्पील पंति ॥
चित लोभ भरिग ग्रहराज जंति । दिठि राह मेर परसरि सुपंति॥
छं० ॥ १२१ ॥

कटि तट्ट छुद्र घंटिय रुरंत । जगमग सु नग्ग ओपम्म कंति ॥
कविचंद देषि ओपम्म भासि । ग्रह लगे चंपि जनु सिंघ रासि॥
छं० ॥ १२२ ॥

कटि घाट निठ्ठ मुट्ठहि समाय । मनुं ग्रहन धनुष मनमथ्थ राय॥

१) मो.-विनतह । (२) मो.-जगमत्त ।

नितंब गरूअ द्रप्पन कि काम। उदै अस्त भानु जनु पंति वाम॥
छं० ॥ १२३ ॥

वर जंघ रंभ विपरीत तंक्ष। कै पिंडि दिट्ठ मनमथ्थ संक्ष॥
ओपम्म वीय कविचंद सादि। मनमथ्थ हथ्थ उत्तरि परादि॥
छं० ॥ १२४॥

पिंडीय पग्ग ओपम्म थट्ट। कुंकुम कनक्क मम तेज घट्टि॥
नप न्नमल तेज तारक्क सुत्ति। कंद्रप्प द्रप्प दिपि कार धुत्ति॥
छं०॥१२५॥

षोड़स सु सज्जि सजि सुत्ति वाल। घुध्घरन नग्ग जटि अति सुसाल॥
ग्रह अट्ठ छोड़ तजि छोड़ हंस। सजि तेज भूलि गति भूलि तंस॥
छं० ॥ १२६ ॥

पृथ्वीराज और संयोगिता के परस्पर प्रेम नेम और चाह का वर्णन।

दूहा ॥ अह निसि सुधि जानै नहीं। अति गति प्रौढ़ सु रथ्थ ॥
गुरु बंधव मित लोक सव। मन विपरीत सु गत्ति ॥छं० ॥ १२७ ॥
विज़ुरन मन चित्तै नहीं। मनो वसंत रिति भ्रंग ॥
रस लोभी भ्रम भ्रम भ्रसे। विसराए सव अंग ॥ छं० ॥ १२८ ॥

चोटक ॥ सगना जिहि च्यारि परंत गुरं। सोइ चोटक छंद प्रमान घरं॥
पय मत्त वनं वरनं वरनं। निय नाग कहै चप जा श्रवनं॥
छं० ॥ १२९ ॥

पवनं गति सीत सुगंध सु मंद। लगै भ्रम रीतन मन्न अनंद॥
जगी जगि भ्रंग निभ्रंग निवार। सुनिद्धनि कंठिय कंठ सहार॥
छं० ॥ १३० ॥

कुहुक्कहु कांम सु धांम धमारि। उड़ै पिय पंथ पराग सवार॥
मुकल्लित मल्लित हल्लित पोंन। ननं कविचंद रसंमि सु मोंन॥
छं० ॥ १३१ ॥

प्रथम्मह प्रेम दुवं सुष [1]लष्षि। उदै रवि रथ्थ मनों रथ मष्षि ॥
लुदै न लिनं अलिनं रहि मंझि। मधु ब्रत मत्त बसो जिन संझ॥
छं० ॥ १३२ ॥

रहै गहि संपुट लंपट नारि। सु पंघ पराग हरै उन हारि ॥
रसं घन घुंटि गुलाल सु थाल। घटी घटि लग्गि फ,निफ्फ,नि लाल॥
छं० ॥ १३३ ॥

बरब्बर बौर सिरी बर बौर। गिरै जिनि लग्गि पिया अलि और॥
मधू रस मिश्रित पाडर डार। बजे रव रंग उपंग सु मार ॥
छं० ॥ १३४ ॥

सु वेत सेवंति कुमकु,म काज। षिजै जिन [2]षीन अष्ठो षगराज ॥
सु चंपक चारु वितामन कंध। दरस्सन देवि कियौ दल गंध ॥
छं० ॥ १३५ ॥

लगै अंग केतु कि पंग पराग। तुटै लगि कंठक कोइय भाग ॥
बन ब्रत्त बेलि बिलंबहु बेलि। करों दिन केक करन्निय केलि ॥
छं० ॥ १३६ ॥

लबक्किय लग्ग लवंग निहार। मनों न सु गंध कुसम्म अपार ॥
सहै न बियोग बुरै सिर [3]गात। तजै तिन कंत बसंत प्रमात ॥
छं० ॥ १३७ ॥

अबस्सर प्रीति न मुक्कहि प्रान। [4]हँसै तिन नेह न वेन सुजानि ॥
इसी विधि कंत मधू मधु नारि। कहै मिसि धार बसंत बिचारि॥
छं० ॥ १३८ ॥

अली लगि कंत किमंध सु गंध। लगे न्त्रप काम पगानिय बंध॥
रते रति राग पराग बचन्न। रहै टग लग्गिय काइक मन्न ॥
छं० ॥ १३९ ॥

सबै षट रित्तुनि राज बसंत। भ्रमे भ्रमरावलि नाम सु कंत ॥
* * * ॥ * * * छं० ॥ १४० ॥

(१) ए- कृ. को.-लग्गि अग्गि। (२) मो.-हीन। (३) मो.-मात।
(४) मो.-हसै तिन नैनह वैन सजान।

दंपति के रतिरस की रात्रि के युद्ध से उपमा वर्णन ।

कवित्त ॥ लाज गढ़्लोपंत । वढ़िय रद सन दक रज्जं ॥
अधर मधुर दंपतिय । लूटि अत्र ईंव परज्जं ॥
अरस प्ररस भर अंक । पेत परजंक पटक्किय ॥
भूषन टूटि कवच्च । रहे अध बीच लटक्किय ॥
नीसान थान नूपुर वजिय । हाक हास कारपत चिहुर ॥
रति वाह समर सुनि इंछिनिय । कीर कहत वत्तिय गहर ॥छं०॥१४१॥ *

कर कंकन मुद्रिका । छुद्र घंटिका कटि तट ॥
वसन जघन पहिराइ । भार वित्तयौ सघन थट ॥
कुच निहार कंचुकिय । भुजनि वंध वाजू वंध ॥
पग तोड़र नूपुरिय । हरे रूपि अड़िग पेत मधि ॥
संग्राम काम जीतें भरनि । करिय रीझ कनवज्जनिय ॥
तंवोल पान दीनो अधर । कीर कहत सुनि इंछिनिय॥छं०॥१४२॥ *

तम रस तीय संजोगि । सुमन सहत्तीय निसराइय ॥
पति कों नव रस भँवर । प्रीति पोमिनि सिरछाइय ॥
हाय भाय विभ्रम कटाच्छ । हंस सरह पग रज्जं ॥
नेह वीर वचननि पराग । लाज कोदिव सुप पज्जं ॥
जन जंत रूप लहरीति गुन । दुत्तिय यह याहं मयन ॥
सकंत प्रेम उदित उदित । वर फुल्लित वर सुनि वयन ॥छं०॥१४३॥

मदन वयट्टौ राज । काज मंचौ तिहि अग्गै ॥
हाय भाय विभ्रम कटाच्छ । भेद संचारि विलग्गै ॥
काम कमलनी वनिय । चक्कनिय निय नित्यं भर ॥
मोह विहि पिभझति । प्रज्ज मो सनिय पिंड वर ॥
वीनीति मधुर तिहि लोभ वसि । वसि संजोग माया उरह ॥
जयपन मग्गगहि अंगम गति । न्टप क्रम सह छुट्टिय वरह॥छं०॥१४४॥

---

* छन्द १४१ और १४२ मो.प्रति में नहीं है ।

संयोगिता की समुद्र और पृथ्वीराज की हंस से उपमा वर्णन।

दूहा ॥ दुहु दिसि वढिय सनेह सव । संजोगिय वर कंति ॥
जियन वार बिछुरत तरुनि । हंस जुगल विछुरंत ॥ छं० ॥ १४५ ॥
रूप समुंद तरंग दुति । नदि सव की मल्लि मानि ॥
गुन मुत्ताहल अप्पि कै । वस किन्नौ चहुआन ॥ छं० ॥ १४६ ॥
गुर भ्रित चिय देषंन प्रिय । दुज मिटि दोन न वार ॥
निसुष रूप संजोग की । टरै न वार अतार ॥ छं० ॥ १४७ ॥

कुंडलिया ॥ उज्जल कहु संजोगि में । नेह स पुत्ती रूप ॥
कला सहित पूरन्न ससि । अहि अजीज मिलि भूप ॥
अहि [1]अजीज मिलि भूप । तिमर तोरेज पंग दल ॥
राह रूप सुरतान । लग्गि सु कीनी कीव वल ॥
* * * । तप विडंभूत न मुज्जल ॥
चकवा कहु जलंन । सुष अरपति अति उज्जल ॥ छं० ॥ १४८ ॥

दूहा ॥ दो इंछनि पुच्छै सषी । किहि वय किहि मति रूप ॥
किहि लच्छन उनिहार किहि । किम दच्छिन रचि रूप ॥
छं० ॥ १४९ ॥

संयोगिता के अंग प्रत्यंगों पर प्रतीयालंकार कथन।

कवित्त ॥ ससि रुन्नौ म्रग वद्यौ । काम हीनौति भीन रति ॥
पंकज अलि दुम्मनौ । सुमन सुम्मनौ पयन पति ॥
पतँग दीप लग्गिय न । मीन दुम्मनो जीय नम ॥
सुकिय सषिय सुष दिष्ट । चितचिंतति नेह भ्रम ॥
सुष सक्ति हीन सो दान न्टप । हाव भाव विभ्रम श्रवन ॥
यों रति चरित्त मंगल गवन। सुनि इंछनि इंछनि रमन ॥
॥ छं० ॥ १५० ॥

ऐरापति भय मानि । इंद गज वाग प्रहारं ॥
उर सँजोगि रस मद्धि । रह्यौ दबि करत विहारं ॥

---

(१) मो.-अजीत ।

कुच उच्च जनु प्रगट्टि । उकसि कुंभस्थल आइय ॥
तिहि ऊपर स्यामता । दान सोभा दरसाइय ॥
विधिना निमंत मिट्टत कवन । कीर कहत सुनि इंछनिय ॥
मन मध्य समय प्रथिराज कर । करज कोस अंकुस वनिय ॥छं०॥१५१॥

दूहा ॥ वै दुप चिय इंछिनि सुनिय । रूप प्रभूतन साहि ॥
चिसल तेज लग्गिय चिभू । संजोगी सुनि ताहि ॥ छं०॥ १५२॥

संयोगिता की स्वाभाविक एवं सहज लुनाई का वर्णन ।

हनुफाल ॥ सुनि इंछिनीय सु जानि । रस करनि घरि सुनि कान ॥
लज देहु विटप सकाम । वर व्रन्न [1]दिप्पय वाम ॥छं०॥१५३ ॥
सुप कइन कंत सु वत्त । तिय वदन धूम सरत्त ॥
सुनि कहत ओपम ताइ । सुप संम द्रप्पन झांइ ॥ छं० ॥ १५४ ॥
अति छीन वद्दल जेम । ससि तेज तरुनि कितेम ॥
सुनि इंछिनि वर जोइ । कर छुट्टि मैला होइ ॥ छं० ॥ १५५ ॥
वर रूप सागर वढ्ढि । मनमथ्थ मथि करि कढ्ढि ॥
भरि एक सकन निस्संक । पुन लभ्भ लोइन रंक ॥ छं०॥१५६ ॥
द्रिग सहित देषिय जोइ । तन त्रिविध ताप न होइ ॥
सुष वढै दिपि तजि दंद । ज्यों जाय सो नंद कंद ॥छं०॥ १५७ ॥
चतुरान देषिय रिष्य । सातुक्क भाव विसिष्य ॥
न्रिप देपि वल्लिय सथ्थ । वर वेन सम लै हथ्थ ॥ छं० ॥ १५८ ॥
गुन चवन सुनन न कोइ । कवि थके ओपम भोइ ॥
ससि सरद कहि हंस लोइ । शिवगंग वहरी होइ ॥छं० ॥ १५९ ॥
चामीय करतिय जोग । संजोगितासी जोग ॥
सुनि इंछिनी तजि रीस । लछिने वाल वतीस ॥ छं० ॥ १६० ॥
भय रूप शंकर पीय । होवै न चीय न वीय ॥
ससि पंचमिय घटि बढ्ढि । चिय देषि षह मुष चढ्ढि ॥छं०॥१६१ ॥
सम नही इसिमती जोइ । छिन गरुअ छिन लघु होइ ॥
देपंत चीय सुरंग । तब भयौ काम अनंग ॥ छं० ॥ १६२ ॥

(१) मो.-दिप्पय ।

उप्पनौ देषि सु हंस । जौ लियौ बन कौ अंस ॥
सुनि कोकिला कलि गाव । भयौ बरन स्याम सुभाव ॥छं०॥१६३॥
ओपम्म दीजै आहि । सो नहीं ओपम चाहि ॥
बस चीय अह निसि प्रीय । जुमि जम्म सम्हौ जीय ॥छं०॥१६४॥
सैसब वासी नारि । जो भइ पुब्ब संसार ॥
मति मान गरुअ समद्द । रति करी छवि वर रद्द ॥ छं० ॥ १६५॥
वह नहरि नारि न बीय । किहु नाइ रचि बुधि कीव ॥
सँजोगि मन कढ़ि ओइ । छिन बीय द्रप्पन होइ ॥ छं० ॥ १६६॥
सम्मान प्रीति विपंग । सो पुच चिय मन अंग ॥
* * * * ॥ * छं० ॥ १६७ ॥

संयोगिता के नेत्रों का वर्णन

दूहा ॥ बाला संभरि बाल बयन । सीत सीत रति रंग ॥
राह केत मंगल बिचें । जमुन सरसती गंग ॥ छं० ॥ १६८॥
मर बल अंबर बदन सौ । लोयन सो करपाइ ॥
ईह अपूरब चरि अरक । पंती अट्ट कलाइ ॥ छं० ॥ १६९ ॥

सुग्गे की उक्त बातें सुन कर इंछिनी रानी का अत्यंत दुखित होना।

सुरिल्ल ॥ कल कल बानी सुक्क प्रगासै । हद्द बाल वे कौतिक भासै ॥
जो को दीष दीह तो बालं । जंपी जेम तोहि तो कालं ॥
छं० ॥ १७० ॥

दूहा ॥ जं देही तौ दुष्षई । दुष्षह सुष्ष सरीर ॥
दुष्ष न अन्नं सुष्षतं । किय सो कंनि धरीर ॥ छं० ॥ १७१ ॥
सतम बरस सज्जिय अरय । दीन छीन संसब्ब ॥
हद्द चीय अरु थिर अरय । देह विधिनि लिषि देव ॥छं०॥१७२॥
राजन सुक पुच्छन विगति । भयो इँछिनि दुष राज ॥
हूं माया रस भुल्लयौ । नहु पायौ गुन काज ॥ छं० ॥ १७३ ॥

सुग्गे का इंछिनी को समझाना कि वृथा दुःख करने से क्या लाभ है ।

गाथा ॥ जीवं वारित रंगं । आयासं नथ्थिवै दुष्य देहं ॥
भाविय भाविय गतनं । किं कारनं दुष्य वालायं ॥ छं०॥१७४ ॥

रानी इंछिनी का कहना कि सौत भाव का दुःख मैं भुला नहीं सकती ।

दूहा ॥ सौत सोत चंचल भयं । भिरिग दोष अनुराग ॥
मनु चित नेन व्याहन चढ़े । दुज काननि पुछि भाग ॥छं०॥१७५॥
जौ पुच्छै सुष दुष्य मौ । तौ मौ एह अंदेस ॥
देषि कहै वर वत्त मैं । किहि गुन रचिय नरेस ॥ छं० ॥ १७६ ॥

सुग्गे का सलाह देना कि यदि तूं यह महल छोड़ दे तो तेरा दुःख आप घट जावे ।

सुनि बाला वर वेन मुहि । मंच भेद वहु भेस ॥
जौ वंछै इंछिनि महल । तौ मेटै अंदेस ॥ छं० ॥ १७७ ॥

इंछिनी का महलों से निकल कर चलने की तैयारी करना ।

कवित्त ॥ सुक पंजर करि हेम । माल मोतीन मंच जरि ॥
धन सुगंध निकुरास । देस संघ गुरिग हथ धरि ॥
दस हथ्थी इंछनि रसाल । माल विय साल [1] उनंगी ॥
सेत रत्न वर सुमन । मुक्कि करि गंध सुरंगी ॥
नर भेष नारि कंचुकि सरस । दुइ दासी चर भज्जि मन ॥
क्रम चुकंति दुक्कति विकम । वयन दरसि सज्जल नयन॥छं०॥१७८॥

राजा का इंछिनी को रोकना और मान का कारण पूछना ।

अरिल्ल ॥ दस हथ्थी पंजर धर मुक्किय । दिसि संजोगि राज दिठि रुक्किय ॥
नन तुच्छौ न्रप पच्छिल रत्ती। ज्यों सर फुट्टै हंस प्रपत्ती ॥छं०॥१७९॥

(१) ए. कृ. को.-उतंगी ।

सुग्गे का कहना कि इस सब का कारण संयोगिता है।

दूहा ॥ वक्र दिष्ट संजोग की। सुक कहि न्नपहि सुनाय ॥
एक अचिज्ज इंछिनिय। में ग्रह दिट्ठी राइ ॥ छं० ॥ १८० ॥

सुरिल्ल ॥ गरजी तब ढोलक सघनं। वट्टि न घन नेह सयन्नं ॥
दोष आकोचन भोज पलायौ। अगि अंकुरिय विरह पनायौ ॥
छं० ॥ १८१ ॥

राजा का कहना कि रे पक्षी तु ही ने भेद किया फिर ऊपर से बातें बनाता है।

दूहा ॥ कहै सुक फुनि फ,नि न लग। न्निप सुनि कही न वत्त ॥
मंच भेद उप्पर करी। करत चित्त अनुरत्त ॥ छं० ॥ १८२ ॥

सुग्गे का इंछिनी से कहना अच्छा तुम दोनों निपट लो।

जब सुक न्नप कान न लो। तब पुच्छयौ बर जोइ ॥
जो कछु कह्यौ सु कंत सौं। ज्यौं कंह्यौ कंत जो होय॥छं०॥१८३॥

राजा के मनाने पर इंछिनी का मान जाना।

पद्धरी ॥ मति मान रूप लच्छीय मान। जीवन सु पीव आनंद थान ॥
करवत्त दोष कप्पन कुँवारि। वर कंक दिन्न बर सव्व रारि ॥
छं० ॥ १८४ ॥

धुम्मर बदन्न दुष दमित पाइ। ज्यौं आनंद जाइ कुमलाइ पाइ ॥
मंडित्त मत्त तिहि चाहुआन। मुष रुट्ठि चौय नन रुट्ठि प्रान ॥
छं० ॥ १८५ ॥

राजा पृथ्वीराज को रानी के मान करने का दुःख होना।

चौपाई ॥ न्नप पर दुष्ष अलप्प जु किन्नौ। ज्यौं बारि गयौ तरफै रहि मीनौ॥
दुष निद्रा निसि घट्टिय आई। तिहि न्नप सज्ज सपन्नौ पाई ॥
छं० ॥ १८६ ॥

रात्रि के राजा पृथ्वीराज का स्वप्न देखना। स्वप्न वर्णन।

भावी गति आगम विगति। को मेटन समरथ्थ ॥
राम युधिष्ठिर और नल। तिन मैं परी अवथ्थ ॥ छं० ॥ १८७ ॥
मान करैं मति हीन नर। जोवन धन तन रूप ॥
कौंन न दिन द्वै है गये। विना ज्ञान रस कूप ॥ छं० ॥ १८८ ॥

इति श्रीकविचंद विरचिते प्रथिराज रासके शुक विलास वर्णनो नाम बासठवों प्रस्ताव संपूर्णम् ॥ ६२ ॥

आषेट चष श्राप नाम प्रस्ताव ।

[तिरसठवां समय]

कन्नौज में समस्त सगे संबंधियों के मारे जाने से पृथ्वीराज का खिन्न मन होकर उद्विग्न होना ।

दूहा ॥ जिन बिन न्रप रहते न छिन । ते भट कटि कनवज्ज ॥
उर उप्पर रष्पत रहै । चढै न चित हित रज्ज ॥ छं० ॥ १ ॥

कवित्त ॥ कटे कुटुंब मन मित्त । हितकारी का का भट ॥
कटे सूर सामंत । सजन दुज्जन दहंन ठट ॥
कटे सुसर सारे सहेत । मातुलह पछ्य फुनि ॥
कटे राज रजपूत । परम रंजन अवनी जन ॥
निसि दिन सुहाइ नह न्रपति कों । उच्च सास छंडै गहै ॥
अंतरति अग्नि उद्वेग अति । सगति सूल सालै सहै ॥
छं० ॥ २ ॥

राजा के मन बहलावे के लिये रानी इंछिनी का कहना कि हम लोगों को अहेर का रहस दिखाइए ।

दूहा ॥ तब सारे अंते उरह । कीनौ मनौ विचारि ॥
न्रप अग्गैं उच्चार किय । धरि मुष अग्ग पँवारि ॥ छं० ॥ ३ ॥
चरन लग्गि युग जोरि करि । कह्यौ सुनहु महि इंद ॥
हमहि सिकार दिषाइये । मत्त म्रगादि मयंद ॥ छं० ॥ ४ ॥
क्यौं बराह बागुर रूकै । क्यौं बंधहि बर वानि ॥
क्यौं छुट्टै छर डोरि कै । क्यों जुट्टहि सक स्वान ॥ छं० ॥ ५ ॥

राजा का कहना कि तुम लोग अपनी तय्यारी करो ।

विहसि बयन अलसित नयन । दिय इह उत्तर राय
गोठि करो गोरी सकल । तो आषेट पिलाइ ॥ छं० ॥ ६ ॥

रानियों का राजा की आज्ञा मानना।

कहि परमान प्रनाम करि। रानिय मानिय बात ॥
सकल षरच संजोगिता। साज सु जोवत प्रात ॥ छं० ॥ ७ ॥

राज महल के प्रभात की आभा वर्णन।

पद्धरी ॥ हुअ प्रात रात पति अस्त हुअ। उड़गन सु गए तजि बिना धूअ॥
पसरे पवंन तर वरन पान। जोगिंद जग्य पूरै विधान ॥छं०॥८॥
झल्लरि झनंक भई देव द्वार। षुल्ले किनंकि ग्रह ग्रह किंवार ॥
नर नारि वारि फिरि लाज कीन। झट झट झटक्कि पट कूल लीन ॥
छं० ॥ ९ ॥
उठि प्रात गात दुजराज मंजि। पढि वेद मंच हरि देव रंजि ॥
गर बंध धंध छुट्टिय सुधेन। लीनौ अछादि गौरैं न गेन ॥
छं० ॥ १० ॥
नौबति निसान दरबार बज्जि। रिफ रोर चोर गय कुहर भज्जि ॥
सहनाइ सुरति कीनौ सँचार। गायन ललित गरवर उचार ॥
छं० ॥ ११ ॥
पावन प्रसाद षुल्लै पुरान। अविछन्न धार हर होत न्हान ॥
सत सती पाठ पाठी करंत। जप ध्यान इक्क नव ग्रह धरंत ॥
छं० ॥ १२ ॥

रानी संयोगी का शैय्या से उठ कर गोठ की तैयारी के लिये आज्ञा देना।

तिहि वार जागि रानी सँजोइ। दिय हुक बोलि बड़वार दोय ॥
झट लेहु साह झगरू बुलाइ। मागै सु द्रव्य दीजौ गिनाइ ॥
छं० ॥ १३ ॥
करियो अनेक पकवान वानि। सक्कै न कोइ जिन जाति जानि ॥
सौरँभ सँवारि मिलक्क अनेक। घन सार सार मृग मद विवेक ॥
छं० ॥ १४ ॥
एलचि लवंग संगति सँवारि। स्यामा समेत सद सुद्धि डारि ॥

रा मठी रंग रचि मिरचि देहु । पुनि सकल भांति गोरसहु लेहु ॥
छं० ॥ १५ ॥

दूहा ॥ लेहु सरस सक्कर पहिल । पांडी पंड अनंत ॥
विंजन बहु बनवाइयौ । लागे गहर गनंत ॥ छं० ॥ १६ ॥
पानि पंथ पहुंचाइयौ । सकल बाटिका बीच ॥
कीजहु बहु आचार सों । दरसन लहै न नीच ॥ छं० ॥ १७ ॥

रनिवास की कतिपय दासियों के नाम।

चोटक ॥ सुनि सद्द इतैं श्रुति स्वामिन के। नमि तुंग चले गज गामिन के॥
गुनवेलि सहेलनि बीच वड़ी । न्टप कैं चित जाचप कोर गड़ी ॥
छं० ॥ १८ ॥
मदनावति मालति मोहनियं । कमला विमला संग सोहनियं ॥
वुधिलाल लिलावति लाजमती । क्रम माल मराल गवन्न गती ॥
छं० ॥ १९ ॥
पठ मंजरि पंजरि नेन नगी । सुर हंसिय बंसिय पेम षगी ॥
ललिता कलिता चलिता सु सषी । रतनावलि रामगिरी निरषी ॥
छं० ॥ २० ॥
जमनी जिय वल्लभ जोति जगी । कुँज वेला जुही सु हिया अदगी॥
गुनकेलि गुलाल म्रनाल भुजा । कच लंबिन कोमल देह सुजा ॥
छं० ॥ २१ ॥
मधु माल तिमार सुमार सुषी । मुगधा मधु बेनि मयंक सुषी ॥
चित चोप चंदेलिय चंप कली । सब सेवति स्वामिनि भांति भली॥
छं० ॥ २२ ॥
धर माकर मानव नारंगियां । वलभा कलभा सुर सारंगियां ॥
हरदासिय रासिय रूप जिती । निकसी करि बेन प्रमान तिती ॥
छं० ॥ २३ ॥
जितनी सिष स्वामिनि पास लही । तितनी भगरू सहु जाय कही॥
छं० ॥ २४ ॥

झगरू कंचुकी का सब सामान ले जाकर पानीपत में गोठ का सामान रचना।

चौपाई ॥ झगरू साह साज सब लई। सो पहुंचाय नीरपथ दई ॥
बारी सघन वारि बहु जहां। बैठि गोठ विस्तारी तहां॥छं०॥२५॥

अग्नि कोण में रनिवास के डेरे लगना।

कवित्त ॥ सीत भीत आदीत। बास अगनेब कोन किय ॥
बगरि बारि बारिज्ज। जाम रहहि निसानिय ॥
सुष लुट्टहि संजोग। जुवति जे भोन भोन सुष ॥
विरह वियोगिनि अंग। अग्गि ज्वाला असंषि दुष ॥
चक्कीय चक्क चिंता विषम। दिघघ रैंन दारुन दहैं ॥
जानै कि प्रान कै प्रान पति। आनि कानि कासों कहै॥छं०॥२६॥

डेरों पर तैयारी हो चुकने पर पृथ्वीराज का रानियों सहित पानीपत की यात्रा करना।

दूहा ॥ तिन रिति मन मृगया करिय। चढ़न कहत चहुआन ॥
आगैं आगैं अंगनां। पानीपंथ मिलान ॥ छं० ॥ २७ ॥
एक मास क्रीड़ा अवधि। करिय संभरी नाथ ॥
गोटि साज पहिलें पठय। चल्यौ रागिनी साथ ॥ छं० ॥ २८ ॥
सलष सुतादिक आदि दै। राज लोक लै सथ्थ ॥
पूजि प्रिथा सगपन मिलै। चली सु पानीपथ्थ ॥ छं०॥ २९ ॥
लाल ढाल सुषपाल महि। डोला रथ्थ रसाल ॥
सावन सरित उमंडि ज्यौं। चलै चली त्यौं बाल ॥ छं० ॥ ३० ॥

संपूर्ण समारोह के साथ रनिवास की यात्रा।

मोतीदाम॥ किती गज ढालन बाल चढाइ। किती चक डोल अमोल बैठाइ॥
किती सुषपाल विसाल अरोहि। सुषासन आसन षासन सोहि ॥
छं० ॥ ३१ ॥

(१) ए. कृ. को.-बाज।

किती रसकी पलकि मद्धि बैठि । किती सकना ढकना तन पैठि ॥
किती रथ पथ्थ चढी चलि मांन । मनों विबुधी अव रोहि बिमांन॥
छं० ॥ ३२ ॥

चिहूं दिसि भासिय दासिय सथ्थ । गहै सब साज सिँगारन वथ्थ॥
किती डिढडा विड़ वाडिढ पाय । कुंपी इक कंध सुगंधनि ढाय॥
छं० ॥ ३३ ॥

डरैं उर स्वामिनि ते चल चूक । चलै लहू आतुर सीस सिँदूक ॥
किती छर छग्गर कंध न लीन । चली हय हंकि लचै कटि छीन ॥
छं० ॥ ३४ ॥

झनभझन [1]झंझ नसद्द सुनंत । घनं घन घुग्घर घोर गुनंत॥
घनं घन कंकन वज्जि सुढार । गनं गन धावत जात न पार ॥
छं० ॥ ३५ ॥

जगंम जगेव जराव वसंन । डगं मन जानि अरुन्न किरन्न ॥
सझ्यौ मनु जच्छि प्रजापति जाग । चल्यौ सुर नारिन कौ जनु माग ॥
छं० ॥ ३६ ॥

मनों मष मंडिय पंडव भूप । जुरे नर नारिन इंद अनूप ॥
चल्यौ जलि पोजन कौ सय संग । नही जिन कै सब अंग अनंग ॥
छं० ॥ ३७ ॥

लग्रै कर कंचन लट्ठिय कट्ठ । उठै झुकि क यहु बोलत तथ्थ ॥
चले तिन संग चढे गुर राम । वड़े वपु वेस वड़े गुनधाम ॥
छं० ॥ ३८ ॥

चले दिन दिग्घन जे रजपूत । चले चढि साहि सिरोमनि सूत ॥
चले कुल कायथ चौदह जान । भयौ इतमाम [2]करे जग कान ॥
छं० ॥ ३९ ॥

सबैं सित उज्जल अंबर साजि । मनो निकले कल हंस विराज ॥
* * * * * * छं० ॥ ४० ॥

(१) मो.-झझर । (२) ए. कृ. को.-भरे ।

रानियों का शिविर स्थान पर स्थानापन्न होना ।

दूहा ॥ जथ्थ मंडि स्नगरू करिय । तथ्थ गयौ रनवास ॥
बाग बावरी बहु जहां । कूप ताल [1]पनिवास ॥ छं० ॥ ४१ ॥
बारी में भारी बनिक । रच महल सुधराय ॥
मनों सोभ कैलास की । लीनी लोभ [2]छिंडाय ॥ छं० ॥ ४२ ॥
कहै खनि प्रथिराज की । उर पुर धरि अनुराग ॥
चलौ बिलोकैं चिहु दिसा । पानि पंथ को बाग ॥ छं० ॥ ४३ ॥

शिविरस्थान के उपवन की शोभा वर्णन।

भुजंगी ॥ बनी सुभ्भ बारे फले [3]दृष्य नेकं । रटै बैठि पंषी सु भाषा अनेकं ॥
ठटे अंब नीबू सु जंबूव रोसं । लुटै भूमि [4]जूमी हरे हेरि होसं ॥
छं० ॥ ४४ ॥
कहूं चंपकं चारु चेची चिनीयं । मनों दीपकं माल मनमध्थ दीयं ॥
कहूं नालि केलं रुबेलं बिदामं । सुकं सारिका टोल बोलंत तामं ॥
छं० ॥ ४५ ॥
कहूं [5]पक्क डारं अनारं दरक्की । कहूं सोभ सारं सु तारं तरक्की ॥
कहूं कंछुहारी सुपारी निवारी । कहूं केवरा केतकी भीर भारी ॥
छं० ॥ ४६ ॥
कहूं लाल जालं गुलालं सु पुंजं । कहूं जाति पंती भरं भोर गुंजं ॥
करै केलि में केलि मोरं चकोरं । कहूं कंकरन्नी करन्नान ओरं ॥
छं० ॥ ४७ ॥
फलै फाल से फैलियं लौंग बल्ली । दलै दुष्य साषं सु दाषं प्रचल्ली ॥
कहुं चंदनं कंदनं ताप तापं । जहां काम क्रीड़ा गहै बान चापं ॥
छं० ॥ ४८ ॥
कहुं पंडुरं डार बैठे परेवा । कहूं बीज पूरी सिंदूरी करेवा ॥
कहुं सारनी फेरिकै बारि ल्यावै । कहूं नाग बल्लीन[6]कूं नीर प्यावै ॥
छं० ॥ ४९ ॥

---

(१) को.कृ.-पतिवास । (२) ए. कृ. को.-छिनाय । (३) ए. कृ. को.-वृछ ।
(४) मो झूमीं । (५) मो.-कप्प । (६) मो.-कों ।

कहूं घट्ट थट्ट रहट्ट चलावै। कहूं मालनी वाल माला बनावै॥
कहूं ढेंकुरी ढारि कै वारि काढै। कहूं थान ऊंचो सचैं नीर चाढै॥
छं० ॥ ५० ॥

दूहा ॥ चरस सरस ढरि ढेंकुरी। रहट वहत वसु जाम॥
वापी कूप तडाग तें। भरत चहवचा ताम॥ छं० ॥ ५१ ॥
इहि विधि सब रनिवास नें। सुप पायौ लपि वागु॥
जिन निरपिय तिन कहिय यों। आज हमारो भागु॥ छं० ॥ ५२ ॥
वाग लपौ रनिवास नै। रानी आग्यौ लेय॥
पान पान अरु सेज सुप। सुप मनुहारि करेय॥ छं० ॥ ५३ ॥

रानियों के पानीपत पहुँच जानेपर पृथ्वीराज का कूच करना।

रानी पहुंची जानि कै। राजा चढ्यौ तुरंग॥
पायन पेलै वाइज्यों। धाय न जाय कुरंग॥ छं० ॥ ५४ ॥
न्रपति चढे सब चढि चले। जे भरवंक त्रिरद्द॥
घर ढट्ठे अरि दल दलन। जे कट्टैं गजरद्द॥ छं० ॥ ५५ ॥

पृथ्वीराज की तैयारी और उनके साथी सामंतों का वर्णन।

हनूफाल ॥ चढि चले अब्बुअ राव। सिर सेत छत्र सुभाव॥
कूरंभ पंभ चमून। जम रूप जानि जमून॥ छं० ॥ ५६ ॥
सुह अग्र मोरिय वीर। त्रिव्वान आनन नीर॥
चढ़ि चले चंपि चंदेल। हय सुक्कि संडित षेल॥ छं० ॥ ५७ ॥
तिन सिद्धि संभरि वार। जग मझ्झ एक जुझार॥
उर साल साहि सहाव। मुष चंड मंडित काव॥ छं० ॥ ५८ ॥
लिय संग रंगह स्वान। इक इक्क संग द्वै ज्वानि॥
अनरोम के बहु रोम। इक मात तात न योम॥ छं० ॥ ५९ ॥
सुष रत्त कोमल कान। द्रिग रत्त गति गुर रान॥
जोगिंद निंद सु भाय। म्रग धाय जाइ न पाय॥ छं० ॥ ६० ॥
पटकंत बाघ बराह। झटकंत रोझ अग्गाह॥
पट जरै जेव जराय। रज संकरन डुरवाय॥ छं० ॥ ६१ ॥
इक संकही आरोह। इक पालिकी प्रति सोह॥

रथ सथ्थ चीती वान। चष ढंकि पथ्थ पयान ॥ छं० ॥ ६२ ॥
जुर रारु बाज सिचान। तुरसती तेज उड़ान ॥
पिठका कुही चष ढंकि। पुट चंच पदनष बंक ॥ छं० ॥ ६३ ॥
फुनि लै फंदैत कुरंग। जिन अंग सोभ सुरंग ॥
हुम संत हुंकत हेरि। दस कोस आवत फेरि ॥ छं० ॥ ६४ ॥
कवित्त ॥ पानी पंथह राय। आय षेलत आषेटक ॥
फिरि यहार उज्जार। देषि बंधा आगेटक ॥
नै विहंड बन हंकि। संकि नव षंड मंड वर ॥
मूर स्तूर बाधंत। बाज छांडत छंडि बर ॥
वेधहि बराह उच्छाह मन। तानि इक्क सर इक लहै ॥
पावै न जान सावज अवर। ऐन सैन मेलै गहै ॥ छं० ॥ ६५ ॥
एक सत्त बाराह। बान बेंधे कि स्वान गहि ॥
सावज अवरन हंसि। नंस कीनौ म्रगादि महि ॥
पंछि पंछ पंछीन। मारि संघारि बहुत किय ॥
सु से स्रगाल को गिनै। छेद छिक्कार भार जिय ॥
बीभच्छ बीर रस रुद्र मचि। करुन कासु पिष्षी न मन ॥
पचछलै जाम विश्राम कहु। फिर्‍यौ संग सामंत गन ॥ ६६ ॥

डेरों पर पहुंच कर पृथ्वीराज का मर्दन करवा कर यमुनाजी का स्नान करने जाना ।

डेरा न्रप आवंत। सुनत रानीन सुष्ष हुअ ॥
सपजि रहे सब अन्न। धाय प्रथिराज सुद्धि दिय ॥
सुनि मरदन को हुकम। होत मरदनी बोलि लिय ॥
वय किसोर थन थोर। कच्छि अच्छरि समान चिय ॥
तिन नेह देह मलि देहु सुष। बरषि मेह श्रंगार रस ॥
जल जमुन उष्ण अस्नान करि। चल्यौ भूप संग विप्र दस ॥
छं० ॥ ६७ ॥

राजा का स्नान कर के गोदान करना ।

कासमीर करि तिलक। श्राद्ध तर्पन अंजुलि दिय ॥

हैव सेव किय विप्र। अप्प दंडौत पंच किय ॥
तुलसीदल हर अरपि। न्हत्य असिवर की मंगिय ॥
चरनोदक मुष धार। राज बैठ्यौ वजरंगिय॥
सत धेन शृंग सोवन्न मढि। षुर रज्जत राजंत अति ॥
शृंगारि दत्त दिय दुजुन कंह। पठहि पाठ जे बेद प्रति ॥छं०॥६८॥

कुमारी कन्याओं और ब्राह्मणों को भोजन करवा कर राजा का सब सामंतों सहित भोजन करने बैठना।

नव कन्या पहिराय। दान नवग्रह कौ कीनौ ॥
इच्छा भोजन पूछि। सहस विप्रन कौ दीनौ ॥
भोजन किय जिहि ठौर। सब्ब भर तहं पधराए ॥
नित्य करम करि इतौ। तही अप्पन प्रभु आए॥
पांवरी पाय जूरो सिरह। षीरोदक अरु पीतपट ॥
कर माल जपत नंद लाल मुष। गुण विसाल संग विप्र थट ॥
छं० ॥ ६९ ॥

गो गोमय चोको। विचित्र चित्रे अति चावक॥
लीक धवल धर हरित। धरी सिगरी भरि पावक ॥
कोमल आसन मंडि। मंडि बाजोठ अग्र सुष ॥
तहां बैठ्यौ चहुआन। गंग सन्ही उतरंरुष ॥
सामंत सूर दष्षिन दिसा। पति मंडे सोभंत अति ॥
संमुहो चंद बरदाय बर। सबै दिष्षि यहि दैव भति॥ छं० ॥७० ॥

राजसी भोजन परोसे जाने का वर्णन।

ऊंकार पूरान। कियौ पंडित प्रवीन दुज ॥
श्रीरघुनाथ चरित्र। गाथ भंजनह वीस भुज ॥
नूत नूत पल्लव पषारि। पत्रावलि मंडिय॥
धोय तोय बिन छिद्र। धरे दोना ढिगंठंडिय ॥
कोविद उदार उज्जल दुजन। परुसन कौ आरंभ किय ॥

(१) ए. कृ. को.-मुख। (२) ए. कृ. को.-गंठिय।

भरि छाब छाव को कवि कहै । प्रथम अनूपम पूप लिय ॥
छं० ॥ ७१ ॥

परस की विधि और जिनसों का वर्णन ।

दूहा ॥ पूप अनूप परूसि पुनि । पुरी सुष्प पुरि मेलि ॥
ललित लूचई लै चलै । [1]ऊँच रतो विधि वेलि ॥ छं० ॥ ७२ ॥

पकवान्न और मिठाई ।

मोतीदाम ॥ भरि [2]पीठि भींतर लोन सिलाय । कचौरिय मेलि चले दुजराय ॥
घरे निसराज सिषा जनु फेरि । धरे ढिग वातर भाँवर हेरि ॥
छं० ॥ ७३ ॥
सुते बर घेवर पैसल पागि । लषै चष [3]फेरि गई उर आगि ॥
जलेबनि जेब कहै कवि कौन । महा मधु माठ मिटावन मौन ॥
छं० ॥ ७४ ॥
सुधारस फेन कि फेनिय आय । तिनं पर बूर गरूर मिलाय ॥
करे कर सक्करपारे सुधार । महा दुति मुत्तिय सेव सिघारि ॥
छं० ॥ ७५ ॥
बनी तिय नारि कसार भरित्त । कलपानिय बानिय पागि घिरत्त॥
करी सबनी सब ही महि सार । गिँदोरन और करै सब आर ॥
छं० ॥ ७६ ॥
घरे पुरमा अरु पिंडषजूर । बिही अषरोट निही सुष पूर ॥
नय नसपातिय पैठै पकाय । दह्यौ रिय दीनिय भूषन गाय ॥
छं० ॥ ७७ ॥
पगे मधु पान पनंगह वेलि । दए गुर सक्कर अम्रत ठेलि ॥
बिए पकवान धरे बहु भांति । धरे तिन ऊपर पापर आनि ॥
छं० ॥ ७८ ॥

दूहा ॥ आनि सँधाने सब धरे । मूल फूल फल कंद ॥
मैदा के पैदा करै । सुमन मेलि मकरंद ॥ छं० ॥ ७९ ॥

(१) ए.कृ.को.-उंचरची । (२) ए.कृ.को.-परि पिछिय । (३) ए.कृ.को.-परि ।

अचार वर्णन ।

बचनिका ॥ करि कंज पुंज धारे । रचि चंपकं सु धारे ॥
बहु वेलि है चँवेली । करनी कनैर केली ॥
वकलं वधूक आने । घनसार डार सानें ॥
मचकुंद कुंद कीने । करि केवरे नवीने ॥
कल केतकी किति कौ । पुनि पाडरं जिति कौ ॥
जुहियं जगत जैनी । भ्रम भूलि भोंर सेनी ॥ छं० ॥ ८० ॥

चरवन वर्णन ।

दूहा ॥ भांति भांति चरवन रचै । चना चिरंजी चारु ॥
चोंरा चाहत चेंन [1]चप । मिलि मृग मदु घन सार ॥छं० ॥ ८१ ॥
करे कसेरू करहरी । गोंद गटा ठट ठानि ॥
पय के बहु घटि कर करे । कर कपूर [2]पुट वानि ॥

तरकारियां और गोरस का वर्णन ।

भुजंगी ॥ घरौ घीर औटलौ करी पीर ताकी । वियौ जंपियै किं सुधादासि जाकी॥
महा सद्दि घृत घालि बूरा[3]मिनाई। सबैं सूर सामंत जीमैं सराई॥
छं० ॥ ८२ ॥
घरे पट्ट घेरे रु घाटे जुड़ानें। वरा विद्व राका समं सोधि आने ॥
किते विंजनं वेसनं के वनाये। करना करोंदी कि [4]किंदुरे गनाये॥
छं० ॥ ८३ ॥
नए नूत नींबू नए नालिकेरं । रची नारिंगी नासपाती सु मेलं॥
करे अम्रतां कैथ सथ्थं विजोरें। मनों डार तें पारिकें आनि मोरे॥
छं० ॥ ८४ ॥
करारं कढी मद्धि भींजी पकौरी। बरी मूंगरी [5]पाखरा षट्ट मोरी ॥
महा मद्दु मैंदान की मेलि रोटी। कछू जामिनी नाथ ते जोति मोटी॥
छं० ॥ ८५ ॥

(१) ए. कृ. को.-सुख। (२) ए. कृ. को.-पुर। (३) ए. कृ. को.-वनाई।
(४) ए. कृ. को.-किंदूरी। (५) ए. कृ. को.-मांषकी।

धरे भोजनं मंडनं आनि माँडै । भिगे सक्करा षीर सों सेन छाँडै ॥
रवा केरु आमोइलं देव लाए । घने घृत्त अंगा करी षोभि लाए ॥
छं० ॥ ८६ ॥

कढी कट्ठ मैदा पिठी मेलि षाटी । वनी वेटई अंगुली षात चाटी॥
रची रोटियं मिश्रियं चैन पायौ । तहां सालनं आन रानी पठायौ॥
छं० ॥ ८७ ॥

लै लै विप्र दौरे सुरंधेर तारू । बने सूरनं बेगनं मेलि मारू ॥
करी बानि बिंबा गद्यौरा परोसे । बरं लै धरे वीरजे वेस रोसे ॥
छं० ॥ ८८ ॥

सदन सेमि सं मांच चंडा चलाए । ढका देत से टेढ साढं किधाए ॥
कंकोरा करेला सुरेला सराहे । भली भांति भाड़ानि के ढंड चाहे॥
छं० ॥ ८९ ॥

रवा संफरी छौंकरी लैधरी ते । कली कच्चनारं भलीजे करीते ॥
धिरत्तं भरत्तंभ टाकौ सुधारयौ। नहीं वाकलं बिजूरा में पधारयौ ॥
छं० ॥ ९० ॥

रच्यौ राइ तौनाय तौ लोंग मिरचें। धना सुंठि लै राइ मिल्लाय सिरचें॥
परोसे नवीनं चनाके निमोना। मिरी भेलि नींबू धरे केलि दोना ॥
छं० ॥ ९१ ॥

दूहा ॥ अर उर कर परिकर लए। संभरिवै सुष माँगि ॥
जनु [1]पटुता करि पांनिसों । षटरस राषे षाँगि ॥ छं० ॥ ९२ ॥
सुर सँधानौ सुर जनौ । धन्यौ दही सों सांधि ॥
फूल फूल फल के जिते । तिते करे कर रांधि ॥ छं० ॥ ९३ ॥

दाल भाजी और खटाई भरी पकौड़ियों का वर्णन।

चोटक ॥ सरसों सूआ के साक जिते । गिरिराज हरायिय रांधि तिते ॥
बथुआ बड़ साग बवोत बने। बरबाय विरंग सवाद सने ॥
छं० ॥ ९४ ॥

(१) ए. कृ. को.—वहुता ।

चनकं अरु पोचिय चूक वन्यौ। तहां [1]सोंरिय त्योंरन जाय गन्यौ
लगि डाड पयाल पयाल कसौं। मघवा उतकै होय बालक सौ ॥
छं० ॥ ९५ ॥

द्विव दारू सुदारु है साकन में। सुर बातिय में थिय पाकन में ॥
नव पल्लव नीव रु नाय धरी। करई गति काढि सु दूरि करी ॥
छं ॥ ९६ ॥

भरि भाजन भात उलंड इतौ। भर भीमन जेंइ सकंत जितौ ॥
तवही [2]पसवायत भत्त लियं। सुकमार सपेद सुगंध कियं ॥
छं० ॥ ९७ ॥

अरुनं वरुनं पुनि पीत रच्यौ। इक इक्क सनंमुष कौच सच्यौ ॥
मसुरी मुंग माष चना विधि चौ। दधि धोय [3]सुधारियदारि सुचौ ॥
छं० ॥ ९८ ॥

रसरा मठदे पुट केसर कौ। कछु आननही सनमे सरकौ ॥
वरु बारि बराबर घृत्त लयौ। [4]सदसुभ्भित सोसुर भीन अयौ ॥
छं० ॥ ९९ ॥

कुसलं मुसलं समधार परै। अनपंडित मानहु गंग झरै ॥
अघनी वटि वास तिर्मास परे। हठिवास सुवासनि आभ भरै ॥
छं० ॥ १०० ॥

चकतार अपार सवा दल सै। वनि भूंति अभूंतनि वंद गसे ॥
सुहितं उर झूल कयं परसं। द्रिगदेपि सरंवक सेत रसं ॥
छं० ॥ १०१ ॥

मधु मीन रचे पचि भंति इति। कनवज्जनियं कनवज्ज जिती ॥
घन घंड मरग्गल सों सपजे। जिन बासन बानिक छम्म तजे ॥
छं० ॥ १०२ ॥

पछावर की परस का वर्णन।

दूहा ॥ जेंइ अघाने जठर पर। जलपिय फेरति पानि ॥
तुच्छ छुधा पाछें रही। तब लई पछावरि बानि ॥ छं० ॥ १०३ ॥

---

(१)मो०-त्योंरिय। (२)ए.कृ.को.-पसकायत। (३)ए.कृ.को.-सुधारसदारि। (४)ए.कृ.को.-दस।

मोतीदाम ॥ बढ़ी रुचि देषि कढी कर लेत। चिचैं मिरचैं मिलि लौंग समेत ॥
बिकत्त तिकत्त सुषट्टिय षार। लई सुष मंगि हूई मनुहार ॥ ॥
छं० ॥ १०४ ॥

करिवां कठ पत्तनि की सब सानि। बंध्यौ दधि आनि धस्यौ ढिग छानि ॥
मट्ठा दधि छानि रु वानि बघारि। जहां मिलि जीर घनं घनसार॥
छं० ॥ १०५ ॥

पनं बहु जंबुअ अंबुल मेलि। निचोरिय दारिम दाष सुठेलि ॥
गऊ पय औटिय धार उछांटि। धरे भरि भाजन मिस्रिय वांटि ॥
छं० ॥ १०६ ॥

मिली मधि जारक षारिक चूक। सवारिय भारि भए भष भूक ॥
भए चिपतें सब सामंत साथ। कहें सुष कित्ति रहे षचि हाथ ॥
छं० ॥ १०७ ॥

सँजोगिय स्वामिनि कौ परधान। पंषा गहि प्रीति करै सनमान ॥
कहै सब सथ्थ भई श्रम भीर। छमा करियौ चित चूक सधीर ॥
छं० ॥ १०८ ॥

कहै सुष सामंत श्रीमुष राज। भए हम पूरन पावन आज ॥
तहां तप तो इक हथ्थ धुवाय। अरच्चिय दच्छि करंदम काय ॥
छं० ॥ १०९ ॥

दए सुषवास कपूर भुआइ। मँडे अप अप्प मिलावन जाइ ॥
जिमावत ओसर यों रनिवास। इसी भँति राज रह्यौ इक मास ॥
छं० ॥ ११० ॥

भई चढती चढती मनुहारि। दिन प्रति हास बिनोद [1]उचारि ॥
छं० ॥ १११ ॥

आखरी दिन चलते समय राजा का शिकार करने की तैयारी करना और प्रोहित गुरुराम का मना करना।

दूहा ॥ चल्यौ अंत कै द्योस न्त्रिप। बरज्यौ प्रोहित राम ॥
कुसल भई अरु रस रह्यौ। क्यों न पधारहु धाम ॥ छं० ॥ ११२ ॥

(१ ए. कृ. को.-उधारि।

मृगया सदा विगार हुअ। सुनौ काहूं समुझाय ॥
आप सह्यौ रघि राज पैं। दसरथ पंडव राय ॥ छं० ॥ ११३ ॥

राजा का शिकार के लिये तैयारी का वर्णन।

हँसि नरिंद हय पर चढ्यौ। भई निसान धमंक ॥
सत्त समंद कलँमलै। संकर चित्त चमंक ॥ छं० ॥ ११४ ॥

कवित्त ॥ चमकि रुद्र चग पुले। चमकि सिर ढुले सेस महि ॥
भरकि उठे दिगपाल। उरकि दिगपाल सोच रहि ॥
हलकि हले गिरि मेर। हलकि कुव्वेर संक हिय ॥
धरकि धरा धहराय। धरकि दिग्गजनि [1]कंप किय ॥
आषेट हेट प्रथिराज की। एक मुष्य कवि को कहै ॥
उड़ि धूरि पूरि [2]अंमर भन्यौ। रविन व्योम मंडल वहै ॥
छं० ॥ ११५ ॥

कंप गंगन चिन्ह। चिन्ह नन घंनं सुझ्झै ॥
नद्द.वद्द भरि कान। आननन तान सु बुझ्झै ॥
सहस सीरषा पुरुष। सहस द्रिग सहस हथ्थ कौ ॥
दलि तरु चक्रित छिन्न। भिन्नभद्द अन्न अथ्यकौ ॥
हय गय पयाद पायान मय। अकथ कथ्य कविचंद कहि ॥
डगमगहि पिंड ब्रह्मंड कौ। आज राज प्रथिराज रहि ॥
छं० ॥ ११६ ॥

दूहा ॥ रह्यौ नहीं संभरि धनी। चढ्यौ चित्त अति चाव ॥
उगमगि पहुमि पयान भर। ज्यों जल रीती नाव ॥
छं० ॥ ११७ ॥

शिकारी सामान, बन की शोभा और बनैले जीव जन्तुओं का वर्णन।

पद्धरी ॥ चढि चल्यौ चाइ चहुआन भान। सुर नाग नरनि भूल्यौ वसान ॥
धमकी धरन्नि धुरतार भार। बढि संक लंक संसार सार॥छं०॥११८॥

(१) मो.-चँपि (२) ए. कृ. को.-अंतर।

लिय डोरि डोरि संकरन खान। चढ़ि चले रथ्थ पथ चीतिवान॥
अगयस्त हस्त हुंकरत मुष्ष। फँद बंध स्रृँग संग्राम रुष्ष॥
छं० ॥ छं० ॥ ११९ ॥

जुर बाज कुही तुरमती धूत। को अन्य गनै पंषी अभूत॥
चहुआन गयौ उद्यान दूरि। गिरवर उतंग वन सघन पूरि॥
छं० ॥ १२० ॥

उज्जार जार सुझझै न मग्ग। भरि सकै कौन भर डक्कि डग्ग॥
सीस [1]पसि रस्स सामर सिंहारि। कहुं साल ताल सागोन सार॥
छं० ॥ १२१ ॥

कहुं झीक झुंड झिर हानि झार। कहुं बेलि बेर बेकल अपार॥
कचनारि कोह गिरि नारि आरि। गुरजैन गैन परसंत चारि॥
छं० ॥ १२२ ॥

अनछिद्र छांह सौं करिय छोर। कपि कच्छ बेलि कपि त्याग ठौर॥
कूं परित रत्त करलैं सरल्ल। षट तीन भार तरु तें तरल्ल॥
छं० ॥ १२३ ॥

फुलित फलित फवि चारु फेर। वसु जाम झाम पसु पंछि घेरि॥
कहुं मृगमयंद मातंग मत्त। सु सले सियाल सूकर भिरत्त॥
छं० ॥ १२४ ॥

कहुं रीच्छ इच्छ सोवंत छांह। बंदर लंगूर कंगुरन मांहि॥
फूंकर फनिंद तर कों तरन्नि। सब सकै कौन कोविद बरन्न॥
छं० ॥ १२५ ॥

दूहा ॥ हरि हरि हरि वन हरित महि। हरन पिष्षयै अंषि॥
सारँग रुकि सारँग हने। सारँग करनि करष्षि॥ छं० ॥ १२६ ॥

शिकारी पलुए-जानवरों का कौतुक।

कवित्त ॥ आषेटक रमि राज। बाज जुर कुही छंडि कर॥
ऐन सेन बाराह। हनहि बरहक्कि तक्कि उर॥

(१) ए. कृ. को. परि।

वागुरी परि उरझंत । रोझ सांभर असंप सुस ॥
और जीव को कहै । उहै भेडलह ग्वाल कस ॥
वन वीच कीच मचि श्रोन वहि । भनिन चंद परिमित लहै ॥
सोमेस नंद आनंद सर । क्रीड कोप जंतुन सहै ॥ छं० ॥ १२७ ॥

जंगली जानवरों की स्वच्छन्दता और उनके शिकार होने का वर्णन।

लघुनराज ॥ वाराह राह रोकयं । वधिकयं विलोकयं ॥
हस्ति दूब अंकुरं पनंत दड्ढ वंकुरं ॥ छं० ॥ १२८ ॥
पुरं अवन्नि(१) उप्परं । ललित्त वेलि विप्परं ॥
कली कुसुंम मंजरं । अरून्न नील पिंजरं ॥ छं० ॥ १२९ ॥
तजंत ते मधुक्करं । करंत सुप्प हुंकारं ।
रोमंच अग्ग उब्भरं(२) । डरंत देपि सुब्भरं ॥ छं० ॥ १३० ॥
लचतं भूमि उद्दरं । वरन्न स्याम वद्दरं ।
सपेद दंत कंतयं । सुजानि वग्ग (३)पंतयं ॥ छं० ॥ १३१ ॥
टगट्टगंत नैनयं । तारक्कजेम रेनयं ।
अहार कंद मूलयं । भयो सुकंध थूलयं ॥ छं० ॥ १३२ ॥
डढाल चीय भूलियं । फिरंत नद्द कूलयं ।
न्विमल्ल नीर वीचयं । करंत लोटि कीचयं ॥ छं० ॥ १३३ ॥
सुनंत कूह सेनयं । लग्यो सुकान दैनयं ।
चमक्कि चष्प पुल्लयं । इकल्ल उट्ठि चल्लियं ॥ छं० ॥ १३४ ॥
भिरंत छंडि भज्जयं । निरत्ति दैन रज्जयं ।
प्रपत्तयौ धनुद्धरी । सिकार भाल गुद्दरी ॥ छं० ॥ १३५ ॥
हरष्पि नाथ संभरी । ज्यों भोर मेघ डंबरी ।
हलक्कि फौज उप्परी । दिसा दिसान विप्फुरी ॥ छं० ॥ १३६ ॥
पँवार जैत वग्गरी । हते न्त्रपत्ति अग्गरी ।
विकट्ट जाल जंगरी । अठार भार पंगरी ॥ छं० ॥ १३७ ॥

(१) मो.-अंत्रन । (२) मो.-उप्परं । (३) मो.-पंतयं ।

गये सुचूकि ढाहरं। बबक्कि उठि नाहरं॥
* * * * * * ॥छं०॥ १३८ ॥

जैतराव का सिंह को मारना।

कवित्त ॥ सोर घोर सुनि श्रवन। रवनि रवनीय मंद जगि॥
निडर अंग ऐडाय। बाघमुख पग्गि क्रोध अगि॥
अधर दंत चाटंत। चाटि हथ्थल हुस्यार हुअ॥
पटकि पुंछ मच्छर दहारि। उच्छारि उछंग भुअ॥
पऱ्यौ सुजैत धाराधिपति। अति सरोस पटक्यौ सुधर॥
उठि हक्कि हाक ओझर हन्यौ। गयौ तुट्टि करिवार कर॥छं०॥१३९॥

बलिभद्र का सिंहनी को मारना।

सिंघ सँघाऱ्यौ पिष्षि। विक्कि सिंघन बबकारिय॥
समुष राज प्रथिराज। निरखि आवत ललकारिय॥
मनहु माघ केमास। मेघ कल बायनि बिस्तरि॥
यों कँपै सह काय। हाय मुष उटहि न सस्तर॥
बलिभद्र राय बलिवंड धपि। कर क्रपान बाही सु बर॥
उछरंत लंक कटि अद्ध परि। अद्ध आय लग्यौ सु कर॥छं०॥१४०॥
अध लग्यौ कर आय। ताहि जम दद्द घाय किय॥
भाल जाल महि हन्यौ। छेदि वेहाल ठेलि दिय॥
घरी च्यार सब सथ्थ। रह्यौ थहराइ लग्गि टग॥
ग्रेह देह अरु नेह। गए भय भूलि मग्ग जग॥
हँसि कहै राज कविचंद सों। ए भर अरि असुपत्ति सिर॥
करतार लज्ज रष्षै कलह। कटे कन्ह से जंग थिर॥ छं० ॥ १४१ ॥

राजा का गत घटना पर सोच करना परंतु कवि का भुलावा देकर उसे शिकार से फिराना।

कहै चंद कवि तथ्थ। राज गत बत्तन खूचहु॥
जुहैं सुं मानुहु दिघ्घ।। संग संतापन पूचहु॥

धरहु मन्न अग चलहु । पग्ग पव्वय उज्जारहि ॥
बहु वराह रुकि राह । दाह वाहं वर मारहि ॥
भुल्लाय वत्त चहुआन कौं । चल्यौ भट्ट सुप अग्र धरि॥
न्रम्यौ न मिटै न्रिम्मान कछु । तहां इक्क आइय पवरि॥छं०॥१४२॥

कुछ सामंतों का राजा को एक सिंह की सूचना देना ।

सोलंषी संतोष दास । नंदन नारायन ॥
तुच्छ पटे पग दौरि । पवन बिन न्रिपति परायन ॥
आसा लगि धावंत । रहै दासा तन लीयै ॥
रेन दीह जानेन । रहै हिय हुकुम जु किये ॥
तिन कह्यौ आय प्रथिराज सहुं । सिंघ एक भाल्यौ निकट ॥
निठुर निसंक कंदर मंध्यौ । वीज तेज लोचन विकट ॥छं०॥१४३॥

राजा का सूचना पाकर सिंह की खोज में चल पड़ना ।

गाथा ॥ यों सु न्रपति श्रवन्नं । गवनं कीन लीन कोवंडं ॥
कोमल पद संचारं । उच्चारं कोमलं भासं ॥ छं० ॥ १४४ ॥
केभर अग्गं परछं । केभर वास दच्छिनं अंगं ॥
दारा ग्रं दुज राजं । ढारं तेन पारियं छेरं ॥ छं० ॥ १४५ ॥

होनहार की प्रभुति वर्णन ।

कवित्त ॥ जलधि जनक ससि तनौ । और अम्रत्त तन [1]तातन ॥
बंधु धनंतर वैद । पोपि रष्पन वपु पातन ॥
लच्छि बहनि बुध वदै । विषागु बल्लभ वह्निनेज ॥
भव भूषन किय भाल । कुटम उडुगन गन केज ॥
लग्यौ कलंक घटु जाइ घटि । इक्क निसा पूरन्न रहि ॥
प्राचीन कीन लग्यौ कठिन । सु क्यों मिटै सिरजंत महि ॥
छं० ॥ १४६ ॥
हरि कर धरै पषान । देव निरवंसी रष्पै ॥
बलि दव्वे पाताल । अभष भष पावक भष्पै ॥

(१) ए. कृ. को.-तायन ।

ब्रह्मपूज पर हरी। रुद्र कापाल लगायौ ॥
इंद्र अंग भग भई। सुक्र रषि नेन भगायौ ॥
सतवती सीय दुष पाइ जिय। रसाताल गइ फट्टि भुअ ॥
न्टप नघुष नागपन भुग्गयौ। नमो नमो सिरजंत तुअ ॥
छं० १४७ ॥

बिछुरै नल दसयंति। रहे हरचंद नीच घर ॥
नारद नारी भए। आप पायौ दसरथ्थ भर ॥
राम बसे बनबास। पंडव अनषंड विपति सहि ॥
राह लगे विन राह। भयौ बिय टूक चंद कहि ॥
बपु जरि अनंग हुअ अंग बिन। नरग राज क्रकिला सु हुअ ॥
गजसुष गनेस अजसुष दछिन। नमो नमो सिरजंत तुअ ॥
छं० ॥ १४८ ॥

सायर षारत सह्यौ। श्रृंग रिषि सह्यौ श्रृंग सिर ॥
पग पंगुर सनि देव। पंग [1]हनमंत संत चिर ॥
जच्छि राज की अच्छि। पिंग इक भई सर्प घत।
षरमुष रावन राव। अंध कुर रावन दिषत।
भगवंत भिछ्छ कर तन तज्यौ। पारथ पुरषारथ गरयौ ॥
विक्रम नरिंद वायस भष्यौ। कासिर वारौ निब्बयौ ॥ छं० ॥ १४९ ॥

सिंह के धोखे से कंदरा में धुआं करवाया जाना।

दूहा ॥ कंदर अंदर धूम किय। सिंघ भरम प्रथिराज ॥
पुब्ब पुरान नहो सुन्यौ। अति गति होत अकाज ॥ छं० ॥ १५० ॥

धुआं होने पर कंदरा के अंदर स्थित मुनि को कष्ट होना और उसका घबड़ा कर बाहर आना।

पद्धरी ॥ चिन पच कट्ठ लगि उठी झार। गइ गुहा मंझ धसि धूम धार ॥
चट पट्ट सद्द सुनियै न कान। फट्टिय सु झाल छुट्टै औसान ॥
छं० ॥ १५१ ॥

(१) मो. हवंत।

सब जीय जंत भजि सैल तज्जि । धरराय झार पावक गरज्जि ॥
चप अवा संकि पारंत चीस । कलमलि सुनिंद मन भई रीस ॥
छं० ॥ १५२ ॥

कोमल सु कमल द्रग श्रवै नीर । रद चंपि अधर कंपत सरीर ॥
जट जूट छूटि उरझंत पाय । म्रग चरम परम नंष्यौ रिसाय ॥
छं० ॥ १५३ ॥

तमि तोरि डारि दिय अच्छ माल । निकस्यौ रिपीस वेहाल हाल॥
गहि दर्भ हस्त वर नीर लीन । प्रथिराज राज कहुं श्राप दीन ॥
छं० ॥ १५४ ॥

हम तप्प वप्पु साधंत साध । नर सूं विरुद्ध नाहिन अराध ॥
फल पत्र ग्रास पालंत प्रान । सब संग त्यागि सेवत उद्यान ॥
छं० ॥ १५५ ॥

कहुं रंक राइ जांचहि न जायि । नन जीव जंत आवै सँताय ॥
निर वैर काल काटत कठिन्न । भव सिंधु मध्य तें भए भिन्न ॥
छं० ॥ १५६ ॥

नन इच्छ भछ्य वर भोग जोग । कहि चूक हमहि सँतवत लोग॥
कारूं भस्म भूम पत्रय समेत । सुपि सरित सिंधु रष्यौ वरेत ॥
छं० ॥ १५७ ॥

ना रयों चिन्ह पठ तीन भार । तव होय चेत संसार सार ॥
.... । .... छं० ॥ १५८ ॥

ऋषि का शाप देने के लिये उद्यत होना ।

कुंडलिया । तव अचेत चेतै सुचित । जव लग्गै सिर मांहि ॥
इह कहि आपुन कों भयौ । गही पुरप इक बांह ॥
गही पुरप इक बांह । गेंन ते उतरत तच्छिन ॥
कहै निरा अपराध । साध पीरेंन तम्मि चिन ॥
तमि चिन पचन तोरियै । बिना सँतापै सव्व ॥
ताहि दंड किन देहु भुक्ति । जिहि दुष दीनौ तव्व ॥
छं० ॥ १५९ ॥

कवित्त ॥ सुरहि बच्छ मृगराज। छवा गजराज जथ्थ थल ॥
चित्रक हरिन बराह। राह पीवंत इक्क जल ॥
आष इष्षि चष अग्ग। घात मंजार न मंडै ॥
फन करि पवन भषंत। मोर पंनग नह षंडै ॥
परताप सथ्थ गुर हथ्थ कौ। नको जीव जीवह भषै ॥
तिहि जियत आज रिषिराज कहि। कंदर बैसंनर धषै ॥
छं० ॥ १६० ॥

ऋषि का चुल्लू में जल लेकर शाप देना कि जिसने मुझे कष्ट पहुंचाया वह शत्रु द्वारा अन्धा किया जाय।

गाथा ॥ इहि रिषि कहि बरबैनं। तजि संसार आपियं रायं ॥
मोद्रिग जिहि दुख दीनं। तास तुम चच्छ कढ्ढाइं ॥छं०॥१६१॥

कवित्त ॥ कं अंजुलि कुस पकरि। कहै रिषराज सुनहु सब ॥
जिहि मो द्रिग्ग दुष्षए। निरा अपराध आय अब ॥
ता जुग लोचन जोनु। अयनजुग बीतत कढ्ढय ॥
मन बयन्न नहि टरै। विप्र षिष्षि षिष्षियों रढ्ढय ॥
जितिक पीर हम भोगवैं। भूमि लोक अवलोक इहि ॥
सत गुनी विरधता छोड़ चष। चल्यो चाइ मुनि ईस कहि ॥
छं० ॥ १६२ ॥

ऋषि का शाप सुन कर पृथ्वीराज का भयभीत होना।

सुनिय बयन्न श्रवन्न। कंपि प्रथिराज थरथ्थर ॥
जिते सथ्थ सामंत। सूर उर चास धरड्डर ॥
गये बदन कुमिलाय। सक्कि अति अधर अद्ध उभ ॥
बोलत बोल न बनै। 'सने संताप साप दध ॥
रिषि आप दाप कौ अंग में। को ठिल्लै पल एक लगि ॥
जंगलन जाइ नन जाइ घर। भरि न सरक्कै भूप डग ॥
छं० ॥ १६३ ॥

(१) ए. कृ. को.-मनें।

कविचंद का ऋषि के पैरो पर गिर कर क्षमा मांगना।

तवहि चंद कवि दौरि। [1]विप्र पद रह्यौ विप्र गहि॥
छमि स्वामी अपराध। साध सुनि फुनि उच्चार कहि॥
तुम सु पंड ब्रह्मंड। पंड नव तुम तप चल्लहि॥
तुम भ्रंमन जीमूत। वरपि जीवन प्रति पल्लहि॥
केहरि भरंम हम धूम किय। पायक वसिट्ठय देव हुअ॥
सँकुचि नरिंद कंप्पं डरपि। थरपि हथ्थ सिर सोम सुअ॥
छं० ॥ १६४ ॥

कविचंद का ऋषि से कहना कि यदि किसी से भूल में अपराध हो जाय तो माहात्मा लोग सहसा शाप नहीं देते।

पिय व्रत ध्रुव के वंस। भूप जयवंत सिकारं॥
मूल मंडि प्रथि रोकि। वैठि दुरि जाल कटारं॥
मुह अग्गं इक रिष्य। निकसि प्रावरि मृग छालं॥
भ्रम कुरंग हनि तक्कि। वान लगि उभ्भर दुसालं॥
क्रामंति जोग वल रष्यि तन। यष्पन मन तिन पिमा किय॥
कविचंद कहत रिपि राज सुनि। पुनि कुपि आपन न्रपति दिय॥
छं० ॥ १६५ ॥

कुंडलिया॥ करि सनमान न सकिय दुज। सिव पिक्खि चक्र चलाय॥
सिर लग्गं पुप्परि उछटि। जानु चिहुंटिय जाय॥
जानु चिहुंटिय जाय। हाय आकपंत छुट्टिन॥
तीन कोडि हज्जार सठि। तीरथ करि अट्टन॥
न्हावंत सरोवर दछिन महि। पातक पुट्टि विछुट्टि गय॥
तीरथ कपाल मोचन तहां। नाम परठि परसन्न हुअ॥
छं० ॥ १६६ ॥

(१) ए. कृ. को.-विप्र प्रदच्छि प्ररह्यौ गहि ”

कवि का कहना कि हम स्वारथी और आप परमार्थी जीव हैं सो कृपा कर शाप के उद्धार का उपाय बतलाइए।

कवित्त ॥ तुम जप तप पर हेत। देत वपु रिषि दधीच परि ॥
तुम श्रुति श्रुति कहि सकै। तुम्ह पद चिन्ह धरै हरि ॥
हम स्वारथ लगि फिरहिं। इष्ट स्वारथ [1]आराधन ॥
हम संसारी जीव। हम सु अपराधह साधन ॥
नन सरन आन तुम सरन तजि। रप्पि सरन प्रथुराज हथु ॥
कटै सराप जा पुन्य करि। सो बताउ बरदान तिथु ॥ छं० ॥१६७॥

ऋषि का कवि से नाम ग्राम पूछना और कवि का अपना और राजा का परिचय देना।

[2]चंद बदन मुन्निंद। कहै तुम नाम ठाम कहु ॥
तो मुष सबद रसाल। सुनत सुष होय हियैं बहु ॥
तबहि भट्ट भापंत। स्वामि मो नाम चंद कवि ॥
वह नरिंद प्रथिराज। लज्ज भरि रह्यौ देव दवि ॥
अब ह्वै क्रपाल प्रभु उद्धरहु। कछुक देउ बरदान फिरि ॥
अप्पौ नरिंद फिरि उद्धरहु। जिहि पारंगत [3]होहि तिरि ॥
छं० ॥ १६८ ॥

ऋषि का संकुचित होकर राजा का प्रबोध करना और कहना कि शहाबुद्दीन तेरे हाथ से मारा जायगा।

चौपाई ॥ हौं बालक दुरवासा तनौ। सत्ति बात सब तासौं भनौं ॥
इह न्रप तोहि दियौ बरदान। तेरे कर मरिहैं सुलतान ॥
छं० ॥ १६९ ॥
यों कहि रिषि अंतर सकुचान। मुह अग्गै न्रप मुष कुम्हिलान ॥

---

(१) ए. कृ. को.-आधारन। (२) को.-चंद वदन्न सुन्निंदं। मो.-चंद वचन्न मुनिंद।
(३) ए. कृ. को.-होत।

देपि दया उर भई मुनिंद । बोल्यौ रिजु दुज आउ नरिंद ॥
छं० ॥ १७० ॥

पुनः ऋषि बचन कि कवि राजा और शाह एक मुहूर्त में मरेंगे ।

दूहा ॥ न्रप चहुआन रु चंद कवि । अरु गोरी सुलतान ॥
इक महूरत में मरैं । इह हम दिय वरदान ॥ छं० ॥ १७१ ॥

ऋषि के वचन सुन कर पृथ्वीराज का प्रसन्न होना ।

आनंद्यौ प्रथिराज सुनि । निज मन धारै विचार ॥
देहन दनु देवन रहै । साह महित छत सार ॥ छं० ॥ १७२ ॥

पृथ्वीराज का अंतरप्रवोध ज्ञान ।

कवित्त ॥ देह न देवनि रहै । रहै नह देव दान वनि ॥
देह न मुनि पैं रहै । देह नह रहै मान वनि ॥
देह न नागन रहै । देह नह रहै नगन गन ॥
देह न जच्छन रहै । देह नह रहै पुन्य जन ॥
रहि है न देह गंध्रब्ब वर । गुन्भिझक सिद्ध अवद्धि बल ॥
मन मझ्झ कहै चहुआन चित । रहै लैन हारे सु जस ॥
छं० ॥ १७३ ॥

पृथ्वीराज का ऋषि के पैरों पड़ना और ऋषि का राजा का सिर स्पर्श करना ।

दूहा ॥ यों विचारि प्रथिराज उर । लग्यौ रिष्पि कै पाय ॥
मन में सकुचि [1]मुनिंद कर । न्रप शिर लयौ उचाय ॥छं०॥१७४॥

कविचन्द और मुनि का प्रश्नोत्तर ।

(कवि वचन)

तब मुनिंद सौं चंद कवि । पूछत इह अंदेह ॥
सकल कुटंबी लोक में । कोन सु सांचो नेह ॥ १७५ ॥

---

(१) मो. नरिंद ।

मुनि वचन।

पूरन सकल विलास रस। सरस पुच फल दान॥
अंत होइ [1]सहगामिनी। नेह नारि को मानि॥ १७६॥

कवि वचन।

गाथा॥ किं तन चिभुवन सारं। किं तन मध्य सार रिष ईसं॥
किं पुनर पिता मक्क्षं। [2]सारं तत्त उत्तरं [3]देहं॥ छं०॥ १७७॥

मुनि वचन।

नर तन नर पुरसारं। नर तन मद्धि सार तप सीयं॥
सहि देही महि सारं। बाचं इक बुध [4]बड्डाई॥ छं०॥ १७८॥

कवि वचन।

को दुज धरम कथेयं। को न्रप धरम परम संसारं॥
किं बनिकं धन धरमं। किं धरमं सूद्र सहायं॥छं०॥१७९॥

मुनि वचन।

श्रुति पठनं दुज धरमं। भू भुज धर्म्म नित्त नित्तेयं॥
दया सुधर्म्म बनिक्कं। सेवा ध्रम सुद्र सहाइ॥ छं०॥ १८०॥

कवि वचन।

दूहा॥ कोन नगन अंबर छतें। को ढंको बिन चीर॥
को हारै अंधौ फिरै। को जीते तजि तीर॥ छं०॥ १८१॥

मुनि वचन।

जस हीनौ नागौ गिनहु। ढंक्यौ जग जसवान॥
लंपट हारै लोह छन। त्रिय जीतै बिन बान॥ छं०॥ १८२॥

कवि वचन।

राजरिद्धि [5]बाधंत क्यों। किहि मग राज बिलाय॥
[6]भूषेउ न्रप छंडै कहा। कहा भूष मं पाय॥ छं०॥ १८३॥

---

(१) मो.-सहचारिनी। (२) मो.-नारं। (३) ए. कृ. को.-देहि।
(४) मो.-बरदाई। (५) ए.कृ.को.-मेटे कवन। (६) ए. कृ. को.-भूषौ।

मुनि वचन।

रिषि पूजा लच्छी बढ़ै। रिषि अपमान बिलाय॥
रिषि बिभूति भूपै तजै। अनि वित भूपै पाइ॥ छं० ॥ १८४ ॥

कवि वचन।

किंहि मग कंटक विकट है। को मग सरल सुभाइ॥
किन मग चलियै रैन दिन। किहि मग परै न पाई॥
छं० ॥ १८५ ॥

मुनि वचन।

हरि विमुषें मग कंटकी। हरि मग सरल सुभाइ॥
हरि मारग निरभै सदा। अनि मग पोचौ पाइ॥ छं० ॥ १८६ ॥

कवि वचन।

को मैलौ पट ऊजलौं। को उज्जल पट मैल॥
कौ भूल्यौ मारग लगै। को भूल्यौ ही गैल॥ छं० ॥ १८७ ॥

मुनि वचन।

मन मैलौ मैलो वहै। मन उज्जल सु पवित्त॥
हरि विमुषे भूले फिरै। भूलि न हरि जिन चित्त॥ छं० ॥ १८८ ॥

कवि वचन।

भुगति मुगति किन निकट है। कातें दूरि दिपाइ॥
किन आवध जग जिति यहि। किन हारत जगजाइ॥छं०॥१८९॥

मुनि वचन।

समदरसी तें निकट है। भुगति मुगति भरपूर।
विषम दरस वा रैन तें। सदा सरवदा दूरि॥ छं० ॥ १९० ॥
पर योमिनि परसै नहीं। ते जीते जग बीच॥
परतिय तक्कत रैन दिन। ते हारे जग नीच॥ छं० ॥ १९१ ॥

सुजस बान जग में जिये। कुजसी मृतक समान ॥
दाता जागै रैन दिन । सोवै सूम अजान ॥ छं० ॥ १९२ ॥

कवि बचन ।

को बैरागी ग्रेहही। को रागी बनवास ॥
को लूटै परलच्छि कों । काते लच्छि उदास ॥ छं० ॥ १९३ ॥

मुनि बचन ।

निरलोभी वैराग ग्रह । लोभी बनहूं राग।
पटुभाषी परबत भषै। कटुभाषी तिय भाग ॥ छं० ॥ १९४ ॥

कवि बचन ।

किहि मुनि कोन अराधि है । विनही औसर देपि ॥
तुम बचननि सुष पाइयै। तुम दरसन सु विसेप ॥ छं० ॥ १९५ ॥

मुनि वचन ।

रूप कार कवि बैद बरु। मरमी असिधर होइ ॥
बंदी जन धनवंत जड़ । ए आराधी लोइ ॥ छं० ॥ १९६ ॥

कविचंद और सब साथियों सहित राजा का डेरों को वापिस चलना ।

इतनी सीष रिषीस की। सुनि पग बंदे चंद ॥
सम नरिंद असवार ह्वै । चलै दलै आनंद ॥ छं० ॥ १९७ ॥

सेन सुरन सहनाइ के। नहि निसान धुंकार ॥
चोधिन चमक चिराक की। नह बंदी हुंकार ॥ छं० ॥ १९८ ॥

बिन बेरां डेरां गयौ। भूपति भयौ उदास ॥
मरन हान सें मग्गई। सुनिय सकल रनिवास ॥ छं० ॥ १९९ ॥

डेरां लगै डरावना । रह्यौ कटक सब मौन ॥
नर नारी नारी छतें। मनो प्रान किय गोन ॥ छं० ॥ २०० ॥

उक्त शाप का संवाद पाकर रानी संयोगिता का दुःख करना।

चित्त चिंति संयोगिता। कोन कियौ मैं पाप॥
भोग समें संयोग में। कंतह भयौ सराप॥ छं० ॥ २०१ ॥

कवित्त ॥ कै मैं कट्टी जाय। गाय चरती हंकारी॥
कै कांसौ पग छियौ। धूम मैं नागिनि मारी॥
कै न्याति विप्र परहन्यौ। कह्यौ नन वैंन सासु कौ॥
तेल लोंन वर हेम। चोर घर धन्यौ कासु को॥
कीनी न कानि कै जेठ की। कै बोलत ज्वाब न दयौ॥
बुल्ल्यौ सराप रिषि कंत कौं। सती हारु कें हर लयौ॥
छं० ॥ २०२ ॥

डेरों से चल कर दिल्ली आना और ब्राह्मण को दान देकर महलों में प्रवेश करना।

दूहा ॥ दान दयौ रनिवास नें। अरु दिय दान नरेस॥
अयन उभय मैं नयन डर। कियनिय महल प्रवेस॥छं०॥२०३॥
गैर महल राजन भयौ। सहित संजोइय वाम॥
पोरि न रघ्यो पोरिया। जे इतवारी धाम॥छं०॥ २०४ ॥

इति श्री कविचंद विरचिते प्रथिराज रासके राजा आषेट चष श्राप नाम त्रिसठवों प्रस्ताव संपूर्णम् ॥६३॥

(१] मो.-नाय या माय।

धीरपुंडीरनाम प्रस्ताव ॥

[चौसठवां समय ।]

संयोगिता व्याह के ढाई वर्ष बाद राजा पृथ्वीराज का अपनी सामंत मंडली के बल की परीक्षा करने की इच्छा करना ।

दूहा ॥ सुष विलास संजोगि सम । विलसत नव नव नित्त ॥
इक दिन मन में उप्पनी । ऐ ऐ वित्त कवित्त ॥ छं० ॥ १ ॥

कवित्त ॥ मास तीस दिन पंच । महिल संझोज राजवर ॥
जुद्ध घटै सामंत । बैर सु विहीन सँवर पति ॥
सुभर सूर सामंत । उरह भुज पनवर जान्यौ ॥
तीन मास तिय दिननि । तिनहि संसार सु मानौ ॥
तन तुंग तेज्ञ वावन्न मन । तन तिहित्त उच्चौ न गिन ॥
कैमास विना आमंत घटि । हुं जानत आभंग इन ॥ छं० ॥ २ ॥

पृथ्वीराज का कन्नौज से भागकर आने पर पछतावा करना ।

दूहा ॥ जुध अनेक सामंत करि । नहुं भाग्गौ कहुं ठौर ॥
हम भज्जन कनवज्ज मति । अब दिष्यौ भर और ॥ छं० ॥ ३ ॥
कबही पिट्ठि न मे दई । अब लग्गी इह षौरि ॥
करौं परीछा सूर भर । जित्तौ असुर वहोरि ॥ छं० ॥ ४ ॥

बलिभद्रराय का राजा से कहना कि सामंतों की परीक्षा के लिये जैतखंभ बनवाया जाय ।

कवित्त ॥ तब कहै राव बलिभद्र । सत्त सामंत अभंगम ॥
इन बल घटै न राज । मंत घट्टै बर आगम ॥

रुक्क सुवर सुर अंत । तीर वाहै वल मुक्कै ।
पंष सवद संभरै । मद्द गजराजह चुक्कै ॥
सामंत संगि प्रथिराज सुनि । जैत षंभ वर फोरियै ॥
पारष्षि देषि चल वीर न्टप । जीय सँदेह न जोरियै ॥छं०॥५॥

निगमबोध (तीर्थ) स्थान पर जैतखंभ का बनवाया जाना निश्चय होना ।

दूहा ॥ सुनिय मंच प्रथिराज बर । मनि परधान सुमान ॥
जैत षंभ मंडन सु मति । निगम बोध वर थान ॥ छं० ॥ ६ ॥
सुरिल्ल ॥ जिन दिन बल सामंत सु घट्टै। जानि मन्नि प्रथिराज सु थट्टै ॥
बाल टद्ध जोबन बलकाजं । जैत षंभ चिंत्यौ प्रथिराजं ॥ छं० ॥७॥

श्रावण मास वर्णन ।

कवित्त ॥ श्रावन भावंन भवन । रवन रवनी मिलि राजहि ॥
सविता जेम समुद्द । धरनि धारा हर साजहि ॥
पच्छिम पवन प्रसारि । धार जल हर धर हरयौ ॥
षाल नाल भरि ताल । भरत जलनिधि जल भरयौ ॥
परि सीर सोर उठि चोर जिय । जीवन जाचक ओल गन ॥
नर नारि चतुर वर चित्त कों । हरियालो सावन हरन ॥छं०॥८॥

नवदुर्गा में सामंतों के पूजा पाठ और उनके उत्साह का वर्णन ।

ग्यारह से बावन्ना । मास आसोज विपष्षिय ॥
नव दुग्गौं नव दीय । नवल सामंत न रष्षिय ॥
नव सत्ते नव दीह । महिष जोगिनि भिल्लारहि ॥
हवन मंच दुज पढहि । पूजि दुग्गा जग्गारहि ॥
उच्छह उतंग तिहि राइ पर । जुरन तेग बंधहि न्टपति ॥
संपदा चिति चहुआन की । प्रथीराज तेजह तपति ॥छं० ॥ ९ ॥

पृथ्वीराज का सब सामंतों को जैत खंभ के निर्माण और अपनी आज्ञा की सूचना देना ।

तट्टह अट्टह अट्ठ । अठै अगदीह सु मंडिय ॥
अट्ठ अट्ट प्रमान । सहर सिंगारि सिकंडिय ॥
आहुट्ठं सै दून । राज अग्या भर मंडिय ॥
जैत षंभ जैतान । जोर जुद्दा जो पंडिय ॥
आनंद तेज अग्या सु भर । भूपर भूप भुअप्पतिय ॥
मानिक्क राइ कुल उद्धरन । प्रथीराज छत्रद्दपतिय ॥ छं० ॥ १० ॥

पृथ्वीराज का जैत खंभ बनवाए जाने की आज्ञा देना ।

एक समैं प्रथिराज । वत्त जंपिय भर सारनि ॥
अष्ट धात करि षंम । सिंगि कट्टै बल पारन ॥
तिहि समान नहि वीर । विजय दसमी इह किज्जै ॥
अप्प अप्प बल तोकि । इष्टनिय जाप जपिज्जै ॥
सुनि सूर सजल आनंद मन । पुनित महल राजन उठ्यौ ॥
सुनि धरि जाइ जालंध दर । प्रसन करन कारन हथ्यौ ॥
छं० ॥ ११ ॥

चंद पुंडीर के पुत्र धीर पुंडीर का जालंधरी देवी की उपासना करना ।

सगति भोग संसार । सगति कर जोग जुगति जग ॥
सगति मुगति वर दैन । सगति आधार नाग नग ॥
सगति महा सुख करन । सगति विन सुष्य न पावै ॥
सगति राज निज काज । सगति नर सुर जय लावै ॥
इह जानि धीर मन ध्यान धरि । सगति उपास विचार वर ॥
आनंद कंद न्रप चंद सुअ । धीर जाप लीनौ सुधर ॥ छं०॥१२॥
सुभ असोज रवि मूल । सिद्धि जोगह सुष कारिय ॥
दुर्ग साहि थापनो । धीर आराधि विचारिय ॥

धन सुलगन सुष गरुअ । धीर जालपा उपासै ॥
ग्रह सुथान मति मान । कनक दुति षोड़स भासै ॥
एकंग मंत सद्दै सुमन । भूमि सयन सुद्दह 'वसन ॥
गो दुद्द हार बर इक्कलै । व्रत उचार बोलन रसन ॥छं०॥१३॥

पूजन विधि, देवी का प्रसन्न होना और धीर पुंडीर का वर मांगना ।

पद्धरी ॥ सहि घाम छाय वासं सुसुभ्र । बासना उग्र कर पूर उभ्र ॥
अन्यन प्रवेस तिन ग्रह पवित्त । कारज्ज कज्ज दै आइ मित्त ॥
॥ छं० ॥ १४ ॥

आसनह हेम चयकोन कुंड । कर सेत माल जपि उंच तुंड ॥
परिधान वस्त्र सारत्त रज्जि । अंबरह सेत उप्पर सु सज्जि ॥
छं० ॥ १५ ॥

आसन्न एज अग्गैं अनूप । स रजित तथ्थ जालंध रूप ॥
तस अग्ग संग सेरह बतीस । धज धोम पग्ग अग्गै सु कीस ॥
छं० ॥ १६ ॥

सुध्यान जाप दस सहस होम । धरि ध्यान होम जज्जिय सु कोम ॥
धरि हीय ध्यान जालंध देवि । मन वच्च क्रम्म चिंतिय सु तेव ॥
छं० ॥ १७ ॥

चय पष्प वीच भय निसा जाम । आदिष्ट देवि बुल्लिय सु तास ॥
मँगि मंगि मंगि नर बीर सत्ति । इछंत काज जो सुझ्झ सत्ति ॥
छं० ॥ १८ ॥

बुल्ल्यौ सु बीर जालंध माइ । सु प्रसन्न देवि जो सुझ्झ भाइ ॥
बर एक सुद्द अप्पहु सु अम्ह । फुट्टै व संग मो जैत षंभ ॥
छं० ॥ १९ ॥

जंपै सु देवि रे धीर धीर । फुट्टै व जु षंभ मो सक्ति वीर ॥
राजन सु तोहि अप्पै पसाव । ग्रामह सु थान आदर सु भाव ॥
छं० ॥ २० ॥

(१) ए. कृ.-सरन ।

आये सु जात सुझझह सु रंभ । फुट्टै सु संग तो जैत पंभ ॥
चिंतै सु चिंत मुझ जहां चित्त । जहं जहां संकट तो पास सत्त ॥
छं० ॥ २१ ॥

जंपै सु धीर जालंध मात । फुट्टै सु पंभ आंउ सु जात ॥
फुट्टै जु संग मो सकति तिप्प । भुंजों सु अन्न तो दरस दिप्पि॥
छं० ॥ २२ ॥

वरदान दियौ देवी सु धीर । नीसान प्रान वज्जै सु भीर ॥
संमरें धीर देवी सवद्द । छुट्टै सु दुप्प नर वै मरद्द ॥ छं०॥ २३ ॥

देवी का वरदान ।

कवित्त ॥ हेम दंडि सिर मंडि । मंच द्रिग आन मिलाइय ॥
धूप दीप साया सु गंध । जंच अरु ध्यान जु पाइय ॥
नारिकेल फल सुफल । महिप पारंभ पंच विय ॥
विनै विद्धि सारंत । करिय पूजा अनंद जिय ॥
वर धीर मिली मग्गी सुवर । प्रसन उमा परतप्प हुअ ॥
चर चित्त वीच करहि न कछू । पंभ फोरि जैपत्त तुअ॥छं०॥२४॥

धीर पुंडीर का कुमारी कुमारियों को भोजन करा कर उपारन करना ।

दूहा ॥ कुम्मारी कुम्मार सहु । वोलि सु भोजन दीन ॥
अनंत विप्र भोजन विविध । धीर सु पारन कीन ॥ छं० ॥ २५ ॥
अति आनंद सु धीर किय । भयौ सूर रस भास ॥
अनत विप्र भुंजे भगति । दिय सवद्द पिन तास ॥ छं० ॥ २६ ॥

जैतखंभ का वर्णन और सामंतों का नित्य प्रति अभ्यास करना ।

कवित्त ॥ जैत पंभ मंडयौ । स्वामि सामंत परष्पन ॥
अष्ट धात कर अष्ट । रेष गज अष्ट सु रष्पन ॥

अष्ट मुष्टि चा रूष्टि। वाहि कहूँ जु संगि बर ॥
इष्ट देव सत सील। संच आभंग रंग भर ॥
तारून्न तुंग सह सत्त भर। इस अभ्यास दिन प्रति करहि ॥
इक मुट्ठि दु मुट्ठि ति मुट्ठि लंगि। किहुन सार दुअ अँग सरहि॥
छं० ॥ २७ ॥

धीर का जैतखंभ भेदने के लिये जाना।

चकित चित्त चहुआन। सूर सामंत न सुभ्भहि ॥
नर पष्षर भर भिरन। षंभ सों षिभ्भि षिभ्भि भ्भभ्झहि ॥
तीन पष्ष दिन पंच। बीर नीसानन बज्जिय ॥
सबर बैर सुरतान। जाहि संमुह करि सज्जिय ॥
पुंडीरराय चंदह तनौ। धीर नांउ बै अंकुरिय ॥
रन सिंह कंध यप्परि तरकि। हेम तुल्य लिन्नौ तुरिय ॥छं०॥२८॥

धीर पुंडीर की अवस्था और बल का वर्णन।

नव बिय बरष प्रधान। तुंग लच्छिन उतंग तन ॥
चव्यौ सिंह सामंत। बीर पुंडीर धीर घन ॥
ताजी तुंग उतंग। बैस बीय पष अढारै ॥
मीरन रत्त सु गत्त। पियै जल अभ्भ क चारै ॥
बर चंद जंपि चंदह तनौ। विभर मेछ बत्र अंकुरिय ॥
तन पष्षि परष्षन न्रिपति बल। चढि तुरंग धंधरि परिय ॥
छं० ॥ २९ ॥

अश्व वर्णन।

विराज ॥ लियौ सेत ताजी, सुधा जीति साजी। तुला हेम तोलं, महालीन मोलं॥
छं० ॥ ३० ॥
अनूपं ऐराकी, सहै ना सुधाकी। दुअं गात उच्चं, सरूपं सकुचं ॥
छं० ॥ ३१ ॥
घड़ै घाल नालं, तगै लंघि तालं। भरै दान भारी, कहां पंषि कारी॥
छं० ॥ ३२ ॥

धीर का खंभ के पास पहुंचना ।

दूहा ॥ ध्यान उमा करि सुमन धरि । धीर बीर मन लाइ ॥
जैत पंभ फोरन सु वर । भौ जालंधर आइ ॥ छं० ॥ ३३ ॥

पृथ्वीराज का ससैन्य जैतखंभ पर जाना और धीर का आना ।

कवित्त ॥ बिहँसि चल्यौ चहुआन । सूर सह सेन बुलायौ ॥
जैत पंभ रोपयौ । लोह मन सीस मिलायौ ॥
भयौ राइ आयेस । कुंअर सब बिंझौ पेलहु ॥
सेंधि तीर तरवार । संग सरवर कर मेलहु ॥
चिहुटै न चोट दुअ अंगुरिय । उहित संग मध्यै धरिय ॥
अप्पी सुराइ तिहिं अप्प करि । भनहु सूर सह अहि उहिय ॥
छं० ॥ ३४ ॥

दूहा ॥ दिवस अट्ठ पुज्जिय सकति । नवल नवम्मिय दीह ॥
सिलह सुरंग सु मंडि किय । चल्यौ तुरंगम सीह ॥ छं० ॥ ३५ ॥

भुजंगी ॥ चल्यौ सिंह सामंत पुंडीर भारी । धरै कंध सोहैं सकत्ती करारी ॥
जुरै जूह कालंग्रसै सार सारै । पिभै पंभ तेजी दुह्नं अंग डारै ॥
छं० ॥ ३६ ॥

रुरी भेरि भंकार नीसान घाई । उठी वेद विप्रान विप्रान झाई ॥
तपै तेज वाही चिभागी ततारी । उनें धात में धात कढ्ढी निनारी ॥
छं० ॥ ३७ ॥

मिटै रेन रायां दिपो अंग चंडी । तुला सीर दंडी मनो धर्म मंठी ॥
छं० ॥ ३८ ॥

पृथ्वीराज का आज्ञा देना और धीर का जैत खंभ भेदना ।

कवित्त ॥ हो रावत मंडली । कोरि मच्छर मन मंडहु ॥
सो तुरंग तन षिस्यौ । संग वाहिर गहि कढ्ढहु ॥

बंस कुली छत्तीस। करहु बल जावल भावै ॥
संगि न टारी टरै। जंतु षिन अद्व डुलावै ॥
अप्पौ तुरंग चहुआन तव। विहसि धीर पुंडीर लिय ॥
उप्परिय जैत षंभह सहित। तव पसाव प्रथिराज किय ॥
छं० ॥ ३९ ॥

पृथ्वीराज का धीर को सिरोपाव जागीर आदि देना।

भुजंगी ॥ कियौ राय परसाद पुंडीर जोटं। मही मं सु कामं जुहिं सारकोटं॥
दिये पंच हज्जार ग्रामं सु थानं। झंडा माहि वैरष्प पीलं निसानं॥
छं० ॥ ४० ॥
रष्षतं बष्षतं तुरंतं उचायौ। थप्यौ सब्ब सामंत पुंडीर जायौ ॥
तबै बोल बोले सु उच्चै अचाए। कहै चाय चहुआन सों बोल चाए॥
छं० ॥ ४१ ॥
अबै मरन कै कारन कै करहिं साईं। बाधन कै गहन कै सुरतान घाईं॥
छं० ॥ ४२ ॥

राजा का धीर पर अपनी पैज प्रगट करना।

कवित्त ॥ च्यारि वचन चहुआन। दिए वर धीरं अचाये ॥
सरनं काम चहुआन। करनं अरि हरनं बताये ॥
गहे धीर सुरतान। हथ्थ अप्पन चहुआनं ॥
जोध कीस धोषंत। करै सु विहान प्रमानं ॥
जो धीर राइ इम उच्चरै। काम साम साक्रत करै ॥
प्रथिराज काय भंजन भिरन। धर भज्जत सम्हौ मरै ॥ छं०॥४३॥

धीर का मस्तक नवा कर राजाज्ञा को स्वीकार करना।

आगें धीर सधीर। हथ्थ चहुआन मथ्थ दिय ॥
आगें सूर ससूर। ताप उतराध तेज लिय ॥
आगें बर कैलास। ग्रहै पीनाक सु साजें ॥
आगें कंचन तेज। धरे नग तेज विराजे ॥

Nagari-Pracharini Granthmala Series No. 4-18

THE PRITHVÍRÁJ RÂSO

OF

CHAND BARDÁI,

EDITED

BY

Mohanlál Vishnulal Pandia, & Syam Sundar Das, B. A.
With the assistance of Kunwar Kanhaiya Ju.

CANTOS LXIV to LXVI.
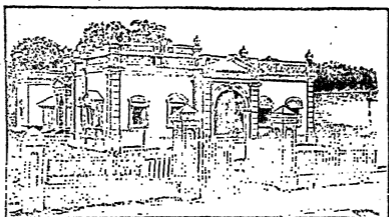
महाकवि चंद बरदाई

कृत

पृथ्वीराजरासो

जिसको

मोहनलाल विष्णुलाल पंड्या और श्यामसुन्दरदास बी. ए. ने
कुँअर कन्हैया जू की सहायता से

सम्पादित किया।

पर्व्व ६४ से ६६ तक.

PRINTED BY THAKUR DAS, MANAGER, AT THE TARA PRINTING WORKS, AND PUBLISHED BY THE NAGARI-PRACHARINI SABHA, BENARES.

1910.

मूल्य १।)] Issued 10th August 1910. [Price Rs. 1/4/.

सूचीपत्र ।

—o—

आगें सु धीर पुंडीर वर। अरू स्वामि हथ्थ वर मथ्थ दिय॥
सामंत जैत चामंड वर। मित्र हथ्थ दिस सयन किय॥
छं० ॥ ४४ ॥

चामंडराय का कहना कि धीर क्यों लड़कपन में आकर व्यर्थ की प्रतिज्ञा करते हो, दोनों पक्ष का बल तो तौलो।

हँसि वोले चामंड। धीर सुनि बात हमारी॥
पातिसाह दल विषम। तुरी अगनित है भारी॥
घर बैठे अप्पनै। बोल तुम बहु बोलहु॥
ज़ेर भँरन कहौ वथ्थ। सिंघ सम कुंजर तोलहु॥
रे सुनहि सूर पुंडीर कुल। एतो क्षुद्र न तुम कहहु॥
जिहि सात फेर हस्ती फिरहि। किम सु साहि जीवत गहहु॥
छं० ॥ ४५ ॥

दूहा॥ घर सूरा मठ पंडिया। गाम गमारां गोठि॥
पंच मक्ष्क्ष वोलत वयन। धूज विछुट्टिय होठ॥॥ छं० ॥ ४६ ॥

गाथा॥ अलसायं जे न सा पुरिषेण। जे अप्परास सुचरिया॥
ते पथ्थर टंकि उकीरी अग्र। कवही नह अनहा हुंती॥
छं० ॥ ४७ ॥

रास हरडियं कु नरिंद भासियं। इयर लोय पड़ि वन्नं॥
पुब्ब उठानय गुरुअं। पछालहु अंचलहु अंचं॥ छं० ॥ ४८ ॥

सुर सिरि मूलं बड़ बीज पल्लवं। सुअन लोइ पड़ि वन्नं॥
पुब्ब ठानय लहुअं। पछा गरुअंच गरुअंचं॥ छं० ॥ ४९ ॥

धीर का कहना कि मैंने जो कहा है वही करूंगा।

कवित्त॥ हौं पुंडीर नरेस। हौं सु झुझ्झार सबर बर॥
हौं सुत चंदह तनौ। ढिल्लि दल देहुं चिविध घर॥
मोहि इष्ट बल सकति। मोहि बानै बर सज्जित॥
मो सम अबर न बीर। साहि उप्पर दल गज्जित॥

हौं सुनौ सच, दाहन दहन। हौं सुति नहिं तिन वर गनौ॥
वर वीर धीर इम उच्चरै। गहु साहिव हसतौ हनौ॥छं०॥५०॥

धीर की वीर प्रतिज्ञा की चरचा का सर्वत्र फैल जाना।

दूहा॥ बढि अवाज ढिल्लिय नगर। धीर ग्रहन कह्यौ साहि॥
हँसिहि स्त्रर सामंत ए। कुटिल दिष्ट मुष चाहि॥ छं०॥५१॥

एक महीने पांच दिन में यह समाचार उडता हुआ शहाबुद्दीन के कान तक पहुँचा।

कवित्त॥ मास एक दिन पंच। वत्त दिसि विदिसि न हूआं॥
चंद पुत्त कौ चाव। पेषि प्रगट्यौ जस धूआं॥
दिसि दष्षन पुव्वाह। रहस उत्तर पच्छाहं॥
गल्ह वान गल्हा करंत। चिहु चक्क सवाहं॥
अदभुत्त वत्त संसार सुनि। पुंडी राइ हरट्टिया॥
गज्जनै साहि साहाव दर। सुष सुष कित्ति प्रगट्टिया॥ छं०॥५२॥
मंगि दोय वर मात। राज प्रथिराज महाभर॥
जैत षंभ जित्तनह। साहि बंधन आनन धर॥
तव तुट्टिय चवसट्ठि। दियौ बल षंभह फोड़न॥
अरु जु साहि बंधनह। ताहि वर बंक पधीरन॥
इह कहत मात दिन्नौ सु बच। सुनत साह अचरिज्ज हुआ॥
पिष्षह सु बीर बल कारनै। जैत षंभ आरंभ किय॥छं०॥५३॥

दूहा॥ बज्या नाम पुंडीर तुअ। लज्जा दान सु षग्ग॥
नित्त निहाई वत्तरी। कित्ति दुहाई मग्ग॥ छं४॥५४॥

जैत प्रमार और चामंडराय के मन में धीर की ओर से डर पैदा होना।

पद्धरी॥ दुहु मग्ग नाम पुंडीर धीर। नीसान प्रात बज्जंत धीर॥
पामार जैत चावंड राय। तिट्ठान राग लग्गेति घाय॥छं०॥५५॥

कल मली चित्त बहु भंति आइ ।* * *
दीवान मान आदर अदब्ब । षिन षिन सुताय लग्गै सु गब्ब ॥
छं० ॥ ५६ ॥

बलिभद्र बीर जामानि जद्द । षीचीय राव षिक्षि कहिय सद्द ॥
बग्गरिय राव देवाधि देव । आजानवाह वोलंत मेव ॥
छं० ॥ ५७ ॥

रावन्न राम गुज्जरी तेह । लौहान वत्त पुंडीर छेह ॥
उपगार चंद चिंत्यौ सु तभ्भ । रष्यौ पूर चालुक्क मभ्भ ॥
छं० ॥ ५८ ॥

तापंत राज सज्जी न बज्जि । फट्टंत तोन तम कवन कज्ज ॥
घटि बटित और गावार रंग । हर गाम धाम देसा दुरंग ॥
छं० ॥ ५९ ॥

ता सुनिय सत्त उद्वंत ञित्त । जगि जलनि जानि सिंच्यौ सु घ्रत्त ॥
गांमी गमार पुंडीर सूर । तिहि जाइ तुट्टि सुरतान पूर ॥
छं० ॥ ६० ॥

दादुरति कोट जिहि भार सद्द । पुज्जै न कोइ कोकिलति बद्द ॥
आचरन सिंघ जंवुक कुलाइ । भज्जंत प्रात मिलि सुगह ताय ॥
छं० ॥ ६१ ॥

बंबर विरद्द वामा सु पानि । बंधे सु कोन बर सूर तान ॥
उब्बरे बीर चामंड राय । जिन वीय बंस सामंत पाइ ॥
छं० ॥ ६२ ॥

हम लज्ज सूर सामंत भार । प्रथिराज राज बल उद्ध सार ॥
अपराध बंध धरि धात षंभ । जानै न जुद्ध सुरतान गिंभ ॥
छं० ॥ ६३ ॥

प्रथिराज ताहि अप्पै मुलक्क । हिंसार कोट पट्टन पलक्कि ॥
गज बाज बीर बैरष्य सेत । नीसान मेघ रन पील नेत ॥
छं० ॥ ६४ ॥

बरजै न कोन सामंत राइ । इहि मुष्य अप्प रहनो न जाइ ॥

सुभ्भ्भ्भ न काम कोई प्रमान। चहुआन पचाऱ्यौ सकट स्वान ॥
छं० ॥ ६५ ॥

अरदास कायस्थ का शहाबुद्दीन को धीर की प्रतिज्ञा का सारा हाल लिखकर सूचना देना कि धीर सपरिवार जालंधरी देवी की पूजा करने जायगा।

कवित्त ॥ लिखि अरदास जुगत्ति। जैत सुरतान सुपट्टिय॥
कोतूहल गूजर गमार। सुखही सुख ठट्टिय ॥
नाना ही गोचर गियान। पांवार पुंडीरां ॥
राज छज्जि रवि देउ। सूह सज्जल सम्मीरां ॥
मक्कक्कांह गुज्ज अंतर कियौ। वोलां हीरा वत्तियां ॥
सांइनो संग बंछै मरन। सोहै साहस छत्तियां ॥ छं० ॥ ६६ ॥

बचनिका ॥ बज मांम हमंद ईन। सुलतान साहाव दीन ॥
तुरकमां ताज। गज्जने वीर बाज ॥
अरदास जैत काज। लिखी बंदगी साज॥
तिन उनह कौ गुनाह। डिभूरू बिरद वाह ॥
बहुत कुल षंचना। देवी दिवाना ॥
दरवार हिंदवाना। गज्जने साहिपति साहिपनाह ॥
छं० ॥ ६७ ॥

कवित्त ॥ इति अरदास लष दई। जैत गौरी सुबिहानं ॥
ग्रब्ब गमार पुंडीरी। सीस लग्गी असमानं ॥
अवसि मास आसोज। दैव अष्टमि गुरवारं।
पूजि मिसह जालंधि। संग सब्बै परिवारं ॥
इह घात साहि सुबिहान कों। नन्दै सुप बढ़िय कही ॥
बरजंक अचानक रचि बल। तबहि साह से मुष गही ॥छं०॥६८॥

आश्विन की नौ दुर्गा में धीर का देवी पूजने जाना।

गरजि मेघ निंबरिय। सरद सरवरिय अहन्निय॥
जल थल न्निम्मल निज। अकास बह वास अवन्निय॥

हंस वंस सारस सबद्द । कंकोलि कु कंद्दे ॥
सलित सरोवर सन । म्रजाद अमृत कर चंद्दे ॥
रति नद्दय नौमि जहह सुदिय । जल जलह पूजन विहँसि ॥
सिद्धा न सिद्ध करि चंद सुभ्र । अंवह रिपु पारस परसि ॥
छं० ॥ ६९ ॥

धीर का व्रत से पैदल चलना।

दूहा ॥ सूर तेज अति सरद कौ । आगम चढ़े विराज ॥
जालंधर वर परसने । बोल पुवंतर काज ॥ छं० ॥ ७० ॥

कवित्त ॥ चल्ल्यौ लै निज ब्रत्त । जात जालप्प जलप्पिय ॥
प्राय चलत उविहान । पान भोनह तजि तप्पिय ॥
धीर हार इक वार । भूमि संथाह सधारिय ॥
मौंन धारि जप सार । धूप दीपह पुज्जारिय ॥
सामंत अमंतन जानि कै । सकै न दुप टारन दइय ॥
इह दुष्ट कष्ट निज सेव कहुं । जानि जननि प्रग्गट भइय ॥छं०॥७१॥

जालंधरी देवी का धीर को स्वप्न में सूचना देना कि शाह के भेजे हुए गुप्त दूत तुझे पकड़ने आरहे हैं।

निसा मद्धि मातंग । बोल समधीर सु वत्तिय ॥
चोंडराय पामार । साहि संमुह लिपि पत्तिय ॥
अट्ट सहस गप्परी । धीर पकरन तो पट्ठिय ॥
गुपत तेग गहि गोप । भेष कप्पर करि लट्ठिय ॥
पय पय सु तुझ्झ संकट हरौं । बोल बोल सानिध करौं ॥
इम कहत देवि अप्रछन्न हो । तो प्रयज भ्रा सम धरौं ॥छं०॥७२॥

सप्तमी शुक्रवार को धीर का जलंधरी देवी के स्थान पर पहुंच कर पूजन और दान करना।

दिन सुक्रह सत्तमिय । जाय जालंधर पत्तिय ॥
दान न्हान परमान । थान थानह करि अत्तिय ॥

तहं हिंदू वर मुसलमान । लष्प विप्र सुआवहि ॥
जवनिक कुल छत्री । कुलाल षोड़स मिलि धावहि ॥
जानै न कोइ नर भर चपति । प्रवत लग्गि पारस पर्यौ ॥
कोटन सु कोट भंडार भरि । घन सु द्रव्य हाहुलि भर्यौ ॥
छं० ॥ ७३ ॥

जैत प्रमार और हाडा हम्मीर की शाह प्रति सूचना ।

दूहा ॥ तब लिष्यौ कपट कग्गर करह । जैत पमार हमीर ॥
बोल्यौ बोल अचग्गरौ । तिन पकरायौ धीर ॥ छं० ॥ ७४ ॥
गहिय पानि कहि साहि इस । कोइ क्षर मीर मलिक्क ॥
धीरहि गहि आनै निजरि । साहब लह सो सक्क ॥ छं० ॥ ७५ ॥

शाह के धीर के पकड़ लाने का बीडा रखना और गष्षर लोगों का बीड़ा उठाना ।

कवित्त ॥ दिए पान सुरतान । लिए आरिष्य हथ्थ धरि ॥
कहै साहि साहाब । जियत ल्यावहु सु बंधि कर ॥
अट्ठ सहस गष्षरी । नेग गहि चढ़े तुरत्तह ॥
संक न मानौ जाइ । धीर बैठौ बिन मत्तह ॥
संदेस कहौ पुंडीर सों । चलि रावत नहिं संक जरि ॥
तब वेढलेउ चिहु पासु तें । लै आवहु वेसास करि ॥
छं० ॥ ७६ ॥

उक्त गष्षरों का योगी के भेष में जालंधरी देवी के स्थान पर धीर के पास जाना ।

तक्यौ साहि गज्जनै । धीर जालंधर जत्तह ॥
सहस अट्ठ गष्षरिय । भेष करि कप्पर रत्तह ॥
गहि आनौ छल बल । पुंडीर राइ चंद कुम्मारह ॥
कर कगार लिखदिये । भेद राजैत पमारह ॥

तारन तुंग साधक्क सकल । मनों मौन मूरत रचिय ॥
गुन गुपत हथ्थ गुपती धरिय । भुगति मंगि जोगिय हँसिय ॥
छं० ॥ ७७ ॥

छद्म वेषधारी योगियों का धीर से भिक्षा मांगना ।

दूहा ॥ धीर निकट ठाढे भये । कपट हेत सहरूप ॥
जोरि हथ्थ तिन विन्नयौ । भुगति देहि हम भूप ॥ छं० ७८ ॥

गष्षर लोगों का धीर को घेर का गजनी लेचलना ।

कवित्त ॥ सिंध विहथ्थें आव । नाव नगलि उत्तरिय ॥
आनि तथ्थ गजराज । ढाल मभ्भों वैसारिय ॥
अट्ठ सहस गष्षरी । अट्ठ दिसि सेवा सारत ॥
इम आवै भर धीर । रथ्थ वैठौ जनु पारथ ॥
प्रजलोक देह देहह दुनी । दिष्षन भर धर उंमही ॥
जानै कि इन्द्र सुख विष्षनह । उलटि मोर नग उंमही ॥
छं० ॥ ७९ ॥

धीर का गजनी पहुंचना और नगर निवासियों का कौतुक से उसे देखना ।

पद्धरी ॥ आरोहि गज्ज पुंडीर धीर । लै चलै घेरि गष्षर गहीर ॥
गष्षरी सहस अट्ठह प्रमान । नाषिच विंटि सविता समान ॥
छं० ॥ ८० ॥

मुक्क विवाह चिन्हाव धाय । उत्तर्यौ सिंध जोजन सवाय ॥
सव लोक सिंध मंडल जु रेस । दिष्षनह धीर वीरत वरेस ॥
छं० ॥ ८१ ॥

द्वादसह भान मुष प्रगटि जोति । निय उंच थान वहु प्रात होत ॥
कै कहै साहि हनि है कंधानि । दै है सु प्रगट कै कहै दान ॥
छं० ॥ ८२ ॥

इन भंति सहर गज्जन सपत्त । वंदियन विरद आसिष्ष दत्त ॥
संकरह हेम तोलह चिसत्त । निय पाय कढ्ढि किय धीर दत्त ॥
छं० ॥ ८३ ॥

जसु दान डक्कि गज्जन सु देस । इम पत्त द्वार असुरह नरेस ॥
उम्मरा मीर सब मिले आय । दिष्षनह धीर पैजह पराइ ॥
छं० ॥ ८४ ॥

जालीन मध्य देषै हुरम्म । दिषि रूप धीर सुक्कै सरम्म ॥
पुंडीर आइ दरवार चाहि । गज्जनी लोक कौतिग नमाइ ॥
छं० ॥ ८५ ॥

राजद्वार पर दर्शकों की भारी भीड़ होना और गष्षर सरदार का शाह से धीर की गिरफ्तारी का हाल वर्णन करना।

कवित्त ॥ गज्जन वासी लोक । केक पर दिष्षन आइय ॥
चंद पुत्त मुष चंद । कुंद सष जानि सधाइय ॥
मीर मलिक उंमरा । भीर मत्ती दरवारह ॥
ठाम न लब्भै कोइ । ताहि पिष्षन भर भारह ॥
अचरिज्ज भयौ सब सहर में । जब आयौ दरवार क्रम ॥
पुच्छै जु साहि जब धीर सों । बै विरद्द लिन्ना विषम ॥छं०॥८६॥
सुगति देन कहि भूप । इच्छ कप्परी जु तुम कहु ॥
निसा आदि एक लौ । पूजि मूरति सब तुम कहु ॥
बोलि मंगि सहु सिद्ध । फेरि दीनौ हुंकारौ ॥
ठाम ठाम संग्रहिय । फेरि धरियौ धुत्तारौ ॥
जो जनवि पंच उग्यौ अरक । तपत सिंधु सिंधि उत्तरिय ॥
द्वादसी दिवस द्वादस सकल । साहि धीर इक्कत करिय॥छं०॥८७॥

धीर के पकड़े जाने का समाचार चारों ओर फैलना। धीर के षवास "वैजल" का अधीर होकर अन्न जल छोड़ देना॥

कुंडलिया ॥ दह दह कोह दहत्त विन । फिरि फट्टी पुकार ॥
बर षवास लंघन करिय । पानी पन्न अहार ॥

पानी पन्न अहार। धीर सुरतान थान गय ॥
जाम देव गप्परह। भइय आवाज साद भय ॥
मिलिय पलक दरबार। दुनिम लग्गी दर सोह ॥
गो सु पुरह गज्जनै। किरिति फट्टी दह कोह ॥ ८८ ॥

वैजल पवास का स्वप्न देखना।

कवित्त ॥ घालि रष्यौ पुंडीर। धीर धीरत्ति न रुष्यं ॥
पग पोलंत विहथ्य। सिद्ध चोवद्दिसि दिष्यं ॥
जाम देव गष्पह नरिंद। मंच छल सिर पटि नष्यं ॥
तत्तारह पुंडीर। सेछ सिरदार न भष्यं ॥
उप्पारि लियौ सुरतान पै। धीर न धीरत्तव डुलं ॥
मंनि हाम चंद चंदह तनौ। छल विचारि पग्गन षुलं ॥
छं० ॥ ८९ ॥

गहत धीर पावास। संत चरनंनि अरि रुद्धी ॥
तीन सहस विच एक। सीस गुपती आलुद्धी ॥
निसा मद्धि चमचमी। रीस झारी तन भग्गौ ॥
कूट वज्र भष त्रुटि। धाय सह परवत लग्गौ ॥
सत अद्ध कोस वाहत सुवर। फिरि पच्छी आइय उकति ॥
पावास चंद पुंडीर रपि। प्रात उड्ग्गन तजहि भति ॥ छं० ॥ ९० ॥

दूहा ॥ विपय वास वेंजल सुवर। तन सोइ दिपि भय भार ॥
दिवि नरिंद लंघन करै। पानी पान अधार ॥
छं० ॥ ९१ ॥

हम सहम्म ढिल्लिय सहर। गहन धीर सुरतान ॥
ज़ट्ट सुपन विपरीत तय। वडव बंछ कंधान ॥ छं० ॥ ९२ ॥

तत्तारखां का धीर से कहना कि तूने यह क्या प्रतिज्ञा की।

कवित्त ॥ मिलि पलक षान पट्टान। साह सभा भरि मंडे ॥
तहं सुधीर पुंडीर। आय उत्तर कर छंडे ॥
वे अदान नादान। धात भजै धप लग्गी ॥
जंग रंग चह आन। देस देस घन लग्गी ॥

गामी गमार पुंडीर कुल। वाप भखेरा पुच वट॥
सुरतान षान दिट्टान दिट्ट। कित कुरान चिंते [1]सुचट॥छं०॥९३॥

शाह का सुपना।

सुनौ षान तत्तार। साह लद्धौ सुपनौ निसि॥
है गै निधि चतुरंग। चिंति राजस तामस विधि॥
बर बंधे गजपति नरिंद। बोल बहु उच्चारें॥
वह वह करि उच्चरिय। षग्ग अरियन सिर झारे॥
विप्रीत सुपन बानिक्क हुअ। कर बंधे न्रप बत्त बर॥
सोचयौ सुपन अंहि डिंभरू। बर बंधत छुट्टे वि भर॥
छं०॥९४॥

दर्शकों का बिचारना कि देखें हिन्दू कैदी को शाह क्या सजा देता है।

हरमहार सिंगार। गोष जालौ दिसि जहै॥
षलक षान उम्महिय। साहि हिंदू हुअ बद्दे॥
कौतूहल आलम उदार। दल बद्दल उन्ने॥
हनै कि छंडै साहि। चढी चिंता चित दूनें॥
करतार जाहि रष्षे करां। ताहि रोम बट्टै कवन॥
रहिमान राम बट्टै कछू। ताहि निमष रष्षै कवन॥ छं०॥९५॥

कवि की उक्ति कि मारनेहारे से रखनेवाला बड़ा है।

दूहा॥ मारै जाहि रमा सु बर। तिनह न रष्षै कोइ॥
रषनहारो राम जिन। मारि न सक्कै कोइ॥छं०॥९६॥

एक आपत्तिग्रस्त हिरन की कथा।

कवित्त॥ एन एक आरन्य। चरन पारद्धिय दिष्षिय॥
ता पछ औसर पाई। फंद पारद्धिय षंचिय॥

---

(१) ए. को. सुचंड।

दिस दच्छिन कूकरन। करत घुर घुग्ग सिंह सम ॥
उत्तर दिसा असाध। दंग लग्गौ करार दम ॥
चिहु दिसा रुकि आरिष्ट चव। कहां जान पावै हिरन ॥
तिहि वार एण इम उच्चर्‌यौ। मो गुपाल रष्यहु सरन ॥छं०॥९७॥
अनल उट्ठि आघात। अनल उड़ि फंद दहे तिन ॥
तव वलाह वरसंत। वुझ्झयौ दावानल सो वन ॥
स्वान होत सनमुष्य। धये जंवुक लगि पुट्ठै ॥
जात देषि मृगराज। रीस करि पारधि रुट्ठै ॥
तानंत धनुष गुन तुट्टयौ। चल्यौ एन विन संक मन ॥
करुना निधान रष्यन करहि। ताहि मारि सक्कै कवन॥छं०॥९८॥
दूहा॥ रष्यन हारो राम जिन करि गाये इहि भांति ॥
वधिक सिचाना वधि रये। पारापति दंपत्ति ॥
छं० ॥ ९९ ॥

कवि का कहना कि मरने वाले को कोई बचा नहीं सकता और इस विषय पर जयद्रथ की मृत्यु का प्रमाण।

भुजंगी॥ नवंदून रष्यं जयं जैतरथ्यं। तहां अप्प अग्गया धरं तंत रथ्यं।
नवं दून षोहं निषंडी अचीनी। मिले पंड कुरषेत जैजरथ रंनी॥
छं० ॥ १०० ॥
करी पैज पारथ्थ जैजरथ वंधं। तिनं रष्यनं जाय जैजरथ सिंधं॥
कियं अग्गिहारी दछिची छितानं। तियं पुट्ठि चोनं दिसा पूरि वानं॥
छं० ॥ १०१ ॥
भरं भूरि सरना रथं रथ्थ थानं। दरं दूस दुरसासनं मुष्पि वानं॥
गजं गाज जल सिंधुता पुट्ठि ओपै। कृतं जास जुद्ध ब्रतं लोक लोपै॥
छं० ॥ १०२ ॥
दिसी दिस्सि वानं समानं सुदेहं। मानों वाल प्रोढ़ा सुनारी सुनेहं॥
अयं तथ्य सारथ्य देवकि पूतं। हनै जुद्ध जैजरथ उडि सीस वित्तं॥
छं० ॥ १०३ ॥

इते षंषनी साजि जैजघ्य भष्षै। वधै देव कौ ताहि हरि देव रष्षै ॥
इतै वीर विश्वास करि धीर बोल्यौ। पछै पंषनी साथ जैजरथ तोल्यौ ॥
छं० ॥ १०४ ॥

शाह का धीर से कहना कि प्राण का मोह करने वाला क्षत्री सच्चा नहीं है।

दूहा ॥ मिले धीर पुंडीर वर। वर गोरी सुरतान।
बोलि बीरवर धीर कौं। चित सालें चहुआन ॥छं०॥१०५॥

कवित्त ॥ सें पुच्छै सुरतान। अवे तूं चंदह नंदन ॥
तोहि विरद इम कहै। अप्प वर वैर निकंदन ॥
अवसानह संकरै। जीव रावत जो वंचइ ॥
ता जननिय को दोस। मरत षची जौ संचइय ॥
इह जीभ हाड वाहिर पिसुन। एतौ झूठ न झंषियै ॥
कहुं धीर लाज कारन कवन। प्रान राषि पति मुक्कियै ॥
छं० ॥ १०६ ॥

धीर का उत्तर देना कि मेरा जीवन अपनी पैज निर्वाह के लिये है।

न से षग्ग संग्रहयौ। न मे सिगिंनि कर मंचिय ॥
नहुं टार्‍यौ टंकुर्‍यौ। पति लग्गत तन संचिय ॥
टर्‍यौ सु हूं जोगिंद्र जानि। धीर धीरं तन गहयौ ॥
चाव दिसि बिंटयौ। षुंदि षुंदहि मन रहयौ ॥
बुल्ल्यौ जु बोल चहुआन सौं। सो न बोल छंडै हियौ ॥
गहि साहि हथ्थ अप्पन कह्यौ। ताहि पैल कारन जियौ ॥
छं० ॥ १०७ ॥

बादशाह बचन।

पत्ति पैज संसही। पैज पति ही सौं बंधी ॥
पत्ति सरन पति मरन। सूर पति पति सौं संधी ॥

पति रत्तन संसार। गयौ पति हथ्थ न आवै॥
कोटि वत्त जो करै। पत्ति लच्छी वल गावै॥
पति गये मरन दीनै नही। सो पति तन किम संग्रहै॥
आदर सु पत्ति दीजै जगत। ते पति रन संग्रहि रहै॥छं०॥१०८॥

धीर पुंडीर बचन।

है पत्ति पत्ति कुपत्ति। सही पति मो धीरह धरि॥
धरी जु अधरी होंहि। सही पति तेह होइ नरि॥
इही काज है पत्ति। धीर बोल्यौ परमानं॥
कंक वंक करि साहि। कह्यौ वंधन चहुआनं॥
रीस सम संम अच्छिर लिषी। मैं अरि वंधन साम उर॥
करतार हथ्थ केती कला। तौ करौं पत्ति संची सु धर॥छं०॥१०९॥

बादशाह बचन।

सुनत आप सुरतान। धीर चंदो नहि चुक्कै॥
जो दरोग पुंडीर। घाहि गोरी गहि मुक्कै॥
सुद्ध जुद्ध संग्राम। षेत षुरसान पिसावहि॥
ता दिन धार हिस्सार। कोट चंदह तन पावहि॥
धीर नाम ता दिन लहौ। कहहि काम आपर कहहि॥
राजान काज पुंडीर न्रप। च्यार दिसा वंध्यौ रहहि॥छं०॥११०॥

धीर पुंडीर बचन।

पैंज काज पारथ्थ। नाथ दुरजोधन भंज्यौ॥
पैंज काज श्री राम। लंक दसकंधर गंज्यौ॥
पैंज काज श्री क्रष्ण। कंस मथुरा महि मार्‍यौ॥
पैंज कज वलिराय। रूप बामन करि गार्‍यौ॥
हुं पैंज काज बंधन सहिस। तुम बंधन चष्षे नही॥
ज्यौं तेल नीव वपु तिलछही। ते साहि इसी बत्ती कही॥छं०॥१११॥

बादशाह बचन ।

धीर नाम तुहि धरिग । धीर रन होय तो जानौ ॥
भरनि चंड धर संड । नयन दिट्ठ सुलतानौ ॥
नेज अग्र धज अग्र । अग्र बंबरि ढाहानी ॥
अग्र बान कम्मान । पंष बिद्धहि दीवानी ॥
जंबूर नारि हय नारि घन । धन अग्राज फुट्टै अगा ॥
हक्का हहक्क फुट्टै हिया । तब न कोय लग्गै सगा ॥छं०॥११२॥

धीर पुंडीर बचन ।

तं दीठी तिहि बेर । साहि तत्तार न सग्गा ॥
बजि अग्राज जंबूर । छोरि षुरसानी भग्गा ॥
अप्पानी घर बत्त । मत्त ओही तूं जानै ॥
जे दद्धौ होंहि दूध । फूंकि सों मही असानैं ॥
हों धीर धीर पग मंडिहौं । जो तुम परषन पग मंडिहौं ॥
मृगराज हाक ज्यौं मृग्गनिय । यों देषत सत छंडिहौं ॥
छं० ॥ ११३ ॥

सोई सेर जिहि सेर । भरकि कुंभी कुंभ भंजै ॥
सोई सेर जिहि सेर । गाज अप्पन बल गंजै ॥
सोई सैर जिहि सेर । पुंछ पटकत धर कंपै ॥
सोई सेर जिहि सेर । देव दानव जिय चंपै ॥
सोइ सेर साहि गहिकर करन । अजापुत्त जिम आनिहौं ॥
मुष बोल सास जो धीर हिय । तो पकरि लेउं सुरतान हौं ॥
छं० ॥ ११४ ॥

बादशाह बचन ।

फुनि जंपै सुलतान । धीर तैं झूठो बोल्यौ ॥
किन सायर थाहयौ । मेर किन हथ्थह ठेल्यौ ॥
किने हर संग्रह्यौ । किने सपन धन पायौ ॥
कौन सिंघ सो छुच्छि । पेलि जीवत घर आयौ ॥

सुलतान दीन साहाब सों। एतो झूठत तूं कहहि ॥
जिहि सोत फेर हथ्थी फिरहि। किम सु साहि जीवत गहहि ॥
छं० ॥ ११५ ॥

धीर पुंडीर बचन।

जो विषधर विष अधिक। तौ गरूड़ सौं ग्रव्वस मंडय ॥
जो गल्ल गज्जै सिंघ। तौ कोरि कुंजर बन छंडय ॥
जो घन सघन मिलंत। तौ पवने परचंड निकंदय ॥
जो पसरहि रवि किरन। तौ कुह फट्टय धग वंद्य ॥
जो राह चंपि चंदह गहहि। तो का ताराएन रष्पनौ ॥
जद्दिनह साहि चहुआन रन। तद्दिन धीर परष्पनौ ॥
छं० ॥ ११६ ॥

बादशाह बचन।

वे हिंदू के कुफर। बोल भी कुफरे कड्डै ॥
गांमी गल्ह गमार। रोस अपनौ ना छंडै ॥
वंधि लिया बलहीन। मरन को काहे चाहै।
जब उंदर जम ग्रहै। गुरव सों लत्ता वाहै ॥
पैज पटंतर सब सही। जब कछु देषि दिषाइयै ॥
हुं हूं करंत अप्पन मुषै। रासभ ओपम गाइयै ॥
छं० ॥ ११७ ॥

धीर पुंडीर बचन।

रवि न उगै अथ्थवै। चंद चंदनो ना छंडै ॥
क्रोड़ करकै उड़। बसुह बासग भरु छंडै ॥
पवन थक्कि थिर रहैं। अरु जलधिहि जल षुट्टै ॥
मेर डरै डग मगै। धूअ तुट्टै रवि छुट्टै ॥
जौ ना जियत साहहिं गहौं। जौ न षग्ग पारौं रवरि ॥
तौ बोल धीर धरनी षिसै। बसै न हर अंगह गवरि ॥
छं० ॥ ११८ ॥

बादशाह बचन।

बे हिंदू नादान। साहि पावस पल्लान्यो ॥
है गै घंट निसान। नाग मुक्तिन घर जान्यौ ॥
हम हमीर हलबलै। करे द्रिगपाल दसों दिसि ॥
कमठ विसट होय पिट्ठ। डिट्ठ ठढ कोल इला धसि ॥
हाकंत हक्क कंपै भवन। तहां तूं मो सम्हौ भिरै ॥
आदान बंध हिंदू सहर। गल्हां करि सिद्धे चरै ॥ छं० ॥ ११९ ॥

धीर पुंडीर बचन।

कहै धीर सुलतान। बात संभरि इक मेरी ॥
तो अग्गें में बहुत। गल्ह अष्षी बहुतेरी ॥
बयना बल बंधिया। बयन रहसी संसारा ॥
तबहि हक्क बज्जसी। सब जानसी जहारा ॥
आवड्ड साहि सन्नाह कसि। षग्ग मार मचायहों ॥
गहि साहि आन चहुआन पै। बंदर जेम नचायहों ॥छं०॥१२०।

बादशाह बचन।

तब गोरी सु बिहान। धीर पुचछै सुमत्ति कल ॥
देव द्रष्ट बंधिहै। मंच बंधिहैं कि संसल ॥
छलकि प्राण बंधिहै। सपन बंधै सुबिहानं ॥
देव केव अवतार। हास बंधन परमानं ॥
बंधिहै बंधि रसनह सुबल। सच बंधन जो छुट्टि है ॥
को मंच बीर आरिष्ट बल। कै भूत फिरस्ता घुट्टिहै ॥छं०॥१२१॥

धरी पुंडीर बचन।

उदर ताम उच्छरय। जामे वसि परि न बिलारह ॥
मच्छताम तरफरय। जा मनह रुध्य उजारह ॥
गंवर ताम गड्डवय। जा मनह केहरि गज्जय ॥
हिरन फालतां करय। जा मनहि चीतौ सज्जय ॥

सुमेर ताम गरु अत्तनह । जब न हनू गह्न करि कटय ॥
अस मस समूह दल तब्ब बल । जब न धीर पप्पर चढ़य ॥
छं० ॥ १२२ ॥

बादशाह वचन ।

रे धीर झुँठ चिंतवत । सेस लभ्भै न अंनि पर ॥
दस सत फंन समूह । जीह विय विंब वीय चर ॥
मरद जु मुष्ष उच्चरै । जु कछु मग्गै भर भीरं ॥
तिनं साह कों थाप । डरै अब बंधन धीरं ॥
हम कहुं अधर वट्टे वढग । वढिग मीर मीरां करसि ॥
जम हथ्थ परै जो छुट्टिहो । तौ सामि वचन करिहौ परसि ॥
छं० ॥ १२३ ॥

धीर पुंडीर बचन ।

कहै धीर सुलतान । आन जल्लाल साहितौ ॥
जब ढाला ढींचाल । माल उथ्याल देषिमौ ॥
आषाढां डंडूर । तुट्टि तरवर तन पत्तिय ॥
उड्डि सेन जल जेम । रेनि घल्लो गल वध्धिय ॥
जिहि तेज तुंग लोगहि तरनि । जनु अयास फट्टै किरनि ॥
दैवाह द्रुग्ग मत्तह भिरन । जन विसासि हिंदू नरन ॥
छं० ॥ १२४ ॥

बादशाह बचन ।

ढिल्लिय ढाहि अवास । पकरि चहुआनह दंडों ॥
मोरों मत्त गयंद । सज्जि सब सेन विहंडों ॥
चौरासी मंडली बंधि । अप्पन घर आनौ ॥
बैरावत सुनि बात । पैज़ अप्पन परवानौ ॥
सुरतान कहै साहाब दी । षिनक गुसामन महि धरों ॥
गढ़ भूमि वंक तौ ढाहि करि । रनवासौ घर घर करौं ॥
छं० ॥ १२५ ॥

धीर पुंडीर वचन ।

गज्जि लेउं गज्जनौ । सार सुरतान विहंडौं ॥
मारौं मेछ ससद । टेक मनमहि नहिं छंडौं ॥
करौं जंग जल्लाल । हाल देषै तुहि अष्पिनि ॥
नचहि बीर वेताल । छुद्द पूरौं पसु पंषिनि ॥
बट्टौं जु पहुमि पंजर षलन । वलह अप्प कह सुष कहौं ॥
इह सच्च रंच झुट्ठिय नहीं । तौ पति सुपंच मभझह लहौं ॥
छं० ॥ १२६ ॥

बादशाह वचन ।

गर जँजीर संकरिय । पाय वेरी को कट्टइ ॥
षनि न गड्डि, गड्डियहि । तेज वल सबें निघट्टइ ॥
तुहि धीरंतन नाम । पान पीपर ज्यो डुल्लहि ॥
लज्जहीन हिन लज्ज । बचन फुनि फुनि कहि बुल्लहि ॥
जितोंब कालिह ढिल्लिय नयर । ससर न को संमुह रहय ॥
सुरतान कहै साहाब दी । तब पयज्ज किम न्निब्बहय ॥छं०॥१२७॥

धीर पुंडीर वचन ।

तोरों तरपि जँजीर । थाट मोरों साहन तुत्र ॥
मोहि वचन नहिं टरहि । गंग नहिं बहै अटल धुत्र ॥
कीर भार उच्चरहि । सात सायरनि दिगंतर ॥
बरुन बयन पिट्टियहि । काल पिष्पियहि निरंतर ॥
पुंडीर धीर इम उच्चरय । कोंन झूठ झंषै वयन ॥
गहि प्रातिसाहि राजन अपों । इह चरिच पिष्षौं नयन ॥
छं० ॥ १२८ ॥

बादशाह बचन ।

वे हिंदू नादान । बोल बौलै सिर पष्षै ॥
कौं ढंकै असमान । कोंन सायर मुष भष्षै ॥
किनें पवन झिल्लिया । किनें गहि बासग नथ्था ॥

किन जमरा जित्तिया। किनें कंद्रप्प सुमथ्था॥
वडा जु बोल मुषन्ह निया। इता बोल सिर पर धरैं॥
सुलतान कहै पुंडीर सुभि। इह क्यों ही पूरी परै॥
छं०॥ १२९॥

धीर पुंडीर वचन।

घन अंबर ढंकिया। अस्ति सायर सुष पिन्ना॥
योग पवन झलिया। किसन गहि बासग लिन्ना॥
गोरष जम जित्तिया। हनू कंद्रप्प न लग्गा॥
हुवि अग्गै सुलितान। भिड़े कोई दिन भग्गा॥
चहुआन साहि दिनई समर। सजि चतुरंगम चढ्ढयौ॥
अथ्थाह नीर ढीमर जिसें। सुमीन तनी पृरि कढ्ढयौ॥
छं०॥ १३०॥

बादशाह वचन।

हालै हसम हमीर। कीट हिंदू दल षुदों॥
आन साहि जल्लाल। जोर जोगिनिपुर रुद्दों॥
वेकुसाब आसा गमार। गरुअत्तन गामिय॥
बोलांही रावत्त। थंभ फट्टै वहु नास्थिय॥
आहत्त घात आमिष्य जिम। ग्रामी ग्रव कट्टों रसें॥
मति नसै प्रान रष्षै पुरिस। छची छल छंडै हसैं॥
छं०॥ १३१॥

धीर पुंडीर वचन।

छल छंडै सुरतान। बलनु छंडयौ जिंहि बंधौ॥
जीय रष्यौ पतिसाह। जियत पति साहह संधौ॥
तन रष्यो तजि टेक। तेग रष्यो षुदि आलम॥
जव ढंकों करिवार। ढोल लग्गौ सुष लालन।
जल जात घात रष्षै जलै। दूध विनट्टौ दूध हिय॥
लजनीय साहि गज्जन मनह। धीर पयंपै अरथ विय॥छं०॥१३२॥

बादशाह बचन।

जे दरिया उत्तरिग। पलह पडुरे न कल्लय॥
जोगिनि वर गंजरिग। पवन पन्नरे न हल्लय॥
जिन भैरूं भरमंत। ते डरें डंकनी न डक्कं॥
जिन पंचाइन धक्क। ते जाहिं जंबुक्क न हक्कं॥
हों गोरी नरिंद दैवान गति। नंद पुंडीर न चंद सुत्र॥
सामंत लाप सथ्थं मिलय। सहै न साहस अप्प सुत्र॥छं०॥१३३॥

धीर पुंडीर वचन।

सोई पारथ भारथी। नमें निकस्यौ मुष का बनि॥
सोइ किस्न करतार। दुक्यौ स निडर गल्हावनि॥
सोई सूर बलसूर। राह गलि जाय गहंतह॥
सोई ग्राह गजराज। चक्र करि हन्यौ श्रिकंतह॥
मति करै साहि मन गर्व तुत्र। छिति नाम जोहै छत्रिय॥
निर बीर पहुमि कबहूं नहीं। बडां बडेरी बसु मतिय॥
छं० ॥ १३४ ॥

बोल बोलि चहुआन। बचन सी बचन पल्लट्टौं॥
फुनि हम चढ्ढि पुंडीर। तोरि तासह नहि मिट्टों॥
तीन लाष उमराव। सहस संभरि सत्तरि वै॥
इह जानि जोनि यान। करै सरहन सब नर वै॥
गज अगंज भूपति सरन। गोरी सयन निघट्टिहों॥
इम कहै धीर सुरतान सौं। बाउ बहंतौ कढ्ढिहौं॥छं०॥१३५॥

हों दरोग जो कहौं। सूर उग्गै पच्छिम दिसि॥
हों दरोग जो कहौं। ईद उग्गमे कुहु निसि॥
हों दरोग जो कहौं। बयन चुक्कै दुरवासा॥
हौं दरोग जो कहौं। बोल बोलै बिन सासा॥
बोले सुधीर जो बोल मुष। तो पाहन रेषा सरिस॥
पतिसाह हथ्थ साहौं नहीं। तौ चंद पुत्त जायौ न अस॥
छं० ॥ १३६ ॥

बादशाह बचन ।

इह दरोग बोलंत । परै द्रो जिग चंदानी ॥
इह दरोग बोलंत । सेन हंसिहै सुलतानी ॥
इह दरोग बोलंत । लाज छुट्टै पति घट्टै ॥
इह दरोग बसि जीह । लीह षंचै सब सट्टै ॥
वड्डा न बोल वड्डा कहै । चाड परंतह जानियै ॥
धावंत धीर से धावनौ । ते रावत वष्यानियै ॥ छं० ॥ १३७ ॥

धीर की बातें सुनकर तत्तार खां का तलवार की मूठ पर हाथ रखना ।

सुनै बोल सुलतान । धीर संमु जे सद्दिय ॥
वे काजे हाजुर । गमार नाजुर द्वै बद्दिय ॥
तपित षान तत्तार । मुट्ठि तत्तार सु संगिय ॥
षंचि क्रन्न आवरन । दिट्ठ सुरतान जु ढिग्गिय ॥
त्रिय करै दरस आलम चरित । मुहि सु(१)चच वचा वगसि ॥
आनंद चंद वचा इहां । सुनि सु गल्ह लग्गै रहसि ॥
छं० ॥ १३८ ॥

तत्तार खां बचन ।

एही गल्ह सुनंत । गाल फारो लगि कन्ना ॥
एही गल्ह सुनंत । षाल कड्ढौ दुहु दन्ना ॥
एही गल्ह सुनंत । प्रान कड्ढौ अप्पानिय ॥
एह रम्य आरम्य । द्रोह लग्गै सु विहानिय ॥
आदिट्ठ पिट्ठ हिंदू अहं । कै छुरान गड्ढी गलां ॥
चढ़ि तुरकवान हिंदुवान दिसि । हल सहाय कीजै हलां ॥
छं० ॥ १३९ ॥

(१) ए.-सच्च ।

धीर पुंडीर बचन ।

वे कायर बल हीन । पकरि सिंगिनि क्या तोलै ॥
वे ततार गामी गमार । साहि अग्गैं क्यौं बोलै ॥
अग्गैं आउ मेदान । ज्वान मरदुन मुष जोरहि ॥
जानि अजा गहि सिंघ । हाड़ पवनं तन तोरहि ॥
कोतिग्ग साहि आलम निजर । षेत भंजि भूकौ करौं ॥
दस षान और तुम दब्बिलै । में चंद बचा तुमतें डरौं ॥छं०॥१४०॥

तत्तारखां बचन ।

अरे धीर नादान । बोल बोले बरबंके ॥
चढ़त साहि साहाब । दीन तीनो पुर संके ॥
तुम पतंग जड़ जीव । क्यों सुदिग पालन मोरे ॥
अति क्रूरौ जो चना । होइ पब्बय फुनि फोरे ॥
बोलियहि बोल अप्पां सरिस । वे म्रजाद बचनह न कहि ॥
करि रहम साहि रष्षै तुझै । नतरु षबरि अबही लहहि ॥छं०॥१४१॥

धीर पुंडीर बचन ।

कहै धीर तत्तार । षान सुनि बत्त हमारी ॥
चढत साहि साहाब । दीन को सहै सहारी ॥
हों सुधीर पुंडीर । एक लष्षा दह जानों ॥
तुम देखत हरि साहिं । सेन समुह सु भानौ ॥
तुम तुरक मान हिन्दुअ सु हम । हम तुम पटंतर कहौं ॥
हम परत स्वामि परहथ परें । तुम परहथ जीवत रहौं ॥छं०॥१४२॥

तत्तार खां का कुपित होकर धीर पर तलवार उठाना और शाह का हाथ धर लेना ।

हाला हल किय नेंन । हथ्थ तत्तार पयारह ॥
छीन लिये सुरतान । रोस देषंत अपारह ॥

या वुड्ढें या वुड्ढ । याहि छंडै जु वड़ाइय ॥
पुछैं पां पुरसान । अंग औसाफ चढ़ाइय ॥
आदांन वंध हिंदू इहां । झुट्टाई सच्चा करहु ॥
पट्टाय चंद वच्चा घरां । पच्छैहो चंपौ धरहु ॥

छं० ॥ १४३ ॥

धीर पुंडीर वचन ।

जे जीवहि अंग मैं । सही ते जमहि न भग्गै ॥
जे कामहि मह मह्हे । लहकि ते कुलहि न लग्गै ॥
जे स्वारथ संदेस । देह द्रप्पै न परप्पै ॥
जे जोगह जंगमैं । नेह नारी न निरप्पै ॥
डव्यौ न साहि डंवर डरनि अंमर लगि हक्कों सयन ॥
सो धीर नाम ब्रह्मह धरिग । चंद पुत्त जम्महु भय न ॥

छं० ॥ १४४ ॥

बादशाह का धीर के बल की परीक्षा के लिये उसे उत्कर्ष देना और धीर का वृक्ष उखाड़ना ।

साहिवदी सुरतान । कहत पुंडीर धीर सुनि ॥
धात पंभ में संग । फोरि तैसो वल करि फुनि ॥
मुह अग्गै दरखत । पान इहि वंधत हथ्थिय ॥
सो नंषो उपारि । जोर दिष्षै सब सथ्थिय ॥
हनुमान लंक जिम चंदसुत । बढि गुमान हिमगिरि सिखर ॥
धक धूनि बथ्थ भरि हथ्थ गहि । जर समेत षेजर उपरि ॥

छं० ॥ १४५ ॥

शाह का धीर से कहना कि मांग जो मांगना हो ।

दूहा ॥ षूब षूब सुरतान कहि । षूब धीर बल तुझ्झ ॥
मंगि मंगि जो मंगना । सोब समप्पौं तुझ्झ ॥

छं० ॥ १४६ ॥

स्लोक ॥ यावत् दरिद्री सोपि । यावत् साहि न द्रष्टया ॥
लिलाट लिखितं धाता । दारिद्रनो पलायते ॥ छं० ॥ १४७ ॥

धीर का कहना कि मुझे किसी बात की भूख नहीं केवल तुझे पकडना चाहता हूं ।

कवित्त ॥ ज दिन जननि हौं जनिग । त दिन बाजे बहु वज्जिग ॥
तद्दिन बंस पुंडीर । बिरद बानै सुहि सज्जिग ॥
तद्दिन मान महंत । तद्दिन पट्टी लिषि हथ्थह ॥
तद्दिन गाम कुठ्ठार । राव रावत मुहि सथ्थह ॥
असपत्ति सेन दल गंजि हौं । धीर नाम तादिन लहौं ॥
बासन पसाव तादिन लहौं । जबहि साहि जीवत गहौं ॥
छं० ॥ १४८ ॥

बादशाह बचन ।

चंद नंद मति मंद । तोहि परतीत हियै यह ॥
आसानी असपत्ति । जुद्ध करि कै लैहुं गहि ॥
जुद्ध करत जौ मुऔ । मोज इह किन कों दिज्जै ॥
इह संसार निरास । आस छिनह्न नह किज्जै ॥
न्वपनंद निद्धि न विगड जड । सो जल्ल की जल मे रहिय ॥
करतार मौज रोजी करत । इह मनुष्ष हथ्थह नहिय ॥
छं० ॥ १४९ ॥

धीर पुंडीर बचन ।

जब लगि पंजर सास । आस तब लगि ना छंडौं ॥
जब लगि हियै हुंकार । साहि दल बल करि षंडौं ॥
जब लगि कर पग जोर । मानि मच्छर नह मेलौं ॥
जो काया कायंम । ठाट साहिब क्रम टेलौं ॥
सुलतान षान उमराव सह । गह गहिये गुर गाहिहौं ॥
इहि हस्त हथ्थि भंजे हलक । सही साहि तो साहिहौं ॥
छं० ॥ १५० ॥

शाह का धीर को सिरोपाव और निज का घोड़ा देना।

तब हँसिय साहि सुरतान। उंच सिरपाव मँगायौ ॥
जो सुरतानह पाट। तुरिय सोई पञ्च नायौ ॥
राग वाग पष्पर सलेत। तही तुरत निवाज्यौ ॥
पन्यौ निसानन घाव। जानि विय भद्रव गाज्यौ ॥
चौदह सै गैंवर गुरहि। सहजहि सेन समूह दल ॥
सुरतान कहै साहावदी। अब किन सज्जसि आव बल ॥
छं० ॥ १५१ ॥

धीर का घोड़े पर चढ़ कर कहना कि इसी घोड़ पर से तुझे पकडूंगा।

जपौ तुरी चढ़ि संच। वीर चवदह सें हथ्यह ॥
मन ग्रब्ब पुंडीर। साहि ग्रहिहों से हथ्यह ॥
विहारो गज जूह। सुंड मुंडन महि पिट्टों ॥
तीन लष्य सत्तरि। सहस करिवर वर कट्टों ॥
जित्तेव अब्ब हिंदू तुरक। भिरों वहक्कि पचारि रन ॥
पुंडीर धीर इम उचरै। मम संकहि सुरतान मन ॥ छं०॥१५२॥

शाह का कहना कि तू चल मैं भी तेरे पीछे आया।

तेक दीन कब्बाय। तुंग तेजीं दह वाहिय॥
जर जीना संजोइ। रेसरय सनमुप छाइय ॥
लै हिंदू आदान। जाय चंगा पब्बाइय॥
हों आयौ तो पच्छ। लष्य लोहा सम्हाइय ॥
सल्लाम आलि आलम करि। सामंता सब्बां कहौ ॥
जंगाह राज बज्जै भरां। तुम राकी कानी रहौ ॥ छं० ॥ १५३ ॥

धीर पुंडीर बचन।

जेते जिते कवाइ। साहि मोंदी में हथ्यहि ॥
वे हिंदुअ वे मुसलमान। कथ्थां वे कथ्यहि ॥

जे झुट्टा सच्चाव । साहि जो जंग न नंचा ॥
जो जंग न नंचिया । तो साहि झुट्टा में सच्चा ॥
अप्पाह बोल बप्पां हलै । अप्पां बोल सु हथ्थियया ॥
चंगोह चंद बच्चा बचन । इह सलाम करि कथ्थियया ॥छं०॥१५४॥

धीर पुंडीर को पान देकर विदा करने के बाद शाह का देश देश को परवाने भेज कर सहायक बुलाना और चढ़ाई की तैयारी करना ।

धीर हथ्थ दिय पान । षान षुरसान निसानह ॥
कदलि वास कैलास । रोह ठट्टे फरमानह ॥
हबस रूम गष्परिय । भोज भष्पर भर भारिय ॥
अंग कुलंग तिलंग । देस नंदन निरवारिय ॥
जल्लाल दीन नंदन नवल । सुनि अवाज इहि निज रुकिय ॥
पुंडीर धीर पच्छै पहर । मिलि मिलान जोजंन दिय ॥छं०॥१५५॥

धीर हथ्थ दिय पान । पच्छ निसान जु सद्दे ॥
षान तेग तत्तार । तरपि कस उप्पर बद्दे ॥
दह दीहा आलंम । गंभ गंभीर उपट्टे ॥
जाने बद्दल उत्तरा । देस दच्छिन पुर छुट्टे ॥
आडंड षंड जोगिन पुरां । धरि लग्गी संभरि धरा ॥
प्रथिराज देव उप्परि दपत । इह हल्ली यह बेघरा ॥छं०॥ १५६ ॥

शाह की सुसज्जित सेना की चैत्रमास से उपमा वर्णन।

सज्जि फौज सुरतान । अग्ग माधव रिति जानिय ॥
यच लता वैरष्य । पहुप जंडा सनमानिय ॥
छच नूत मंजरि समान । ढाल नव व्रष्य पवन हलि ॥
गज्जि गहर नीसान । जोर जल्लाल उमड़ि चलि ॥
सजि फौज मंत गरजंत अग । मनहु पवन बद्दल हलिय ॥
कहि चंद बंद बरदाइ बर । देषि धीर मन भइ रलिय ॥छं०॥१५७॥

घरीय तीन रवि चढ़िय । चढ्यौ गोरी नरिंद बल ॥
रत्त डंड संदूक । रत्त धज चोंर साहि पर ॥
रत्त गजनि गज झंप । रत्त वैरष वर टोपं ॥
अग्गै षान रतौ सनाह । रंग रनवी वर ओपं ॥
ओपम एह कविचंद कहि । देषि सुवर सुलितान वर ॥
षह जीत राह रवि सरस हुअ । मनों जत्त किय भोम वर ॥
छं० ॥ १५८ ॥

शाही सेना का आतंक वर्णन ।

चलत रेन रवि लुक्कि । चक्क चक्की चष ढरयौ ॥
सेस भार कलमल्यौ । कुंभ आरंभरि डरयौ ॥
सरिता जल सुक्कयौ । नीर साहन नहि पुरयौ ॥
हय हय हय उचरंत । चक्क चक्को विसु चरयौ ॥
अंधियार भयौ वासुर असत । दिसा विदिसि सुभ्भै न तह ॥
साहावदीन चालंत दल । डरहि राय ग्रत मंडलह ॥ छं० ॥ १५९ ॥

शाह के कूच के समय अशकुन होना और तत्तार खां का कूच बंद करने को कहना ।

भुजंगी॥ चढ्यौ साहि आलंम तें चित्त दूनी । मिली वाट वाराह नौद्धार सूनी ॥
रथं मिच नीचं फिकारंत फेकी । उडी ग्रद्ध पच्छं मनों मोन केकी ॥
छं० ॥ १६० ॥
लरी मग्ग मंजार द्वै सहस जनी । परी बूंद आकास तें श्रोन दूनी ॥
चढ्यौ उंट फेकौ फिकारंत केसं । सितं चीर नारी सु मुष्पं उदेसं ॥
छं० ॥ १६१ ॥
पर्यौ पंजरी कोक पूके पुरानं । जरौ लोह भट्ठी सुदेखी सुरानं ॥
गह्यौ वग्ग फेरी ततारं सुभाई । रहौ आज दीहं जमाराति सांई ॥
छं० ॥ १६२ ॥
पठं पै जपै गँवरां निवारी । कहै देव देवंग रब्बं पहारीं ॥
मनं मति छंडी विमासं अधारी । रच्यौ षेल मंडी सु क्रीला विहारी ॥
छं० ॥ १६३ ॥

दहं रोज रोजं करौ बंध बंधी। लरैं ऐन चहुआन सो स्वामि सद्धी॥
इला एक अल्ला तनी आलि छंडौ। दई एक देहं तनौ तीन पंडौ॥
छं० ॥ १९४ ॥

शाह का कहना कि वह परवरदिगार सब जगह पर है फिर शकुन अशकुन क्या?

कवित्त॥ सुनौ षान तत्तार। तेग सद्दै सुष सद्दा॥
जो कर इक्क तनीय। रोजगारो नफजंदा॥
वली अली आदंम। पैन पैगंवर कीनो॥
वे भूले तुम जान। किसव जिन तेग न लीनो॥
पल्लटे भेष छंडौ दुनी। षरस पीर हाजुर निजर॥
गज नेज साह गोरी घरां। करि निवाज वंदहु सफर॥छं०॥१९५॥

जहां पीर पर सिद्ध। बंग जिहि ठाम न दिज्जिय॥
जहां मुसाफ नह पठय। कतेब कुतवा नव चिज्जय॥
जहां सुनाहि कुरान। नही महजिद धर पर किन॥
परै न गाय लिज्जै। षुदाय रेजा करि वारन॥
जहां हुकम नाहिं काजी करत। तुरकनि षनि गड्डिय जहां॥
सुरतान कहै साहाबदी। सो जिहान हमकों कहां॥छं०१९६॥

शाह का मीरा शाह के समय की घटना का प्रमाण देना एवं मीरा शाह का संवाद वर्णन।

रोसन अली फकीर। गसा रमता अजमेरं॥
दही मोल ले चषत। हुआ षट्टा दिय फेरं॥
गुज्जरियां पुक्कार। जाय दरबार सितावं॥
हडी भिंटी गुनहि। काटि अंगुरि बिन ज्वावं॥
मक्कां सु जाइ फिरियाद करि। मीरां सैद हुसेन अग॥
नौयति षुदाय मद्दत करन। इह अष्षिय मन धरि उमग॥
॥ छं० ॥ १९७ ॥

दूहा ॥ मरना जाना हक्क हैं । जुग रहैगी गल्हां ॥
सा पुरसों का जीवना । थोड़ाई हैं भल्लां ॥ छं० ॥ १६८ ॥

मुसलमानी लश्कर का सौदागरों के भेष में अजमेर आना ।

भुजंगी ॥ कहै दीन कज्ज परस्से कुरानं । करीं रद्द मद्दं सबैं हिंदवानं ॥
नमै पीर पैगंबरे थान मक्कां । रहा वन्न नामं जुगं च्यार चक्का ॥
॥ छं० ॥ १६९ ॥

दिनं सत्त हूते सु बीवाह अड्डे । करं कंकनं सेहरा बंधि चड्डै ॥
तनंमंन एकं चोआलीस यारं । चले संग सौदागिरं रूपधारं ॥
॥ छं० ॥ १७० ॥

जलं पंथ के अछ अच्छे उतंगा । पुलै नाव ज्यों तीर वेगं विहंगा ॥
दरब्बाफ जरदोज जरकस्स झूलं । रहै नेंक चष्पं ढकै मष्पतूलं ॥
॥ छं० ॥ १७१ ॥

इसे अश्व लीये धरा हिंदवानं । दियौ आय डेरा अजम्मेर थानं ॥
दरब्बार जाए कह्यौ मीर पोरं । सनंमुष्प उभ्भै रहे हथ्थ जोरं ॥
॥ छं० ॥ १७२ ॥

हयं हेरि ल्यायौ पंधाई सुगड्डं । रवी अर्थ कै कन्ह दधि मथ्थि कड्डं ॥
सुनै कन्न आना महीपत्ति आयं । सबें छोरि फेरें तुरंगा दिपाय ॥
॥ छं० ॥ १७३ ॥

षुरी ए वियांचा बकी राह गीरं । रहव्वाल चल्लै न हल्लै सरीरं ॥
दमानंक कूदंत नाचंत थालं । निरष्षे परष्षे हरष्षे भुआलं ॥
॥ छं० ॥ १७४ ॥

मुहं मंगि दामं करे कौल बोलं । लिहे पंच सें हैवरं हेरि मोलं ॥
जमा जोरि मंडै सवा लष्प दामं । लिये कागदं कायथं अंक तामं ॥
॥ छं० ॥ १७५ ॥

करे छाप आपं बुलाए हजूरं । सनंमान चहुआन रष्षै गरूरं ॥
गयो संभरीनाथ दै हथ्थ बीरा । करे चूक सक्कौ नहीं तथ्थ मीरा ॥
॥ छं० ॥ १७६ ॥

अजैपाल जोगी करामात अग्गं । उठे हथ्थ नाहीं मनों कीनि नग्गं ॥
निवाजं गुदारे दियं बंग जब्बं । गये देव हिंदून के भज्जि तब्बं ॥
॥ छं० ॥ १७७ ॥

करं काफरं जो इहां मौत दीजै । मस्हूरत्ति कीनी दही पीर हौजै ॥
तिन कारनं अप्पने हथ्थ अप्पं । कटे सीस वेगं चलो पुट्टि धप्पं ॥
॥ छं० ॥ १७८ ॥

इलल्ला महम्मंद रस्सूल इल्ला । कलम्मा पढ़ै जोर किन्नो सुकीला ॥
मिले आप में सं मुषं दस्त चूँमें । इसे सेर ज्वानं भयै दोइ पुम्मै ॥
॥ छं० ॥ १७९ ॥

तिनं षिज्जि बिज्जू जिसी तेग कढ्ढीं । चमक्के घरंको चरं सहस अड्ढी ॥
॥ छं० ॥ १८० ॥

कवित्त ॥ चौआलीसों यार । कढ्ढि नंगी समसेरं ॥
कर कढ्ढे सिर अप्प । चढें बिंटली सुरमेरं ॥
हिंदू मूसलमान । जुरत हय गय घन पायल ॥
चहुआन आना नरिंद । जीति उम्भौ अजरायल ॥
कटि लीन भिन्न होइ मीर परि । अमर रषिऔ साफ धर ॥
तहि थान आय दरवेस इक । ढवाज मोंनदी बंधि घर ॥
॥ छं० ॥ १८१ ॥

सवासेर दिन मान । आनि तहं पुहप उछारत ॥
रज कंकर करि दूर । धूर हड्डियां बुहारत ॥
जमाराति दै सुपन । मीर इह कीन हुकंमं ॥
तुम ऊपर चढ्ढि है । सवामन सदा कुसंमं ॥
अजमेर पीर तुम प्रगट हो । कितक दिवस के अंतरै ॥
हिँदवान पान घटिहै अवनि । इहन कोल हम परत रै ॥ छं० ॥ १८२ ॥

उक्त संबाद सुनाकर शाह का कहना कि दिल को मजबूत करो और चलो ।

दूहा ॥ इहसु कथा कहि साहि सों । फुनि अष्पिय तत्तार ॥
कायर पन मन छंडि दै । धीर पकरि गहि सार ॥ छं० ॥ १८३ ॥

तत्तार का मोरचे बंदी से आगे कूच करना और एक पड़ाव के फासले से बराबर धीर के पीछे पीछे चलना।

कवित्त ॥ तू आतुर पतसाहि । हाम हिंदू सामंतां ॥
जोरा सों ज्यौं जक्क । वघघ छंडै धावंतां ॥
मे ँ मंतां सुलतान । मुझ्झ मुलताना मेला ॥
करि मेला भंडार । जंग होइहै सुप षेला ।
टिल्ला पहार ठट्टा टिला । वट्ट निहट्टा वह्यियै ॥
कोटाह कोट सा सिंधु तिय । इम हिन्दू दल सिह्यियै ॥
॥ छं० ॥ १८४ ॥

जल जोवन साहाव । दीन सुलतान दुरंगे ॥
किए कूच पर कूच । कुरँग तारीय कुरंगे ॥
जथ्य रेनि रहै धीर । दीह तहां सोहसु अच्छै ॥
वर वेली पुंडीर । साहि फल पच्छै पच्छै ॥
आवाज वज्जि दिल्ली सहर । यह पुकार पहकिया ॥
राजोह माम पंचो दिहां । अहां धीर गहकिया ॥ छं० ॥ १८५ ॥

धीर पुंडीर के वापिस आने की खबर दिल्ली में होना दर्शकों की भीड़ होना और धीर को देखकर राजा का प्रसन्न होना।

ग्रह आप्पनां छंडि । राजग्रह धीर धवंदा ॥
ढा ढिल्ली रालोय । ताहि देखन आवंदा ॥
निय नीचानी नेन । वमन उँचा उच्चारां ॥
जा लग्गानी अग्गि । जीह जंपी पुक्कारां ॥
दरबार राज भर भीर घन । मन उलास भेथ्यो धनी ॥
भुअ भंग दुःष दुःषांह गत । जनो कि नाग लद्दी मनी ॥
छं० ॥ १८६ ॥

दूहा ॥ सासंता मंतां अमत । का चिंता इत वारि ॥
उट्ठि न सिर संमुह सहय । लज्जा विरद्दां भार ॥ छं० ॥ १८७ ॥

भुजंगी ॥ पाधरे दीह सा चाहुआनं । सिरं उच्च बज्जे सु भेरी निसानं॥
सितं छच रत्तं रषत्तं निसुम्भं । इला एक राजंग ते सुब्भ उम्भं॥
छं० ॥ १८८ ॥

धीर पुंडीर के आने का समाचार सुन कर रानी पुंडीरनी और इंछनी का उत्सव मनाना।

कवित्त ॥ सा इंछिनि पामारि । राज बज्जे बज्जायौ ॥
धा धंषानी छंडि । प्रौढ जोवन लज्जायौ ॥
अरि अनंद चंदाह । चंद जाया जनु अज्जा ॥
हेम चीर हस्सेल । मेल नग आरति कज्जा ॥
उछंग अंग राजन दरां । राज काज सब सुद्धरै ॥
सा धान साहि देषंतही । आज हिन्द, दिन पद्धरे ॥ छं०॥१८९॥
प्रथीराज चहुआन । विलसि वसुधा सह उप्पर ॥
डंड भरइ चक्कवै । पिसुन पीलै कोलू धर ॥
सहहि न कोइ संग्रास । पुब्ब पच्छिम रुद छिंन ॥
इह अपुब्ब पिष्षयौ । गौर गाजनै ततच्छिंन ॥
रहि न कोइ सुनतै अवन । जहं जहं सिंघ पुकारयौ ॥
आकंप भयौ सब सतुर मैं ॥ जब सुरतांन हुंकारयौ ॥छं०॥१९०॥

धीर का पृथ्वीराज से मिलाप।

दूहा ॥ भुज भिंटलौ संभरि धनी । नयन बयन मिटि चाहि ॥
ऊचै न सीस सँसुत सुहर । लज्ज विरद मइ ताहि ॥ छं॥ १९१ ॥

धीर से राजा का पूछना कि तू गिरफतार कैसे और क्यों हुआ।

कवित्त ॥ हेट हेट गजंन गयंद । वरनि यहि हर सुभ्र ॥
अग्ग मग्ग पुंडीर । मीर रावत्त न लीह तुभ्र ॥
तू अलंग जुरि जंग । षग्ग षचिनि बहु अड्डो ॥
सु क्यौ गयौ गज्जन । गयंद मोहि अचरज बड्डो ॥

संभरि वै इम उचरइ। रिपु गरिट्ठ कुंजर जवह ॥
कहि धीर धीर पूरस वदन। जीवत्त गह्यौ कारन कवन॥
छं० ॥ १९२ ॥

चामंडराय और जैतराय का धीर को धिक्कारना।

हँसिय चौंड राजैत। सामंत अभंगे ॥
पंभ फोरि गारवयौ। चंद गभरू खूचंगे ॥
सुप नन्दा आदान। बोल बड्डा वहि लग्गा ॥
ग्रब गमार पुंडीर। साहि बंधै वल भग्गा ॥
सुलतान दीन सिल खामि सिर। भरिन जियन आसुर कन्यौ ॥
वर बरन खूर इम उचरहि। धीर जननि ग्रभ न गन्यौ ॥ छं०॥१९३॥

दूहा ॥ गन्यौ न ग्रब पुंडीर तुअ। जिन लज्जाई माय ॥
वंचि प्रष्टि राजन तनी। कही सुनाय सुनाय ॥ छं० ॥ १९४ ॥

धीर का पृथ्वीराज से एकान्त में सब बीतक कहना।

कवित्त ॥ समौ जानि सहि रह्यौ। धीर संमुह बोलाही ॥
अधसि होय संग्राम। दिठ्ठ चावंड जिताही ॥
राज मझि मरजाद। समुद हद लोप नग्गौ ॥
पहुप वार पुंडीर। दाहि दाहिम भर भग्गौ ॥
पिज सार धार पुंडीर पर। सिलह वंधि संमुप तही ॥
एकथ्थ जथ्थ प्रथिराज न्रप। तहां विवरि वत्त चंदह कही ॥
छं० ॥ १९५ ॥

धीर का भरे दरबार में पुनः प्रतिज्ञा करना।

आज लियौं गज्जनौ। आज तुरकाइन डंडों ॥
मोरों आज गयंद। आज सब सेन विहंडों ॥
आज जीति गोरी। समूह पर दल वित्तारों ॥
आज चंद की आन। आज जन खामि उबारों ॥
सोइ आज पैज बरदाय भनि। संभरि धनी सुधारिहौं ॥
पुंडीर धीर इम उचरै। आज मेछ दल मारिहौं ॥छं०॥१९६॥

चामंड का कहना कि बात कहकर पछलना वीरों के लिये लज्जा की बात है और धीर का शपथ करके कहना कि वही करूंगा जो कहा है।

कहै राव चामंड। धीर वत्तां अविचारी॥
पातिसाह दल विषम। तुरी अगनित है मारी॥
तीन लष्ष तोषार। घालि पष्षर घूंसावै॥
मीर मलिक उमराव। काहु सावंग न आवै॥
अति जुरत नयन षंडै षलन। फिरि पच्छौ संका करै॥
ता जननि दोस दुरजन हँसै। जो वोल वोलि पच्छै टरै॥छं०॥१९७॥
धूर गाज विज्जल षिसय। बोल सा पुरिस न षुट्टौ॥
वह त्रिब्बहै नियान। सो न हो अंत अहुट्टौ॥
करै यैज पुंडीर। षग्ग छिचिन षिसि भज्जइ॥
सिरन तुट्टि धर परय। जननि जासंत न लज्जय॥
पुंडीर धीर इम उच्चरै। हो न बयन बोलों घनौ॥
हैवर मलिक्क हथ्थह हनौ। तब सुधीर चंदह तनौ॥ छं०॥१९८॥

चामंडराय का बचन।

चंदा बसै अकास। करह कितनौ रन पाइय॥
कनै लंक दधि मंझ। कोइ कंचन लै आइय॥
को केहरि कच ग्रहै। पाय को प्रब्बत ठेलै॥
को दरिया दुस्तरै। अनिल को अंकम झेलै॥
रावत्त राव सब संभरइ। चामंडराइ इम उच्चरै॥
साजै विसेन [1]आसम असम। अब सुधीर तुअ किम लरै॥
छं०॥१९९॥

धीर पुंडीर का बचन।

जब लगि सिर अरु मास। जीभ मुष थक्कय[2]॥

(१) ए.-आलम। (२) को.-चक्कय।

जब लगि हियें हुकार । सुष्ष सुप सच्छर फारकाय ॥
जब लगि कर करिवार । गहिव गज्जनवै गंजौं ॥
ढाल ढोल नेजा परोइ । संभरि वै रंजौं ॥
जब लग्गि सीस इहि कंध पर । पवन मेघ वरसंत घन ॥
इम कहत धीर चावंड सों । पैज पनट्टय प्रान विन ॥छं०॥२००॥

धीर का घर जाना और सब कुटुम्बियों का उससे सहर्ष मिलना ।

निज ग्रह पत्तौ धीर । राज दरवारह संतौ ॥
अति उछाह आनंद । विरद भर भारव हंत्तौ ॥
मिलि अग्ग पुंडीर । आय चय राय ब्रग्ग वर ॥
अति सुमान दिय दान । ब्रन्न जिहि आनि मंडि कर ॥
जै जया सवद जंपै जगत । बाल व्रद्ध उच्छव तरन ॥
अति प्रेम सहित अंतर मिले । रस सुमाह रज्जे करन ॥छं०॥२०१॥

धीर के कुटुम्बियों का उसकी गिरफ्तारी पर लज्जा और शोक प्रगट करना ।

एक महूरत मिलिय । सब्ब संबोध मत्त किय ॥
ता पच्छे एकंत । बोलि भर बंध्य अप्पजिय ॥
रंघर राव विरंम । सिंघ सागर पुंडीरह ॥
साहि पान सुम्मान । रामहरि राव हमीरह ॥
माल्हन सु महर पति मत्त मन । कमधज केल्हन जाम पति ॥
बैठे सु चित्त चिंता सु चित । विरद लाज लग्गी सु अति ॥
छं० ॥ २०२ ॥

धीर का अपना बीतक कहना और सबका प्रबोध करना ।

पद्धरी ॥ जंपै सु धीर पुंडीर ताम । निज व्रग्ग चित्त चिंता विराम ॥
मौ बोलि बचन न्रप अग्ग उंच । कंधैव तुंम सोमान सुंच ॥
छं० ॥ २०३ ॥

नाष सै जैत चामंड राय। सुरतान सरिस किय वंध दाइ ॥
बंधयो कपट करिहों जु वंधि। वुझ्यौ न कोय क्रित दुष्ट संधि ॥
छं० ॥ २०४ ॥

लै गये साहि संमीप मोहि। संमिलिय सु दल दरवार वोहि ॥
हन हनौ सद्द जंपै सु सब्ब। सबदो हमीर गंभीर ग्रब्ब ॥
छं० ॥ २०५ ॥

परब्रह्म कर्म चिंते विचित्त। आवरै ग्यान आहित्त हित्त ॥
तत्तार तन्न अष्षै विअष्षि। पंपिनिय सुफल जैद्रथ्य सष्षि ॥
छं० ॥ २०६ ॥

छंड्यौ जु साहि गुरु गरुह काज। चिंते सु चिंति अति आजि साज ॥
चढ्यौ जु साहि दल बल असंषि। लग्गी जु काम कारज्ज धंषि ॥
छं० ॥ २०७ ॥

चामंडराय पामार जैत। आहित्त चित्त जंपै उद्दैत ॥
सो चिंति चिंति चिंतौ सु काज। न्वप होइ जैत वढ्ढै सु लाज ॥
छं० ॥ २०८ ॥

धीर के कुटुंवियों के बचन।

कवित्त ॥ तब जंपै हरिराव। सरिस सारंग पुंडीरह ॥
कहिय धीर सा सुनिय। बात आध्रत्त सुहीरह ॥
जंपै रंघर राव हित्त। कह मत्त बिचारह ॥
सीस काज सम धरौ। सूर सम गरुह गुंजारह ॥
सजि चढौ अप्प सेना सकल। करौ बंध अप्पान भर ॥
पद्धरे षेत पतिसाह सों। करहु झार उभझार झर ॥
छं० ॥ २०९ ॥

धीर पुंडीर का बचन।

तब तमि जंपै धीर। जुद्ध सामंत कंध तुम ॥
सजे सुभर अप्पान। प्रान अप्पौ सुभझ दम ॥
राज काज राजंग। अंग बढ्ढहि सु अप्प जस ॥
कै जीतै उध लोक। सुजस आवरहि छोभि तस ॥

इस कहैं सव्व मज्झै सुनिज । एक चित्त आश्रित्त सव ॥
तजि मोह सोह संसार सुष । जग्यौ भार अम्भीर तव ॥
छं० ॥ २१० ॥

धीर का शिकार खेलने की तैयारी करना खदाइयों का आना और धीर का घोड़े मोल लेना।

उभै पष्प सुर मास । रोज तीसह रमि¹ मंडन्न ॥
म्रगया करत अभ्यास । राग रंग राम सुपंढन्न ॥
सत्त सहस सथ सुभट । साठि दस सिंधुर सज्जिय ॥
बंदुक वानह जोर । वेद दल नौबसि वज्जिय ॥
पुंडीर धीर चंदह तनौ । अति गुमान विरदां बहै ॥
ऐराक तुरिय से पंच लै । सोदागर ईसप कहै ॥ छं० ॥ २११ ॥
किय हुकंम वज्जीर । मोलि लियै ऐराकिय ॥
दिये दांम दस लष्प ! . ५ लष्पह रहि बाकिय ॥
संझ समै करि महल । सवै वगसे गावत्तां ॥
प्रात समै चढ़ि धीर । भये सुभ सगुन अवत्तां ॥
तव जैतराव चावंड मिलि । सोदागर ईसफ कहिय ॥
घर जाह जिंद लै जीवतौ । तुम धीर घत्त घल्लै सहिय ॥छं०॥२१२॥

चामंडराय का सौदागरों का धीर पर घात करने को उसकाना और सोदागरों को अपने में मंत्र विचारना।

मिलि विचिच इक ठौर । वुद्धि आलोच विचारिय ॥
दांम जिंद अरु लाज । वड़े विय थोह सुहारिय ॥
तव चौमन उच्चरिय । धीर महिमान सु संडह ॥
पान पान विधि विवह । एक चित ह्वै पग पंडह ॥
मांनी सु मत्त सव मंत मिलि । धीर प्रान इन विधि हरौ ॥
प्रगटै सु वात सामंत सुनि । हुऐ गहर सव्वै मरौ ॥ छं०॥२१३ ॥

(१) ए.-रवि ।

ईसफ मियां का धीर के दरबार में जाना, दरबार का वर्णन ।

दूहा ॥ करि निवाज ईसफ मियां । गयौ तहां दरबार ॥
मह मानी ईसफ करै । धीर होइ असवार ॥ छं० ॥ २१४ ॥

कवित्त ॥ चित्तसारि काच ढारि । पान सोवन जिरि रच्चिय ॥
लाल पंच पीरोज । घने सघनं करि पच्चिय ॥
दिवस तेज परि मंद । अरक द्वादस करि जग्गिय ॥
तारक तेज फटिक्क । सघन चुनि तारन लग्गिय ॥
सामंत विलास सुष रहसि तहं । हिंदु लाट हीरां जरै ॥
संगीत राग सरसै रवन । पात्र न्नित्य अग्गै घरै ॥
छं० ॥ २१५ ॥

धीर का सौदागरों के डेरे पर जाना ।

दूहा ॥ इह ईसफ अरदास करि । मिलिक देस को जाय ॥
महमानी मीयाँ करै । धीर पधारौ पाय ॥ छं० ॥ २१६ ॥

धीर का नित्य कृत्य वर्णन ।

कवित्त ॥ पंच सेर फुल्लैल । षट्ट जन मरदत तासह ॥
बाहु दंड परचंड । भीम आकार सु रंगह ॥
सहस कलस भरि नीर । इक्क विच कलस गंगाजल ॥
करि सनान पवित्त । कीय पंच गौ महाबल ॥
आमान साठि सजता वहै । पंच मुहुर सोवन्न मय ॥
इम नित्य धीर चंदह तनौ । षलक षग्ग वंदै सुजय ॥छं०॥२१७॥

दूहा ॥ सुचि रुचि सेवा सगति रुचि । सरचि चरचि तरवारि ॥
फुनि आसन कीनौ असन । भोजन साल पधारि ॥छं०॥२१८॥
तहां मुभर लीने सवनि । सचि सुआर करि साद ॥
षटरस भोजन भांति ब । तिन महि चित्त सवाद ॥ छं०॥२१९॥

धीर पुंडीर के कलेऊ का वर्णन ।

कवित्त ॥ पै अग्ग दग्ग मन तीन । सत्त सेरह विच सक्कर ॥
पंद्र सेर रद भोग । एक सीगावन वक्कर ॥
सत्त सेर रोगांन । सेर पंचह कढ़ि लुच्चिय ॥
घ्रित पावक वहु अवर । करत उभै दुज सुच्चिय ॥
पहति अोर पच स्वादु । जोग राज मढकी सुभरि ॥
च्यार घटिय दिन वालतें । सीरामन सामंत करि ॥छं०॥२२०॥

शाह का सिंधु तट पर पहुंचना और धीर का अपनी सेना सहित तैयार होना ।

अरिल्ल ॥ सौजत सयन सद पुंडीरह । तव आये तट सिंध हमीरह ॥
साजि निकट आयौ सुरतानह । है गै भार साज सव वानह ॥
छं० ॥ २२१ ॥
सुनिय वत्त सा दिल्लि नरेसं । गाजे गेंन वेंन असहेसं ॥
चल्यौ धीर साजै निज सथ्थह । सूर धीर संग्राम समथ्थह ॥
छं० ॥ २२२ ॥

पुंडीर वंशी योद्धाओं का वर्णन ।

कवित्त ॥ सहस तीन पुंडीर । धीर वर वचन अचार ॥
चियन वसिन वसि द्रव्य । वसु अवहु मोह गमाए ॥
मंभ्क मेलि सामंत । रयन अद्धी ते जग्गा ॥
सुनि अवाज सुरतान । रंक धन जानि विलग्गा ॥
दुअ घटिय सोम दिन पानि पथ । सहस सट्ट सेना चली ॥
अनभंग जैत अग्या अगर । विच चमंड वज्जह वली ॥
छं० ॥ २२३ ॥
अयुत एक पुंडीर । धीर सम लोह लरन कहि ॥
वरकि वीर तम संत । सिंघ भष पान लहि ॥
दुअन पष्प वीरंग । जुरे जिन जंग वहुत किय ॥
भूम्मि जम्म वहु सस्च । इष्ट वल सकति वहुनि जिय ॥

तन तुरंग तिन नेह तजि। क्षत्रिय मरन चित एक करि॥
बढ़ि लोह छोह छुट्टै जुरन। अरन वत्त कविचंद धरि॥
छं० ॥ २२४ ॥

आठ हजार सेना सहित जैतराव और चामंडराय का आगे बढ़ना।

सहस एक देवंग। भेरि नफ्फेरि पंच सैं॥
सहस तीन अँवकीम। ढोल बंदिन सु अट्ट सैं॥
सौ सुगंध जोति किय। अट्ट ग्रेहं सुभ छंदं॥
दिसा सूर सुष मिच्छ। बोलि बरदाइय चंदं॥
घट घटिय लगन जुद्ध तनी। पहर तीन वित्तिग विपम॥
उपरंत सेन साजै जुरहि। तव सु साहि साजी सुषम॥
छं० ॥ २२५ ॥

सुलतान के आने की खबर होना और सबका सलाह करना कि अब क्या करना चाहिए।

जव ग्रह आयौ धीर। पुट्टि सुरतान सँपत्तौ॥
सुनिय राय चामंड। जैत सम मन्न मिलंतौ॥
सज्जिग हय गय साहि। सिंधु आयौ यह उप्पर॥
धीर तेन छंडयौ। पच्छ चंपौ दल दुस्तर॥
क्त्यांह एह अप्पन करिय। अव्व कहौ कहा किज्जियै॥
भज्जै जराज सुलतान रन। तौ इन मति अप्पन छिज्जियै॥
छं० ॥ २२६ ॥

जेन बल न जै होइ। तेह झुम्झै कनवज्जां॥
सोइ मंत सुद्धरै। जैन जित्तै रन रज्जां॥
सत्त मंत सुभ चरिय। जैत चामंड सु उट्टिय॥
गये सजन निज ग्रेह। आय सब सथ्य स पुट्टिय॥
चामंड गज्ज मँग्यौ चढन। सम वेरी दाहिम्म वर॥
आयौ सु चंद बरदाय तिहि। खेत सु बुल्ल्यौ गुज्झ गुर॥
छं० ॥ २२७ ॥

कविचन्द का चामंडराय के घर जाकर उससे बेड़ी उतार कर युद्ध में चलने के लिये कहना और चामंड का कविचंद की बात मान लेना।

पद्धरी ॥ जंपहि सु तथ्य भट चंद कथ्य। तुम रची बुद्धि सब्बह समथ्थ ॥
स्वामित्त ध्रम तुम रत्त राह। वेरी सु धरौ अग्याह, राह ॥
जं० ॥ २२८ ॥

दल मेलि साहि आयौ असंपि। देपहु सु जुद्ध तुम उभय श्रंपि॥
वेरी सु कट्टि तुम जुरो जुद्ध। भानो सु सब्ब गुर घात क्रद्ध ॥
छं० ॥ २२९ ॥

कट्टौ सुमंत वेरी सुपाय। जै होइ जेम चहुआन राय ॥
चहुआन कन्ह गोयंद राज। कमधज्ज राइ निठ्ठुरह लाज ॥
छं० ॥ २३० ॥

पज्जून राय बंधव बलन्न। कनवज्ज अग्र सुभ्भ्यो सुरन्न ॥
ढिल्लीय अवर दिष्यो न राज। जिहिँ होइ आज चहुआन लाज॥
छं० ॥ २३१ ॥

जिम जुरौ षेत पल विषम घाइ। तुम तजौ वीर वेरी सु पाइ ॥
मन्यौ सुमंत चामंड चंद। मन भए सुभ्र उध्धह अनंद ॥
छं० ॥ २३२ ॥

पय तरह लोह कट्टै सु ताम। लंगरह जानि इभ्भह विराम ॥
मंगयौ कनक वाजी सु एह। जातिहि जुगंम अति सुभ्र देह ॥
छं० ॥ २३३ ॥

पष्परह चमर गज गाह रज्जि। सोव्रंन मुद्र सुभ तेज सज्जि ॥
आवद्ध बंधि सब सक्र भाजि। सोभंत जानि भीषम समाजि ॥
छं० ॥ २३४ ॥

चावंड रोहि वाजी सु अप्प। जंप्यौ सुमंच निज इष्ट जप्प ॥
सजि चव्यौ सब्ब दाहिम्म सथ्थ। द्वै सहस सूर गरुअत्त हथ्थ ॥
छं० ॥ २३५ ॥

सम चल्यौ जैत निज सेन साजि। सारद्द सहस सेना सुगाजि ॥
चढ़ि चलिय उभय घन बज्ज बाज। तब चल्यौ अप्प प्रथिराज राज॥
छं० ॥ २३६ ॥

पृथ्वीराज का यह समाचार सुन कर कुपित होना और लोहाना को भेजकर चामंड को पुनः बेड़ी पहनवाना ।

कवित्त ॥ गाजि गरुअ चहुआन। सुनत अप ग्रेह सपत्तौ ॥
दीन उतर ता पछै। बोलि लोहान सु तत्तौ ॥
तुम बेरी ले जाहु। पाय चावंड सु घत्तौ ॥
इन हम अग्या तजी। अप्प बल राह उमत्तौ ॥
हम करत लाज कैमास की। अरु सगपन सन मंध घन ॥
आक्रस्सि मन्न हम क्रोध घन। सक्रक्षें गहि रष्यौ सुमन ॥
छं० ॥ २३७ ॥

ले बेरी लोहान। ग्रेह चावंड सपत्तौ ॥
धरि अग्गैं चावंड। देषि प्रज्जरि चित चिंत्यौ ॥
कहै राय चावंड। सुनौ लोहाना तुम बर ॥
न्रिप अग्या सिर सजों। नतरू जानहु तुम हित हर ॥
निज स्वामि ध्रंम षंडो नहीं। हिय अरोहिय सद्दि हर ॥
बेरी सुलीन चावँड विहँसि। पय आरोहिय अप्प कर ॥
छं० ॥ २३८ ॥

शाही सेना की सजावट वर्णन ।

मोतीदान॥ घट दूनति साह सजे सुरतान। जहं छत्र सुजी कनजीक निसान॥
गज ढालनि मालि चिहूं दिसि फेरि। तहां रन सद्द मदग्गज भेरि॥
छं० ॥ २३९ ॥

जर कंमर तोजह मेलति कंठ। तहां लष्य फरी धर पाइक गंठ॥
तहां छत्र मौज अदब्ब सुभार। तहां बिज्जल नाय भ्रमै असवार ॥
छं० ॥ २४० ॥

तहां घन डंबर अंबर रेन। तहां घन जेवन कीवन एन ॥
तहां पार सिपैं रसना रस बोल। तहां आरस के जम जेजस तोल॥
छं० ॥ २४१ ॥
तहां ढल्लनि मल्लनि कीज प्रवेस। तहां द्वादस फौज लई भर सेस॥
तहां तज्जिय चज्जिय गज्जन राव। तहं वज्जय सिंग सहिप्पन चाव ॥
छं० ॥ २४२ ॥
हव ढड्ढिय उड्डिय सुक्कन केस। रही चक चोंरनि मौर सुदेस ॥
तहां दिप्पिहि फौज सु धीरन कोज। मनो चव चम्म कुलंगनि वाज ॥
छं० ॥ २४३ ॥
रवि जानि डपौ दुअ वद्दल संझ। कलकूह कुलाहल वीरति संझ ॥
उड़ि रेन रही दल दुंदभि पंग। फिरि फौज पुंडीर कुलंगनि वंग॥
छं० ॥ २४४ ॥
वजी सहनाइ निसान गुंडीर[1]। सुलतान घरां सिलि संझ पुंडीर॥
छं० ॥ २४५ ॥

पृथ्वीराज का अपनी सेना का मोर व्यूह रच कर चढ़ाई करना।

दूहा ॥ देषि फौज सुरतान दल। मति मंडे रन साज ॥
मोर व्यूह मति मंडि कै। तव सज्ज्यौ प्रथिराज ॥
छं० ॥ २४६ ॥

व्यूह वर्णन।

कवित्त ॥ आरध वेस नरिंद। छच वर मुक्क कहि गड्ढै ॥
सवै सेन प्रथिराज। मोर व्यूहं रचि ढड्ढै ॥
चोंच राव चामंड। जैत द्रिग बंधि प्रमानं॥
नप पिंडी पुंडीर। सेन उभ्भौ सुरतानं ॥
वर कंध बंध बंधी न्त्रिपति। पुंछ बीर कूरंभ रचि ॥
अग्गेव उदै उद्दित सुभर। महन रंभ दोउ दीन मचि ॥
छं० ॥ २४७ ॥

(१) ए.-पुंडीर।

पच्छराज प्रथिराज। जाम जद्दो घट भद्दों॥
रीछ मोर पष्परी। स्यांम चमरनि गज मद्दों॥
स्याम ढाल ढलकंत। स्याम गजपंति विराजै॥
स्याम धजा झलकंत। मेघ पंतिय दुति लाजै॥
बर नेज च्यार तह उज्जले। दुति सु बग्ग पंकनि वद्यौ॥
मोर सह बीर सुरतान सुष। जिम कुरंग सम्हौ चद्यौ॥
छं०॥ २४८॥

दूहा॥ चले दिष्ट संभौ मरद। पीन नीर रस पान॥
उंच दिष्ट के असुर वर। चढ़ि तक्कत चहुआन॥ छं०॥ २४९॥

कवित्त॥ मद गयंद झरि कीच। बीच सुत्तिय झलकंतिय॥
मनों मेघ विज्जुलिय। बनें सा नैननिदंतिय॥
सुभर सूर वर साजि। अप्प अप्पन धर चल्लिय॥
एक एक अग्गरे। जानि उद्रव घट हल्लिय॥
आभरन दान बुंदनि बरषि। सक सहाब उप्पर ढलकि॥
जद्दव सुजाम देषिय न्रपति। समनजैत वढ्ढिय किलकि॥
छं०॥ २५०॥

चाहुआन सेना की श्रेणीबद्ध दरेसी और चाल का क्रम वर्णन।

भुजंगी॥ किलकंत फौजं सु मौजं दिठंनी। बने हेम जेजंम रंजं मयंनी॥
अगै तिष्प पाइक्क घाइक्क कूदै। करं कंनरं भाल ग्रीवं स जद्दै॥
छं०॥ २५१॥

उड़े डंबरं अंमरं रेन पूरी। कियं कूक पुत्तारिका हक्क मूरी॥
परै भीर कंबी रनं जैत रुठी। परें वंध कंधं हयं नार छुटी॥
छं०॥ २५२॥

धरै आवधं उग्गि सज्जै विमानं। तिनं नाम लीजै बरदाय जानं।
सुभे सुभ्भ बाने समाने दिठाने। तहां कब्बिचंदं उपंम बषाने॥
छं०॥ २५३॥

हिमामं हिमारी हलै हेम चारी। तियं तीस जना सपरि जुद्ध भारी।
गजंगाह उग्गाह दुग्गाह कच्छै। सुसल्ली सुरल्ली अरब्बी उलच्छै॥
छं० ॥ २५४॥

सनेतं सकेतं समेतं पतोपी। पपं मोर सिंधोर दामं उचापी॥
निलं नील सम्मील उम्मील पीलं। रनक्की घनक्की[1]सचौरंति नीलं।
छं० ॥ २५५ ॥

सह्रा मीर माही उमाहं उचंनी। परी पाट डोरी सकोरी दिठंनी॥
तरंतार झंडे सपं सब्ब भ्रंसं। उड़ै देषि धीरज्ज मीरज्ज हंसं॥
छं० ॥ २५६ ॥

नयौ ताप आदब्ब सों जुद्धि कीजै। इसी बुद्धि भग्गै नतो लोह लीजै॥
इसौं फौज जादब्ब कूरंभ सज्जी। नयौ ग्रब्ब गौरी सु ग्रब्बानि लज्जी॥
छं० ॥ २५७ ॥

दिषे पान पुरसान तत्तार दिट्ठी। छुट्यौ भ्रम्म धीरज्ज रहि निट्ठ निट्ठी॥
मुरे पान पानं स लाजी अहारै। भये अट्ट हज्जार हय तज्जि तारै॥
छं० ॥ २५८ ॥

पहर तीन तिन सों तिनं लोह तुट्यौ। मनों संझरी जानि घरियार कुट्यौ॥
छं० ॥ २५९ ॥

दूहा ॥ धजी कुह सम्मोह बर। फिरि गजराज प्रमान॥
चाहुआन बर भग्गतें। चंपि सेन सुलतान॥ छं० ॥ २६०॥

मुसल्मानी सेना की ओर से हाथियों का झुकाया जाना और राजपूत पैदल सेना का हाथियों को विडार देना।

कवित्त ॥ रन तत्तार टट्टरै। सेंन चंपी चतुरंगिय॥
हस्तकाल बल राज। उठे गज झंपि मुषंगिय॥
पीलवान रा रन। हस्त अंकुस गजमध्यं॥
सबर संगि उम्भरी। झरी झारिय झरि हथ्थं॥

(१) ए.-सतौरं।

उम्मडे मीर अग्गा अगर । क्रुह कहर पच्छे फिरिग ॥
सामंत कोइ अप्पै अषन । अप्प सेन ऊपर परिग ॥
छं० ॥ २६१ ॥

हाथियों का विचला कर अपनी फौज कुचलना और शाही सेना का छिन्न भिन्न होना ।

अप्प सेन उप्परे । परे गजराज काज अरि ॥
अस्स सहित असवार । मेर उच्छारि डारि धर ॥
सर संमुह परि पीलवान । मिट्टी मास घन ॥
तहां चंपि हाजी । हुजाव देषंत तस्स घन ॥
सब सेन बीर भर हरि गई । गज ऊपर गज बर परै ॥
बिय बंटि रिद्धि बंछौ विषम । धाइ बीर सम्हौ लरै ॥
छं० ॥ २६२ ॥

हाथियों के विड़र जाने पर पृथ्वीराज का तिरछे रुख से धावा करके मार काट करना ।

दूहा ॥ छंड़ि बीर गजराज मुष । तिरछौ परि सुरतान ॥
औ टमंक दिसि विदिसि डुलि । रन रुंध्यौ चहुआन ॥
छं० ॥ २६३ ॥

युद्ध वर्णन ।

भुजंगी ॥ करं काल डोंरू क्रियं सिंघ नद्दं । सयं सक्रति वादी बरद्दाय चंदं ॥
सिर स्याम सन्नाह वाहंमि चक्कं । धरे अग्र बानं सुदुर्गामि वक्रं ॥
छं० ॥ २६४ ॥

गलै राग गावंत सिंधू सगिंधू । गलै माल जा ल्हल कन्नै र बंधू ॥
अगे षेचरं षेतपालं बेतालं । तहां भैरवं नद्द जोगीद्द कालं ॥
छं० ॥ २६५ ॥

दोउ कन्न ओग्यंन कर पच मंडै । तिनं दर्सनं देषि साहस्स षंडे ॥
फिरै तिष्षि निष्षी पताका तिरत्ती। लुवं जानी लागी सुग्रीषम्म तत्ती ॥
छं० ॥ २६६ ॥

टग टग्ग लग्गी मुषं धुच्छ सोहै। बजी तीन तारी सिरे स्याम सोहै ॥
लई काढ़ि वूको विसूती उड़ाई । भए दीह चहुआन साजे सपाई॥
छं० ॥ २६७ ॥

दिसं अग्ग वट्टी सु चट्टी पुकारै । लिये लक्करी सेन गोरी निकारै ॥
लियं लष्ष सेना सुरत्तान सड्डी । रनं राह वाराह वरदाइ वड्डी ॥
छं० ॥ २६८ ॥

हँसे सद्ध सामंत मम राज भट्टं । भइ बारही फौज एकं सुवट्टं ॥
वड़े पंड पुंडीर से तीन अप्पं । तिन मंडलाजी तुरंगी जनप्पं ॥
छं० ॥ २६९ ॥

उड़ी लोह अग्गी जर गिद्ध पंषी । भरी देषि करदाय वरदाय सष्षी ॥
परे रुंड मुंडं भरं भूमि सोहैं । पियै श्रोन पंचारि बारिक्क डोहै ॥
छं० ॥ २७० ॥

चले राह वै राह वैकुंठ भारी । घरी सत्त रवि मंडलं छिद्र कारी ॥
चयं जाम रन धाम भिरि भूप वित्ते । वछै धीर सों भीर सुरतान कित्ते॥
छं० ॥ २७१ ॥

कवित्त ॥ तीरवक्ष चामंड । रूंड हेमानि दंड करि ॥
रजक पत्त सिर मंडि । फौज आपंड मंडि सिर ॥
उभ्र अवाज नीसान । कान वीय सेन निसाननि ॥
पर पहार उत्तंग । थंभ थंथरि परि थनानि ॥
नक्केरि भेरि सहनाइ सुर । सुर कपाट वज्जिय रवरि ॥
अग्गाम जैत चामंड दल । सिंध सहाव सुप्परि दवरि ॥
छं० ॥ २७२ ॥

शाही सेना के दो हजार योद्धा मारे गए, राजपूत सेना की जीत रही ।

भुजंगी ॥ धमी सेन आलम्म की कूक फुट्टी । जरं जंच गोरा वरं मट्ठि छुट्टी ॥
करं कुट्ठि कम्मान बानं सनक्की । मनों लोर वासन्न आसन्न नक्की ॥
छं० ॥ २७३ ॥

धरं अद्ध अद्धं रनं धार धारं। करं धाम धामं सुषं मार मारं॥
गलं बथ्थ भिट्टैं सनेही सनेहं। उभै सूर जुट्टैं मनों एक देहं॥
छं० ॥ २७४ ॥
उने श्रोन घुंम्यौ सु जने उनाही। भए दीन दूनं सु सज्जे सषाही॥
घटं एक को एक घुट्टै सु पुट्टै। नई गंठि मुंडा वली जोग छुट्टै॥
छं० ॥ २७५ ॥
इसो जुद्ध दीठौ न सुन्यौ कहांई। मिलै जैत चामंड सुरतान घाई॥
परै सहस दै षान भिरि चाहुआनं। बढी जैत पिथ्थी सु वज्जे निसानं॥
छं० ॥ २७६ ॥

धीर के भाई और कविचन्द के पुत्र का मारा जाना।

दूहा ॥ षेत परिग कविचंद सुत। परिग बंध धर धीर॥
गहिय मद्द षिलची परे। पसरत अठ्ठ अमीर॥ छं० ॥ २७७ ॥
श्लोक ॥ मानवानां च नागं च, कौरवानां न पांडवं।
गोरीयं जुद्ध हिंदूनां, न भूतो न भविष्यति॥
छं० ॥ २७८ ॥

संध्या होने पर दोनों सेनाओं का विश्राम लेना।

कवित्त ॥ भइय संझ दुहु बेर। षेत दुहु दीन न ढुंढिय॥
लुथ्थि लुथ्थि आहुट्टि। हथ्थ चव पंचय चढ्ढिय॥
बरन मेछ बर हिंदु। श्रोन सुभयंन सुब्भरन॥
इन अभंग घट भंग। चित्त भग्गौ जु जुद्ध रन॥
पुंडीर सत्त रन सत्त किय। बरन बीर रंभा बरी॥
अष्टमी जुद्ध मंगलन कौ। घरी अद्ध बिय सब टरिय॥
छं० ॥ २७९ ॥

दूसरे दिवस का प्रातःकाल होना और दोनों सेनाओं में युद्ध आरंभ होना।

दूहा ॥ कायर चोर चकोर बर। निसि घट तें ललचात॥
सूर चकुर अरु बाल बधु। ए वछे वर प्रात॥ छं० ॥ २८० ॥

कवित्त ॥ सूर आव पर सूर । चढ़िग सामंत तुच्छ घन ॥
समिय तार उड़गन सु । द्रग्ग बीर नंचंत फिरइ गन ॥
हाहा हूह गंध्रब्ब । रंभ आरंभ अरुन अप ॥
अति आतुर रन चित्त । जंम जम्मन कग्गह नप ॥
वर जोग लग्ग जोती तनं । सस्त्र वाय वर डोलई ॥
वर पंच पंद लई सुवर । सुगति बंध वर पोलई ॥
छं०॥ २८१ ॥

अरुन तरुन उदयंन । फौज पच्छै मुलतानी ॥
मिलन सूर सामंत । रैन अद्दी सम्मानी ॥
तास तुंग ववरि हि । मांस नेजे उड़ि मंडिय ॥
रवि झिंगुर झंमुपिय । हींस हींसा रव छंडिय ॥
मंडिय प्रभात नारद सवद । दोऊ सेन सज्जत रहिय ॥
इक वार वीर वीरह तनी । किल किलकि जोगिनि कहिय ॥
छं० ॥ २८२ ॥

युद्धवर्णन । राजपूत सेना का जोर पकड़ना और मुसल्मान सेना का मनहार होना ।

भुजंगी ॥ बजे लोह कोहं सुकोहं दु दीनं । लई नाग वीरंग ते श्रोन भीनं ॥
झनक्कंत सारं किनक्कंत ताजी । मनों नट्टिवी नट्टि नागिन्न बाजी ॥
छं० ॥ २८३ ॥

वुलै घाय अघ्घाय सा श्रोत बुंदं । उठै तार झंकार ज्यों तार दुंदं ॥
उठै धींग धक्कै गजं ढाल मालं । मनों पत्र डंडूर आपाढ़ कालं ॥
छं० ॥ २८४ ॥

चंपी सेन आलंम जुरि तीन जामं । भए फौज अट्टं चवं एक ठामं ॥
परे सहस सोरह उभै हिंदु षानं । गजं बाज हज्जार तीनं सुजानं ॥
छं० ॥ २८५ ॥

समं सोमवारं सु क़ारंति यानं । चले लष्ष दोपाल हथ्थे हथानं ॥
फिरैं एकठे लष्ष फिरि चंद नंदं । परे बाल खाजी तिनें नासकंदं ॥
छं० ॥ २८६ ॥

मथी सेन आलस्स की है हिलोरं। पँगी जानि पारिष्य दरिया हिलोरं॥
अमी अब्ब सेना थकी हथ्य वथ्यं। रहे षेत सूरं सुरे क्रूर तथ्यं॥
छं० ॥ २८७॥

मिले मझ्झ पुंडीर हिंदू तुरक्की। सुरै सुष्ष नाही सुधारै मुरक्की॥
सजे सूर सन्नाह ते हिंदु मेछं। तिके जानियै बीर जोगिंद वेछं॥
छं० ॥ २८८॥

कढे लोह हक्की सु बक्कीं हवाई। करी दीन दीनं दु दीनं दुहाई॥
लिए हथ्य नेजा उनंके उनाही। रहे हस्ति नेजा न हस्सै हलाही॥
छं० ॥ २८९॥

सतं अद्ध अट्टं कमट्टं स उट्टै। जिनें मोह माया रसं बंधि छुट्टै॥
भषै जंबुकं गिद्धि सीचंत हस्सै। फुटी सांग हथ्यं तिरच्छं सुलस्सै॥
छं० ॥ २९०॥

कढै हक्क बाजी विराजी सु गाजी। घरं कंध तुट्टै किनं कै सु ताजी॥
उड़ी स्रोन छिंछी छबी लग्गि बिंदू। दहै दाह अग्गी मनो दार तिंदू॥
छं० ॥ २९१॥

कढी तेग तेगं जु तेगं चमंकी। तहां तब्बरं तुंद मीरं दमंकी॥
तजे दीन दीनं दुहुं अंस भारी। मिले बंध बधं सु जोधं करारी॥
छं० ॥ २९२॥

ततथ्थे ततथ्थी करै थंग थंगं। नरै रंग भैरो वितालं उतंगं॥
कढे रुद्ध रद्धी विरुद्धं विचारी। हरै दंत दंती विकस्संत सारी॥
छं० ॥ २९३॥

बजे घाय आवरत सावरत रुक्कै। मनों चच्चरी डिंभरू तार चुक्के॥
नचे बंध कंधं कबंधं सवानं। मनों सस्सि भेषं पछी चौज कानं॥
छं० ॥ २९४॥

खरं तंज दीसें परंतं न दीसं। मनों भूतमाया कुरी जोग ईसं॥
इकैं सांग बाही इके तेग साजी। मनों नग्गनी जीह झुकि रत्तकाजी॥
छं० ॥ २९५॥

कढी एक सथ्यं उचं हथ्य उंचं। झलक्कै सु षग्गं महातेज संचं॥
तिनकी उपम्मा कही चंद वक्कं। दिसी पच्छमी जानि उगयौ अरक्कं॥
छं० ॥ २९६॥

लई घीस्ति कम्मान सुरतान गोरी । छुटै पय्परा अस्स, भै विभ्भ जोरी॥
परे सब्ब पानं महामीरवानं । मनों प्रात तारै दियै थान थानं॥
छं० ॥ २९७ ॥

महारुद्र वीरं भयानक्क दीसं । लगे जोगिनी रीस तादंत पीसं ॥
रसं साहि गोरी अदं वुद्द कंदं । भयौ सूर प्रथिराज परभात चंदं॥
छं० ॥ २९८ ॥

धीर पुंडीर का धावा करना ।

पुलै टोप लोलंत वोलंत सूरं । लिये चोर तोरं मरोरंत मूरं ॥
पऱ्यौ धाइ पुंडीर तेजी पटाढ़ी । जिने बोल पुच्चै सुपं सुच्छ डाढी॥
छं ॥ २९९ ॥

इसौ चंद वचा विरच्च्यौ सु तामं । करी अट्ठ चव फौज एकं सुठामं॥
चंप्यौ जानि कै जम्म सुरतान सादे। कह्यौ पान जादे कुसादे कुसादे॥
छं० ॥ ३०० ॥

कह्यौ छंडि ताजी सु की बोल पीलं । वह्यौ वाय वेगं मनो धूम झीलं॥
मिल्ली चारि अंपी अनी दिट्ठ दीनौ । उनै हथ्थ ठिल्ल्यौ इनै सिंहलीनौ॥
छं० ॥ ३०१ ॥

दुहूं हथ्थ पुल्लै हलक्कै सु वथ्थै । कहै देव देवन्न जोगिन्न सथ्थे ॥
महाचंद पुत्तं सवीरं लुहानं । कहै तेन वोलंत आवं सुहानं ॥
छं० ॥ ३०२ ॥

झंडा माह वैरक्क दिट्ठी सुरानं । हसै सब्ब सामंत पुंडीर मानं॥
उनै उत्त मंग्यौ जु पंभं प्रमानं । लियौ सिंह ताजी सु हेमं समानं॥
छं० ३०३ ॥

उतै मंडली मेछ जोरी सु साजं । इतै हिंदू साजे प्राथीराज काजं॥
कहै सिंघ सामंत सूरं लुहानं । परै अप्पनै काम कानवज्ज थानं॥
छं० ॥ ३०४ ॥

दियं च्यार देसं सु पुंडीर रायं । कह्यौ अप्प पतिसाह धीरं सुनायं॥
छं० ॥ ३०५ ॥

(१) ए. सर्स ।

धीर की सहायता के लिये पिशाच मंडली सहित देवी का आना।

कवित्त ॥ चवदह से बर बीर। भए भर धीर सहाई ॥
जालंधर जगमात। जैत करिवे को आई ॥
भैरव भूत भयंक। भए तहां आनि सघाई ॥
ईस सीस कारनै। दई तहां आनि दिषाई ॥
सुचि चंद जेम न्रप चंद सुअ। घट घट प्रति प्रति व्यंब हुअ ॥
सामंत सूर इम उच्चरै। बलि बलि बीर भुअंग भुअ ॥
छं० ॥ ३०६ ॥

महादेव का पारबती को गजमुक्ता देकर कहना कि वीर धीर को धन्य है।

दूहा ॥ ईस सीस लिय माल कजि। गौरा कजि गज मुत्ति ॥
पिया समंपति मुत्ति पिय। त्रिय प्रिय पुच्छत बत्त ॥ छं०॥३०७॥
सीस सदा सिवल्यावतें। मुत्ति लहै कहों आदि ॥
कोन धीर पहिरो असन। धीर वीर सु प्रसाद ॥ छं० ॥ ३०८ ॥

पारबती का धीर के विषय में पूछना।

पारबती कह्यौ कोन सुत। कहा पराक्रम कौन ॥
षाट पुंडीर सुचंद सुअ। ब्रह्म रूप परवीन ॥ छं० ॥ ३०९ ॥

धीर की बीरता का वर्णन।

कवित्त ॥ इसौ धीर बर बीर। जिसौ पारथ भारथ्यह ॥
इसौ धीर बर बीर। जिसौ पारथ सारथ्यह ॥
इसौ धीर बर बीर। जिसौ जोधा दुरजोधन ॥
इसौ धीर बर बीर। जिसौ हनमंत बलिय मन ॥
सुतचंद दंद दारुन दुअन। अग्निरूप चिन सच्च जन ॥
मन मोह रोह माया रहित। अंगद जिम अंग धीर तन ॥
छं० ॥ ३१० ॥

पारवती का प्रश्न कि क्षत्री जीवन का मोह क्यों नहीं करते ।

दूहा ॥ जिहि जीवन कारन जगत । वंछै लोक विचार ॥
करै सुध्रम्म सुकम्म अति । किम तजि छत्रिय सार ॥
छं० ॥ ३११ ॥

शिव का वचन कि क्षत्रियों का यह कुल धर्म है।

गाथा ॥ तापस नष्ट अतोपौ । संतोपो नष्ट नरपति ।
लज्जा नष्टति गनिका । अनलज्जा नष्ट कुल जाया ॥
छं० ॥ ३१२ ॥

दूहा ॥ धरा सहित नंपै सु धर । सीस जाय धर जीय ॥
मरन सीस लीनै वहै । कुला क्रम पचीय ॥ छं० ॥ ३१३ ॥

जीवन मरन की व्याख्या ।

कोन मरै जीयै कवन । कोन कहां विरमाय ॥
प्रानी वपु तरु पंपिया । तरु तजि अन तरु जाय ॥ छं० ॥ ३१४ ॥
ज्यों जीरन परधान तजि । नर जन धरत नवीन ॥
यों प्रानी तजि कायपुर । और धरे वपु भीन ॥ छं० ॥ ३१५ ॥
कवहूं जीव मरै नहीं । पंचतत्व मिलि भेद ॥
पंची पंचन में समें । जीव अछेद अभेद ॥ छं० ॥ ३१६ ॥

आत्मा की व्याख्या ।

मोतीदाम ॥ अछेद अभेद अषेद अपार । अजीत अभीत अप्रीत अमार ॥
अमोल अभोल अतोल अमंग । अकंज अगंज अलुंज अभंग ॥
छं० ॥ ३१७ ॥
असेष अभेष अलेष अवीह । अरेप अमेष अदेष कवीह ॥
अमान अभान अजान अलिप्त । अचान असान अवान असिप्त ॥
छं० ॥ ३१८ ॥

संसार में कर्म मुख्य है कर्म से जन्म होता है ।

गाथा ॥ कर्म वस्य नरं जीवं जं कर्म क्रियतं सो प्राप्ति ॥
कर्म सुभं च असुभं। कर्म जीव प्रेरकं प्रानी ॥ छं० ॥ ३१९ ॥
स्लोक ॥ नमे न बध्यते कर्म । कर्मेन वंध प्राप्तिकः ॥
यं कर्म क्रियते प्रानी । सो प्रानी तत्र गच्छति ॥ छं० ॥ ३२० ॥
दूहा ॥ औसरि दुअ जुट्टे सुरन । भ्रत सोभत इन भंति ॥
अगर भंज जनु द्वै भिरै । मय मत्तें मय मंत ॥ छं० ॥ ३२१ ॥

शूर वीरों की वीरता और उनका तुमल युद्ध वर्णन ।

विराज ॥ मयमत्त भिरे, फिरि जुद्द घिरे । तरवारि तरै, तकि घाव करै ॥
छं० ॥ ३२२ ॥
जमदट्ठ जुरै, तिय नीति सुरै । पल ह्वर सुषं, न सुरंत नषं ॥
छं० ॥ ३२३ ॥
इस अत्य इसें, जमरूप जिसें । नर मध्य नचै, हरहार रचें ॥
छं० ॥ ३२४ ॥
धर उट्टि धरं, सजतें समरं । भभकै भभकं, रुधिकै लभकं ॥
छं० ॥ ३२५ ॥
जुगिनी जितनी, किलकें तितनी । ततथे ततथे, नचि वीर नये ॥
छं० ॥ ३२६ ॥
गुरगात भरं, कच उंच करं । तिन कढ्ढि तनं, बढि रंभ बनं ॥
छं० ॥ ३२७ ॥
दंत ऐंच दंती, कटि ह्वर कंत्ती । भिरि एम भरं, जनु सिंघ जुरं ॥
छं० ॥ ३२८ ॥
गाथा ॥ जुद्ध करंते जोधं । जै जै जंपि असुर ससुरानं ॥
कुट्टै इम किरवानं । लोहं लोहार कुट्टै घन एनं ॥छं०॥३२९ ॥

धीर की विलक्षण हस्तलाघवता ।

दंडक ॥ धीरक्कर धरिकै किरवानह । धाप धपै धपती वर वानह ॥
थाट विथाट करं दल ठेलत । घाट कुघाट किए घट षेलत ॥
छं० ॥ ३३० ॥

वाटनि वाट करी अति भीतर। लोटत लोटत ज्यों बन विंतर ॥
वाढ़नि वोढ़ दिए तरवारनि। वालर वाढत भील पहारनि ॥
छं० ॥ ३३१ ॥

सीसन पीस किये सिरदारन। पी भज भाजन चीलषि जारन ॥
सेलन मेल सनंमुष मंडहि। झेल विझेल करा झर झंडहि ॥
छं० ॥ ३३२ ॥

ढेरत हथ्थ उधेरत पंजर। पंडत पग्ग पसे रत षंजर ॥
छं० ॥ ३३३ ॥

शहाबुद्दीन का घोड़ा छोड़ कर हाथी पर सवार होना।

कवित्त ॥ ऐ सहाब सुलतान : तुरिय छंडवि गज चढ्यौ ॥
धीर वीर सम्मूह। रोस संमुह बर बढ्यौ ॥
है समेत असवार। हक्कि पुंडीर सु चंपै ॥
जिमि सुष्पह जमरोज। चंद नंदन नह कंपै ॥
कढि कटार गज तोलि हित। राह अधम रवि जुद्ध लरि ॥
कट्टार नंषि पग्गह कढ्यौ। करिय सीस सिर लोह झरि ॥
छं० ॥ ३३४ ॥

धीर का हाथी को मारना और शाह का जमीन पर गिर पड़ना और धीर का शाह को पकड़ लेना।

उडिग रेन गय नंग। साहि संमुह गजि पिल्ल्यौ ॥
धनिव धीर पुंडीर। साहि सनमुष असि मिल्ल्यौ ॥
दसन तुंड किय दोन। सुंड छंडिय सुंडाहल ॥
गिरत भूमि सुरतान। षाँन कीनो कोलाहल ॥
झक झोरि तोरि अवझरि उजरि। गहि हमेल हम्मीर लिय ॥
हय कंध डारि अड्डौ असुर। पैज पुंडीर प्रमान किय ॥
छं० ॥ ३३५ ॥

धीर का तलवार चलाते हुए शाह के हाथी तक पहुंचना।

षग कड्ढत सुरतान। अप्प मनि भय हय चड्ढिय॥
धर ततार इक षंचि। सिंगि रंगिय रुधि मंडिय॥
हनिव हथ्थ पुंडीर। धीर धर फट्टि रुनाहिय॥
जनु कि प्रात आरत्त। ब्रह्मपुर पंच समाहिय॥
उर फुट्टि पंच टट्टर करह। बर बिडुरि पग्गह डरिय॥
गहि दंत मंत सुनि सुनि सुनिय। झमकि झमकि बिज्जुरिय झरिय॥
छं० ॥ ३३६ ॥

शाह के अंग रक्षक योद्धाओं का शाह को बचाना।

साहि पास सौ मीर। दुह्न उभ्भै दुहु पासं॥
उभ्भै अग्ग सु बिहान। बान अरजुन प्रति मासं॥
कंजानी कम्मान। बान सु बिहान तीन तिय॥
तेही वेर हुसेन। दिष्ट देषी धरि अत्तिय॥
तब साहि हथ्थ कम्मान लै। षिंचि करि कुंडलि क्रन्न वर॥
तन फुट्टि लुट्टि हुस्सेन पर। रोस परिग परि मीर धर॥
छं० ॥ ३३७ ॥

मुसल्मान योद्धाओं का पराक्रम और हुसेन सुविहान (सुभान) का मारा जाना।

एक बान सुबिहान। षान हूसेन चढ़ाइय॥
दूजै बान तकंत। बंध धीरह टाराहिय॥
तकि बान तियं साहि। भरकि भग्गी हिंदवानं॥
सकल सूर सामंत। करै अस्तुति सु बिहानं॥
पट बान कमान जु नंषि करि। अरि दिसि हरि चक्रह चलिय॥
कढि तेग मुट्ठि छुट्टै नहीं। दिन पलट्यो सु बिहान जिय॥
छं० ॥ ३३८ ॥

ढारि जंग जुरि जूह। जूह गजराज ढंढोरिय॥
ढाल मड्डि ढंढोरि। बीर अविहरि दल मोरिय॥

दल मोरे पुरसान। पान पुरमान बहोरिय ॥
बहुरि धीर जंजाल। कारन वाहिर बहुतेरिय ॥
तेरिय सु वीर चतुरंग वर। वीर वीर वीरं कहिय ॥
अच्छरी वीर रस भर सुभरि। भेद भेद न छच रहिय ॥
छं० ॥ ३३९ ॥

गुन रन मूंदे सेस। छंद सुभ्भर आलिय क्षुअ ॥
दुष सुष मया विमोह। क्रोध रँग वीर सकल हुअ ॥
अहहं हंती हंत। रंत दंतन धरि दंती ॥
मनु मराल लै चित्त। दंत सुरलाल रलंती ॥
धर वोल परै सुरतान नग। पूज पुट्टि तें पुट्टि वर ॥
दल ढुंढि फिरावन एक दल। ग्रह्यौ सोहि गोरीहु भर ॥
छं० ॥ ३४० ॥

पुंडीर की पैज का पूरा होना।

धीर वचन सुनि साहि। दिष्ट मरदां विष जोरन ॥
धीर तक्कि सुरतान। साहि तक्के उन तोरन ॥
ठेलि गज्ज हय पत्ति। अश्व ठेल्यौ पुंडीरं ॥
कढ्ढि वंक सो तेग। हन्यौ गज सीस सु वीरं ॥
निह टीव बींज. वद्दल विहर गज्ज परिग गजपति कहिय ॥
हय कंध डारि अड्डौ असुर। पैज पुंडीर प्रमान किय ॥
छं० ॥ ३४१ ॥

पुंडीर के पैज निर्वाह की बधाई।

भुजंगी ॥ गह्यौ साहि हथ्थें जु पुंडीर रानं। कहै सूर सामंत पैजंप्रमानं॥
हन्यौ एक गज जूह कोटं प्रमानं। कहै देव देवं जु भारथ्थ जानं॥
छं० ॥ ३४२ ॥

कहै चंद वत्तं समंदं रहानं। तहां चंद सूरज्ज कित्ती भषानं ॥
अश्वनी कुमारान वासी कहानं। जिसो पथ्थ पंडीस जोधं रचानं॥
छं० ॥ ३४३ ॥

कहै चंद कित्ती सु वेली भपानं । रहै झिल्लि सेलं सुरत्तान सानं ॥
जिते राव चावंड सही अभानं । अहो धीर पुंडीर पैजं बखानं ॥
छं० ॥ ३४४ ॥
उवं पंड हथ्यं रुधी धार पानं । हिमं जा समानं जु सीहं पलानं ॥
कियौ स्वामि कौ काज पैजं प्रमानं । * * छं०॥३४५॥

कवित्त ॥ नव सें जहां सिलार । पास ठट्ट हंमीरह ॥
एक लाप साहन ससुंद । चवकोदह भीरह ॥
वेद लष्ष तरवारि । सघन नेजा पसरंतह ॥
अट्ठ लष्ष गुर धार । मेघ जिम झरवर संतह ॥
पुंडीर राय कालह सरिस । भिन भुअंग चित्तह भन्यौ ॥
बीरंग बंस चंदह तनौ । साहि गह्यौ हथ्थी हन्यौ ॥ छं० ॥ ३४६ ॥

शाही सेना का सब रखत छोड़ कर भागना ।

सिंधु सहाब उप्परह । जैत संग्राम धाम रन ॥
छच इंड वर चमर । दंड छंडिग सु गंध घन ॥
तुरस तोरि सवरिय मरोरि । रवरिय दल बहल ॥
जनु निदंत दच्छिनिय । पाइ ठिल्लिग सुभट्ट पल ॥
सुनि नयन गयन लग्गिय अगनि । पल पलाय गोरिय सयन ॥
सो सद्द वद्द दस दिसा हुअ । ग्रह्यौ ग्रह्यौ बुल्लिय बयन ॥छं०॥३४७॥

शहाबुद्दीन के खवास सेरन का घर पहुंचना और उस की स्त्री का उसे धिक्कारना ।

बिय षवास सेरन सु नाम । गोरिय गयंद कुल ॥
तिहि सु सत्त जोरू सु व्रत । रोचि निय अम्म बल ॥
सय सिंदू कुल परह । ताहि दिट्ठो गज कन्ना ॥
पंन पानि पति साहि । हाथ असहा वह बन्ना ॥
उच्चार भार बुल्लिय बयन । निय जुवहि पति साह तहां ॥
आभ्रमहार कुच भारवर । सुनित स्वामि संसार कहां[1] ॥
छं० ॥ ३४८ ॥

(१) ए.-कज-कृ.-कय ।

सेरन का उत्तर देना कि मैं तेरे मारे लौट आया हूं अच्छा अब शाह को छुड़ा कर तब रहूंगा ।

से पावस अम्भरिय । गिरिय घेरिय जनु मुक्के ॥
स्वामि मंच वरपंत । फेरि हिंदुअ दल लक्के ॥
तुव नेहिय देहिय निवाह । किं जास कोह दह ॥
पुनि मुद्दी सुलतान । हाउ जहां भाउ आस ठह ॥
संजाह लाज मक्कूह रवनि । रवन मुष्य देषै मरद ॥
काम तरुनि करुनिय करन । उज उड़ाय मुक्किय गरद ॥
छं० ॥ ३४९ ॥

पुनः स्त्री का कहना कि स्वामी को सांकरे से छोड़ कर घर का स्नेह करने वाले सेवक का जीवन धिक है ।

ताइय तुह कामिय सु काम । कामनिय काम रत ॥
अप्प अंस तजि स्वामि । अंस छंडौ सनेह हित ॥
आय देह संदेह । देव देवन संचारहि ॥
आय धार वजि मार । मार मारन मन हारहि ॥
अंजिसिय हंसिय अंतर गलिय । ससिय सद्द उद्दर धसिय ॥
मासुद्द दुद्द दोजिगन चलि । उर अंकुस फेरिय रसिय ॥
छं० ॥ ३५० ॥

सेरन का युद्ध की विषमता का वर्णन करना ।

कर ऋक्कस करिवार । सूर वद्दल दुति छुट्टिय ॥
परत भोमि रोचनिय । सस्च पुट्ठी अलह फुट्टिय ॥
रवरि दवरि हिंदुअ । नरिंद अत धरयं सुरतानह ॥
परि पारस पुंडीर । हथ्थ देषिय सु विहानह ॥
हहकारि हक्कि वोल्यौ सु वर । सु सब मुंकि सुरदार भय ॥
उन देव धीर चंदह ननौ । मनों सिंघ दष्यौ जु चय ॥
छं० ॥ ३५१ ॥

सेरन का कहना कि शाह के छुड़ाने का भार वैजल खवास पर है।

चष दिष्षिय सक सिंघ। सेर अंसह सुरतानह॥
कर कढ्ढिय जमदढ्ढ। बढ्ढ बढ्ढन तुरकानह॥
सवन उंच तिहि नेज। सेज उच्छंग उछारिय॥
जनु कि सिंघ सावंग। उढ्ढ डंमर उप्पारिय॥
उर करिर सुट्टि दिट्ठौ दुअन। सम छुट्टत सुरतान कह॥
विज्जल षवास छप्पर गलसु। गलग ढलगि भूमिय सु वह॥
छं० ॥ ३५२ ॥

किन्न कंक चहुआन। कंक महमंद सवन्निय॥
टिलिग ठट्ट उट्टाय। कोट बज्जे बर बन्निय॥
परे मत्त में मंत। दंत अंतिय आल,भिभ्भाय॥
जनु कि केलि बिन पोन। वेलि बंकिय बलि वुभ्भिभ्भय॥
संग्राम धाम धुंधर धरनि। धरनि पहर बज्जिय लहरि॥
ता पच्छ जाम जहों सुरन। अवसि मेव उत्तरि विवरि॥
छं० ॥ ३५३ ॥

उत्तर वै सुरतान। बंधि धीरह धर नंषिय॥
सुर नर गन गंध्रब्ब। चंद बंदिय सद भष्षिय॥
अग्गा भर सुरतान। आनि बरतिय चहुआनं॥
कासमीर ढिल्ला पहार। ठट्टा सुलतानं॥
जित्ता जुवान सोमेस सुअ। दुमसि बज्जि बज्जे इहां॥
जै जया सद्द आयास भौ। सु कविचंद छंदे जिहां॥
छं० ॥ ३५४ ॥

नीसानी॥ नेजे नंनीं सेरवान धरधार उपन्ना।
तिस का हथ्थ विहथ्थ वान बघघां बर जन्ना॥
तिस कै कुंडल चष्षवान नहि दिठ रहन्ना।
पाई पूना धंष देह दुहरी भर थन्ना॥ छं० ॥ ३५५ ॥

जानै छुट्टा इक्क माइ बोरह विरुक्तंना ।
दूनै झूझ्झ अलुझ्झि झ्झया हिंदू तुरकन्ना ॥
विरघ बोल उट्ठाइआ जाने युतिकंना ।
हो अलिधीर दुराइया सेरन वर वन्ना ॥ छं० ॥ ३५६ ॥

जैतराव और तत्तारखां का युद्ध । तत्तार खां का मारा जाना ।

कवित्त ॥ घरिय पंच पामार । जैत जग हथ्थ उहन्ना ॥
हैं सो है गैं सो गयंद । नरों नर हथ्थ निहन्ना ॥
निंहसि निहसि झन झनिय । पग्ग पग्गा पग खग्गा ॥
कट्टारिय कट्टारि । मार छुरिका छुरि जग्गा ॥
है कंप हक्क जूटा सु घट । कुघट कटार कटंत घट ॥
तत्तार षान जुरि जैत सों । निहसि नियाहि निहंद् घट ॥
छं० ॥ ३५७ ॥

परयौ षेत तत्तार । षेत जैतह गल लग्गिय ॥
उभय सहस पट्ठान । सहस पामार स भग्गिय ॥
चंपि राव चामंड । अगि अगिवांन डचाये ॥
जादों षान उभारि । वाय वाद्दल उट्ठाये ॥
पंगिय सु पच्च दाहर तनौ । घर विरद्द छज्जै मदह ॥
दाहंत दाह दुल्लह मरन । जिहि सु हिंदु रष्षीह दह ॥
छं० ॥ ३५८ ॥

विजय की सुकीर्ति के भाग ।

पंच भाग पामार । भाग चामंडराय तिय ॥
उभय भाग जद्दों जुवान । जैपत्त हथ्थ लिय ॥
एक भाग प्रथिराज । अद्ध भागह बरदाइय ॥
पाव भाग पज्जून । राव मंडी मरदाइय ॥

भग्गाह अट्ठ पुंडीर भुज । जिहि सु साहि सद्ध्यौ समर ॥
धम्मो जयंत विस आध अध । लिखि कवित्त छद्ध्यौ अमर ॥
छं० ॥ ३५९ ॥

दूहा ॥ राय पुंडीर सु झूझ जिति । ग्रिह आयौ प्रथिराज ॥
डोला पंच पचीस रजि विय आदीत विराज ॥ छं० ॥ ३६० ॥

कवित्त ॥ गहिव साहि करि पैज । जुद्ध जित विग्रह पत्तौ ॥
षेटति पव पाषंड । भेद सामंत निघत्तौ ॥
रिन रवद्द जित्तिग । नरिंद बाजे बज्जाले ॥
नह्नि हिंदू कढ़िंतेग । सद्द बज्जे सद्दाले ॥
दिष्षहि न राज सुरतान कहुं । सक सहाब षुरसान पति ॥
पूंछत बत्त भग्गो भिरा । रह्यौ न जुध रोह्यो [१]हसति ॥
छं० ॥ ३६१ ॥

मलिक षान षुरसान । हनिग लष षग्ग धीर बर ॥
गज मै मत्त सं घारि । दबटि दल मथ्यौ सबलकर ॥
लियौ साहि गहि हथ्थ । सथ्थ देषत सुरतानो ॥
षां ततार रुस्तमां । सीस धूनहि विलषानो ॥
पुंडीर सहस तिय वेत रहि । गह्यौ साहि गयौ धीर घर ॥
पुंडीर चंद नंदन रनह । मेछ गह्यौ चालेत धर ॥
छं० ॥ ३६२ ॥

दूहा ॥ सहिय संगि सनसुष्ष सर । पानि ढरि सुलतान ॥
जैत पत्त रावत्त हुअ । बर बज्जे नीसान ॥ छं० ॥ ३६३ ॥

बैजल का धीर से कहना कि शाह को छुडा दो और धीर का उत्तर देना कि पांच दिन ठहरो ।

चामर छच रपत्त रन । ए लुट्टे सब कोय ॥

(१) को. हसति ।

वर पवान वैजल्ल काढ्यौ । धीर निहोरं तोहि ॥ छं० ॥ ३६४ ॥

कहं धीर वैजल्ल सुनि । पंच दिवस नन काढ्य ॥
गुदरी मति राजान सों । साहि ग्रहन सें हथ्थ ॥ छं० ॥ ३६५ ॥

गुरि न गयौ गोरी घरह । पत्यौ न पेत प्रमान ॥
उक्ति बंधि प्रथिराज चित । धीर ग्रह्यौ सुरतान ॥
॥ छं० ॥ ३६६ ॥

वैजल का पृथ्वीराज से शाह के छोड़ जाने की विनती करना।

कहि सालम वैजल्लि सु तब । समह राज चहुआन ॥
पुरिन गयौ गोरी घरह । धीर पकरि सुरतान ॥ छं० ॥ ३६७ ॥

चौपाई ॥ इह सुनि राज अप्प ग्रह आइय । कहिय धीर सों वेजल धाइय ॥
पंडौ काटि आय पावासह । तवं वेजला वोल्यौ तासह ॥
॥ छं० ॥ ३६८ ॥

धीर का कुपित होकर वैजल का मारने के लिये दपटना।

इह सुनि क्रोध धत्यौ मन धीरह । वरजी वत्त कही क्यों हीरह ॥
मारन असि कड्ढी पावासं । प्रथीराज वरज्यौ तव तासं ॥
॥ छं० ॥ ३६९ ॥

पृथ्वीराज का धीर की वीरता की प्रशंसा करके उसे समझाना।

कवित्त ॥ गरजे वे संभरि नरेस । अरि विग्रह संध्यौ ॥
पुरनि षेह ल,कयौ । अभ्भ अभनी जु छंध्यौ ॥
चंद तनौ पूरन सु चंद । तिहि ठां संचरयौ ॥
मारे मत्त मयंद । धनि सु धनि धनि तहां कारयौ ॥
दुहु दलन वीच मच्छर काढ्यौ । हाक्यौ हन्यौ पचारयौ ॥
सुरतान साहि साहाब दी । गहिब धीर रन पारयौ ॥छं०॥३७०॥

सुंडा डंड प्रचंड। सुंड षंडनौ परक्यौ ॥
सिल्लारां असि तेज। वीज उज्जलौ झलक्यौ ॥
गहि गोरी गंजयौ। गहिव भुत्र बल उप्पार्यौ ॥
राय सरिस सामंत। पूरि धर रुहिर पषार्यौ ॥
झगरौ जु प्रभन्न्यौ जंत करि। तातन टट्टर अभय हुअ ॥
सौ असिवर सज्जत वे जलहि। धीर लज्ज लग्गै न तुअ ॥छं०॥३७१॥

धीर का कहना कि इसने मेरे मना करने पर भी क्यों कहा।

स्वामि बचन बिन सुनै। कान लगि कहि इह वत्तिय ॥
तूं पामर बरजयौ। पंच दिन कथ्य न कथ्यिय ॥
जैतराव चामंड। राव जद्दव जामानिय ॥
कूरंभा पज्जून। गरुअ गुज्जर रा मानिय ॥
सनमान राज चहुआन दल। भरत विनोद मंडत रसन ॥
तिहि रीस सीस पामर पिसुन। करौं षग्ग मग्गह असन ॥
छं० ३७२ ॥

पृथ्वीराज का पुनः धीर का समाधान करना।

चिपति न किय तो षग्ग। हनत कर करिय चन्दसुअ ॥
चिपति न भय गोरिय। नरिंद सुलतान मंत धुअ ॥
चिपति न ढल्लै लाल। मल्लवाहन उब्भारत ॥
चिपति न गज गुरइंद। बिंत उप्पर उप्पारत ॥
चिपतौ न तुअ पुंडीर सुअ। सुरतानह बंधत बसन ॥
बंगिय बखान वैजल विजल। न करि बग्ग मग्गा असन ॥
छं० ॥ ३७३ ॥

षग्गझार परिया। चंद वचा हसि सद्दे ॥
मैं बरजिय दिन पंच। पीय पामर कह बद्दे ॥
पाउ लागि प्रथिराज। वाह दीनी प्रथराजं ॥
दसहजार हैवरव। दंडि छंडिय सुलतानं ॥

दिट्टाह दिट्ठ जवी करी। गय गोरी ग्रहह गरिय ॥
आसन सुछंडि उभ्भै हुऐ। करि दुवास चंदह धरिय।
छं० ॥ ३७२ ॥

पृथ्वीराज का दंड लेकर शाह को छोड़ देना और शाह का लज्जित होकर राजा को धन्यवाद देना।

दंड सीम सुलतान। तीस गजराज मत्त मद ॥
पंच सत्त एराक। सुतर लष तीन उनंमद ॥
वहु विभूति चतुरंग। डंड मान्यौ पुरसानी ॥
बर गोरीं सुलतान। बंधि मुक्यौ चहुआनी ॥
आजान वाह संगह न्नपति। दंड काज सथ्थह दियौ ॥
पुरसान पान श्रोरी न्नपति। सुवर साहि सथ्थह लियौ ॥
छं० ॥ ३७३ ॥

पाय घालि प्रथिराज। बांह दीनी सुलतानं ॥
करि सलाम तिहुं वार। धरिय अंगुरिय तुरकानं ॥
तुम उमाह दुग्गाह। वार वारह चढ़ि आवहु ॥
वजहीन दुअदीन। किया अप्पना सु पावहु ॥
नन करहु सह जुग्गिनिपुरह। बांधि सामंतह मुक्किया ॥
वारह सुवार आवंत इहां। जाय " पासन सुप्पिया ॥
छं० ॥ ३७४ ॥

शाह को छोड़कर पृथ्वीराज का संयोगिता के साथ रस रंग में प्रवृत्त होना।

पकरि छंडि सुलतान। दंड पुंडीर समप्पिय ॥
ता पच्छै प्रथिराज। केउ दिन तप्पन तप्पिय ॥
आनी पंग कुंआर। रूप धरनी धर धारह ॥
जिन लीने सामंत। नाथ बरूनि बरवारह ॥
मत्तान मत्त सूता रहें। पच जिहंदे देव दिन ॥
उच्चाह वाह कविचंद कहि। संत सु छुट्टै स्वामि रिन ॥
छं० ॥ ३७५ ॥

सामंतों और पृथ्वीराज का धीर से कहना कि तुम शाह को छोड़ दो।

हनुफाल ॥ प्रथिराज सामंत सब्ब। पुंडीर धीरज्ज तब्ब ॥
तू छंडि गोरी साहि। मो इहे बोल निबाहि ॥
छं० ॥ ३७६ ॥
तूं सर्व सामंत सूर। प्रथिराज थप्पिस पूर ॥
तूं करै सब दिन पान। मन धुर मिष्ट वानि ॥ छं० ॥ ३७७ ॥
उभ्र दिष्टि मंडिय राज। कनवज्ज देषन काज ॥
उन राज काज सुभग्ग। कालहंत कास समग्ग ॥ छं ॥ ३७८ ॥
तुअ छंडि मंडि सुभेद। हिंसार कोट सुभेद ॥
पुंडीर छंड्यौ साहि। प्रथिराज सामंत मांहि ॥
छं० ॥ ३७९ ॥
षंद,राज सुमंडि। चैवार पहुमि सुषंड ॥
उभ्र मंच राज विनास। कलियंग छच सुतास ॥
छं० ॥ ३८० ॥
इय मंडि कीरति चंद। तिहि गज्जनै सुत चंद ॥
चिहुं चक्र दे सजि थक्कि। जिहि चन्द सूरज सष्प ॥
छं० ॥ ३८१ ॥
जिहि पातिसाह सुसाहि। तो धीर धन्नि सुमाय ॥
* * * * * * * ॥ ३८२ ॥

पृथ्वीराज का पूछना कि तुमने शाह को किस तरह पकड़ा।

कवित ॥ असिअ लष्ष साहन ससुह। दस्स सै गयंदह ॥
धरन्नि धसय उद्धसय। बोल नहि गुर सुर छंदह ॥
तहां तिमीर झंमंभि। गोल हबसिय हय हंकहि ॥
तहां धानुक्क पाइक्क। अप्प अप्पन पय तक्किहि ॥
तहांति मेछ गज्जहि असुभ। मनो घोरि पावस रह्यो ॥
इम कहत साह पुंडीर सों। किम सुसाहिते संग्रह्यो ॥
छं० ॥ ३८३ ॥

धीर का रण का सब हाल कहना और पृथ्वीराज का शाह को सिरोपाव पहिनाकर सादर गजनी को बिदा करना।

दोटक ॥ जहां हिंदुअ साहि लरंत रिनं। तहां बान परैं बरसा सुधनं ॥
जु करै किरिवारिय हिंदु अमेछ। लहंगिय बालक पेलहि एछ ॥
छं० ॥ ३८४ ॥

परे गुरजे रिन गाजरि मूर। सजे रन साहि सुहिंदुअ पूर ॥
तेहंकि हमीर किए इक टौर। गयंदहि साहि गयो गजि जोर ॥
छं० ॥ ३८५ ॥

यहीं परिढिल्लिय साहि करी। करिवार कुंभस्थल बीज भरी ॥
तबही धर धुक्कि गयंद गयं। लिय साहि गयंदति पोचि लियं ॥
छं० ॥ ३८६ ॥

इय लाज प्रताप तें राज रही। गजनेस असंभिय ईस गही ॥
विकसे प्रथिराज पुंडीर हियं। अद्भुत पराक्रम धीर कियं ॥
छं ॥ ३८७ ॥

इम जंग जहां रन सोर हुअं। नह आवन पास लहे सुतुअं ॥
तब जंपिय धीर धरन्नि धुअं। न्रिप संभरि जंग प्रताप तुअं ॥
छं० ॥३८८॥

तब साहि हजूर पुंडीर कियं। भरि अंक प्रथीपति लेछलियं ॥
बहु पुच्छिय प्रीति समाजि तदं। तुअ दिप्पत हिन्दुअ सुप्प हदं ॥
छं० ॥३८९॥

पहिरावनि साहि करीं प्रथिराज। दिये तब अंबक वाजन वाजि ॥
दिये सत तीन तुरंग सुरंग। करिवार कटार जरे हिम नंग ॥
छं० ॥३९०॥

पहिराइय साहि दिवंगम वस्त्र। दिए षटतीस अनूपम सस्त्र ॥
पठ भोजन भाव सुभष्य लियं। जु सुगंध अनेकति पूर कियं ॥
छं० ॥ ३९१ ॥

इमयं सहि.मानिय पूर भयं। पहचाइय कोस इकं न्नपयं॥
इम जित्तिय जंग सुदिल्लि नरेस। सामंतन मद्धि पुंडीर थपेस॥
छं० ॥ ३९२ ॥

करै सुष राज विलास सँजोग। हिमवंत महारिति भोगहि भोग॥
* * * * * * छं० ॥ ३९३ ॥

कवित्त॥ धनि सुधीर तुअ मात। साहि गजनी गहिय कर॥
गयपानी मुलतान। आनि संभरि ढिल्लियधर॥
उतरि अहं चावंड। राउ जैत सीस मह सव॥
बढे उरह बल राज। कुसुम सर चंद कित्ति तवि॥
जंपिय सु राज प्रथिराज तब। बोल धरी जस पावयौ॥
फिरि चलत मग्ग गज्जन पुरह। राज साहि पहरावियौ॥
छं० ॥ ३९४ ॥

जैतराव और चामंडराय का पृथ्वीराज से कहना कि धीर को शाह के पकड़ने से बड़ा गर्व हो गया है।

साहि डंड डंडयौ। दंड पुंडीर समप्पिय॥
साहि समंदन मंगि। सुष्ष राजनतं अप्पिय॥
गज्जनेस गोधीर। गयौ चावंड जैत लषि॥
हास अग्र किय राज। वक्र मुष भौंह नंचि चष॥
असपत्ति सेन भंजिय न्नपति। गहन ग्रब्ब धीरह वढ़ै॥
चलि सकट मग्ग नीचें भषन। वहन भार गरुअत बढ़ै॥
छं० ॥ ३९५ ॥

पृथ्वीराज का धीर सहित समस्त पुंडीर वंश को देश निकाले की आज्ञा देना।

करिय रीस प्रथिराज। धीर सुअ नयर निकारिय॥
बाल वृद्ध पुंडीर। छंडि नयरह नर नारिय॥
सहस पंच पुंडीर। जाय लाहौर सपत्ते॥

सहनिवास तह मजिद । मंदि सवफिन वलि मत्त ॥
पट्ठइय दूत धीरह दिसा । लिषिय पत्र कागद कारह ॥
सुनि वत्त चित्त धीरह धनी । गयो सिंधु साहिब दरह ॥
छं० ॥ ३९६ ॥

देश निकाले की आज्ञा पाकर धीर का राजाओं की रीति नीति को धिक्कारना ।

दूहा ॥ मन चिंतन धीरह करै । इह न्रप पुब्बह रीति ॥
कोटि जतन जौ जोरिय । न्रपति न होवै मीत ॥
छं० ॥ ३९७ ॥

सीव हीक बंधि रज्जनह । मदि पान तत चिंत ॥
तिय को काम न उपसमै । न्रिपति न काह्न मीत ॥ छं०॥३९८॥

अहि पय पान पिवाइये । जतन करे नित नित्त ॥
जब पग चंपै तव डसै । त्यों न्रप अवगुन चिंत ॥छं०॥३९९॥

कवित्त ॥ सइसव तें न्रप मेर । करत वेलानह लग्गै ॥
जो भ्रित सेवा करै । न्रपति कै पहुरै जग्गै ॥
अप्प राज न्रिप ताहि । रीझि धन धान्य समप्पै ॥
सांमि ध्रम्म धन धरै । काज पर सीसहि अप्पै ॥
यों करत वरत दुज्जन विचें । फारि फोरि दस दिसि करै ॥
संजुख्यौ कुलफ मिलि कुंचिका । त्यौं न्रप मन जू जू परै ॥
छं० ॥ ४०० ॥

दूहा ॥ राज वेश्या अगनि जम । अतिथि सु जाचक वाल ॥
पर दुप ए पावे नहीं । वहुरि गांव कुठवाल ॥
छं० ॥ ४०१ ॥

सेठ सुद्रस्सन मुक्कमनि । ए न्रप राजन थंभ ॥
जौ न्रप इनके ना भए । राष नवन के अंभ ॥ छं० ॥ ४०२ ॥

अरिल्ल ॥ समौ विचारि बोलिये बानि । दिष्टी करिय अदिष्टी छान ॥
अप्प अधीर ग्रह गमनम कीजै । हीर भगें न्रप के न रहीजै ॥
छं० ॥ ४०३ ॥

दूहा ॥ सांप सिंह न्रप सुंदरी । जौ अपनै वसि होइ ॥
तौ पन इनकौं अप्प मन । करो विसास न कोइ ॥ छं० ॥ ४०४ ॥
कवहूँ वक्र अवक्र कव । कब षंडौ कव अस्त ॥
राजा गति दुजराज सम । प्रक्रति निवाहन सस्त ॥ छं० ॥४०५॥
न्रप अंदर सोचै नहीं । कह्यौ सुनै सदभाव ॥
दुरजन हित जाने नहीं । अपनै अपनै दाव ॥ छं० ॥ ४०६ ॥
औगुन श्रत अप्पै मनै । न्रप के भाषें नांहि ॥
सो न्रप भ्रम वेदन कह्यौ । न्रप परमेसर आहि ॥छं०॥४०७ ॥
विष्य घुटी माता दियै । बेंचि पिता लै दाम ॥
राजा जो सरवसु हरै । नहिं सरनागत ठाम ॥ छं० ॥ ४०८ ॥
माता सरन न सुक्किये । पिता सरन मन मानि ॥
सेवक औरह चिंतइ । विना सरन राजानि ॥ ४०९ ॥

यह समाचार पाकर शाह का धीर को जागीर का पट्टा देना और धीर का उसे अस्वीकार करना ।

कवित्त ॥ सुनिय वत्त सुलतान । धीर पट्टौ लिषि तथ्थह ॥
सहस अठ्ठ ग्रामह सुदेस । धाभ देसह दह पत्तह ॥
सहस पान सुलतान । धीर निज हथ्थ समप्पत ॥
कही धीर सुनि साहि । राज प्रथिराज सु तप्पत ॥
जो अवर पंच सीसह धरों । ईस कहां उजो अवर ।
उग्गमै दिवाइर पच्छिमह । सौ सेसह छंडे सु धर ॥
छं० ॥ ४१० ॥

शाह का धीर को ढिल्ला की बैठक देना और धीर के कुटुंबियों का लाहौर लूट लेना ।

धीर निवेसन साहि । दयौ ढिल्ला पहरत्तव ॥
अरु है ठट्टा ठाम । कियौ आदर अनंत सव ॥
तब सु पत्र लिषि धीर । सोइ कर दूत समप्पिय ॥
तवहिं दूत लाहौर । पत्र पावस कर अप्पिय ॥

बंचिय सु पच पुंडीर तव । लूटि सहर छंड्यौ सु वर ॥
पट कूर कनक केसरि अगर । हय कपूर नग मुत्तिनर ॥
छं० ॥ ४११ ॥

दूहा ॥ हीर चीर कप्पूर हय । मानिक मुत्ति अमोल ॥
लुटि लाहौर पुंडीरियां । उढ़ि कंचन वँमोर ॥ छं० ॥ ४१२ ॥

सब पुंडीरों का ढिल्ली को जाना और धीर का उनको लाहौर लूटने के लिये धिक्कारना ।

कवित्त ॥ हरिय रिद्धि वर नयर । जाय ढिल्ली सापत्ते ॥
तहां निवास निज करिय । सब्ब पुंडीर समथ्थे ॥
आयौ तथ्थह धीर । सुन्यो लाहौर सु लुथ्यौ ॥
करि पावस समकोय । अप्प हथ्थह हिय कुथ्यौ ॥
उथ्थौ सु कोपि करिवार सजि । वीर भद्र पुंडीर लपि ॥
रन सिंघ सूर धीरन धरहि । कोप समायौ तीयरपि ॥
छं० ॥ ४१३ ॥

दूहा ॥ तहां निवेस पुंडीर किय । हैगै सथ्थ समथ्थ ॥
तहां निवेसह अट्ट दिन । मास सत्त लुग तथ्थ ॥ छं०॥४१४॥

पृथ्वीराज का धीर को बुलाने का पत्र भेजना ।

तब धीरह कग्गर लिष्यौ । प्रथीराज चहुआन ॥
हम धर आगर धीर तूं । आनौ तुम करि मान ॥
छं० ॥ ४१५ ॥

धीर का राजाज्ञा को स्वीकार करना ।

बंचि धीर कग्गर न्रपति । सिर धरि करि तसलीम ॥
औछव आदर बहुत किय । उपजि हरष सम सीम ॥
छं० ॥ ४१६ ॥

कवित्त ॥ करन साज मन चिंति । चल्यौ हय लेन पुंडीरह ॥
कछुक सोन सामानि । हुए तब चिंतै धीरह ॥
भावी गति होइ है । कहा दइ बुद्धि विचारं ॥

हुं पहुँचो न्रप पाय। तो अप्प मनों चित सारं॥
सें अठ्ठ अश्व चहुआन घो। और पुंडीर न वड्डिहो॥
पै लग्गि राज अपराध षमि। पाय पराक्रम मिट्टिहो॥
छं०॥ ४१७॥

चल्यौ धीर कंगुर दिसह। उर धरि जालप जत्त॥
जैतराव चामंड मिलि। कही राज सों बत्त॥ छं०॥ ४१८॥

धीर का सौदागरों के घोड़ खरीदना।

कवित्त॥ सहस अठ्ठ है सथ्थ। सहस पंचह सौदागर॥
आय सपत्ते तथ्थ। धीर दीनौ आदर बर॥
मास एक है परषि। सहस दूनह हय रष्षै॥
और देस में अश्व। लिए अपजानि परष्षै॥
दीए सु द्रव्य सुह मंगि बर। जाति भांति लष्षन सहित॥
रवि रथ्थ जानि उच्चिश्रवा। कै अमोल मोलनि ग्रहति॥
छं०॥ ४१९॥

घोड़ों की उत्तमत्ता का वर्णन।

इसे अश्व अंमोल। लिऐ पुंडीर चंद कहि॥
ग्रम्भ जंच अन चढ़े। जिसे दिए बह्म जग्य महि॥
मिच सेन गंधर्व। लिये अंतेवर प्रब्बल॥
नदिव नास झूलंत। आय ऊपर पंडव चलि॥
अनभूत जुद्ध अन चिंति परि। पथ गँध्रब कों बंधि कसि॥
छंडाय जुधिष्ठिर पंचसय। लय पवंग ते पेस कसि॥
छं०॥ ४२०॥

उन्हीं सौदागरों का गजनी घोडे लेकर जाना और उक्त समाचार सुन कर शाह का कुपित होना।

सोदागर गज्जन सपत्त। गोरी सहाव मिलि॥
हय निरषत पतिसाह। सोइ रष्षे जु अप्प कलि॥

सिल्लि ततार पुरसान । सज्जि समरेज सु सत्तिय ॥
सुनौ साहि साहाव । सु वर है धीर सपत्तिय ॥
कुप्पयो साहि इह वेन सुनि । सब सौदागर गहन किय ॥
सुनि वत्त भग्गि सौदागरह । जाय धीर सब सरन लिय ॥
छं० ॥ ४२१ ॥

दूहा ॥ अह साथ दै सब्ब हय । वह गए पुंडीर ॥
अश्व अमोलक राज कौं । लैन चल्यौ अग्रधीर ॥ छं० ॥ ४२२ ॥

कवित्त ॥ अश्व लैन गय धीर । अटक उत्तरि जाइँ नवि ॥
अह साथ पुंडीर । सब्ब लै मग्ग पान नव ॥
ढुंढि थान पुरसान । तुंग ताजी वह लिन्नौ ॥
मेद पान वलोच । मेद पुरसान सु दिन्नौ ॥
लग्गए दूत गोरी सुबर । वर पुंडीर सु थट्टयौ ॥
वर मेप साजि सौदागिरह । गोरी सेन परट्टयौ ॥ छं० ॥ ४२३ ॥

शाह का सौदागरों के घोड़े छीन लेना और उनका भाग कर धीर की शरन लेना।

लै सोदागिर द्रव्य । जाय गज्जनै सपत्ते ॥
मिले साहि साहाव । वत्त कहि कहि विव रत्ते ॥
मिले ततार पुरसान । जागि समरेज सु सत्तिय ॥
कह्यो साहि सों जाय । धीर दै है सुधि पत्तिय ॥
कोपियो साहि साहाव सुनि । सब सौदागिर गहन किय ॥
सुनि वत्त भग्गि सौदागरह । जाय धीर सब सरन लिय ॥
छं० ॥ ४२४ ॥

धीर का शाह को पत्र लिखना।

दूहा ॥ धीर सु लिष्यौ साहि सों । सरन सुभ्झ सब आइ ॥
देहु द्रव्य सु है सहस । न्याय रीति सब राइ ॥ छं० ॥ ४२५ ॥
तुम इन के है मोल ले । अरु ताके ग्रह बंधि ॥
ऐसी तुम्है न बूझियै । वेद कुराननि संधि ॥ छं० ॥ ४२६ ॥

शाह का मीरा खोखंद के हाथे घोड़ों की कीमत भेज देना और धीर का सौदागरों को राजी करना।

मीरां षोद मसंद अलि। तिन हथ्थह दिय द्रव्य॥
पठए साह सु धीर सम। कनक बज्ज है सब॥ ४२७॥

अली मसंद समप्पि सह। द्रव्य धीर हथ सोइ॥
धीर समीप बुलाइ दिय। दांम सौदागर दोय॥ छं०॥ ४२८॥

आदर धीर सु भीर किय। सब सौदागर सथ्थ।
कालन मीर सु धीर सम। कहिय साहि सब कथ्थ॥
छं०॥ ४२९॥

गजनी के राज्य मंत्रियों का धीर पर कूर चक्र रचना।

राषि धीर सौदागरह। उभय मास गय जान॥
तब षुरसान ततार मिलि। कियौ मतौ कहि सामि॥ छं०॥४३०॥

सौदागरों को लिख भेजना कि धीर तुम्हें मार कर तुम्हारा द्रव्य छीन लेगा॥

करि सुमंत कग्गर लिषिय। पठयौ कालन मीर॥
अरे मूढ़ तुम द्रव्य कज। हनन सुन्यौ है धीर॥ छं०॥ ४३१॥

जौ हम तुस एकंत मिल। तौ मारहिं पुंडीर॥
दीन कौल पैगंबरी। हम तुम बंधै धीर॥ छं०॥ ४३२॥

सौदागरों का शंकित हो कर परस्पर सलाह करना।

मालन मीर कमाल कर। दियौ सु कग्गर दूत॥
बंचि सुभर भय भीत भय। मंत परट्टिय नूत॥ छं०॥ ४३३॥

सौदागरों में यह मंत्र पक्का होना कि धीर को मार डाला जाय।

कवित्त॥ कालन मीर कमाल। मियां मनहर सु मन्निय॥
सेषन खूब निजांम। फते मषत्यार सु पन्निय॥

सवै संधि लिखि रचिय। धीर अप्पां सह मारै॥
ता पहिले आपन। सवै धीरहि संघारै॥
सुद्दरं काम अप्पां सुवर। साहि सुवर मिलि मारियौ॥
संघार करैं सब्बैं सुभर। जो जुध धीर हँकारियौ॥ छं० ॥४३४॥

सौदागरों का अपनी मदत के लिये शाह को अर्जी भेजना।

दूहा॥ मंत प्रपंच जु किज्जियै। लिपि भेजै करि धीर॥
अटक उतर तें सज्जियै। तौ नहि विज्जै मीर॥ छं० ॥ ४३५ ॥

तब ताजिय पुरसान षां। मंत मानि सजि भीर॥
षां गुज्जर भप्पर अली। षां बहाव चलि मीर॥ छं० ॥ ४३६ ।

लै कागर पतिसाह पै। गुदराई सब वत्त॥
सौदागर वंदे तुमहि। मिलि भेज्यौ कर पत्त॥ छं० ॥ ४३७॥

शाही सेना के सिपाहियों का गुप्त रूप से सौदागरों के काफले में आ मिलना।

कवित्त॥ वर सौदागर एक। षान पीरोज सँपत्ते॥
मिलि आये पुंडीर। हय सु लै करि उनमत्ते॥
दाग भंजि सुरतान। अटक उत्तरि पुंडीरं॥
हम वंदे सविहान। साहि हम सज्जय वीरं॥
सुरतान सुवर चौकी विहर। घात वंधि अप उत्तरै॥
तौ सरन आय दै सथ्थ हम। सुवर सुभट हम उच्चरै॥
छं० ॥ ४३८॥

दूहा॥ दियौ हुकम गुज्जर भपर। वर वंधे करि तोन॥
जाय मिलै सोदागिरह। ग्रही आस मिसि मोन॥ छं० ॥४३९॥

एक वुद्धि करियै जु इह। मत लै वैठहि धीर॥
चूक करहि सह्है चलत। तेक सजे करि मीर॥ छं० ॥ ४४० ॥

सौदागरों का धीर को डेरे पर बुला कर एकान्त में सलाह करना और कालन कमाल का पीछे से पुंडीर का सिर धड़ से अलग कर देना।

कवित्त ॥ तब सज्जिय पट्टान। साहि वड़वत्त उड़ायिय ॥
कालन मीर कमाल। बोल धीरह लै आइय ॥
लै बैठे एकंत। साहि वत्तो भय बुझ्झै ॥
हम आये तो सरन। अबैं गुह्यां कह गुह्ये ॥
उच्चर्यौ धीर गरुअत्तनह। कोय साहि मो सरन हय ॥
नह डरो आज रघ्यों तुमहि। जो जम आवै तुम्स जय ॥
छं० ॥ ४४१ ॥

अद्ध रयन पह्लानि। अटक सव सथ्थ सँपत्तौ ॥
मेह्लवान करि पंति। धीर रुंध्यौ बल मतौ ॥
चूक चूक संभरी। सब्ब पुंडीर समाही ॥
सबैं सेन आहुट्टि। धीर हुं धीरज साही ॥
कलहंत केलि लग्गी विषम। घाइ पुंडीर अहुट्टि घट ॥
धनि धनि नरिंद बर सद्द हुअ। जिहि पति रष भंजी विघट ॥
छं० ॥ ४४२ ॥

तब कालन करि कूर। कह्यौ तुम सरन बयट्टौ ॥
असि लै कालन उट्ठि। आय षिन पुट्ठि निहट्टौ ॥
कढ्ढि तेग असि झारि। सीस उथ्यौ धर तुथ्यौ ॥
उवै तेक असमांन। सीस गय सूर न षुथ्यौ ॥
निझ्झारि तेक धर ढारि धर। हय कमाल कालन न दुर ॥
सयदून सहि पट्टान रन। इह अचिज्ज अष्षै अमर ॥छं०॥४४३॥

सौदागरों का धीर की लाश गजनी को भेज देना।

पत्ति पहर पुंडीर। जीय पति कै सथ मुक्यौ ॥
धीर धारि ढंढोरि। धार धारनि तन चुक्यौ ॥
जो जानत चहुआन। सोपि कीनो पुंडीरं ॥
तिन दंतिन बर षंडि। जुद्ध धर धर करि मीरं ॥

संग्रही लुथ्थि सुरतान पर । ल्ल ञाहुट्टिय राज भर ॥
गोरी नरिंद वाजे वजग । सुवर वीर ढिल्लिय सुधर ॥
छं० ॥ ४४४ ॥

धीर के बध की खबर पाकर पावस पुंडीर का धावा करना, पठानों और पुंडीरों का युद्ध, पठानों का भागना, पुंडीरों का जयी होना ।

सहस च्यारि पट्ठान । लेल्लि पुंडीर धारि धर ॥
तत पावस पुंडीर । सुनी वत्तह चवि हरहर ॥
सजि पावस पुंडीर । चल्यौ कंधहे सुक रष्पै ॥
वीर भद्र नरसिंघ । तेज पुंडीर तरष्पै ॥
सघमसी सेन लप्यांह भरी । रंघर राघ समथ्थरिन ॥
संक्रमे सेल वंधे सुभर । पष्पर सिंघ सुसाजतन ॥ छं० ४४५ ॥

दूहा ॥ अति आतुर पावस गयौ । धाय सँपत्तौ तथ्थ ॥
मनों पवन पावस घुरै । झारि लायौ पग हथ्थ ॥ छं० ४४६ ॥

कवित्त ॥ आय सँपत्ते सोय । साज ठटे पट्ठानह ॥
हक्कि धक्कि हय लंषि । असँष असिवर उट्टानह ॥
तेग तार क्कक्स करार । कहै सुष मार मार सुर ॥
भगि पठान उसमानि । विसुष जिम झारि हारि भर ॥
सें अट्ठ पट्ठ धर ढर धरिग । जित्ते वर पुंडीर रन ॥
जै जया सद्द आयास हुअ । धंनि धीर धीरप्प तन ॥ छं० ४४७॥

दूहा ॥ आए पछ्छ पुंडीर सब । मिले भीर लष धीर ॥
विनै सीस सब दून वह्हि । बधि धर रष्षन धीर ॥ छं० ॥ ४४८ ॥

जिहि असिवर झारगय ढरिग । जिन रन सध्यौ साहि ॥
सो सध्यौ सोदागिरह । करों ग्रव्व जिन काय ॥ छं० ॥ ४४९ ॥

धीर की मृत्यु पर पृथ्वीराज का शोक करना ।

चूक तेक तुथ्यौ सुसिर । उठि कबंध वेबंग ॥
मिलि चवसह से मारियौ । गय प्रथिराजह रंग ॥छं०॥४५०॥

बँची पच प्रथिराज नृप। मन मंन्यो बहु सोक

इम धर अग्गर धीर हो। सो पत्तौ सुरलोक ॥ छं० ॥ ४५१ ॥

धीर की मृत्यु का तिथि वार।

अरिल्ल ॥ भादों सेत चतुर्द्दसि भारी। बर बर धीर गयौ सुषकारी ॥

मानैं महल ब्रषा रिति राजन। करै न महल भृत्त भर काजन ॥

छं० ॥ ४५२ ॥

तदन्तर राजा का राज्य काज छोड़ कर संयोगिता के साथ रस विलास में रत होना।

दूहा ॥ बरषा रिति राजन बिलसि। मिले जानि रति मैंन ॥

देस भूमि भर छंडि दिय। खबरि न है दिन रैंन ॥ छं० ॥४५३ ॥

इति श्री कविचन्दविरचिते प्रथीराजरासके धीर-पुंडीर पातिसाहग्रहनमोषन धीर बंधनो नाम चौसठमो प्रस्ताव संपूर्णम् ॥ ६४ ॥

विवाह सम्यो लिख्यते ।

[पैंसठवां समय ।]

---:o:---

पृथ्वीराज की रानियों के नाम ।

कवित्त ॥ प्रथम परनि परिहारि । राइ नाहर की जाइय ॥
जा पाछै इंछनीय । सलप की सुता बताइय ॥
जा पाछै दाहिमी । राय डाहर की कन्या ॥
राय कुँअरि अतिरीत । सुता हंमीर सुमन्या ॥
राम साह की नंदिनी । वडगुज्जरि वानी वरनि ॥
ता पाछै पद्मावती । जादवनी जोरी परनि ॥ छं० ॥ १ ॥

राय धन की कुंअरि । दुति जसुगौरी सुकहियै ॥
कछवाही पज्जूनि । भ्रात वलिभद्र सुलहियै ॥
जा पाछै पुंडीरि । चंद नंदनी सुगायव ॥
ससि वरना सुंदरी । अवर हंसावति पायव ॥
देवासी सोलंकनी । सारँग की पुत्री प्रगट ॥
पंगानी संजोगता । इतें राज महिला सुपट ॥ छं० ॥ २ ॥

भिन्न भिन्न रानियों से विवाह करने के वर्ष ।

पद्धरी ॥ ग्यारहै वरस प्रथिराज तांम । परनियै जाय परिहार ठांम ॥
पुहकर सुथान जोरी सुकिन्न । नाहर सुषेत परिसुता लिन्न ॥
छं० ॥ ३ ॥

वारमै वरस रा सलख सोय । दिन्नी सुआय इंछनी लोय ॥
आबू सुतोरि चालुक्क गंज्जि । किन्नौ सुव्याह परिभाव भंजि ॥
छं० ॥ ४ ॥

तेरहैं बरस दाहिमी व्यहि । दिन्नी सुवहिन चामंड चाय ॥
चवदमै बरस प्रिथिराज लोय । व्याही सुसुता हम्मीर सोय ॥
छं० ॥ ५ ॥
हाहुलि हमीर सुतिलक्क दिन्न । कन्या सुव्याहि उद्वार किन्न ॥
पन्द्रमै वरस चहुआन वीर । वडगुज्जरि परने अति गहीर ॥
छं० ॥ ६ ॥
राम साहि की सुता जानि । व्याहे सुन्नपति अति हेत मानि ॥
सोलहैं बरस सूबा सँपेस । व्याहे सुजाय पूरब्ब देस ॥
छं० ॥ ७ ॥
गढ समद सिषर जादव पजाय। लिन्नी सुतारूनि विहंसेन षाय
सत्रमै वरस हुआन साजि । राय धन की सुता गिरदेव गाजि ॥
छं० ॥ ८ ॥
अठारमैं बरस चहुआन चाहि । कछवाह वीर पज्जून व्याहि।
इक मात उदर धनिगरभ सोय । वलिभद्र कुंअर जापै सदोय ॥
छं० ॥ ९ ॥
बरसें गुनीस पुंडीरि व्याहि । चन्द की सुता सुष चन्द चाहि ॥
बीसमें बरस चहुआन धारि । ससिबरता व्याये वल बकारि ॥
छं० ॥ १० ॥
इकइमें बरस संभरि नरेस । हंसावति व्याये गंजि देस ॥
बाईसैं बरस प्रिथीराज पूर । सारंग सुता व्याहे सुसूर ॥
छं० ॥ ११ ॥
छत्तीस बरस पट मास लोय । पंगानि सुता व्याये सुसोय ॥
रट्ठौरि व्याय चौसठि मराय । पंचास लाष अरिदल षपाय ॥
छं० ॥ १२ ॥

इति श्रीकविचन्दविरचिते पृथ्वीराजरासके प्रथिराज विवाह नाम पैंसाठमो प्रस्ताव सम्पूर्णम् ॥ ६५ ॥

बड़ी लड़ाई रो प्रस्ताव लिख्यते ।

[छाछठवां समय]

रावल समर सिंह जी का स्वप्न में एक सुन्दरी को देख कर उससे पूछना कि तू कौन है और उसका उत्तर देना कि मैं दिल्लीराज्य की राजश्री हूं ।

दूहा ॥ विक्रमत सुख दिन प्रति नवल । चित्रकोट चतुरंग ॥
सुपनंतर लषि सुन्दरी । सेत वस्त्र मन भंग ॥ छं० ॥ १ ॥

कवित्त ॥ प्रथा कंत करि प्रेम । जाम इक रही रजन्निय ॥
निद्रा रावर समर । पेषि चहुआन अवन्निय ॥
उज्जल वस्त्र पवित्र । षिनक रोवै षिन गावै ॥
षिनक लियै भर भीर । षिनक अप्पह संतावै ॥
नरलोइ देव देवंगना । तू रंभा कहि कित रहै ॥
पहु अच्छ वधू वीरहतनी । को तन गोरी संग्रहै ॥
छं० ॥ २ ॥

रावलजी का पृथा से कहना कि अब पृथ्वीराज पकड़ा जायगा और दिल्ली पर मुसल्मानों का राज्य स्थापित होगा ।

तब जग्गयौ पृथनाथ । सुपन लद्धौ सु विचारिय ॥
कह्यौ प्रिया एकंत । सुपन पायौ अकरारिय ॥
दिल्ली पति गजनेस । करे कंदल धर सट्टै ॥
पकरै जब प्रथिराज । तबह गोरी तन तुट्टै ॥

जोगिनी ग्रहै भंजै सुधर। रेनसीह साको करै॥
म्लेछांह म्लेछ धर भोगवै। इह निहंच हम उच्चरै॥
छं० ॥ ३॥

रावल जी का अपने पुत्र रतनसिंह को राज्य देकर निगम बोध की यात्रा के लिये तैयार होना।

दूहा॥ सभा करी रावर समर। बैठे सूर सवान॥
निगम बोध भेटन सुतिथ। चलियै दिल्ली थान॥
छं० ॥ ४॥

चित्रकोट गढ पट्ट कज। रावल पुत्र रतंन॥
निट्ठ सु रष्षिय हट्ठ करि। घन प्रमोधि परिजंन॥
छं० ॥ ५॥

कवित्त॥ समर सिंघ निज पट्ट। थप्पि रावल रतंनं॥
दोहित्तौ सोमेस। अनष भरि कुंभ करन्नं॥
दष्षिन दिसि संक्रमिय। मिलि यह बसी पति साहं॥
बिडुर नयर दिय पटे। रहिय अनुचरि तिहि ठाहं॥
वीराधि बीर बज्जाय षग। हनिय वन्न तन करि उतन॥
इह सुपन रयनि लहि चंद कहि। चलि पुमानगढ क॥
छं० ॥ ६॥

रावल जी का अपने मातहत रावतों को इकट्ठा करके देवराज को गढ रक्षा पर छोड़ना और पृथा सहित आप निगम बोध को कूच करना।

दूहा॥ सुरज कोट गढ पौलि सजि। नालि गोलि चिहुं दीस॥
तीरंदाज अभूल भर। रषि चोकी अहनीस॥
छं० ॥ ७॥

षटकोस परिमान गढ। उरध प्रयुल बाव॥
सजल सरोवर कुंड भरि। झिरना झरन सुहाव॥
छं० ॥ ८॥

कवित्त ॥ तिहि वेरां तिहि काल। करै कग्गर चावद्दिसि ॥
अट्ठगढ जालौर। गए आमद बूंदी दिसि ॥
ईडर गढ गोडवारि। धरा उज्जैन धरज्जिय ॥
रिनथंभोर दुराद। सांढि चढि तेरह तज्जिय ॥
पव्वेर जौनि मिलहैं पवंग। साज बाज सब दिष्षियै ॥
नीसान घाव वज्जे निहसि। कौंन चितोरह रष्षियै ॥

छं० ॥ ९ ॥

रष्षि थान देवराज। गढ़ चित्रकोट भलायौ ॥
सत्त सहस असवार। अट्ठ ग्रह जाप करायौ ॥
किय डेरा दश कोस। प्रिथा लीनी अप सथ्यह ॥
स्वाति सुकल पष तीज। चल्यौ रावर मनु पथ्यह ॥
छय सहस सथ्य असवार हुअ। प्रस्थानौ अप्पन करयौ ॥
दस दिवस रष्षि प्रस्थान तें। दारें फौजें रह संचर्यौ ॥

छं० ॥ १० ॥

रावल जी की तैयारी और उनकी सेना के हाथी घोड़ों की सजावट का वर्णन।

पद्धरी। सजि चल्यो कटक रावर नरिंद। मानो कि पथ्य दुरजोध इंद ॥
पंचास हत्थि सुंडाल सथ्य। मैंमत्त चलैं जनु इन्द्र पथ्य ॥

छं० ॥ ११ ॥

उम्भारि सुंड क्रीडंत तेह। मानों कि नाग वन सहत षेह ॥
गढ़ पारि झारि पाहोर गंम। गुंजरे भौंर पठ रत्ति कुम्भ ॥

छं० ॥ १२ ॥

पगयंभ फवै तन मेर रूप। सुंडाल सेस तिन चढे भूप ॥
उप्पंम चंद किरनाल जोति। नव जटित नवग्रह ज्ञानि द्योति ॥

छं० ॥ १३ ॥

गिर झरन जा मद स्रवत जात। धज नेज कुम्भ घुघ्घर घुरात ॥
पट डोरि कसन गजवाग साहि। उपरस्स झूल झमकंत ताहि ॥

छं० ॥ १४ ॥

ढाले सिंदूर सीसह सुलाल। मनु स्याम कूट डारी गुलाल।
तिन देषि शत्रु होवत बिहाल। अरिथट्ट भंजनह रूप काल॥
छं० ॥ १५ ॥

आतस चरिच अनभंग थान। गज थट्ट थट्ट गिरि चले जानि॥
तिन पुट्टि तुरी पष्षर समेत। रथ सूर जानि आने सुहेत॥
छं० ॥ १६ ॥

उंचास भास परवत समान। ढिल्लै पहार छत्तिय प्रमान॥
षरगोस मधय पुट्ठीं सरोज। आछादि वस्च अनेक मौज॥
छं० ॥ १७ ॥

घरि एक पलक पल प्रान पील। नाचंत नट मानों असील॥
हाकंत सबद छुट्टंत वाय। हुंकरत तेज मुट्ठी समाय॥
छं० ॥ १८ ॥

(१)अपंम जरित नग जीन जोति। मानों कि सिद्ध उर प्रगटि द्योत॥
पष्षर समत जगमग पलान। मानों कि सघन महि डग्गि भान॥
छं० ॥ १९ ॥

तुरकी ऐराक कच्छी बँगाल। हनसीय गोल नाचंत काल॥
ताजी सँग्राम ते धुंधमार। पुज्जै न वान मानै न सार॥
छं० ॥ २० ॥

अनेक जाति अनेक रूप। तिन चढ़े दिग्गवर जाति भूप॥
मानों समंद सरिता हिलोर। मिलि आय जानि बरषा सजोर॥
छं० ॥ २१ ॥

सजि समर फौज अप्पह समान। मानहु अषाढ़ जलहर प्रमान॥
* * * * * * * * छं० ॥२२॥

कवित्त॥ है षुररज उच्छलिय। तिमिर विफुरिय धुंध पर॥
तरनि रंग रस मिलिय। घोर घुघ्घरिय रुहिर सर॥
चष्ष जुअल संजरिय। कमल उल्लसिय विमल जल॥
पथिक पयंबल लटिय। मथन घस नेह तुभक्क दल॥

(१) को.-उपंम।

जोवंति सिंघ अरिदल दसन । नह सुज्झै करमाल कर ॥
टल टलिय परिय कंपिय सघन । समर पयाना रंभ भर ॥
छं० ॥ २३ ॥

रावलजी का आंबेर में डेरा डालना और जुव्वन गढ़ के रावत रनधीर का रावलजी का लश्कर लूटने को धावा करना ।

कूच कूच करि पैर । प्रथा डोला दोइ सथ्थह ॥
सत्त एक वाजिच । चले उमराव समथ्थह ॥
किय डेरा आंमेर । कोस दोइ उप्पर कढ्ढिय ॥
सहस तीस दोइ सथ्थ । जुव्वन गढ़ रायां हट्टिय ॥
किन कही वत्त रावर समर । इह राजा चीतौर पति ।
तब कही वत्त रन धीर भर । इह अलोच किज्जै सुमति ॥
छं० ॥ २४ ॥

दूहा ॥ समर सिंघ रावर न्वपति । कटक लैहु सब घेरि ॥
जो सद्दौ चीतोर पति । तो डेरा आंबेर ॥ छं० ॥ २५ ॥
हुई[1] कूह हलहल हुई । छुटि गयंद मै मत्त ॥
मानों प्रव्वत [2]धन सिपर । चले फौज अनुरत्त ॥ छं० ॥ २६ ॥

विराज ॥ चढ्यौ संगि वाजं । रिनं धीर राजं ॥
करी फौज अग्गं । इला मग्ग भग्गं ॥ छं० ॥ २७ ॥
अनंसी जुवानं । पंचै तोन बानं ॥
हुए हीस वाजं । चवंदिस्सि गाजं ॥ छं० ॥ २८ ॥
मनों अग्ग होरी । दिसा संधि धोरी ॥
चढै अप्प अप्पं । मनों सिद्ध दप्पं ॥ छं० ॥ २९ ॥
बजे पग्ग रालं । उड़ै दब्बि नालं ॥
मनों तुट्ठि तारं । लग्यौ सेस भारं ॥ छं० ॥ ३० ॥
षहं लग्गि बानं । दव्यौ धूरि भारं ॥
बजे सूर साजं । गयनं सु गाजं ॥ छं० ॥ ३१ ॥

(१) मो.-कूह । (२) कृ. ए.-धन ।

करे फौज तीनं । अगं चित्त दीनं ॥
घटा बंधि फौजं । धरा लेन मौजं ॥ छं० ॥ ३२ ॥

उक्त समाचार पाकर रावलजी का निज सेना सम्हालना ।

दूहा ॥ षबरि भई रावर समर । दोर्‌यौ पट्टन राय ॥
सह्यौ पहु प्रथिराज की । ज्यौं चित्रकोट सुभाइ ॥ छं० ॥ ३३ ॥
कह्यौ आइ रावर समर । तब सिर लग्गी झार ॥
को रनधीरह बप्पुरौ । मो सों मंडै आल ॥ छं० ॥ ३४ ॥
फौज फौज सिलहों सजी । । पह गज्जे घनघोर ॥
कुरिय अप्प रावर चढ्यौ । भयौ कुलाहल सोर ॥ छं० ॥ ३५ ॥
छुट्टे षंभू थान ते । चले मत्त गजराज ॥
दधि फटक्कि फट्टक्कि गगन । उलटि सुभट जुध साज ॥ छं० ॥३६॥

रनधीर का अपनी सेना को चक्रव्यूह रच कर रावलजी की सेना को घेर लेना ।

कवित्त ॥ चक्रव्यूह रन धीर । सहस दस बीस दोय सजि ॥
आडंबर बहु करिय । मनों पल्लव भद्रव गजि ॥
दंति सहस बर मत्त । फिरै चावद्दिसि बिंध्यौ ॥
चित्रकोट कन्हा नरिंद । जानि जस सों जम जुध्यौ ॥
दंताल देत लग्गा भिरन । मानो कट्ट कवार किय ॥
बिच फौज रुक्कि रनधीर मुष । जानि बाज तीतर परिय ॥
छं० ॥ ३७ ॥

रावलमीर रनधीर का युद्ध, रनधीर का मारा जाना ।

भुजंगी ॥ उठे वीर [1]बद्द बके थान थानं । जगी जोग माया सुरं अप्प मानं ॥
जगे भूत वेताल भूसाल पद्दं । भिरे एक जामं बिहद्दं सु हद्दं ॥
छं० ॥ ३८ ॥
बजे तार रनतूर षग्गं उतंगं । तिनं वेर कन्हं रमै रोस रंगं ॥
षलक्कंत ओनं बहै रत्त धारं । सिरं छुथ्थ ईसं उड़ै तुट्टि सारं ॥
छं० ॥ ३९ ॥

---

(१) मो.- वद्द ।

हलक्कंत ढूढंत नंचैं कबंधं । खड़क्कंत बज्जंत छुट्टंत संधं ॥
¹हलक्कंत लुट्टंत तुट्टंत सूरं । झुकंते मुकंते दोऊ बथ्थ भूरं ॥
छं० ॥ ४० ॥

दड़क्कंत दीसंत पीसंत दंतं । करी कन्ह बोली परे सूर पंतं ॥
गयौ कन्ह चालुक्क अग्गें उतंगं । रिनं धीर बाही लगे कंध पग्गं ॥
छं० ॥ ४१ ॥

लगी नाग सुप्पी छती पुट्टि फारे । पर्‌यौ धीर षेतं सु चंदं उचारे ॥
परे सेन चालुक्क सथ्थं समथ्थं । भरें अच्छरी आनि अन्नेक रथ्थं
छं० ॥ ४२ ॥

कँन्हा आय सुर्हा लग्यौ धार भारं । परे सत्त तोपार चिंतोर सारं ॥
परे चालुक्कं सेन थट्टं सुघट्टं । परे सत्त तीनं वियं पानि लुट्टं ॥
छं० ॥ ४३ ॥

कवित्त ॥ पर्‌यौ सथ्थ रनधीर । भंजि सेना चालुक्की ॥
तीन सत्त धर परे । जानि लग्गी तन लुक्की ॥
लीध्यौ रन सीसोद । कन्ह पट्टे बंधायं ॥
प्रथा कंत हुअ जैत । सषी सुगतान बंधायं ॥
दं दास सथ्थ अप्पन सुपर । बीस रोज मुक्काम किय ॥
जिन घाव अंग लग्गे भरन । तिनह सीप चित्रकोट दिय ॥
छं० ॥ ४४ ॥

संयोगिता के प्रधान का रावलजी को दस कोस की पेशवाई देकर लेना और निगम बोध पर डेरा देना ।

कन्ह लयौ अपसथ्थ । चले दरकूच महाभर ॥
कुसल हुई सब सथ्थ । गयौ जोगिन प्रथ्थावर ॥
संजोगिता प्रधान । आय संमुह दस कोसह ॥
कोस पंच सामंत । पुच्छि परिगह आलोचह ॥

(१) ए. कृ. को.-हलक्कंत ।

डेरा कराय तीरथ्थ तट। निगम बोध सें थ्यौ तबह ॥
सुत्तिय बधायौ थाल भरि। करि आनँद ईंछिनि जबह ॥
छं० ॥ ४५ ॥

रावलजी का सब आदर सत्कार होना परंतु पृथ्वीराज तक उनकी अवाई की खबर तक न होना।

खई प्रथा मधि राज। सुधि न पाई प्रथिराजह ॥
तीन सत्त सुभ नारि। सषी मनसुत्ति सु साजह ॥
संजोगित परधान। दियौ सीधौ उमरावह ॥
सत्त तीन भरि छाब। चली कनवज्जनि धावह ॥
चौडोल केक रथके अरुहि। बहिल केक तुरियन चढिय ॥
मानौं कि देव इंद्रानि लै। रूप भाग सबगुन बढिय ॥
छं० ॥ ४६ ॥

संयोगिता के यहां से दासियों का रावलजी के डेरे पर भोजन पान लेकर जाना।

दूहा ॥ करि मंजन रंजन बहुल। सुरँग अगर घन सार ॥
नवला अंजित नयन जुग। कनक षंभ मनितार ॥ छं० ॥४७॥
वस्त्र अनेक सुरंग तन। दमनक [1]साथह लाय ॥
जरि जेहरि पाइन जरिय। सजि भूषन षोड़साय ॥ छं० ॥ ४८ ॥
लघ,नराज॥ रजंत भूषनं तनं। अलक्क छुट्टयं मनं ॥
सुचंद सुष्य रागिनी। मनो बदन्न नागिनी ॥ छं० ॥ ४९ ॥
उवट्टनं स उज्जलं। सुरंग रत्ति मज्जलं ॥
सुधा सुसेत दिष्षही। सु रोमराइ पिष्षही ॥ छं० ॥ ५० ॥

(१) ए. कृ. को.-साषह।

मनों कि गंग भारथी। सुभान चक्क सारथी ॥
अभंपनं विराजयं। अद्दंत गत्ति साजयं ॥ छं० ॥ ५१ ॥
मगं जराइ जेहरं। मनों कि मद्द सेहरं ॥
गढीस लग्ग सथ्यही। सुपिंड पानि रथ्यही ॥ छं० ॥ ५२ ॥
सुलेपना सु कट्टयं। अगं सु राज घट्टयं ॥
अद्दं नपित्र मंडयं। दुकेत राह छंडयं ॥ छं० ॥ ५३ ॥
जुहार कंठ सुभ्भई। सु मेर गंग पुभ्भई ॥
बैरष्प बाहु बंधयं। सु साप सेस गंधयं ॥ छं० ॥ ५४ ॥
जरित्त चूरि फुंदिनी। सुमेर ज्यौँ फुनंदिनी ॥
विराज कंठ दोवरं। कि गंग मेर ओदरं ॥ छं० ॥ ५५ ॥
सुरप्प गुंथि वेनियं। कि दीपमाल रेनियं ॥
दरप्प अट्ठ अट्ठयं। सवक्क हंस तट्टयं ॥ छं० ॥ ५६ ॥
चढी चौडोल अंबरं। मनों कि मेघ घुम्मरं ॥
चली सु अग्ग पच्छयं। इंद्रानि जानि कच्छयं ॥ छं० ॥ ५७ ॥
पचीस छाव अंबरं। असीस मुक्कली भरं ॥
मिष्टान छाव सट्टयं। अनेक रंग मिट्टयं ॥ छं० ॥ ५८ ॥
बतीस भांति मंसयं। सु सादि सुद्ध अंसयं ॥
सुरंभ तीस कट्टयं। कपूर भार पट्टयं ॥ छं० ॥ ५९ ॥
जवादि केसरं सुरं। पलं सु सत्त अंतरं ॥
हजार तीन हूनयं। बतीस छाव दूनयं ॥ छं० ॥ ६० ॥
पँचास सत्त छप्पियं। कपूर पान डब्बियं ॥
जराव जेव सट्टयं। जैचंद पुत्ति पट्टयं ॥ छं० ॥ ६१ ॥

दासियों का रावल जी से संयोगिता की असीस और शिष्टाचार कहना।

दूहा ॥ सषी सकल उत्तरि चली। पंकति करि सब सथ्थ ॥
छच धर्‌यौ चित्तोर पति। आय षडी रहि तथ्थ ॥ छं० ॥ ६२ ॥
गाथा ॥ संजोगिता असीसं। मुकलियं राज चित्रकोटं ॥
अति सनमान जगीसं। आइयं भाग अम्हाई ॥ छं० ॥ ६३ ॥

शवलजी का सखियों का आदर करना और उनसे पृथ्वीराज का हाल चाल पूछना।

दूहा ॥ आदर सषी अनंत किय। कहौ दिल्लियपति बत्त ॥
चार मास संजोगि ग्रह। [1]सुष विलसै नित प्रत्त ॥ छं०॥ ६४ ॥

सखियों का शवलजी को मितीवार सब बीतक सुनाना।

कवित्त ॥ हाव भाव वग्गुरि विथार। विनय षुंटी अति ढुक्किय ॥
कुचतरिया दुहु पष्ष। मूल चछ्छ हरती छुट्टिय ॥
[2]हांकी अहर सुरत्त। लियौ संभर पति घेरिय ॥
छुट्टे सब परिवार। कहै संभरि पति चेरिय ॥
संभलै बत्त रावर समर। है हथ्थी परिगह सुभर ॥
दरबार राज भय भीति दिषि। बहु [3]लिष्षी पतिसाह धर॥छं०॥६५॥
धर लीनी भेहरा। परयौ वंधह पम्मारह ॥
लूटि सहर लाहौर। गए द्रब कोरि अपारह ॥
ग्रह कीनी पुंडीर। हयौ सौदागिर धीरह ॥
बेरी चावंड राय। राउ भोंहा गँग तीरह ॥
माल दे मौति देवराज गय। हाहुलि फिरि बैठौ हियै॥
जादवन सेन संभी भिरै। दिल्लेसर मध्धे हुवै ॥ छं० ॥ ६६ ॥
जे विपरीतह देषि। हुए राजान समथ्थं ॥
जे गिरिवर न छिपंति। हुए धरपति सिर छत्तं ॥
जे डरि देते दंड। तेन फिरि दंड नगौरह ॥
वल्लोची बल राए। ढुरै सिर उप्पर चौँरह ॥
गोरी नरिंद दस लष्ष हय। संभरि पति सल्लै हियै ॥
पंचास दून दोबीस घटि। सो कनवज्ज भुझाइयै ॥ छं० ॥ ६७ ॥
हयौ बान कैमास। सूर कनवज्ज भुझाये ॥
चौ अग्गानिय सट्ठि। सह पंगानी ल्याये ॥
पतिकुल पिता संघारि। म्लेच्छ सुष हुऔ ततच्छिन ॥
मतै गयौ कैमास। सुहौ दिल्लिय धर रष्षन ॥

(१) मो.-सुख विलसत हुअ नित्त। (२) ए. कृ. को. कहा। (३) मो. लिखिय।

दरवान नहीं सिर इच्छियां । सरद मेघ मिहरी रहै ॥
संतान भाग अवग्रह ग्रहै । धर गोरी छत्ती दई ॥ छं० ॥ ६८॥
चावंड वेरी घत्ति । कित्ति पोई रस नहौ ॥
पट्टा पंगुर देस । साहि कोरी धर पट्टौ ॥
रजनी ठग दिन ठग्ग । सुचित दुचिता संसारह ॥
इह गोरी तन रत्त । ग्रही गोरी धर नारह ॥
अवधूत धूत नागिनि डस्यौ । विष लग्गौ लोरै लवन ॥
रहते सु अंसु रथ्यौ नहीं । भई वत्त तीनो भुअन ॥ छं० ॥ ६९ ॥

उक्त समाचार सुनकर रावलजी का शोक प्रगट करना ।

दूहा ॥ सिर धुन्यौ रावर समर । दई सीष सब नारि ॥
पानि कापूर सु हथ्थ दिय । कहि संजोग जुहार ॥ छं० ॥ ७० ॥

पृथ्वी का रानी इंछनी के साथ रहना और जैतराव का रावलजी की खातिरदारी करना ।

प्रथा रनत इंछिनि महल । सुख विलास मिलि जोग ॥
भ्रात चरित्तह दिष्षि सब । लग्यौ मन्न सँयोग ॥ छं० ॥ ७१ ॥

कवित्त ॥ जैतराय पम्मार । करिय मनुहार चित्रपति ॥
मधुर सु मेवा अनत । मंस मिष्टान अजब भति ॥
सीधौ मन सैं पंच । साक पल्लव तैला अम ॥
दही दूध अनपाह । घृत मन असी अनोपम ॥
ऐराक वंस जीनह जरे । भरी छाव विधि विधि भली ॥
पहुंचाय निगम रावर समर । हुई जैत अप्पन वली ॥
छं० ॥ ७२ ॥

कुमार रेणसीजी का सब सामंतों सहित रावलजी के लिये गोठ रचना ।

दाहिम्मै चावंड । करी मनुहारि सबन भर ॥
एक पुरंगम अच्छ । फेरि मुह अग्गै रावर ॥

(१) ए. कृ. को.-कट्ठिया ।

बलिभद्रह कूरंभ। इन ऐसो अट्ठारै॥
जर उजवक हय एक। ढिल्लि अंठुनि गिरि डारै॥
रामदे राव षीची प्रसंग। जामानी जद्दव बलिय॥
पम्मार सिंघ इत्ते सुभर। इन सु गोठि छत्रपति कलिय॥
छं० ॥ ७३ ॥

दूहा॥ [1]रेन कुंअर गोठह रचिय। विविधि भांति सब नूप॥
सुरंभ घृत सीधो सघन। कीनौ जीमन भूप॥ छं० ॥ ७४ ॥

गुरुराम का रावलजी को आशीर्वाद देना और कविचंद का विरदावली पढ़ना।

पद्धरी॥ सामंत सबन मनुहार कीन। प्रोहित्त राम आसीस दीन॥
छर सिद्ध दिस बरदान भट्ट। उचर्‌यौ चंद पेषै सुथट्ट॥
छं० ॥ ७५ ॥

दुह, पष्प, चवर सिर धरिय छत्र। वरदाय देत आसीस तत्र॥
उट्ठयौ सिंघ वरदाइ देषि। बोलंत बिरद बहु विधि विसेषि॥
छं० ॥ ७६ ॥

चीतौरराइ काइम्म कीन। घुम्मान पाट पग अचल दीन॥
मेरगिरि सरि चित्तौर मानि। किरनाल तेज बट्टै घुमान॥
छं० ॥ ७७ ॥

जैचंद समह जिन जुद्ध कीन। मांनो कि गुरग [2]तनु मोर पीन॥
कलकियां राय केदारराय। कब देत बिरद मनु उमँग चाय॥
छं० ॥ ७८ ॥

पापियां राइ प्राग्वट समान। कष्पन दरिद्र करतार जान॥
हित्यार राइ कासी अभंग। मदुआन राइ गंगा उतंग॥
छं० ॥ ७९ ॥

सुरतान मलन बंधन समोष। हिंदून राइ टालंन दोष॥
उज्जेन राइ बंधन समथ्थ। आचार राइ [3]जुट्ठरह वथ्थ॥
छं० ॥ ८० ॥

(१) मो.-रेनं कुवरं गोठ सुकरिय। (२) ए. कृ. को.-जनु। (३) मो.-युजिष्टरह।

भीमंग राइ भंजन सुपेत । गह लयौ धवल राजिंद जैत ॥
विनछंभ राइ सिर दंड कीन । अग्घ,आ राइ गड़ लेइ दीन ॥
छं० ॥ ८१ ॥
उथ्थाप राइ थापन समथ्थ । सोंपन सरीर प्रथिराज सथ्थ ॥
दप्पनी साहि भंजन अलग्ग । चंदेरि लिद्धि किय नाम जग्ग ॥
छं० ॥ ८२ ॥
दूहा ॥ जग ऊपर जगदीस गनि । मृत्तलोक दिल्लेस ॥
कैं तूं फुनि चित्रंग पति । आह,हमी नरेस ॥ छं० ॥ ८३ * ॥

रनधीर को परास्त करने के लिये कवि का कन्हा को भी वधाई देना ।

गाहा । कन्हा दिया आसीसं । सध्धौ रनधीर पेत पै रंडै ॥
अट्टा अट्टावीसं । पग्गं तेजाय तेजरं तुट्टं ॥ छं० ॥ ८४ ॥
असि गह महद्दर वारं । भारं सेसाइ सेस फनि इंदं ॥
दिस्मूतं अनपारं । समवर कारसार समर रावरयं ॥ छं० ॥ ८५ ॥

रावलजी का कविचंद से चंद्रवंश की उत्पत्ति पूछना और कवि का इला और वुध का इतिहास कहना ।

कवित्त ॥ रावर पुच्छिय समर । सोम रवि वंस प्रकारं ॥
वरनि कहिय कविचंद । कथा मंडे विसतारं ॥
एक समय वन पंड । सपतरिपि गये रमंते ॥
उमया शंकर तहां । देपि रसकेलि करंते ॥
लाजंत उभ्भर मुनिवर फिरिय । श्राप दियौ सिव मन कुरपि ॥
ह्वजियौ सहित आवत इहां । मैंदी मोबिन अनि पुरप ॥ छं० ॥ ८६ ॥
मारतंड सुत मंड । जग्य मंडाय पुत्रकजि ॥
राजलोक परछन । देत आहुति सौं कि दुज ॥
प्रगट कुंड कन्यका । देपि वाचिष्टति वारं ॥
फेरि मंच तप जोर । करिय दसमन्न कुमारं ॥

* छं० ८३ मो. प्रति में नहीं है ।

षेलत सिकार इक दिवस वह। महादेव कौंवन गयौ ॥
कहि चन्द आप मेटै कवन। पुरषा तन तें त्रिय भयौ ॥छं०॥८७॥
काम लुबद्धि बुद्धि। देषि चयि रुप छल्लि घर ॥
संभलि रिषि वाचिष्ट। बहुत करि अस्तुति शंकर ॥
प्रसंन होइ बर दियौ। पिता घर होय कुआरं ॥
फिरि तिय की तिय होय। बुद्ध घर जाय जिवारं ॥
इक इक मास की अवधि करि। दुअसु पतंगा रष्षि हम॥छं०॥८८॥
बुध अंस चद्र बंसह भयौ। दस मन सूरज वंस क्रम।

रजपूत शब्द की उत्पत्ति।

दस हजार ग्रभवंत। रिषि त्रिय ढंकि धरची ॥
फरसराम कै करत। वार इक वीर न षिची ॥
कासिप को ले दियौ। उदकि सारौ महि मंडल ॥
तपन तात पन छंडि। गयौ मन ग्रहै कमंडल ॥
वसुधा विचार तब कद्वि। निज रष्षा कारन थपिय ॥
उतपन्न सुतन तिन के सरज। दिष्षि नाम [1]रजपूज दिय॥
छं ॥ ८९ ॥

रावल जी का कवि चन्द को दान देना॥

मैदा मन पंचास। वीस मन वेसन दीनौ ॥
मंस जाति बहु भंति। जमन तट भोजन कीनौ ॥
आटा घृत्त अप्पार। षंड गुर सक्कर भंती ॥
जैयोषान जिहान। दई हथ्थनी इक तत्ती ॥
मनुहारि परग्गह सवन करि। भांति भांति आदर करिय ॥
पहुंचाइ समर रावर सुबर। अप्प घरघर विथ्थ,रिय ॥छं०॥९०॥
दो हथ्थिय तरिवार। तुरिय एराक अच्च गल ॥
कंचन जरित पलान। एक जोजन मभ्भ पल ॥
हथ्थी संघल दीप। एक जमदट्ट अमोलं ॥
जर जर कसि सिर पाव। साज साकत्ति समोलं ॥

(१) ए.-को.-रजपूत।

पहुचाय चंद भट्ट सुदर। कीरति कलिजुग विस्तरिय ॥
चित्रकोट गाव दीनौ इतौ। रही कलिज्जुग [1]वित्तरिय ॥छं०॥९१॥

वनवीर का कवि को एक हथनी और दो सुंदरी देना।

दूहा ॥ वनवीरह परिहार दिय। हथिनी एक सुरंग ॥
मोती माला सघन जल। द्वै सुंदरी सुचंग ॥ छं० ॥ ९२ ॥

रावलजी का शंक्रांति पर गुरुराम को एक गांव देना।

सूरजि भई संक्रांति जब। प्रोहित दीनी राम ॥
लष्पह्न न किसनारपन। दिय कारंडौ ग्राम ॥ छं० ॥ ९३ ॥

गाथा॥ दिन प्रति दीजै दानं। सठंह्न नाय परचयं कज्जं ॥
दोय पहर मिलि थट्टं। नह मह दरबार भट्ट चारनयं ॥
छं० ॥ ९४ ॥

इह रावर उनमानं। भानं उग्गाइ दिज्जियै दानं ॥
दिन प्रति दीजै धानं। इह दिट्ठं न कथयं कव्वी ॥ छं० ॥ ९५ ॥

दूहा ॥ [2]भुंजाई रावर समर। आवै बरन अठार ॥
नह को पूछै अप्प पर। दिज्जै अन्न अपार ॥ छं० ॥ ९६ ॥

रावलजी का इक्कीस दिन निगमबोध स्थान पर बास करना।

निगमबोध रिध वासकिय। रावर समर नरिंद ॥
हुए द्योस इकईस तहां। पंच सहस भर हृंद ॥ छं० ॥ ९७ ॥

पृथा का महलों से रावलजी के डेरों पर आना।

दिवस चपथ्थै राव रह। आवै प्रथा इकंत ॥
वासुर दोइ वासै रहै। परी भ्रान्त मन चिंति ॥छं० ॥ ९८ ॥
अति सुख सकुंल वरस तिय। रिंत रितिए आचार ॥
विलसत दिन ग्रीपम अधर। सुपनौ राजन वार ॥ छं० ॥ ९९ ॥

पृथ्वीराज का स्वप्न में एक सुंदरी को देखना।

कवित्त ॥ निसा एक माधव सु मास। ग्रीषम रिति आगम ॥
निसा जाम पच्छलौ। सुपन राजा [3]लहि जागम॥

(१) ए. कृ. को.-विस्तरिय। (२) ए. कृ. को.-भोंजाई। (३) ए. कृ. को-माहि।

सेत चीर छौनी। पवित्त आभ्रंन अलंकिय ॥
मुंकत बंध चाटंक। बंध वेनी अवलंकिय ॥
निज वैरि धारि कज्जल नयन। हर हराह सद्दह करिय ॥
मानिक्क राइ वंसह विषम। रष्षि रष्षि धरनी [१]धरिय ॥छं०॥१००॥

राजा का पूछना कि तू क्या चाहती है। सुन्दरी का उत्तर देना कि "वीर पुरुष" ॥

साटक ॥ का तूं सुंदरि छुंधरा किमहिता इच्छा परा वांछिता ॥
को वांछा बर राज कोवर रुची दाताग्य रूपानिवा ॥
नं नं नं न्रप जान दानरुचयं रूपं न विद्दी चयं ॥
षड गंधार सुमार दुत्तर अरी सो मे वरं सुंदरं ॥ छं० ॥ १०१॥
दूहा ॥ इम वसुधा सुपनंत दिय। रजगति रजन विचार ॥
विलसत दिन ग्रीषम अरध। सुधपिय पंग कुआरि ॥छं०॥१०२॥
रष्षि रष्षि उच्चार बर। गति सिंघल अतिरूप ॥
सुपनंतर चहुआन सों। चलन कहत इल भूप ॥ छं० ॥ १०३ ॥

उसी समय पृथ्वीराज की नींद खुलना और देखना कि प्रभात हो गया है।

धरकि चित्त जोगिनि न्रपति। दिषि प्रभात दुति गान ॥
भान किरन दिसि दिसि फटी। तम घटि तमचर गान ॥
छं० ॥ १०४ ॥

पृथ्वीराज का संयोगिता को स्वप्न का हाल सुनाना।

कवित्त ॥ जग्गि जलनि प्रथिराज। जग्गि संजोग सुपनि कहि ॥
सो सपनंतर जंपि। पत्ति दिट्ठी जु रत्ति महि ॥
सेत वरंच उत्तंग। चित्त हरनी कुटिला गति ॥
वैसम गुन गुर दुत्ति। दुत्ति उजलंत कुटीरति ॥
ऊंचै बचन्न बर कठिनह। घन कुलटा गति चलन कहि ॥
भव भविस गत्ति न्रिम्मान कहि। नन जानै भव गतिय बहि ॥
छं० ॥ १०५ ॥

(१) मो.-ढरिय।

संयोगिता का उत्तर देना कि यह सब हुआ ही करता है।

सुनि सुकंत धरद्दंद। गोय दिनी जुग्गिनि गति ॥
पुत्त मित्त दारा न बंध। रोकन पितुरनि पति ॥
दिष्टमान रोकै प्रमान। चच्छि अंछनि लच्छि कुछी[1] ॥
भाग विना बंधि जगत। अस्सवय जग चय तुछी ॥
मायाति नट्ट संसारनिय। न्त्रिप नच्चवि सुक्के जगत ॥
जीवन्न प्रान प्रापति जवसु। तव लग इह भावी विगति ॥
छं० ॥ १०६ ॥

पुनः दंपति का केलिक्रीडा में प्रवृत्त होना।

मुरिल ॥ हंसि आलिंगन दै चहुआनं। पिय सयूप दंपति रसपानं ॥
सुरते सुरत मंनं वर मत्तं। करहि सार संसार सुरत्तं ॥ छं० ॥ १०७ ॥

रसकेलि वर्णन।

हनुफाल ॥ वर सुरत रत्त सुचंद। दुहुं वढे आनंद कंद ॥
इह वुक्मि रसमुप वाल। वर कहत ओपम साल ॥ छं० ॥ १०८ ॥
ससिभोम कट्ठी रीस। मनु उदित भय ससि सीस ॥
सुपस्वेद विंद विराज। कविराज ओपम साज ॥ छं० ॥ १०९ ॥
कै किरन उल्लससि छुट्टि। कै ठौर मनमथ छुट्टि ॥
कत्ति कासमीर विवंध। वर अग्र आट सुचंद ॥ छं० ॥ ११० ॥
वर चिंत उपम विसाल। उडि चलन संगल वाल ॥
कुच अग्र म्रग मद विंद। रस वढे आनंद कंद ॥ छं० ॥ १११ ॥
[2]सुकि कमल वैससि वाल। अलि लै उडी जनु वाल ॥
कुच छुट्टि छुट्टि सुमग्ग। कुसमेष सीप विलग्ग ॥ छं० ॥ ११२ ॥
दुति होत कविन भकोर। वग उड्डै घन जनु कोर ॥
पिय सेन नेन सुरत्त। तिन मच्छिक वाल सुगत्त ॥ छं० ॥ ११३ ॥
प्रति व्यंब ओपम मीय। जनु सीय से हसि दीय ॥
रति निद्र रतिवर बीर। रति रयन रयन समीर ॥ छं० ॥ ११४ ॥

---

(१) मो.-कुछ, तुछ।
(२) ए कृ० को०—सुकि कमल वैस विसाल

अरिल्ल ॥ अवसर प्रीति बढ़ी रसपानं । कहि वर दूत सुनी सुलतानं ॥
सुनि घर गोरिय साहि नरिंदं । भईय गत्ति ढिल्लिय छिन मंदं ॥
छं० ॥ ११५ ॥

पृथ्वीराज की इस दशा का समाचार पाकर शहाबुद्दीन का अपने सरदारों से सलाह करना।

दूहा ॥ मति छीनी ढिल्लिय तनी । सुनिय साहि चहुआन ॥
दाव न चुक्कै अप्पनौ । दुअन सौति उरगान ॥ छं० ॥ ११६ ॥

कवित्त ॥ बोलि षान षुरसान । बोलि गोरि ततार बर ॥
षां रुस्तम पीरोज । सेन ढिल्ली चरित्र वर ।
बार बेर गहि मुक्कि । दीन में दीन कहायौ ॥
चहुआना जुरि नीर । मन्न मंती गह छायौ ॥
जौ होइ गोर गोरी ग्रहां । तौ तोसल नन भग्गही ॥
चहुआन बँधे बंधन जुरां । सो दिन पंथ तु लग्गही ॥
॥ छं० ॥ ११७ ॥

यह सलाह पक्की होंना कि दिल्ली को दूत भेजकर पूरा हाल जान लिया जाय तब चढाई की तैयारी की जाय।

सुमति सुरत्ती साहि । धाइ बंध्यौ चहुआनं ॥
सोई मता किज्जियै । बोल पछै नत आनं ॥
सुभ्रम निभ्रम बीर । बोलि विभ्रम परिवानं ॥
फेर सुकति सुलतान । जहां ढिल्ली परधानं ॥
तत मत्त बत्त बर संग्रहै । अरु हिरदै भेदै छिनह ॥
इन कहै साहि चतुरंग सजि । तब अरि ग्रहन विचार कह ॥
छं० ॥ ११८ ॥

शहाबुद्दीन का दिल्ली को गुप्त चर भेजना।

तब सु साहि गज्जनै । दूत ढिल्लीय पठाए ॥

जु कछु तंत को मंत। [1]अंत कहि कहि समुझ्झाए ॥
लै आवहु जंगल नरेस। षब्बरि सब सुद्धिय ॥
राज काज चहुआन। सकल सामंत सुबुद्धिय ॥
फुरमान साहि सिर धरि लियौ। भेष कियौ सोफी तिनह ॥
उभै पष्ष क्रम पंथह चलै। कागर काइथ [2]कर दिनह ॥ छं०॥११९॥

दूत की व्याख्या।

दूहा॥ साम दान अरु भेद दँड। ए च्यारौं बिधि आइ ॥
जान पनै सोइ दुत कहि। काम करै सुषदाइ ॥ छं० ॥ १२० ॥

दूतों का दिल्ली पहुँच कर धर्मायन के द्वारा सब भेद लेना।

गाथा॥ चर वर विवरित सुद्धं। लिद्धं चहुआन राजधानीयं ॥
सह दूतं पंथानं। गोरीयं जथ्थ जानामि ॥छं० ॥ १२१ ॥
वचनिका॥ ध्रम्माइन कायथ पै षबरि पाए। तबहिं दुत गज्जन को आए॥
तिहि दिन सुरतान आराम करि आनि घरे रहै। ततार षां सो बातैं कहै॥
बहुत रोज कहु और न आई। कछु दिल्ली की षबरि न पाई॥
तब तत्तार षान कहत है। पातिसाह कछु बात षूब है॥

बहुत दिनों तक दूतों के वापिस न आने पर शाह का चिंता करना।

मुरिल्ल॥ चर चर चित्त चहुआनं। हाम बित्ति ढिल्लीय चहुआनं ॥
बुल्ले साहि ततार बुलाई। अजहूं दूत गज्जन न घाई॥
छं० ॥ १२२ ॥

तत्तार खां का उत्तर देना कि दूत के लिये देर होना ही शुभसूचक है।

श्लोक॥ चिरं जोगीश्र सिद्धं। चिरं बंध प्रधानकं ॥
चिरं सेवक साधर्मं। चिरं दूतस्य लक्षणं ॥ छं० ॥ १२३ ॥

(१) ए. कृ. को.-कंत। (२) ए. कृ. को-दिन करह।

चिरं तपो फलं दाता। चिरं राज फलं प्रभो ॥
चिरं नाम धनी दाता। चिरं दूतस्य लक्षणं ॥ छं० ॥ १२४ ॥
दूहा ॥ इन लच्छिन तसकर सुलभ। तस पर दूत वसीठ ॥
रति दृग हंदग कुसल भल। कर वंधेन घसीट ॥ छं० ॥१२५॥

नीति राव कुटवार का सब समाचार शाह को लिख भेजना।

नीति राव कुटवार दर। तहि निवसै उन रीति ॥
सुमिलि साहि कागद दियै। लिषि दरबारह नीति ॥छं०॥१२६॥

प्रथम दूत का दिल्ली का समाचार कहना।

श गज्जनां सुरतान सों। कहि षिन षान ततार ॥
प्रथम पहुर संभ्रम सुचर[1]। दर बोल्यो कुटवार ॥छं०॥ १२७ ॥
बचनिका ॥ प्रथम पहर बह्या, संभ्रम दूत आप षड़ा रह्या।
सलाम लह्या, दिल्ली के चरित्र कह्या ॥
पातिसाह पहिलों सैं तान बड़े, राजा हुआ रति चढ़े ॥
छं० ॥ १२८ ॥
गाथा ॥ षैरी दं सुलतानं। दुसमन दैवान मह्लह थानं ॥
भर सहरत्त बिरत्ता। आघातं गोरियं साहिं ॥ छं० ॥ १२९ ॥
कवित्त ॥ एक समै हम्मीर राइ। दरवार सपन्नौ ॥
पिथ्थौरा चहुआन। हथ्थ संजोगि बिकन्नौ ॥
नथ्थि बाज गजराज। सुनर भेषह वर नारिय ॥
मार मार उच्चार। लहरि लक्करि सिर रारिय ॥
हाइ हाय दिसि सब्बे[2] हुअ। धुअ समान सुम्भर धुरह ॥
हरि द्रुग्ग द्रुग्ग सुष उच्चरिय। जिन दरोग गंठे डरह ॥छं०॥१३० ॥
दूहा ॥ इह चरित्र पिष्षै सुचर[3]। लग्गे गज्जन राह ॥
नाम सुसंभ्रम सुभग ते। कही सहि सों जाह ॥ छं० ॥ १३१ ॥

---

(१) मो.-नर।
(२) ए. कृ. को.-हुअ सब्ब। (३) ए. कृ. को-दंषे त्रिचर।

भर अनंध अड्डिय महल । रति बढ़ि घटि महिसार ॥
विप्परीति दिल्लिय सहर । न्नपति अलुभ्यौ मार[1] ॥ छं० ॥ १३२ ॥

दूसरे दूत का समाचार ।

बचनिका ॥ दूजा पहर वह्या । विभ्रम दूत आय षरा रह्या ॥
सलाम लह्या । दिल्ली का चरित्र कह्या ॥ ते कहा चरित्र ॥
गाथा ॥ भग्गीवा सुर संधी । बंधे पेमाइ लज्जलो पानां ॥
अप्पा पर न गनिज्जै । जानिज्जै राज भंजाई[2] ॥
। छं० ॥ १३३ ॥

कवित्त ॥ जां निज्जै सुविहान । राज भज्जै राजानी ॥
दर है गै भर नथ्थ । तेज भग्गी चहुआनी ॥
बासर संधि विसंधि । नौति भग्गी ढिल्लो वै ॥
जानिज्जै सु विहान । छोड़ छिंद्वान सुहै वै ॥
लज भगो प्रेम वड्ढे वरह । दइ दुज्जन महलैं ग्रसै ॥
चहुआन चरन सेंवन सुबर । नौति राव अप्पन वसे ॥
छं० ॥ १३४ ॥

तीसर दूत का समाचार ।

बचनिका ॥ तीजा पहर वह्या । निभ्रम दूत आय षरा रह्या ॥
सलाम लह्या ॥ दिल्ली का चरित्र कह्या । ते केहा चरित्र ॥
गाथा ॥ हिन्दू सयन सुदुष्षं । सुष्षं साहाव गोरियं साहिं ॥
राजन विषम चरित्रं । सामंता रोजनं रोज ॥
छं० ॥ १३५ ॥

कवित्त ॥ रोज रोज सु विहान । घेर सामंत ग्रेह घन ॥
सामि निंद उच्चरै । सामि निन्दा न सुनै क्रन ॥
भर अरत्त साईं । विरत्त गोरी सुलतानं ॥
संभ्रू रूप संजोगि । गिलयौ चहुआन सुभानं ॥
विपरीति वत्त ढिल्लिय सहर । राज नीति भग्गी रसं ॥

(१) मो.-उलझ्यौ नार । (२) ए. कृ. को. भज्जाई ।

पंजाब पंच पंचै सुपथ। चिंति तप्प गोरी बसं॥
छं० ॥ १३६ ॥

चौथे दूत का समाचार।

बचनिका ॥ चौथा पहर बह्या। विलास दूत आइ परा रह्या॥
सलाम कह्या। ढिल्ली का चरित्र कह्या॥ ते केहा चरित्र॥
गाथा ॥ गाडंडूर उडंडा। जोरु गरुवार मरद् हरु अंदा॥
धुनि धुनि सह सामंता। चावंड वेरियं बधे॥ छं० ॥१३७॥
दूहा ॥ त्रिया राज बसिवौ नही। वसिवौ नह बहुराज॥
बालराज बसिवौ नही। कहै घर घघर आज॥ छं॥ १३८॥
कवित्त ॥ जिन कंधै ढिल्ली नरेस। कंध जिनके ढिल्लिय पुर॥
जिन कंधै लगि राज। अग्ग अब्बुक्क बहुन धर॥
मान तुंग बर अग्ग। भिरिग कनवज्ज जुझाए॥
चौंसट्टिन सुक्कि कै। भागि जोगिनि पुर आए॥
चहुआन सुबर जानै न्त्रपति। सो बल मग्गौ साहि सुनि॥
चादर सु अप्पि गोरी सुबर। पंच देस पंजाब धुनि ॥छं०॥ १३९॥

शाह का पीर को चादर चढाकर दुआ मांगना।

बचनिका ॥ जमा सुविहानं। शाहब दी सुलतान॥
पैगंबर परवर दिगार। इलाह करीम कवार॥
सुलतांन जलाल सिकंदर जाया। सुलतान साहबदीन अलह उपाया॥
मुसलमान महति। दीन भीमहति॥
इतनी कही कहन लागे। पातिसाह साहाबदीन आगे॥
अपर पराये टरे। सैतान परवरे॥
सानंत मन जरे। चावंड राइ भी वेरी यौं भरै॥
कूरंम कुल संकोड़ा। परिगह पास छोड़ा॥
पांमार परि गनाई। हाहुलि परिहांम जनाई॥
राउ जैतसी पास भेहरा छुट्टा। पुंडीरों लाहौर लुट्टा॥
राउ भोंहा दुनिया मुकी। राउ माल दे मौत चुकी॥

देव रात दीवान छंडया। जादवों वैर संडया॥
पलक आलन आलोई। जीवत पहुआन वोई॥
दलोंही दीला जीती। कनवज्जैं कहर वीती॥
हजरत षुदाइ षेल। असि मरदांन जेल॥
बरन बरन घेरी। बद्दलों पंति नेरी॥
धु आसाहि साहाब साहि। दिजियै चादर उचाय॥

शहाबुद्दीन का चढ़ाई के लिये देश देश को परवाने या पत्र भेजना।

दूहा॥ चर चर वत्तति सिद्ध किय। रुकि किय घाव निसान॥
सत्त सहस कग्गर फटे। देस देस सुरतान॥ छं० ॥ १४०॥
वचनिका॥इतने मुलकन कों फुरमान फाटे। नौवी सदा ठौर ठौर बैठक ठट्ठे
फुरमान पेस कदलिवास। कैलास देस गोह षंधार॥
गष्पर गिरवान षुरासान सुलतान। भटनैर भष्परवान॥

शहाबुद्दीन के चढ़ाई करने का समाचार दिल्ली में पहुंचना और प्रजा बर्ग का अत्यंत व्याकुल होना।

दूहा॥ फुट्टिय वत्त प्रचार चर। घर घर ढिल्लिय थान॥
चढ्यौ साहि चहुआन पर। चढ़ि हय गय असमान॥छं०॥१४१॥
वढि आवत ढिल्ली संहर। चढ्यौ साहि सुरतान॥
घर अंगन संगन रुरिग। सुनत सूर अकुलान॥ छं० ॥ १४२॥
ग्रह वंभन ग्रहवान नर। ग्रह छत्री छह छन्न॥
भई बाति नर नारि सुष। सब लग्गै सन सन्न॥ छं० ॥ १४३॥
कवित्त॥ सुक्रम साहि वानैत। आय गज्जन संपत्ते॥
तिन कग्गर हथवार। आइ उत्ते इत तत्ते॥
सेत दुती रविवार। बार गुरु तेरह तत्ते।
चढ्यौ साहि साहाव। जोध है गै सनि मत्ते॥
जिन करह, ग्रब्ब गोरी सुपहु। जानि पुरानौ सेन सह॥
सज्जयौ सूर साहाव पुर। आयौ आतुर उप्परह॥ छं० ॥ १४४॥

सुरिल्ल ॥ सुनि कग्गर दुज्जर दिल्ली धर । भूमि कंप जिम कंप नरव्वर' ॥
बाल वृद्ध नर नारि समानह । लगी धक्कधकी चिंत चिंतानह ॥
छं० ॥ १४५ ॥

प्रजा के महाजनों का मिलकर नगर सेठ के यहां जाना।

भै लग्गौ दिल्लिय पुर जामह । नगर सेठ पहि गय प्रजतामह ॥
मिलिय सकल एकंत महाजन । किम बुझ्झैं रतिवंतौ राजन ॥
॥ छं० ॥ १४६ ॥

नगरसेठ श्रीमंत के यहां जुडने वाले सब महाजनों के नाम ग्राम और उनकी धन पात्रता वर्णन ।

पद्धरी ॥ प्रज मिलिय ताम विचार कीन । बुल्लाय बुद्धि जन सेठ लीन ॥
श्रीवंत साह सब नयर सेठ । मति वंत बुद्धि गुर गुन निरेठि ॥
छं० ॥ १४७ ॥
बर सिंह साह हंकारि अप्प । भोगवै विभौ लच्छी सु तप्प ॥
श्रीधर सुनाम सुंदरह दास । श्री करन जसोधर संक्र तास ॥
॥ छं० ॥ १४८ ॥
सोमन्न साहि केलन्न साहि । घन सागर आगर सगर ताह ॥
सोवन्न साह साजन्न बोलि । गरुअत्त गाज सुभ तेज तोलि ॥
॥ छं० ॥ १४९ ॥
अमरसी अगर ईसरह दास । करमसी उदैसिंघ राम आस ॥
केसर कपूर षेतसी नाम । गनपति गनेस गौरसी स्याम ॥
॥ छं० ॥ १५० ॥
घड़सीह धनू नेतसी साह । चेतन्न चतुर्भुज मिले माह ॥
छाजू अरु छीतर छविल आइ । जोधा जैसिंघ झांझन बुलाइ ॥
॥ छं० ॥ १५१ ॥
टोडर मल टी लाठ कुरसीह । चलि गए सांप डरपंत लीह ॥
डुंगर सी ढाला तुरत वेग । व्यापार धरम चालै सुनेग ॥
॥ छं० ॥ १५२ ॥

(१) मो.–नरव्वर ।

पानि गढ्ढिया ग्वाला दयाल । पन्नाह पींग भोगी सुआल ॥
परबत्त पदारथ पदमसीह । फांटू फणावर सिंघ ईस ॥
॥ छं० ॥ १५३ ॥

भांनो चाप भोजो मेघराज । मोहन मथूरो जा वड विराज ॥
रनधीर लषमसी बीर दास । सेषो सिंघो हेमंग हास ॥
॥ छं० ॥ १५४ ॥

आये अनेक महाजन्न सथ्थ । संकरहदास पत्ती सुग्रथ्थ ॥
बहु अन्न धरन अति तप्पतार । धति उंच उंच क्रति कम्मकार ॥
छं० ॥ १५५ ॥

तन लहै धाम छाया प्रचार । कोमलह गात लच्छी न पार ॥
कोमंत सास चालंत थूल । अति वध्धौ उदर चढि ग्रीव मूल ॥
छं० ॥ १५६ ॥

पहिरंत वस्त्र ढीले सु उंच । ग्रिह दै कपाट सुररंत मुंछ ॥
लेषिनी कान लेषौ करंत । हरि ब्रह्म रूप ताहू छरंत ॥छं०॥१५७॥
ग्राहंत कोप भीरंत सुट्ट । पीसंत दसन उट्टंत निट्ट ॥
दाता दयाल ऐसो न और । बरजंत पाप क्रम ठौर ठौर ॥
छं० ॥ १५८ ॥

प्रम दान ग्यान तीरथ विनान । सोभंत साह दै अन्न पान ॥
सोभंत नगर जिहि वड़े साहि । लष कोट द्रव्य जिन हट्ट माह ॥
छं० ॥ १५९ ॥

ए मिले साह श्रीवंत गेह । आये सु चिंतातुर चिंति तेह ॥
सुत सुतिय क्रम्म परिवार व्रिद्ध । घरबार भरे भंडार निद्धि ॥
छं० ॥ १६० ॥

कोटीस धज्ज बंदहि अनेक । वर धवल ताम मंडो विवेक ॥
उंच उंच भोमि साजै विलास । वर गौष अनत लग भाल श्रास ॥
छं० ॥१६१ ॥

प्रज्जंक विवध साजे अनूप । बासंसि विवह गुन गंठि भूप ॥
आए सुलब्ब ग्रह नयर साह । आसन्न दिद्ध सम सन्नि ठाह ॥

श्रीमंत साह का सब सेठ महाजनों का आदर सत्कार करना और सब महाजनों का अपनी विपति कथा सुनाना।

दूहा ॥ मानि साह श्रीवंत घन । सब प्रति आदर दीन ॥
अप्प नाम गुन उच्चरिय । सब संबोधन कीन ॥ छं० ॥ १६३ ॥
प्रथुक संबोधित साहि सब । चंदन चरचि कुसम्म ॥
कस्तूरी करपूर युत । बीर सुगंध सुरम्म ॥ छं० ॥ १६४ ॥
आदर करि सब प्रज पसरि । दिय बैठन सुभ ठाइ ॥
मति प्रमान जिहि पुच्छियै। बोलि सुगुभ्भ गुराइ ॥ छं० ॥ १६५ ॥

कवित्त ॥ मंच बयट्ठे साहि । जिके बहु गुन आगर ॥
सुष सरूप भोग बन । सजल लज्जी बुधि सागर ॥
सुतन मंत चिंतवै । चित चिंतै न कोइ नर ॥
रतिमत्तौ राजान को । सुगुदरै दुष अन्दर ॥
सामंत सब्ब अच्छै विरत । राचा वंड वेरिय भर्यौ ॥
कैमास खग्ग[1] जातह सकल । सुवर मत्त[2] सथ्यह सर्यौ ॥
छं० ॥ १६६ ॥

पामारी पर चित्त । विरत किन्नौ चहुआनह ॥
जो बुझ्झै सम विषम । ग्यान अप्पनौ परानह ॥
मधु साह परधान । सोय दरबार न दिष्षहि ॥
रयन कुमर सामंत । सींह सोइ पित न परष्षहि ॥
अनि तरुनि नेह छंड्यौ तमकि । कोइ न सुधि न्रप वर कहै ॥
संजोगि नेह रत्तौ नपति । मनमत्तौ निस दिन रहै ॥
छं० ॥ १६७ ॥

पुचिय रा कमधज्ज । सोइ जुब्बन गुन मत्ती ॥
रूप द्रव्य सिंगार । नेह उर चौजन रत्ती ॥
नह बुझ्झै पर अप्प । तैन रस राजन बंध्यौ ॥

(१) ए. को.-सुर्ग (२) ए. कृ. को.- तत्त

जिम अलियज अंबुजह्नि । गई बासुर निसि संध्यौ ॥
चिचंग राह आयौ सु घर । भये बीस बासुर सुथह ॥
नन भई बुझ्झि राजन किनो । तौ को गुद्दरै अप्प कह ॥
छं० ॥ १६८ ॥

श्रीपति साह का सब साहुकारों को लिवाकर गुरुराम के घर जाना ।

भुजंगी ॥ तबै उच्चयौ साह श्री पत्ति तामं । सबै मंच मंडी जुषंडी विरामं ॥
भए सब्ब सामंत चित्तं विरत्तं । दरंतेन तज्यौ न्रिपं मन्नि मत्तं[1] ॥
छं० ॥ १६९ ॥

पुरष्षं[2] दरब्बार पावै न जानं । रहैं चीय रुक्कै पुरुष्षं पुरानं ॥
विरानंन[3] अप्पंन बुझ्झै न सायं । करं बेत लट्ठी तरस्सीत रायं ॥
छं० ॥ १७० ॥

न्रिपं रस्स बंधे सुपंगानि तासं । भए तीस अग्गं बरं पंच मासं ॥
निसा बासुरं संधि भूल्यौ नियानं । लगे मीनकेतं क्षतं पंच बानं ॥
छं० ॥ १७१ ॥

कहै कोय राजंग सुझ्झै न अप्पं । ग्रिहं राज चल्यौ गुरंराजविप्पं ॥
लहै भंति एकंत कुम्मार थानं । विना सेव देवन्न आहार पानं ॥
छं० ॥ १७२ ॥

पुछ्छै वैरि बर बीर चामंड धारं । करै कानि भानेज रेनं कुमारं ॥
घरं घालि बरदाय सूतो सुअप्पं । करै कित्ति आनूप प्रागट्ट तप्पं ॥
छं० ॥ १७३ ॥

कहै गुद्दरं अन्य सूझै न राजं । विना राम देवं जिनं दिल्लि लाजं[4] ॥
मतों मंडि उट्ठै सबै साहि तामं । चली प्रज्ज सथ्थैं ग्रिहं विप्प रामं ॥
छं० ॥ १७४ ॥

---

(१) ए. कृ. को. वत्त
(२) ए.-गुरष्षं
(३) मो.-विरामन्ना
(४) ए. कृ.को.-काजं

चढै जान एकं सुएकं अनोपं। नरं जान जानंचवं डोल जोपं॥
बहिल्लं सु अस्वं सजुत्ते बनेयं। केयं अभ्रव रोहै सुषं राह रेयं॥
छं० ॥ १७५॥
बसंनं अनूपं जरावं सुधारे। मनों ध्रंम रूपं धरन्नीव तारै॥
चली प्रज्ज सथ्थंग हंकार सद्दं। गए विप्र गेहं गहं माह नद्दं॥
छं० ॥ १७६॥

गुरु राम का सब सेठ साहूकारों से सादर मिलना।

दूहा॥ सुने गहंमह विप्र दर। आयौ उट्ठे ताह॥
तब दर पति सनमुष कहिय। आये श्रीपति साह॥ छं० ॥ १७७॥
प्रजा षलक सथ उम्मही। जे बड़ दिल्ली साह॥
सो आये दरबार तुम। कोइ इक काज उगाह ॥छं० ॥ १७८॥
आए आतुर राज गुर। करिय विवह महमान॥
आदर करि आसन्न दिय। संबोधे बर बानि॥ छं० ॥ १७९॥

श्रीमंत सेठ का गुरु राम से शाह की चढ़ाई का समाचार कह कर सारा दुःख रोना।

कवित्त। सुनि अवाज सुरतान। षलक भज्जिय नद मंडल॥
कर कुसाव भेहरा। दान अरु मान अषंडल॥
मिलि परवान पुंडीर। सहर लुब्यौ द्रब साइय॥
हनि सोदागिरि बानि। बनिज उन्नित पट पाइय॥
अग्यान लुपै अग्या न्रपति। सत संपति संभर धनी॥
गुर राज काज अवसर अवसि। प्रज पुकार मंडिय घनी॥
छं० ॥ १८०॥

दूहा॥ तुम सम राजन राज हित। बित रष्षन चित भ्रम्म॥
कानन मंडै करन सों। तू धर रष्षन अम्म॥ छं० ॥ १८१॥
कवित्त॥ मंद राज माल दे। देष चिय तन असि किन भौ॥
लोहानौ आजानबाह। अजमेर द्रुग्ग गौ॥
पावस रा पट्टनी। महि महि सार निरत्तौ[1]॥

(१) ए.-नारंतौ, नारतौ

जर जोवन तन मंद। तुंग तेजौ रन असुभौ ॥
दाहिम्म दोह बंछै विषम। चरन वीर वैरी वहन ॥
घर घालि भट्ट सूतौ घरह। सुबर विप्र तोही कहन ॥
छं० ॥ १८२ ॥

का कलहंतरि नारि। धारि आनी घर मभझै ॥
रवि समान प्रथिराज। गिल्यौ गोरी जिम संझै ॥
जिहि परिगह परिवार। मारि मारत उप्पारिय ॥
जिम रावन मंडलिय। वलिय बन्दर हरि वारिय ॥
इच्छहु जो विप्र पच्छहि मरन। तौ अग्गै सोइ कहौ ॥
कर दरभ कमंडल छाग म्रग। वादरि द्रुग मारग गहौ ॥
छं० ॥ १८३ ॥

पाहुंनौ रावर नरिंद। वर प्रथा सपत्तौ ॥
सोइ अचिज्ज गरुहां। सुनंत मन मंझह संतौ ॥
ता सज्जन दी लज्ज। बज्र गोरी धर चंपिय ॥
नद नाहर पट्टन। प्रवेस अवनी आकंपिय ॥
इम सुपम निंद आवै न्रपति। विषम अप्प डंकह डसिय ॥
गुर राज काज अवसर वसिय। किम सुनेह छंडै रसिय ॥
छं० ॥ १८४ ॥

राजहौं कूरम्म। हथ्थ लड्डू विय बंधे ॥
चाहुआन सुरतान। कूर कावरि इन बंधे ॥
देव राज पीची प्रसंग। गंग टट्ट पट फुट्टिय ॥
जैत राव हय गय। भंडार साहन सह लुट्टिय ॥
गुज्जर गमार सस्वह वली। मंत दैव द्रुग्गन गनै ॥
वर विप्र राज राजंग गुर। कहै आज तोही वनै ॥ छं० ॥ १८५ ॥

गुरु राम का कहना कि मैं तो ब्राह्मण हूं पोथी पाठ जानता हूं राज काज की बातें क्या जानूं।

प्रोहित वाक्य।

इम सु कज्ज प्रब पंच। पढ़ै पचा प्रभु रंजहि ॥

छम जु लच्छि आस रहि। चरन चंदन घसि बंदहि॥
छम सुदेव जग्योपवीत। सोइ तन मंडन॥
छम विरह बंदि न पढ़त। पापह पर षंडन॥
इह विकट भट्ट चंदहि चरित। कहै सुमानै न्रप नवल॥
परतष्षि द्रुग्ग पुच्छन चलौ। मंच घत्त सज्जह सबल॥
छं०॥ १८६॥

शाह का कहना कि राज गुरु होकर अब आप भी ऐसा कहते हैं तो हम किसके होकर रहें।

प्रजा वाक्य।

धर बाहर पंडवन बुद्धि। बंधवन रुधि छुट्टिय॥
धर बाहर वामंन। छलित्त बल दोष सुयट्टिय॥
धर बाहर जुरि जरासिंध। गुर गजा जुद्ध किय॥
धर बाहर सुर पत्ति। अस्ति दद्धीच मंगि लिय॥
जिहि जियत धरनि धर और प्रभु। तिहि जननी जुव्वन हरिय॥
बंभन सुकज्ज इह अज्ज तुम। प्रज पुकार मंडी करिय॥
छं०॥ १८७॥

गुरु राम का श्रीपत साह और सब महाजनों सहित कविचन्द के घर जाना।

दूहा॥ प्रज्ज सु करिवर विप्र कज। सीस तिलक तन तुंग॥
कुसुम गंध सब सथ्थ मिलि। मनहु कमल रस भ्रंग॥
छं०॥ १८८॥

जब सहाव चहर उठी। तब गलहां फुटि चाय॥
प्रज पुकार गुर सों कहिय। चंद कहन गुर आय॥ छं०॥ १८९॥

कवित्त। राज गुरू दरबार जाय। घर चंद सपत्तौ॥
छच चौडोल रु जान। दिव्य(१) आसन दीपत्तौ॥
हेमहार मुद्रित उ चंद। किरनिय जगमग्गिय॥

(१) ए. कृ. को.-दिष्ष।

तिमिर पाप कट्टन । लिलाट प्राची दिसि उग्गिय ॥
प्रज सोर रोर पावस मनों । सुगर भट्ट चंदह सुनिय ॥
भट्टनि जगाय जग्यौ पुरस । सुगुर पच्छ सद्दह दुनिय ॥
॥ छं० ॥ १९० ॥

कवि का स्त्री बालकों साहित गुरु राम की पूजा करना और गुरुराम का कवि से अपने आने का कारण कहना ।

चंद वदनि जगि चंद । चंद वदनी सुख चाह्यौ ॥
हि चंद्राननि चंद्र । कंत चंदहि न सुहायौ ॥
अन्नित मित्त कलमित । नित्त वंदिन इह वद्दिय ॥
छिन छिन घटि वढि वढै । राह भय भवन सुजंदिय ॥
दुज पुञ्जि अज्ज लज्जा न करि । राज गुरू आयौ घरां ॥
सायंग धूप दीपह परचि । सुवर विप्र मंडल वरां ॥
॥ छं० ॥ १९१ ॥

सुरिल्ल ॥ सकल लोइ पुच्छन गुरु अप्पहि । गुरु षट मास राज विन दिप्पहि॥
तब पर जानि प्रपंच उपायौ । तव गुरु पुच्छन चंदहि आयौ ॥
॥ छं० ॥ १९२ ॥

दूहा ॥ आदर चंद अनंत किय । ग्रह आवत गुरु राम[1] ॥
सम सुत त्रियनि सु चरन परि । सिर फेरिग सव हाम[2] ॥
॥ छं० ॥ १९३ ॥

सुरिल्ल ॥ तव गुरराज राज कवि वुभ्झै ।
तुहि वरदाइ तीन पुर सुभ्झै ॥
अहि निसि देव सेव गुरु ठानिय ।
सो षट मास मिले विन जानिय ॥
छं० ॥ १९४ ॥

---

(१) ए. कृ. को.-राज । (२)ए. कृ. को.-साम ।

कवि का कहना कि जिस स्त्री के कारण सर्वनाश हुआ राजा उसी के प्रेम में लिप्त है।

दूहा ॥ हस्यौ चंद बर बिप्र सौं। तुम जानहु बहु भंति ॥
जिहि कामिनि कलहौ कियौ। सो जामिनि बिलसंत ॥
॥ छं० ॥ १९५ ॥

गुरुराम का कहना कि पृथ्वीराज ऐसा उदंड पुरुष क्योंकर स्त्री के बश में है।

सुरिल्ल ॥ कही चंद बर बिप्र न[1] मानिय।
रहि रहि कबि तैं बात न जानिय॥
जिहि धनु चिय रन चिन वर आनिय।
सुक्यौं देव चिय बसि करि मानिय॥ छं० ॥ १९६ ॥

कवि का कहना कि अभी आप वह बात नहीं जानते।

तुमसम दिष्टि अदिष्टि न दिष्यौ। जब असीलष्य दल्ल गहि[2] भष्यौ ॥
प्रान समान परत दप छोह्यौ। मरन छंडि महिला सुष[3] मोह्यौ ॥
॥ छं० ॥ १९७ ॥
तिहि महिला महिला बिसराई। अरु गुरु देव सेव सुनि साईं ॥
बिभौ भूमि श्रित जाहु सुजाही। सुनि सौ समौ राज गुर नाहीं ॥
॥ छं० ॥ १९८ ॥

गुरुराम का कहना कि हां कवि कहो क्या बात है।

दूहा ॥ समौ[4] जानि गुर राज रहि। कहि कहि कबि इह बत्त ॥
किहिवै किहि रूपनि रवनि। किम राजन रस रत्त॥ छं० ॥ १९९ ॥

कविचन्द का संयोगिता के रूप राशि का बर्णन करना।

जुब्बन ज्यौं तन मंडनौ। सिसु मंडन तन डोल॥

---

(१) मो.-सु। (२) एं. कृ. को.-गहि गहि।
(३) एं. कृ. को.-मन। (४) ए.-मनौ।

बालप्पन संह बिछुरन। तिहि चित चंचल लोल॥
॥ छं० ॥ २०० ॥

गाथा ॥ जंजोई संजोई। जोईत सिद्ध जम्माई॥
नंजोई संजोई। गोईत सिद्ध जम्माई॥ छं० ॥ २०१ ॥

मालती ॥ गुरु पंच सत्तति चामरे। चहुआन अच्छर धामरे॥
संति पीय पिंगल बंधए। गिय मालती प्रति छंदए॥
॥ छं०॥ २०२ ॥

संजोगि जोवन जंबनं। सुनि सर्वदा गुरु राजनं।
नग हेम हंस जुथप्पनं। गै मग्ग हंस उथप्पनं॥
॥ छं० ॥ २०३ ॥

तल चरन अरुनति अड्डयं। जनु श्रीय श्रीषंड लड्डयं॥
नष कुंद मल्लि सुवेसनं। प्रति व्यंब श्रोन सुदेसनं॥
॥ छं० ॥ २०४ ॥

करि कासमीर सुरंगनं। विपरीत रंभति जंघनं॥
रस नेव रंजि नितंबिनी। कुसुमेष इक्क बिलंबिनी॥
छं० ॥ २०५ ॥

उर भार मध्य विभंगनं[1]। दिय रोम राय सुथंभनं॥
कुच कंज परसन जंअली। मुष मयुष[2] देषि[3] कलंकली॥
छं० ॥ २०६ ॥

हिय[4] अयन सयनति सिद्धयौ। भजि ग्रहन ग्रहनति रिद्धयौ॥
उर भीन भीलति कंचुकी। भुज ओट जोटति पंचकी॥
छं० ॥ २०७ ॥

नलि नील पाखि वअचछयौ। जनु कुंद कुंदन सुच्छयौ[5]॥
कल ग्रीव रेह चिवल्लया। जनु पंच जन्य सुथल्लया॥ छं० ॥२०८॥

अधरेव पाक सुबिंबनं। सुक सालि आलिन खंडनं॥
दस नेव मुक्ति सुनंदनं। प्रति भास मुद्रित बंदनं॥
छं० ॥ २०९ ॥

(१) ए. कृ. को.- विलंगनं (२) को.-नयुष (३) मो.-दोष
(४) ए.-सिय (५) ए.-चच्छयौ

मधु मधुरया मधु सद्दया। कलयंत कोकिल बद्दया ॥
भ्रम भवन जीवन नासिका। नसु ञ्जंजनी पिय चासिका ॥
छं० ॥ २१० ॥

झल मलत अवल तटंकता। रथ भंग अरक विलंवता ॥
तुच्छ तुच्छ दृष्यहि इच्छसी। षष लज्ज सैसव संकसी ॥
छं० ॥ २११ ॥

सित असित उररि अपिंगज्यौ। जनु सेड बंदर वच्छज्यौ ॥
तसु मद्धि म्रग्ग मद विंदुजा। दुति इंदुनिंदत सिंधुजा ॥
छं० ॥ २१२ ॥

कच वक्र चक्रति कुंतलं। तसु ओपमा नह भूतलं ॥
मनि बंध पुह्पति दीसए। जनु कन्ह कालिय सीसए ॥
छं० ॥ २१३ ॥

चिस रावली वनि बंनियं। अवलंवि अलि कुल स्रिनियं ॥
चित चित्र चित्रत अंबरं। रति जानि दृश्वति सम्मरं ॥
छं० ॥ २१४ ॥

जनु सीस फूलति अच्छयौ। मनु कन्ह कालिय सुच्छयौ ॥
* * * * * * * छं० ॥ २१५ ॥

संयोगिता के शरीर में १४ रत्नों की उपमा वर्णन।

कवित्त ॥ जिहि उदद्धि मथ्य ए। रतन चौदह उद्धारे ॥
सोइ रतन संजोग[1]। अंग अंगह प्रति पारे
रूप रंभ गुन लच्छि। वचन अम्रत विष लज्जिय ॥
परिमल सुरतरु अंग। संष ग्रीवा सुभ सज्जिय ॥
वदन चंद चंचल तुरंग। गय सुगति जुव्वन सुरा ॥
धेनह सुधनंतरिसील मनि। भौंह धनुष सज्जों नरा ॥
छं० ॥ २१६ ॥

दूहा ॥ समर समंडन समर ग्रह। समर सुरप्पर भोग ॥
समर सुजित्तिय पंग न्रप। तिहि[2] चल्लन संजोग ॥
छं० ॥ २१७ ॥

(१) ए. कृ. को.-सोइ संजोग सुअंग (२) ए. कृ. को.-वल्लह।

सन्नि राज गुर राज रस । कदि दर दर्गनिय सत्ति ॥
जस भावी तस भुग्गवै । तस विधि अर्प्पै सत्ति ॥
छं० ॥ २१८ ॥

उभै उभै रस उप्पयौ । मिले चंद गुर राज ॥
कर वयनन आनन मिलहि । नयन निरप्पहि राज ॥
छं० ॥ २१९ ॥

कविचन्द और गुरु राम का सब महाजन मंडली सहित राजद्वार पर जाना।

भुजंगी ॥ मिले विप्र भट्टं अनूपं स धामं । मनोहिंदवानं सवानं[1] तकामं ॥
उभै द्वर सांई सु अग्या विनानं । चढ़े एक डोडोल नर एक जानं ॥
छं० ॥ २२० ॥

महा प्रीति अंगं मनं एक कीनं । मिले हथ्थ हथ्थं सुताली[2]य दीनं ॥
उभै ओपमा द्वर चंद सु चंदं । उभै पूजनं राज राजंन वंदं ॥
छं० ॥ २२१ ॥

अनेकं सु भंती उभै जानि वानं । उभै भ्रम्म कित्ती रथं चाहुआनं ॥
उभै आस पासं महाजन्न चालैं । जिनं देख देसं महानीच हालैं ॥
छं० ॥ २२२ ॥

कहै जे समाचार दूरंम होता । मिलै लोकं सथ्थें तमासा निजोता ॥
*　*　*　*　*　*　*　छं० ॥ २२३ ॥

कवित्त ॥ एक रथ्थ आरुहिय । सरद दिन इंद मनोहर ॥
समुह राज दरबार । पलक उम्महिय सगोहर ॥
कालस बंधि बंधियन । सगुन संचारि विचारिय ॥
बढ़े कित्ति वत्ती[2] सुघट्टि । घट आउदि हारिय[3] ॥
उच्छह उतंग छंदह बयन । गयन गज्जि वज्जिय जलह ॥
दरबार राज धुंधरि धरनि । सरन रष्षि दुग्गा बलह ॥
छं० ॥ २२४ ॥

---

(१) ए. कृ. को.-सवानंन
(२) मो.-बेली　　(३) मो.-भट आय निहारिय

संयोगिता की ओर से नरभेष धारण किए हुए पहरे-दार स्त्रियों का सब लोगों को मार कर भगा देना।

दिष्षि दइय दरबार। पंग कुंअरि चर बारहि॥
नारि भेष नर वस्त्र। सस्त्र लकरी कर भारहि॥
मार मार उच्चार। बाल तरुनि सुगंध रस॥
तुरिय नथ्थि गज नथ्थि। नथ्थि रथ विरद बंदि जस॥
बाजहि विसाल रन तूर रव। भवर भीर भामिनि भवन॥
दिठि परत लरथ्थर पय परत[1]। नकरि जीव अग्गह गवन॥
छं० ॥ २२५॥

षलक भग्गि गय सथ्थ। छंडि चौडोल लोग गय॥
लाल लहरि लक्करिय। छाह सिर विप्र भट्ट भय॥
बिन अलच्छि लच्छि नट्ट। बिहुनि इच्छा भइ सुगंह॥
उम्माह ग्राह मिल्लिग[2] पवारे[3]। रवरि राह ठिल्लित ठिल्लिग॥
दासी दिवंग सम अच्छरिय। मिलित दरह दोउनि बुल्लिग॥
छं० ॥ २२६॥

कविचन्द का ड्योढीवाली दासियों से बातें करना और कंचुकी का कलरव सुनकर कवि के पास आना।

चंद्रायना॥ मिले चंद गुरराज विराजत राज दर।
जहां पंगा प्रभानु कियो प्रथिराज बर॥
तहां अपुब्ब रस रास विलासति सुंदरिय।
क्षित बिन न्रप दरबार जिनग बिन मुंदरिय॥
छं० ॥ २२७॥

दूहा॥ इम जंपै कविराज गुर। कंपिग पट्टन वार॥
को गुर देव नरेस सों। दिसि गज्जनी पुकार॥
छं० ॥ २२८॥

(१) ए. कृ. को.-दिटि परतल रथ्थर पय परत। (२) ए. कृ. को.-पिल्लिग
(३) मो-दवरि, ए पवरि

सुनि सुनाइ आवंन मिटि। दिष्षि कविंद न्रप थान ॥
जै जीवन तौ पंच बुलि। दर बोले दरवान ॥
छं० ॥ २२९ ॥

वर किंचिक पुव्वह न्रपति। सुनि कलरव कवि वानि ॥
धाय चंद दरसन कियौ। भ्रम्म परिग्गह ठानि ॥
छं० ॥ २३० ॥

सुनि कवि वानि प्रमान धन। कहि इंछनी सें जाइ ॥
जु कछु कही वरदाय वर। ज्यों हित दिसा पसाइ[1] ॥
छं० ॥ २३१ ॥

अन्दर से इस दासियों का आकर कविचन्द से कहना कि क्या आज्ञा है सो कहिए हम राजा से निवेदन करें।

चद्रायना ॥ तव कुटिल भौंह चख सोहति मोहति दासि दस।
कछुक हँसिय[2] पय लग्गिय जंपी अलीय[3] लसि ॥
तुम सरवग्य सुकव्वि राज गुर राज सम।
तुम तन समुह निरष्षि गये पति पाय हम ॥ छं० ॥ २३२ ॥

दोहा ॥ आसन असु दिय चरन रज। कच झारिय तन रेन ॥
सव्व सिंगार सु सुंदरिय। आदर आभर नेंन ॥
॥ छं० ॥ २३३ ॥

दिट्ठौ सो दिट्ठौ नहीं। अनदिट्ठौ दिट्ठाय ॥
तुम सरवंगिय कवि सुनिय। इह अचिज्ज किहि भाय ॥
छं० ॥ २३४ ॥

कवि अचिज्ज सब अप्प घर। तरह तरह बतिनाइ ॥
नैंप्रिय धन तिन नाव दस। किइ भूत गीताय ॥ छं० ॥ २३५ ॥
आदर दर दिन्नौ कविहि। आयस मंग्यो दासि ॥
कहा पयंपहु न्रपति सों। कहौ चंद गुर भासि ॥
छं० ॥ २३६ ॥

(१) मो.-पठाइ
(२) ए. कृ. को.-हसीय　　(३) ए. कृ. को.-अलिय

कविचन्द का राजा को एक पत्र और सँदेसा देना।

कग्गर अप्पह राज कर। मुष जंपह इह वत्त ॥
गौरी रती तुअ धरनि। तूं गोरी रस रत्त ॥

छं० ॥ २३७ ॥

कवित्त ॥ नथ्थि कन्ह चहुआन। धीर पुंडीरन निड्डुर ॥
नहि सुमंत कयमास। राय गोयंद अषंडर ॥
नहि सुलोह लंगरिय। अत्तताई सुभंग भर[1] ॥
नहि पज्जन पंवार। सलष लष्षन बघघेल नर ॥
भोहांन भूप बंधुन बरन। सरन जाहि ढिल्लिय नयर ॥
घर नयर राय रावर समर। सक्क सहाब गोरी वयर ॥

छं० ॥ २३८ ॥

दासियों का पृथ्वीराज के पास जाना और कवि का पत्र देकर सँदेसा कहना।

दूहा ॥ दासि संपत्तिय तिहि महल। जहं संजोगि नरिंद ॥
सनमुष सषी निरष्षयौ। मनो पृथीपुर इंद ॥ छं० ॥ २३९ ॥
क्रम क्रम दासिय संचरिय। दस दस दिसि दरबार ॥
पग मुक्कत उक्कत लिषिय। न्रिप निय नयन निहारि ॥

छं० ॥ २४० ॥

अन्य महल दासिय निरष। परषि पयंपन जोग ॥
उन्नित सुष रुष राज किय। न्रपति सपत्तौ लोग ॥

छं० ॥ २४१ ॥

इय कहि दासिय अप्पि कर। लिषि जु दियौ गुर चंद ॥
पहिली ओली बंचियौ। भूमिय जाय नरिंद ॥

छं० ॥ २४२ ॥

कविचन्द का पत्र।

* षग तिस जस तिस दान तिस। तिस लग्गै हरि नाम ॥

(१) मो.-मह सुम्भर

* यह दोहा मो० प्रति में नहीं है.

सह निस ते सन वीर वर। तिन रष्षे संग्राम ॥

छं० ॥ २४३ ॥

कवित्त ॥ गज्जनेस आयौ असंभ। सह सेन सकिल्लिय ॥
दै चादर आदर अनंद। दिल्लिय दिसि मिल्लिय ॥
दस हजार वाहनि विसाल। दस लाप तुरंगम ॥
तहं अनेक भर सुभर। मीर गंभीर अभंगम ॥
आवरन वत्त चहुआन सुनि। प्रान रष्षि प्रारंभ करि ॥
सामंत नहीं सोमंत करि। जिन घेरहि ढिल्लिय सुधर ॥

छं० ॥ २४४ ॥

पृथ्वीराज का पत्र फाड़ कर फेंक देना और शृंगार से वीर रस में परिवर्तित हो जाना।

दूहा ॥ सुनि कग्गर फार्यौ सुकर। धर रष्षै गुर भट्ट ॥
तरकि तोन सज्यौ न्रपति। जिम वदल्यौ रस नट्ट ॥

छं० ॥ २४५ ॥

सल किंचत किंचित भयौ। गुनियन मयन उढारि ॥
वर पंचों छिन छिन छुटति। लज्ज पंच वहि पार ॥

छं० ॥ २४६ ॥

राजा का कुछ विमन होकर संयोगिता की ओर देखना और संयोगिता का पूछना कि यह क्यों।

प्रिय अप्रिय दिष्षौ वदन। किय जिय न्रप भौ सथ्थ ॥
हूं पूछों वर वरह तुहि। कहि सम दौरति कथ्थ ॥छं०॥ २४७॥

राजा का कहना कि मुझे रात्रि के स्वप्न का स्मरण आगया है।

अदभुत इक दिष्षौ न्रपति। रयनि गलित [1]षिन प्रात ॥
सुरति एक सम्मुह रही। सा सुपनंतर बात ॥

छं० ॥ २४८ ॥

(१) ए. कृ. को-बिन

संयोगिता का कहना कि यह तो हुआ ही करता है।

कवित्त ॥ कहै पीय पोमिनिय। कंत धन धन्यौ तोन धन ॥
सुष सुमार आरोह। सार संसार मरल मन ॥
दिन दिनयर निसि चंद। रेनि दिन दिनयर आवै ॥
जंतु मंतु इह बरनि। अवन लग्गवि समुझावै ॥
अरधंग धरा अरधंग हुअ। अरि अंग रंग अरधंग करि[1] ॥
जिम हंस रहत तस हंसनिय। सर सुक्कै जिम पंक परि ॥
छं० ॥ २४९ ॥

राजा का कहना कि नहीं वह अरिष्ट सूचक अपूर्व स्वप्न ध्यान देने योग्य है।

दूहा ॥ कहै राज संजोगि सों। अद्भुत चरित सुनंत ॥
निय पाइन लग्गिय सुप्रिय। कहि कहि कंत सुमंत ॥
छं० ॥ २५० ॥

संयोगिता का हठ कर कहना कि अच्छा तो बतलाइए।

कहै राज संजोगि सुनि। सुकथह कथ्य अकथ्य ॥
श्रवन मंडि कनवज्ज निय। सा सुपनंतर अथ्य ॥
छं० ॥ २५१ ॥

राजा का रात्रि के स्वप्न का हाल कहना।

कवित्त ॥ अज्ज सुपन सुंदरिय। रंभ लग्गिय परि रंभह ॥
तहं तुअ संग सुकिय। तेज अच्छिय रवि गिम्मह ॥
तहं तुम मिलि झग्गरौ। गहहि करिवर कर जंपहि ॥
तहं अदिष्ट आरिष्ट। दुष्ट दानव तन चंपहि ॥
तहं तून हून नन अच्छरिय। हर हर हर सुर उप्पज्यौ ॥
जानै न देव दैवान मति। कहन्निम्मान कह निप्पज्यौ ॥
छं० ॥ २५२ ॥

(१) ए. कृ. को.- अरि अरधंग अरंग करि

राजा का महलों से निकल कर कवि के पास आना।

सुनि उद्विय संजोगि। वचन जै जै जंपत जस॥
धनि छ्रति चहुआन। राज सिंगार वीर रस॥
छक्क मरन सुर नरां। मरन सिध साधक मुक्कै॥
मरन रहै जग नाम। चित्त रप्पत म्रत चुक्कै॥
अध अध करे अरियन दुअध। तूं उधतदि अरधंग मौं॥
सामंतन को सो मंत करि। राजस अप्प पधारिहौं॥
छं० ॥ २५३ ॥

राजा के स्वप्न का हाल सुनकर कवि और गुरुराम का वलिदान और दान पुण्य करवाना।

सुपनंतर पुच्छनह। राजगुर कविगुर बुल्लिय॥
सो सुपनंतर सुनवि। तेन मुप तिन प्रति पुल्लिय॥
सुवर हथ्थ दै मथ्थ। अभय पंजर पढि दिन्नौ॥
सहस कलस भरि पीर। अरघ रवि ससि को किन्नौ॥
दस वलि दिसान दस महिष हनि। सित अनंत मित दान दिय॥
तिहि दिवस देव प्रथिराज दर। संझ सुभर भर महल किय॥
छं० ॥ २५४ ॥

दूहा ॥ आवस्यक भावी विगति। कहा महिप वध होइ॥
जो जतननि टारी टरै। नल[1] पंडव सम कोइ॥
छं० ॥ २५५ ॥

पृथ्वीराज का बाहर के सब समाचार और रावलजी की अवाई की खबर सुनकर पश्चात्ताप करना और मंत्रियों से कहना कि जिस तरह हो रावल जी को लिवा लाने का उपाय करो।

पद्धरी ॥ किय महल राज आरंभ संझ। पद्धरी छंद व्रन्नैति मंझ॥

(१) मो.-भल।

धुक्किय निसान हुक्किय जिकीव। दिसि दिसि रिसान धाए नकीव॥
छं० ॥ २५६ ॥

घोलिय सुषग्ग है गै पलान। रथ अरथ दिष्ट गुष्टिय गुमान॥
पट नरम गरम जरि जिमित षान। जे लए दंडि सुरतान षान॥
छं० ॥ २५७ ॥

आवध अरद्ध सिलहन सकोड़। जंपरिय किरन किरनाल होड़।
उच्छरिय सुच्छ बंकुरि कपोल। विदिन विरद उत्तंग बोल॥छं०॥२५८॥

छह रंग छक्क आहत्त दान। दूल मझ्झ नंज बंबरि विपान॥
खिषि खित्त खित्त कग्गर सुदृष्ट। जोगिल जमाति जन मिलि गरिष्ट॥
छं० ॥ २५९ ॥

सनमंध प्रिथापति चित्रकोट। बहु लज्ज वीस बासरति ओट॥
पुछ्यौ प्रधानह छंकरि हकारि। कह करी प्रथापति जनु जुहार॥
छं० ॥ २६० ॥

कामंध अंध वीसल कुलेन। अपराध कोटि कामिनि रसेन॥
जित महल पुरष रस बस अरक्क। भुग्गवै भूप ते निज नरक्क॥
छं० ॥ २६१ ॥

मो बर समान धरपति सुदृष्ट। मो कहि न कवन डर कवन कष्ट॥
गोग्रहन धरनि ग्रह अतिथ राज। रष्षहि सरीर सुष[1] कवन काज॥
छं० ॥ २६२ ॥

अप अप्प दोष चित चिंति वीर। इहि लज्ज अज्ज छंडो सरीर॥
धरनर नरिंद जोगिंद मंत। पति चित्रकोट अरु प्रिया कंत॥
छं० ॥ २६३ ॥

उतर्यौ आय घर निगम बोध। मुहि दइन सुगध किन आय सोध॥
अब करिव कोइ जिहि तिहि उपाय। जिम चलै अप्प ग्रिह समरराइ॥
छं० ॥ २६४ ॥

रिस दिसर ज्ञान संजोगिबान। फिरि मझ्झ बोलि पिय सुनहु आनि॥
महिलान मंत पुच्छै न कोइ॥ हुं कहौं नाथ ज्यों समझि होइ॥
छं० ॥ २६५ ॥

---

(१) ए. कृ. को.-सुष।

सब त्रिया बुद्धि नीची गिनंत। मानैं न सच्च जो फुनि सुनंति ॥
संसार त्रिया विन नाहि होत। संजोगि सकित सिव माँहि जोत ॥
छं० ॥ २६६ ॥

एह रन सरन्न बहु भांति जानि। गुन अगुन अविधि विधि सबै ठानि ॥
ग्रह चरित लषै जोतिग्ग माहिं। त्रिय चरित करत कवि सुद्धि नाहिं ॥
छं० ॥ २६७ ॥

अनादि रीति सुनि एह बात। तिन काज कहै हम बुद्धि घात ॥
हम सुष्य दुष्य बंटन समथ्थ। हम सुरग बास छंडै न सथ्थ ॥ छं० ॥ २६८ ॥

हम भूष प्यास अंग मैं देव। हम सर समान पति हंस सेव ॥
छं० ॥ २६९ ॥

संयोगिता का दासी भेजकर राजा को दरबार में से बुला भेजना।

कवित्त ॥ अंग रष्षि संजोगि। नाम सुभना सुभ लच्छन ॥
रूप तेज अति तास। सकल कल ग्यान विचष्षिन[1] ॥
आइसु मझ्झ महल्ल। देषि द्रिग राजन उच्चिग ॥
गहर लज्ज वर बान। नेम निज नाथ स दुच्चिय ॥
इंछै सुमझ्झ संजोगि तुम। आवन राज पिनक्कनह ॥
सुनि सुभर सबै बैठन कहिग। संजोगी संपत्त ग्रह ॥ छं० ॥ २७० ॥

दूहा ॥ उठत राज सुह सुह हगनि। भरसंडी सन सन्न ॥
त्रिया रसन तृपतो नहीं। राज काज नह मन्न ॥ छं० ॥ २७१ ॥

राजा का संयोगिता से पूछना कि तुम मन खिन्न क्यों हो।

दिष्षिय राज संजोगि द्रिग। मन मलिन्न चलचित्त ॥
कहै राज पंगानि किम। तूं तन मनै अहित्त ॥ छं० ॥ २७२ ॥

संयोगिता का कहना कि जिस विषय पर दरबार में बात चल रही थी उसीके लिये मैंने भी आपको कष्ट दिया है।

कहै संजोगिनि स्वामि तुम। सभा सु जंपिय बत्त।

(१) ए. कृ. को.-सुलच्छिन।

सोइ कारन प्रभु संभर्यौ। सुद्दौं पगि कहौं सत्त ॥

॥ छं० २७३ ॥

संयोगिता का कहना कि मैंने रावलजी का उचित आदर सत्कार साध दिया।

कवित्त ॥ प्रथां कंत आगमह। कंत भोंकलि प्रधान दिय ॥
सुभर अन्न वस्तर सुगंध। आदर अद्व किय ॥
ननद देउ सिंगार। हार उत्तंग दुति मुत्तिय ॥
विजै करत विजैपाल। तात कै तात लिए निय ॥
विस लेष[1] प्रीति अंतर निमष। श्रवन राज आनंद दिय ॥
गुरमंच तंच जिम प्रौढ तिय। पिय पियूष ज्यों रेनि पिय ॥

॥ छं० २७४ ॥

पातिव्रत वर्णन।

चिय जु प्रीय उच्चरिय। चिय जु प्रिय बिन जिय[2] रष्षै ॥
अग्गि लोपि रव रवन। रवन बिन घटिन परष्षै ॥
पवन पंथ हाहंत। रहिन ग्राहत ग्रह तन्नै।
अंसु रष्षि तजि अंसु। हार सिंगारत जन्नै ॥
जुरि[3] चक्क चक्क बोलइ अगनि। चरित चित्त सुज लोक चित ॥
अरधंग अंग संदेह नहिं। सुद्दो सोहिं पिय पंग पित ॥

छं० ॥ २७५ ॥

दूहा ॥ पिय बिन तनपन अनन धन। भूषन वसन न रत्त ॥
जीवन बिन जीवन रषन। तौ पति रंइ परत्त ॥

छं० ॥ २७६ ॥

पृथ्वीराज का संयोगिता को आलिंगन करना।

* हंसि आलिंगन अंग दिय। जुरि लोयन पिय पीय ॥

---

(१) ए. द. को.-विषलेष। (२) ए. द. को.-लिय।
(३) ए. कृ. को.-सुरि।
* यह दोहा मो. प्रति में नहीं है।

लव लावन्य समुंद सर । सगुय सुधा रस दीय ॥

छं० ॥ २७७ ॥

आलिंगन समय की शोभा वर्णन ।

कवित्त ॥ हँसि आलिंगन देत । उपजि आनंद अपारह ॥
कनक लता जनु उमड़ि । लपटि लग्गी सहकारह ॥
नृप पयान सुनि कान । अंसु फिरि उअर समावत ॥
मानो आगम झरसंडि । विरह पावक बुझावत ॥
चहुआन चलत संजोगिता । पंग आनि करि कैं कहै ॥
संदेस सास संभरि धनी । पलन प्रान पच्छै रहै ॥

छं० ॥ २७८ ॥

पृथ्वीराज का इंछनी आदि अन्य सब रानियों से मिलना ।

दूहा ॥ अंतर गति अंतर मिलन । ए सुप बुद्धि न कोइ ॥
कौ जानै बिछुरन मिलन । कै सरवग्य जु होइ ॥

छं० ॥ २७९ ॥

त्रिपति नयन वयनह त्रिपति । त्रिपति अलिंगन देह ॥
रमन रमन विलास करि । फिरि दिय गंठि अछेह[1] ॥

छं० ॥ २८० ॥

इंछिय इंछिनि बंछिनौ । सथ्थनि सुच्छ सुहाग ॥
दस रवनी दस घटिक मिलि । जानि भवर कुसुमांग ॥

छं० ॥ २८१ ॥

कवित्त ॥ सुनि इंछिनि पम्मारि । लज्ज सागर मति नागर ॥
सील लील लच्छिन बतीस । परसी रति आगर ॥
लज्ज मेर दुति तन सुमेर । सत्त सीताहि समानन ॥
अलप बानि नव रसति । जानि षट भाष प्रमाननि ॥
जानै न मानि पहुँ विनय । भ्रम्म रूप लच्छी सहज ॥
मंडिनि निवच्छ चहुआन कौ । बंदि काम लीनी गहज ॥

छं० ॥ २८२ ॥

(१) ए. कृ. को.-गेठिय छेह ।

दसर वन्नि दस घटति। फिरिग कुसमंग भवर जिम॥
ग्रह ग्रहज्जि अलि मुक्कि। फिरिय कुंडली बाम इम॥
नयन कंति फिरि देषि। चंद ओपम फिरि पाई॥
कमल कोस ग्रह जुथ्थ। भँवर फिरि फिरि लग्गाई॥
संभरे चित रावर समर। दइ दुबाह दुज्जन हरन॥
जोगिंद राव जुग उप्परह। नर नरिंद करनी करन॥
छं० ॥ २८३ ॥

पृथ्वीराज का दरबारी पोशाक करके रावलजी से मिलने के लिये निगम बोध को जाना।

दूहा ॥ चल्यौ राज संबोधि तिय। लिय बहु भांति वसत्त॥
प्रीति सहित अंतर उमग। करन सु सीतल गत्त॥
छं० ॥ २८४ ॥

कवित्त ॥ कुसुम पट्ट सिर पग्ग। कुसुम रस गंध भवर सम॥
श्रवन साष दोउ लष्ष। द्रव्य बहु मोंरि[1] जोरि जम॥
सुरत रत्त अंतरह। रत्त तन विरत मोहि मनि॥
फुरत हथ्थ आतुरत। घुरत नीसान धुक्कि सुनि॥
मन सुरित मोह सेना सुरत। रुरत रात[2] सामंत सथ॥
न्रिप समर सीह राजन मिलन। निगम बोध भिट्टन सुतिथ[3]॥
छं० ॥ २८५ ॥

दूहा ॥ करिय सतौ मँडलौ महल। छँडि चावँड वर वंद॥
बगरि देव दरस्यौ न्रपति। सुमन मानि आनंद॥
छं० ॥ २८६ ॥

आनंदेश्रत भर सुभर। दिन दुलंभ न्रिप काज॥
सुबर बंध बंध्यौ न्रपति। साहि गह्यौ जिहि साज॥
छं० ॥ २८७ ॥

---

(१) मो.-मोंहि।
(२) मो.-रास
(३) ए. कृ. को.-कथ

तब न्रप उत्तर अप्प दिय। हलर सपत्तौ ग्रेह ॥
तास सदन विधि अप करौ। होय भविस्यति[1] तेह ॥
छं० ॥ २८८ ॥

पृथ्वीराज का सब सामंतमंडली सहित निगमबोध स्थान पर पहुंचना।

भुजंगी ॥ चल्यौ सेटनं रावि आवाज वज्जी। दिषी रत्ति निद्दी रही ताहि लज्जी।
चवं मास पट्टं छहं रत्ति गज्जी। क्रमं मोह छंडे ग्रिहं क्रम्म लज्जी ॥
छं० ॥ २८९ ॥

फिरै कुंडली डोरि न्रिम्मान तज्जी। मनों पातुरं चातुरं न्रत्त सज्जी॥
मयं मोर सुत्ती हयं हीर मंडे। मनों सेत नेतं सुमेरं प्रचंडे ॥
छं० ॥ २९० ॥

चल्यौ चाह चहुआन दै बांध पानी। भई जैत आजैत आकास वानी॥
रवी जोग बैठौ अकासं सनीरं। दिसं वाम ईसान सद्यौ[2] करीरं ॥
छं० ॥ २९१ ॥

फलं फूल पत्रं सुवंनं उड़ाये। मनौ वार वारं सुवाहं चढाये ॥
लवै बोलि सामंत सामंत मन्ने। भई अग्गि या चहुनं सब्ब जन्ने ॥
छं० ॥ २९२ ॥

चढे सथ्य सामंत सब्बै समथ्थं। बजेइ नीसान सद्दे अकथ्थं ॥
चढ़े सेन चल्ले निगंबोध मग्गं। गए पासि सिंघं चरं चारि अग्गं ॥
छं० ॥ २९३ ॥

चल्यौ रावलं संमुहं मंगि वाजी। चढी सब्ब सेना भरं नामसाजी॥
मिले संमुषं सेन दो राज राजं। दिठे[3] दिट्ट दिट्ठी रसालं विराजं ॥
छं० ॥ २९४ ॥

मिले प्रेम पूरन्न सामह्नि राजं। बजे अत्ति उच्छाह सुच्छाह बाजं॥
भए चित्त आनंद मानंद दूनं। बढी प्रेम बान कुसह्लं सजनं ॥
छं० ॥ २९५ ॥

मिले जाय बैठै निगंबोध थानं। चितं दोय रंजै प्रियं प्रेम पानं॥

(१) ए. कृ. को.-भविष्यति (२) मो.- चद्यौ (३) ए. कृ. को.-ठिले

घने आदरं सादरं सहि बैठे। मनों काम देवं दोऊ रूप पैठे॥
छं॥ २९६॥

एक दूसरे की कुशल प्रश्न होने पर पृथ्वीराज का रावल जी से अपना सब हाल कहना।

दूहा॥ कुसल त्तन पुच्छिय नृपति। हय गय भूमि भरान॥
ता पच्छै सुत सुति सुपरि। सुष दुष पुच्छि परान॥
छं॥ २९७॥

चौ अग्गानी सट्टि बर। पंगानी प्रभु आनि॥
रहे सूर सामंत ते। नव जम्महि पहिचान॥
छं॥ २९८॥

सा संषेपक उच्चरिय। बिहुन बिरद्दह तोल॥
जग्यराज जयचन्द ग्रह। पुच्छि करै तिहि बोल॥
छं० ॥ २९९॥

रावल जी का कहना कि स्त्री संभोग से भला कोई भी संतुष्ट हुआ है।

कवित्त॥ * सोम वंस राजिंद। नाम ससि वंध विचक्षन॥
घर घर प्रति इक रूप। रूप लावन्य सुलच्छिन॥
दस हजार तिय परनि। करेहु अग्गेर महल्लं॥
एकादस हज्जार। गए संवच्छर चल्लं॥
चय कोडि लाष पच्चास हुअ। पुच तास बलवँत सरस॥
रावल पर्यपं प्रथिराज सम। ते पन धपिय न काम रस॥
छं० ॥ ३००॥

कविचन्द का नवीन सांमतों के नाम कहना और रावल-जी का प्रत्येक से सादर मिलना।

दूहा॥ सामंतनि भेव्यो समर। प्रति प्रति आदर दीन॥
नाम कहे कविचंद नै। छंद अनुक्रम कीन॥ छं० ॥ ३०१॥

* यह कवित्त मो. प्रति में नहीं है।

Nagari-Pracharini Granthamala Series No. 4-19

THE PRITHVIRAJ RASO

OF

CHAND BARDAI,

EDITED

BY

Mohanlal Vishnulal Pandia, & Syam Sundar Das, B. A.

With the assistance of Kunwar Kanhaiya Ju.

CANTOS LXVI. *Continued.*
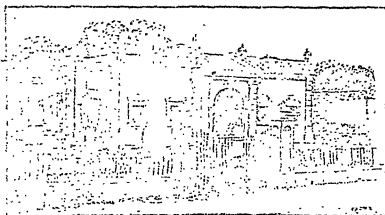
महाकवि चंद बरदाई

कृत

पृथ्वीराजरासो

जिसको

मोहनलाल विष्णुलाल पंड्या और श्यामसुन्दरदास बी. ए. ने

कुँअर कन्हैया जू की सहायता से

सम्पादित किया।

पर्व्व ६६

PRINTED BY THAKUR DAS, MANAGER, AT THE TARA PRINTING WORKS, AND PUBLISHED BY THE NAGARI-PRACHARINI SABHA, BENARES.

1911.

सूचीपत्र ।

नवीन सामंतों के नाम ग्राम इत्यादि का परिचय ।

भुजंगी ॥ अपं अबुआ राव सेब्यौ नरिंदं । स,तीधार राजा सुलज्जी समुद्दं ॥
मिल्यौ बग्गरी देव पीची प्रसंगं । गुनं दान मानं जया जास अंगं॥
छं० ॥ ३०२ ॥

लगे पाय कुम्मार दोनों सलोहं । लये लाय कंठं सनमान जोहं ॥
मिले सिंघ पामार साधार भारं । कमद्धज्ज आरज्ज सारज्ज वारं ॥
छं० ॥ ३०३ ॥

तबै आय परिहार सिंघं मद्दन्नं । समं पीप बंधं सुसेव्यौ सद्दन्नं ॥
तबै आइयै ताम आजान बाहं । अजम्मेर हुनो समत्तौ उछाहं ॥
छं० ॥ ३०४ ॥

लगौ रावलं पाय सा चाहुआनं । समं प्रीति रत्तौ सुमत्तौ द्रिसानं ॥
मिल्यौ चंद चंडी विरद्दं सुवाचं । बलं बुद्धि पग्गं सुअंगं सुसाचं ॥
छं० ॥ ३०५ ॥

अवदूत राजंग गोरष्य रायं । कलंकं सुरायं सु अंगं उछायं ॥
सुअं जन्ह हत्या सुमत्या कलेवं । धरा ध्रम्म रूपं कलौ देव एवं ॥
छं० ॥ ३०६ ॥

गुरं राजजोगिंद इंदं सुभासं । अविख्यात मंचा सनं सन्निवासं ॥
अठं सट्ठिनीरथ्य सो अज्ज पाया । सुपं देषते चित्त कोटं सुराया ॥
छं० ॥ ३०७ ॥

कवीताम आभासि जोगिंद रायं । मिले पुच्छि वत्तं कुसल्लं अघायं[1] ॥
मिलेताम मालहन्न सो वीर वीरं । धरै स्वामि ध्रम्मं सदा पग्ग धीरं ॥
छं० ॥ ३०८ ॥

लगे ईसरं दास चहुआन पायं । नरं नाह कन्हं सुअं सच्चभायं ॥
पऱ्यो राव परताप रायं षुमानं । बरं लज्ज दाहिम्म कैमास मानं ॥
छं० ॥ ३०९ ॥

सुअं भिंटि गहिलोत गोयंद राजं । समं तोल सामंत सीहं सु ताजं ॥
जयं जाम देवं सुजुद्धं जुधानं । बियं भूप भोरं सु जोरं बियानं ॥
छं० ॥ ३१० ॥

(१) मो.-प्रासायं

बिय तेज सुत्ती सु जोति क्रिसानं। इम तेज अंग सुरंग दिसानं॥
सदा एक पेमं रनं एक राजं। धजा एक बानै सदा एक लाजं॥
छं० ॥ ३११ ॥

दिठे दिट्ठ नेनं दुनेनं दुरूरं। दिसा दच्छिनी उत्तरे एक सूरं॥
मनो भेद पाटं सु घाटं पिछानं। पिता एक माता भयौ भ्रम्मथानं॥
छं० ॥ ३१२ ॥

बलीराइ बलिभद्र किय दास केली। जदों जामनी राज सोमेस भेली॥
नयं जीयविचार दुहुमात पित्ती। जयं जादवं संभरी रत्त रत्ती॥
छं० ॥ ३१३ ॥

दियं चित्रकोटं सोइ सुन्नि भारी। उठ्यौ षीझि पांवार बोल्यौ विचारी॥
लग्यौ गुज्जरं पाइ षीची रिसानौ। मनों डंकिनी डक्क अग्गै उभानौ॥
छं० ॥ ३१४ ॥

तुमं पंच पुत्तानि सोमेस राजं। तमं बुझ्झियै सब्ब सामंत लाजं॥
तुमं मंड के डंड के बोल छंडौ। विना हथ्थ राजंन की हथ्थ षंडौ॥
छं० ॥ ३१५ ॥

अरी सिंधु लोपी जमं संधि रंगं। नही मग्ग लम्भों इको रन्न अंगं॥
सबै कूर कूरंम की बात षोटी। हसै जादवं पानि पामार जोटी॥
छं० ॥ ३१६ ॥

बढ़ी हास रासं रसं प्रेम बेली। बढी प्रेम नेमं सु मग्गं सहेली[१]॥
मनों प्रेम बानंक सज्ज्यौ अनूपं। कला नेह बढ्यौ रजे राजरूपं॥
छं० ॥ ३१७ ॥

बढी जोति जोती रसं रास रंगं। कला कुंदनं ओप बढ्यो सुअंगं॥
तबै षट्टि परिहार अप्पै सजोई। कही बात षुम्मान आसन्न होई॥
छं० ॥ ३१८ ॥

सषंसी कुसीहं परीहार बंगं। रनं रामदेवं सु षीची प्रसंगं॥
इमे दाहिमं सूर जोरं जुनेकं। परै जुद्ध सुरतान चामंड मेकं॥
छं० ॥ ३१९ ॥

समं जाम देवं तनं सब्ब काजं। सबै[२] ब्रन्नइ राज जद्दों सु जाजं॥

(१) मो.-घटे बढे संग्रहं जीव सेली। (२) ए. क. को.-सजै।

घनं तर्क अवतर्क करि राजवेह । मनों वेरि पुस्सान चावंड एहं ॥
छं० ॥ ३२० ॥

रावलजी का सबको प्रबोध कर कहना कि अब जिसमें राज्य की रक्षा हो सो उपाय बिचारो।

कवित्त ॥ देपि चरित चहुआन । चित्त वत्तह विचारिय ॥
भय भवस्य न्निम्मान । कन्न जंपिय उच्चारिय ॥
घटै वढै संग्रहै । जीव सापी सुप दुप्पह ॥
नव जम्मह चित्त'ग । चित्त कोटह वंध रप्पह ॥
सम्भाव मरन गज मत्त जिम । पै संकर वंधी सरर ॥
आमंत मंत सामंत हौ । कोन मंत रष्यो सुधर[1] ॥ छं० ॥ ३२१ ॥
चहुआनां वर वंस । ब्रह्मवेदी जगि जन्ना ॥
ता राजन क्रत काज । सित्त सामंत उपन्ना ॥
पंच सूर इक अग्ग । जध्य कथ्यां कुल जाए ॥
दइय क्रम्म करि जोग । भोग जोगनिपुर आए ॥
ता अनुज राज भगिनी प्रिया । वर सु केलि रावर समर ॥
सगपन सु प्रीति वासुर दुदस[2] । निगम वोध उत्तरिय धर ॥
छं० ॥ ३२२ ॥
वोलि मंत सामंत । समर जंपहु न समर वर ॥
अग्गै हौ चितरंग । वंध जस वंधि अप्प घर ॥
ए अभंग राजंग । मरन जानै तिन मानं ॥
इन कलंक नन ग्रेह । वीय कालंकन भानं ॥
सुभ्भर सुमहन रंमह सुभर । वर वीरग विहारि घन ॥
जोगिंद राज जग हथ्थ वर । वर विढार विलभ्भाय रन ॥
छं० ॥ ३२३ ॥

रावल जी का राजमहलों को आना।

मिले राज रावल नरिंद । पूरन प्रेम भर ॥
अति अनन्द मन चंद । नेह उच्छंग देह वर ॥

(१) मो.-कोन मंत रषहु सुधर । (२) मो.-दुदृत्त

मिलिय सुभर उम्भय नरिंद। पित नाम जाति तव ॥
कुसल वत्त पढि तत्त। हित्त अभित्त चित्त सव ॥
बैठे जुपंच सत्तह घटिय। लै रावर संमुह चढिग ॥
आए सुग्रेह नद्दंत नद। अति उच्छव सुच्छव वज्जिग ॥
छं० ॥ ३२४ ॥

पृथ्वीराज और रावल जी का संयोगिता के महलों में बैठना रावलजी का सरदारों सहित भोजन करना।

बाघा ॥ बैठे आइय ग्रेह पँगानी। अत संबोधि रुचिय रस वानी ॥
धवल उंच साला सम रुचं। अति सुष्थान[1] मान थल सुचं ॥
छं० ॥ ३२५ ॥

आरोहित आसनयं सारं। अति गति रूप व्रन्न तन पारं ॥
जरा जरान अति अंग उभारं। देखत चित्त चढे के बारं ॥
छं० ॥ ३२६ ॥

जे जे अथ्थि पंग ग्रह उत्तं। देषन चातुर चित्त अभूतं ॥
ग्रिह साला सिंगारि अनूपं। समताहीन इंद्र पुर रूपं ॥
छं० ॥ ३२७ ॥

तहां आसन्न उतंग विराजं। जे मानिक्क विवह मनि भ्राजं ॥
तहां रावल सम रोज अरोहं। मानहु इंद्र उद्दे उभ सोहं ॥
छं० ॥ ३२८ ॥

बोले सुभट सब्ब नर तथ्थं। जे भर अप्प जुरावल सथ्थं ॥
मुष मुष किद्ध प्रसंस विचारं। जे भर सथ्थ सुरावल सारं ॥
छं० ॥ ३२९ ॥

विवह सु सुद्ध वास रुचि रासं। मुक्कि गंध वर धूम सुवासं ॥
साष जाति अत्ति हित्त सुभावं। विवह सुगंध प्रसंसन पावं ॥
छं० ॥ ३३० ॥

कुसुम सुवास जाति अत्ति भत्ती। रूप अनूपम गुंथि सुगत्ती ॥

(१) ए. कृ. को.-सुथासन

कासमीर म्रगजा घनसारं। कारद्दम जच्छ दच्छ तातारं ॥
छं० ॥ ३३१ ॥

विधि विधि भंति सुरावल रच्चै। पूजा देव समान सुसच्चै ॥
अति आनन्द सेव¹ सह सारं। तव सुत्र पंग आय परिहारं ॥
छं० ॥ ३३२ ॥

भोजन काजि अंतर आभासं। साला पहु संपन्न सहासं ॥
सालं असन अनुपम रूवं। आसन बैठि नेह पहु दूवं ॥
छं० ॥ ३३३ ॥

बैठे सुभट सथ्थ सम थानं। आभासित भोजन विधि वानं ॥
छं० ॥ ३३४ ॥

भोजन के समय किन किन पशु पक्षियों को रखना उचित है।

दूहा ॥ * कुर्कट निकुल करौंच कपि। हिरन हंस सुक मोर ॥
असन करत न्रप रष्षि ढिग। सूचक जहर चकोर ॥
छं० ॥ ३३५ ॥

कवित्त ॥ हंस हीत गति भंग। मोर कटु सबद उचारै ॥
रोवत क्रौंच कुरंग। सुकपि छंडत आहारै ॥
सूआ वमन करंत। निकुल कुर्कुट मिचाई ॥
ऐसें चरित करंत। जानि आगंम दिनाई ॥
चकोर परस्पर हित रहित। कहत चंद पारष्य लहि ॥
तिहि काज आनि रष्यत इनहि। भूपत भोजनसाल महि ॥
छं० ॥ ३३६ ॥

षट रस व्यंजनों का ब्योरा।

दुविध अन्न फल त्रिविध। साक पंचम सुहारं ॥
जुग विधि गोरस गुनित। ईष गति इक्क विचारं ॥
लवन तेज साहिंग। अठ्ठ दस भोजन भत्तं ॥

(१) मो.- देव * यह दोहा मो. प्रति में नहीं है

ता अनंत गति रचे। गनिक को गनै कवित्त॥
संजोगि एक अनेक सचि। षट रस पटु विधि लहिग सुचि॥
सारदा मंति समुझै भलै। जुपहु आहारै अन्न रुचि॥
छं०॥ ३३७॥

साटक॥ त्रिविध मुदित मन्नं शृंग घंटं सुसीषं।
जड़ दल पल पुहपं पल्लवं पंच साकं॥
जल थल नभ सेतत् सास मेनं त्रिधापि।
षट रस घ्रत जुक्तं षटू त्रिधा भक्ष[1] भोज्यं॥ छं० ३३८॥

भोजन हो चुकने पर दरबार होना। पृथ्वीराज का कवि चन्द और गुरुराम से कहना कि ऐसा उपाय करो जिसमें रावल जी घर चले जावें।

पद्धरी॥ भोजन कीन रावल नरिंद। मन्नेव रुचि आनंद इंद॥
आहार जुत्त कपूर पन्न। सुर वास रोहि सो सोभि तन्न॥
छं०॥ ३३९॥
कसमीर अंग रचै सुरंग। गिय गान तर्क मानि सुचंग॥
रस रास हास बढ्यौ अपार, गुन गुंथि नेह बल्ली सुसार॥
छं०॥ ३४०॥
अव चक्क चक्कारि सिंघ ताम। अग्गियां मंगि सासुर इयाम॥
चढ़ि चल्यौ अप्प पति चित्र कोट। सम चढ़े सब्ब सामंत जोट॥
छं०॥ ३४१॥
संप्रेरि सब्ब रावर सुताम। सामंत सपत्ते निज्ज धाम॥
संवित्त अद्ध निसि घटी दून। सुष सेन किन्न रस रत्ति ऊन॥
छं०। ३४२॥
उग्गौ सु सूर बज्जे घर्यार। सम देव संष गज्जे सर्यार॥
जग्गे वितास संजोगि राज। विचार मंत सामंत काज॥
छं०॥ ३४३॥

(१) ए. कृ. को.-भष्य

ग्रिह जाइ अप्प जौ प्रिथा कंत। सुद्दरै काज अप्पां सुसंत॥
थपि मंत वोलि सामंत तब्ब। आये सुनंत सातब्ब सब्ब॥
छं० ॥ ३४४ ॥

बुझ्झैव मंत सब्बां समूर। विधि कही राज कज्जां सजूर॥
सम चल्यौ ताम दिल्लिय नरेस। गौ सिंघ ताम चिंता सुभेस।
छं० ॥ ३४५ ॥

मिलि उभै राज आनंद अंग। वरनेह देह रच्चौ सुरंग।
मिलि वैठि तत्त सम सथ्थथान। अन्योन्य रंग वढ्यौ रसान॥
छं० ॥ ३४६ ॥

पल वीह घट्टि उप्पर दिनेश। दिन आय रुद्र मौ रत्त रेस॥
गुर राम आय वरदाय ताम। पट्ठए काज पंगजा जाम॥
छं० ॥ ३४७ ॥

आसिष्प उभै दिय राज हित्त। वैठे व कह्यौ न्त्रप कारन वत्त॥
उट्ठेव वैठि न्त्रिप अन्य थान। करि मंत कथ्थ रावर समान॥
छं० ॥ ३४८ ॥

पट्टए चंद गुर राम ताम। जामानि जद्द गुज्जर सुराम॥
पीची प्रसंग पम्मार जैत। विधि कही अब्ब[1] कारन सुभैत॥
छं० ॥ ३४९ ॥

सो करौं सवे वर विधि उपाइ। जिम चलें अप्प ग्रह समर राइ॥
सो चलै जथ्थ[2] रावर नरिंद। लग्गी सु तलव कारज्ज भिंद॥
छं० ॥ ३५० ॥

दूसरे दिन प्रातः काल से दरवार लगना और पृथ्वीराज का रावलजी की बिदाई की तैयारी करना।

कवित्त॥ प्रथम जगिय घरियार। सेष रजनी परगट्टिय॥
फुनि जग्गिय तमचर। प्रसिद्ध करि सद्द उघट्टिय॥
पूरब दिसि चिय जगिय। मुकुर जिम आनन मंजिय॥
रवि कर जग्गिय अरुन। बदन रंगन जग रंगिय[3]॥

(१) ए. कृ. को.-अब्ब (२) ए. कृ. को.-सथ्थ
(३) ए. कृ. को.-बदन रंग निज गुरं गिय।

दुज कमल जगिय किन वचन अलि। जगिय जगत प्रथिराज जस॥
बरदाय चंद जग्गिय धरस। मारतंड मंडल दरसि॥छं०॥ ३५१॥
दूहा॥ सब सामंत सुबोल लिय। और चंद बरदाय॥
सुफल काज मन्नेव सब। जो प्रिया कंत घर जाय।
छं०॥ ३५२॥
सोचि समझि सामंत सब। मिलि आए सब थान॥
स्वामि भ्रम्म हित चिंत कै। काम करन सु प्रमान॥
छं०॥ ३५३॥
कवित्त॥ ता सम दस सामंत। राज संजोगि सपन्नौ॥
हय हथ्थी स्टंगारि। हेम नग मुत्ति सु दिन्नौ॥
प्रियो कंत घर जाहु। हमहि गोरी घर लग्गिय॥
को जाने किं होय। कोय सज्जिय को भग्गिय॥
संचरो जाय संभरि धरा। अरु संभरि अव धारयौ॥
सब जंत रीति जम्मन मरन। समर राय विचारियौ॥
छं०॥ ३५४॥

रावल जी का चित्रकोट जाने से नाहीं करना।

कुंडलिया। जंत रीति जम्मन मरन। चाय जु सुन्यौ नरिन्द॥
तुमहो जान प्रमान बर। बर दंपति सुष बंद॥
बर दंपति सुष बंद। रत्त सहजंत सुजानं॥
मरन मोह मोहन्न। मोह मल्लं रस ठानं॥
अंक निद्धि चित बंध। उलजि निधि मुक्की अथ्यह॥
उत्त ढुंढ बंस बर चतुर। मरम जानै सब जंतह॥
छं०॥ ३५५॥

पृथ्वीराज का पुनः विनीत भाव से कहना कि यह अरज मानिए परन्तु रावल जी का कुरुष हो कर उत्तर देना।

चिचंगी चितवनि परषि। निरषि बदन कुंभिलान॥
कै अद्ब हम रष्षही। इत्ती बेर प्रयान॥

इत्ती वेर प्रयान। कहत तुम लज्जा नहीं ॥
कौन काल जीवन्न। काज जस संचौ आहीं ॥
तुम चित छंडि हम घर चलहि। इह अवथ पचंग ॥
जुड्ड जुरो चिचंग तौ। अग चौहान नरिंद ॥
छं० ॥ ३५६ ॥

कवित्त ॥ समुद विड्डि संभरिय। राज अग्गिय अहुट्ट पति ॥
अंत दान कालिंद थान। राजंग पान गति ॥
देस काल पातर पविच। संभरि संभारिय ॥
अंत दान संकलपि। सोम कन्या अवधारिय ॥
मूरप सुषंग तौ अंग सौं। प्रान देह दावन सुवन ॥
प्रिथिराज सथ्य सामंत सौ। धुनि निसान मंड्यो सुदिन ॥
छं० ॥ ३५७ ॥

दूहा ॥ धन चौरी मुक्यौ सु धन। सही न पुट्टि अवाज ॥
मोहि चलंतह चिंतवन। धर चिच कोट सुलाज ॥
छं० ॥ ३५८ ॥

कवित्त ॥ विभौ जाय जौ भ्रम्म। क्रम्म जौ जाइ भजत हरि ॥
मान जाइ सम प्रान। ग्यान जौ जोइ तत्त जरि ॥
अत्य जाइ बिन लज्ज। हेत सों जाय कपट्टह ॥
चित्त जाय पर नार। नारि जौ जाइ लंपटह ॥
रस जाहु जाहि अपजस लगै। वंस जाय जौ जुड्ड सुष ॥
प्रति प्रथिराज रावर कहै। इनहि जंत लग्गै न दुष ॥
छं० ॥ ३५९ ॥

चंदानौ आयास। वास अगुटी रुद्रानौ ॥
द्वै नयना द्वै सूर। तेज अश्विनि ना सानौ ॥
जीह वरुन जल स्वाद। करन मंडल वायालय ॥
बाहु इन्द्र आसरै। ब्रम्ह इंद्री दासालय ॥
सब देव विसन अग्यार मैं। आन अनंदे तौ फिरै ॥
चिचंग राय रावर चवै। प्राहुना भग्गा भिरै ॥
छं० ॥ ३६० ॥

मो[1] भग्गे संग्राम । मोहि भग्गै भग्गै अरि ॥
वसौं साज रन सूर । सुमत सुक्कै कलह करि ॥
तत्त पांच पाहुना । भगत चुक्कियै न कित्ती ॥
नव ग्रह ग्रह फिरि ग्रेह । सुक्कि जीरन ग्रह जित्ती ॥
सगपन सुनेह सनमंध नहि । लज्ज अम्स धन चुक्कियै ॥
चिचंग राय रावर चवै । तत्त पंथ नहि सुक्कियै ॥

छं० ॥ ३६१ ॥

पृथ्वीराज का कहना कि आप हमारे पाहुने हैं अस्तु हम आपको विदा करते हैं आप जाकर अपने राज्य की रक्षा कीजीए ।

तुम पाहुना परदीप । राज पर कौ का झुंझ्यौ ॥
चहुआना कुल पुञ्ज । राज दुज की वर पुञ्जौ ॥
तुम पुट्ठे गिरि जंग । द्रुग्ग दारुण गंभीरा ॥
गुज्जर वै माल वै । हम भञ्जौ हम्मीरा ॥
फल फूल पान अंबर सुबर । मुकुट बंध चामर सरज ॥
सामंत सूर जों[°] राज घर[2] । एक सुदिन मानै बरस ॥

छं० ॥ ३६२ ॥

एक बरष सामंत । जानि गोरिय भिरै भर ॥
एक बरष सामंत । बंस सिसपाल पलह जर ॥
एक बरष सामंत । वीर अब्बू गढ़ छंद्यौ ॥
एक बरष सामंत । जुइ भोरा भर संद्यौ ॥
दिन इक सोय सामंत को । पंग भ्रम्स दरहंत जिय ॥
साध्रम्स बाल बोल्यौ तहा । मरन छंडि महिला रजिय ॥

छं० ॥ ३६३ ॥

रावल जी का उत्तर देना कि मैं सुरतान में मिलूंगा ।

मो मुंजानी ढाल । माल कूमला रुद्रानी ॥

(१) ए.-सो (२) ए. कृ. को.-रा वरह, मो

मो नाग सुपी सिल्लार । ब्रह्म मोगर सिद्धानी ॥
हों सिंगी रा अवधूत । जोग वच्छों जुद्धानी ॥
हों आहुठाम स्वामि । स्वामि कहि जों सुरतानी ॥
सामंत मंत केते कहों । केते घर गोरी वहन ॥
हों कालंक राय कप्पन विरद । महन रंभ चाहों कहन ॥

छं० ॥ ३६४ ॥

महन रंभ आरंभ । छच जैजै तप वारिय ॥
महन रंभ आरंभ । राय जहों पग स्वारिय ॥
महन रंभ आरंभ । साहि वंध्यौ गुज्जर वै ॥
महन रंभ आरंभ । पग्ग भट्टी करि छैवै ॥
कालंक राय दुज्जन दवन । निगम सोह वंधे रवन ॥
भग्गौ सुबंध संग्राम कौ । जो चित्तंगि कीनो गवन ॥

छं० ॥ ३६५ ॥

रावल जी को कुपित देख कर पृथ्वीराज का उनके पैर पकड़ कर कहना कि जो आप कहें सो करूं ।

सुनि सुवत्त चहुआन । नयन सम सिंघ निरष्यिय ॥
भ्रकुटि वक्र द्रगस्त । करन सुप वरन सु दष्यिय ॥
अंक तेज असह्हेज । ग्रीषम मध्यान भान सम ॥
गहिय पाय प्रथिराज । कहहु सोइ मंत मन्न तुम ॥
जंपै सु सिंघ चहुआन सुनि । हम अयान मंत न कहै ॥
पुच्छौ सुमंत सामंत सब । जिन वोलां धर उग्रहै ॥

छं० ॥ ३६६ ॥

कहै राज प्रथिराज । सुनौ पति कोट चित्र तुम ॥
तुम वड्डे वड्डाय । सब्ब राजन्न देस जुम[1] ॥
तुम जुगिंद जग जित्त । तुमह हम पुच्छि प्रीत गुन ॥
मति अथाह जुध राह । दछ्य सब नीति मंत मन ॥
तुम वत्त मत्त कुन उच्चरै[2] । तुम उप्पर हम को हि तुअ ॥

(१) मो-सब सामंत है तुम, (२) ए. कृ.को.-तुम सत्त मत्त कों नुच्चारै

उच्चरी एक बत्तिय तुमै। सो हम मानै मन्न युभ्र ॥
छं० ॥ ३६७ ॥

रावल जी का कहना कि तुमने और अनर्थ तो किये सो किये परन्तु चामंडराय को बेड़ी क्यों भरी।

क्यों ग्रहियौ दाहिमौ। राज गंजन का[1]गज्यौ ॥
पातिसाह परबंध। ताहि भर मह कां सज्यौ ॥
मान हीन क्यों कर्यौ। तुच्छ करि कांइ दिषायौ ॥
भिरि भारथ सम पथ्थ। नाहि पुरपत्त गमायौ ॥
प्रथिराज काज साधन समर। गय[2] घट संमुह टिल्लिय ॥
चामंड राय दाहर तनौ। तिहि पग लोह न मिल्लिय ॥
छं० ॥ ३६८ ॥

पृथ्वीराज का कहना कि उसने मेरा सर्व श्रेष्ठ हाथी मार डाला।

इसौ हार सिंगार। जिसौ ऐरावति इंदह ॥
इसौ हार सिंगार। जिसौ लिष्षमी गयंदह ॥
इसौ हार सिंगार। जिसौ गज ग्राह स्याम घन ॥
इसौ हार सिंगार। जिसौ सुप्रति करि नंगन ॥
कुवलया पील जनु कंस कौ। बरन सोभ गनपति वनिय ॥
चिचंग अग्ग चहुआन कहि। सो दाहिम्मै किम हनिय ॥
छं० ॥ ३६९ ॥

दूहा ॥ संभरिवै रजबट रहन। पनि रावल इह कथ्थ ॥
सिंधुर भास उलालि रिन। गय नंगन भारथ्थ ॥छं०॥ ३७० ॥

रावल जी का कहना कि चामंड राय को छोड़ दो।

सिंघ कहै प्रथिराज सुन। एक मत्त बर सत्त ॥

---

(१) ए. कृ. को.-क्यों। (२) ए. कृ. को.-गज।

दाहिमौ छंडौ न्टपति। एह मत्त सुभ्भरत्त[1] ॥
छं० ॥ ३७१ ॥

कवित्त ॥ मद्दन रंभ आरंभ। राज रावल रा हिंद॰ ॥
सत्त मत्त वर वैठि। जवन जोगिन ग्रह जिंद॰ ॥
चाहुआन क्रूरभं। गौर गाजी वड़ गुज्जर ॥
जादौं रा रघुवंस। पार पुंडीरति पप्पर ॥
रट्टौर पवार सुरस्थलिय[2]। ब्रह्म चालुक जंगल भरा ॥
चामंड राय कढ्ढौ न्नपति। जो किवार संभरि धरा ॥
छं० ॥ ३७२ ॥

मद्दन रंभ आरंभ। सांई सामंत विचारौ ॥
तौ छंडौ चामंड। ढिल्लौ मंडल उचारौ ॥
समर चलत रप्पियै। समर वंधियै समर वर ॥
सुवर स्रूर गोरी नरिंद। दह गुन्न[3] सज्जि दल ॥
कलहंत केलि लग्गिय विषम। ह्वैवै सिंधु समुत्तरी ॥
संडियैं जुद्ध सुरतान सों। सुगति मग्ग पुस्सहि दरी ॥
छं० ॥ ३७३ ॥

पृथ्वीराज का चामंड को छोड़ देने पर राजी होना।

दूहा ॥ छंडन कहि चामंड रा। जुग जोगिंद सुदेस ॥
धर रप्पन जो तोहि न्रप। करि सामंत नरेस ॥
छं० ॥ ३७४ ॥

पंगी पाघ[4] सुरंग जग। सामंता सत भाव ॥
जुद्ध निवंध्यौ साहि सौं। छंडो चामंड राइ ॥छं० ॥ ३७५ ॥

चामंड की बेड़ी उतारने के लिये पृथ्वीराज का स्वयं चामंड राय के घर जाना।

कवित्त ॥ वंभन वाहौ वह्यौ। ठेलि ठट्टो पर जारिय ॥
जिहि मुंगल मैवात। मारि मोहिल उज्जारिय

(१) मो.-मुझ परत। (२) ए. कृ. को.सुरस्थलिय। (३) मो.-दहगुनौ।
(४) ए.कृ. को.-पाग

जिहि केहरि कंठेरि। तारि कढ्यौ तत्तारिय ॥
जिहि राया रघुवंस। आय संभर संभारिय ॥
इंद्रपथ्थ सुपंथह कारनै। बाहर बीर विचारियै ॥
इहि बार वेरि कहुन न्रपति। राजन पोरि पधारियै ॥
छं० ॥ ३७६ ॥

दूहा ॥ मन्निय राजन सिष्य सब। संबोधिय सब नाम ॥
आय परंतै अवसरह। पुरषहि सिक्ख्यौ काम ॥
छं० ॥ ३७७ ॥

इक सुरतान अवाज सुनि। विय राजन ग्रह आय ॥
द्वै आनंद बधाइयां। है घर चामंड राइ ॥
छं० ॥ ३७८ ॥

चामंड राय की माता की प्रशंसा।

सीला संगर मात तुहि। तिहनौ षीर पियाइ ॥
सिंघनि सिंघ सु जाइयौ। दंगे दाहर राइ ॥
छं० ॥ ३७९ ॥

राजा का कविचंद और गुरु राम को चामंड के पास भेजना।

तब विचार न्रप संचुकिय। पठए सब तिहि ठाय ॥
आप राज फ़रमान दिय। कहौ लोह सुपाइ ॥
छं० ॥ ३८० ॥

गये चंद सामंत तहं। जहं चामंड वर बीर ॥
देष्यौ देव समान तहं। सूर सत्त रन धीर ॥
छं० ॥ ३८१ ॥

चामंड राय का कहना कि इस समय मेरी बेड़ी उतारने का क्या प्रयोजन।

ए सम राजन राज कौ। राज काज तुम जानि ॥
लाज उरै धरि रष्षना। कहिं संजोगि पगानि ॥
छं० ॥ ३८२ ॥

जाहु सबे सामंत हौ। कहौ न्रपति प्रथिराज ॥
ता दिन मुक्यौ लोह पग। अब मोसों कुन काज ॥
छं० ॥३८३॥

कविचन्द का चामंडराय को समझाना।

कवित्त ॥ दाहिम्मा को फेरि। दियौ उत्तर कविचंद ॥
सकल सूर सामंत। सुनत चित्रंग नरिंद ॥
नीसरनी असमान। तुहिज काली हर वेहर ॥
तू पाताल कुदाल। हथ्थ सत्ती ना लेयर ॥
दीपक पतंग जिम तुट्टि के। सम रंगनमें परन भय ॥
चामंड राय तिहि तुच्छ पग। लोह घल्लि चहुआन लय ॥
छं० ॥ ३८४ ॥

दूहा ॥ लाज राज निकसन्न घन। अप्पा नैन दुराइ ॥
सामंता वर हुकम करि। कट्टौ लोहनि पाइ ॥
छं० ॥ ३८५ ॥

औलौ रप्पिन आलि करि। वड्डे बोलन बोलि ॥
ते रन जंगो वज्जिहै। ढीली ढंदे ढोल ॥
छं० ॥ ३८६ ॥

कवित ॥ जे रन जोग जुसद्द। ढोल वज्जै ढिल्लिय धर ॥
जस औजस तन मुक्कि। जोगि जूह संजोगि वर ॥
तनु जानै तिन मान। सूर अवसर किं मुक्कै ॥
सूर कित्ति ग्रहि जांय। सुवर अवसर क्यों चुक्कै ॥
चामंड राय दाहरतनौ। जुग्ग जात तन मंडियै ॥
तो भुज्ज अज्ज जोगिनि नयर। रोस छिमा छिम पंडियै ॥
छं० ॥३८७ ॥

दूहा ॥ से वेरि पग संमुहौ। से राजन पग लग्गि॥
से ठट्ठ ठट्ठाइया। जानि उन्हइया अग्गि ॥
छं० ॥ ३८८ ॥

कवित्त ॥ भट्ठी अग्गि अबुझझ। ठाढ़ि भग्गी सुरतानी ॥
तरुन तप्प गोरी नरिंद। हेवरन विग्र चढ़ानी ॥

चामंडारै भाग। समर रावर ग्रह आइय ॥
जंपि वीर प्रथिराज। दई सुरतान वधाइय ॥
लभ्भ चय लभ्भ दाहिम्म करह। सुगति मग्ग रावर दरसि ॥
सुरतान जुद्ध चहुआन रिन। दैन वीर चाह्यौ उलसि ॥

छं० ॥३८९ ॥

दूहा ॥ पांमारां पुंडीरियां। कूरंभा जद्दूनि ॥
गुज्जरिया दाहिम्मियां। घर हस लग्गी दोनि ॥ छं० ॥ ३९० ॥

कवित्त ॥ जिहि जद्दों जामानि। राज लग्यौ कूरम्मां ॥
वीची राव प्रसंग। देव बग्गरी दुरम्मां ॥
गुज्जर रामह देव। जैत साहिव अव्वूरा ॥
होइ अबारी होस। क्यों सुभग्गौ वंवूरा ॥
मुख जीह लोल बोलै बयन। राजन काज वरद्दिया ॥
पावै न पीर पंजर तनी। मन पथ्यै भट्टह विया ॥

छं० ॥ ३९१ ॥

दूहा ॥ तव तरिवारन बंटनो। इह बंटनी न देस ॥
मोसा बोलि न दाहिमा। होइ अपानै भेस ॥

छं० ॥ ३९२ ॥

इह बंटना न देस धर। इह बंटनीन लच्छि ॥
तन तर वारिन बंटना। चावँड राइ सु अथ्थि ॥

छं० ॥ ३९३ ॥

बर बानै बंधै सकल। अप्प अप्पनै भाग ॥
ते बांधी सुरतान पर। षंगे षंगी पाग ॥

छं० ॥ ३९४॥

को बंधै ग्रहनी ग्रहन। को बंधै विन मान ॥
ते बंधी सुरतान पर। मालिम सो चहुआन ॥ छं० ॥ ३९५ ॥

चामंडराय का कहना कि राजा की पहिनाई बेड़ी मैं कैसे उतारूं ॥

जौ मंड्यौ न्रपपग्ग हम। सो किम साहौं हथ्थ ॥

न्रिप अपान पासन तजहु । कहौ चंद कवि काव्य ॥
छं० ॥ ३९६ ॥

पुनः कवि चन्द का चामंड की वीरता का बखान करके समझाना ।

कवित्त ॥ तें जित्यौ गज्जनौ । तूं जु अछौ हम्मीरा ॥
तें जित्यौ चालुक्क । पहरि सन्नाह सरीरा ॥
तें दल पंग नरिंद । इंदु ग्रहियौ जिम राहा ॥
तें गोरी दल दह्यौ । वार पट्टह वन दाहा ॥
तेग तेग तुअ उंच मन । तंतो पास न मिल्हियें ॥
चामंड राय दाहर तना । तो भुज[1] उप्पर पिल्लियें ॥
छं० ॥ ३९७ ॥

तो सज्जत गज्जनैं । हक्कहें कंप उठे अति ॥
परें उचकि सुरतान । हरम हूंहै आतुर गति ॥
तें जित्यौ परमार । पहरि सन्नाह सरीरा ॥
जा वृद्दन्न तें सहें । तें जुहीरा रघुवीरा ॥
पहु सीस राम हनुमान सम । तंतो पासन मेल्हियें[2] ॥
चामंड राय दाहर तना । तो भुज उप्पर पेलियें ॥
छं० ॥ ३९८ ॥

दूहा ॥ राजा सान पुंडीर कुल । तेहनौ पुत्र प्रताप ॥
से राजन पग लग्गिया । आज हनंदे पाप ॥ छं० ॥ ३९९ ॥

कवित्त ॥ आज हनंदे पाप । दरसि रावर वर भग्गा ॥
कप्पन विरद कलंक । जीह किल कित्तिय लग्गा ॥
आहुट्ठा मक्खस्वांमि । छित्ति छचौ परमानं ॥
हिंदवान तुरकान । सस्सि उग्गै जिम भानं ॥
औधूत राइ माया अडरु । गोरप रा गोरप्प जिम ॥
वर तिथ्य तिथ्य रावर समर । मार[3] रूप भंजन विक्रम॥छं०॥४००॥

(१) मो.-भुअ (२) मो.-ना मलियो ।
(३) मो.-सार

पृथ्वीराज का चामंड को अपनी तलवार देना।

दूहा ॥ छोरि तेग न्नप अप्प कर। अप्पी हथ्थति सूर ॥
लै चामंड सु बंधि द्रिढ़। तू धर रष्पन नूर ॥

छं० ॥ ४०१ ॥

चामंड राय का प्रणाम करके तलवार बांधना और बेड़ी उतारना।

तब सामंत सुसिर धरिय। मुप जंपिय इह बैन ॥
जौ सिर पर प्रथिराज है। तौ कित्तक गोरिय सैन ॥

छं० ॥ ४०२ ॥

बेरी कट्टत चरन न्रप। नमित कियौ तिहि सीस ॥
राजन मनह प्रमोद करि। दैन कही बगसीस ॥

छं० ॥ ४०३ ॥

जा न्नप रुट्ठे भय नही। तुट्टै नह धन आस ॥
ग्रहनि ग्रह नाहीं समथ। ता न्नप वृथा प्रयास ॥

छं० ॥ ४०४ ॥

पृथ्वीराज का चामंड राय को सिरोपाव और इनाम देना।

डेढ़ हजार तुरंग बर। हसती तेरह तीन ॥
सुत्तिय माल सुरंग दस। राजन अप्पि नवीन ॥

छं० ॥ ४०५ ॥

चीर पटंबर फेरि सिर। बज्जा बज्जन वग्ग ॥
बर बरदाइ बरद्दिया। बोल समंगल लग्ग ॥

छं० ॥ ४०६ ॥

चामंडराय के छूटने से सर्वत्र मंगल बधाई होना।

कवित्त ॥ चीर पटंबर फेरि। बज्जि बाजिंत्र राज बर ॥
अति अनंद मन चन्द। करै मनुहारि देव नर ॥

राजा मानि पुंडीर। राजसुत वरन[1] दिपारिय ॥
ता छंडन चहुआन। करिय मो मंच विचारिय ॥
आनंद राज कुम्मार ग्रह। मातपप्प आनंद हुअ ॥
रामंति सव्व पप्पी फिरें। भिरि चामंड सुवज्र सुअ ॥

छं० ॥ ४०७ ॥

दूहा ॥ लोहानी पग कढ़िकैं। लज्जानी पग वंधि ॥
लज्जि लज्जि गुन लज्जि कै। तेग धरी भर कंध ॥

छं० ॥ ४०८ ॥

घर घर मंगल वोलिये। घर घर दीजैं दान ॥
सें मुष धनि धनि उच्चरें। भल छोर्यो चहुआन ॥

छं० ॥ ४०९ ॥

कवि का कहना कि लोह की वेंड़ी के छूटने से क्या होता है नमक की वेड़ी तो पैरों में और राजा के आनकी तोष गले में आजन्म के लिये पड़ी है।

हथ्थ हथ्थ करि प्रेम की। पाइन वेरी लोन ॥
गलै तोप न्रप आन की। छुथ्थौ कहत है कौन ॥

छं० ॥ ४१० ॥

लोक लज्ज ग्रह लज्ज उर। हठ न ग्रहौ रिस एक ॥
लोह लंगर कढ्ढत चरन। लरन हथ्थ लइ तेक ॥

छं० ॥ ४११ ॥

कुंडलिया ॥ लरन हथ्थ गहि तेग वर। वोलि समीप प्रमान ॥
वर वंधन सुरतान को। रिन अप्पन चहुआन ॥
रिन अप्पन चहुआन। कहै चावंड समेरौं ॥
लोहानो कर कढ्ढि। लज्ज वंधी वर वेरी ॥
हठनि ग्रहन ना करै। करै निग्रह रन मरनह ॥
तेगें सिपर जलाइ। देह रावल रन लरनह ॥

छं० ॥ ४१२ ॥

(१) ए. कृ. को.-चरन।

पृथ्वीराज का चामंड को घोड़े देना। उन घोड़ों का वर्णन ।

भुजंगी ॥ गही तेग भू दंड सामंत राजी। दियौ बाज राजं सुजक्की सुताजी॥
छबी रत्त स्याहं हबी जानि जंबू । रच्यौ रूप राकी पक्यौ जानि जंबू॥
छं० ॥ ४१३ ॥

जरी जीन साकत्ति हेमं हमेलं। निसा न्त्रिम्मलं किस्न नच्छित्र झेलं॥
उचं कंध कन्नं नयन्नं न नासं । गनै रंभ्र रंभ्रं सुधा स्याम सासं ॥
छं० ॥ ४१४ ॥

नषं मंडलं डंड संधं सुधारै । उवं पुट्ठि मंमं दु पुट्ठं उचारै ॥
दुमं इंछनं चाय ढारंत बायं । छिमा छत्र छाया तलै बाजि रायं ॥
छं० ॥ ४१५ ॥

कवित्त ॥ नटिय नट्ट जिम चपल । बदन जिम सरस सद्द कवि ॥
बग्गह मुनि मन गहिय । तिम सु उड्डिय सुरंग दवि ॥
इम चब्बिय क्करियार । तिम सुमुद्दरस सुद्द मिट्ठिय ॥
तिष्यन तरुन कटाच्छ । तिम सुमन मोहन दिट्ठिय ॥
अभिसार रसन उच्छाह जिम । तुंग प्रमत्त सुसील मय ॥
हिंसत[१] हसंत हरसंत न्त्रप । बाज राज दिन्नो तुरिय ॥
छं० ॥ ४१६ ॥

पवन पाय पूजयो । बेग पुज्जिय कवि चित्तह ॥
पिट्ठि चाप पूजयो । पसम पूजिय नव नीतह ॥
पुच्छ चमर पुज्जयौ । कंध केसनि पुजि केहरि ॥
श्रवन अग्र पुज्जयौ । अग्ग तिष्पह सुडम्भर सर ॥
पुज्जयौ जगत जिहि पूजयौ । सालिग्राम सुंदर सुद्रिग ॥
संभरिय तुरिय पुज्जिय जगत । षंजन नट भट मीन म्रग ॥
छं० ॥ ४१७ ॥

सूर्य्य के रथ के घोड़ों की चाल का वेग ।

दूहा ॥ देषि अस्व दाहिम्म कौ । पुच्छि चंद चिचंग ॥
कहौ कित्त कत तौ षडै । रैवंत रथ्थ पतंग ॥ छं० ॥ ४१८ ॥

(१) ए. कृ. को. हिंसतह सतह ।

कोस सहस नव पट्ट सय। अंपिनि अरध फुरक्क ॥
गय नंगन कविचंद कहि। अश्व क्रमंत अरक्क ॥
छं० ॥ ४१९ ॥

सूर्य्य के रथ की संपूर्ण दिन की चाल।

गाथा * ॥ गुन चालीस अरब्बं। अट्ठ परव असीयं लष्यं ॥
असी कोरि परिमानत। दिन मानं कोस भानयं चल्लं ॥
छं० ॥ ४२० ॥

दूहा ॥ सो वोज राज दिन्नौ वगमि। मिलि संगल गल लग्गि ॥
निसि निसान भेरिय सवद। जनु वीर जगावंति बग्गि ॥
छं० ॥ ४२१ ॥

सब सामन्तों और रावलजी सहित पृथ्वीराज का युद्ध विषयक सलाह करने के लिये निगम बोध स्थान पर जाना।

कवित्त ॥ अप्पि न्रपति हयराज। कट्टि बेरी वर छंडे ॥
हरनि सुनी सुरतान। इला अग्गर भर मंडे ॥
मत्त सूर सामंत। मिलिव मत तत्त विचारौ ॥
सवलां सों संग्राम। मंत विन मंत सुहारौ ॥
चिचंग राव रावर समर। समर विद्धि जानै सकल ॥
विय निगम बोध धंनुह सुदिति। मत्त राज मोहै अकल ॥
छं० ॥ ४२२ ॥

एक शिला का डोलना और सब का विस्मित होना।

दूहा ॥ धर धर धरनिय धरहरिय। कुंडलि किय फनि पुच्छ ॥
तेग पकरि सामंत तव[1]। मिलि वर घल्ल्यौ सुच्छ ॥
छं० ॥ ४२३ ॥

कवित्त ॥ सिला एक पापान। हथ्थ तीसह विय लंविय ॥
दोइ दसकर चवसट्ठि। सट्ठि अंगुल उद्दंभिय ॥
ता नीचे कंदरा। तहां को सूर निद्रामै ॥

* यह छन्द मो. प्रति में नहीं है।

(१) ए. कृ. को.-सव।

ता उप्पर तिहि दिवस । राज वज्जै सादानै ॥
आघात सुनत करवट्ट लिय । वज्जे वज्जावन गुरिग ॥
अचरिज्ज करिग सामंत प्रभु । भट्ट सहित पारस फिरिग ॥
छं० ॥ ४२४ ॥

इक्क कहै भुअकंप । इक्क कहै सेसह हल्लिय ॥
इक्क कहै उट्ठवै । याहि उठवत भ्रम षुल्लिय ॥
छह लंगर गर घल्लि । ग्राव लीनौ उच्छंगह ॥
सुप अनिंद चप निंद । अग दिष्यौ बहु रंगह ॥
प्रारंथ्यि चंद पुच्छै तिनहि । कहं सुजाम कहं उप्पनिय ॥
कों[1] मात पित्त को[2] नाम तुम । किम सुधान इह नींद किय ॥
छं० ॥ ४२५ ॥

शिला के नीचे से एक भीमकाय वीर का निकलना । कविचंद का पूछना कि तुम कौन हो ।

विराज ॥ बरंन्नति स्यामं,समंरत्ति कामं । नपं पंडि पीतं,भयं भीम भीतं ॥
छं० ॥ ४२६ ॥

जगं जानु रत्तं, हवी जानि लत्तं । कटिं नाभि नीलं,उरं सु अपीलं
छं० ॥ ४२७ ॥

चषं धूमरूपं, सुषं जोग भूपं । भुजा ग्रीव भूरी, सुरं सिद्धि सूरी ॥
छं० ॥ ४२८ ॥

सिरं सेत नेतं, विरागी पवेतं । रजंताम नेनं, सुसातुक्क हैनं ॥
छं० ॥ ४२९ ॥

डकारंत डक्कं, द्रिगं कंप हक्कं । महावीर बल्ली, दया भ्रम्म पल्ली ॥
छं० ॥ ४३० ॥

बरं बप्पुजीहं नको लोपि लीहं । गयं गात गेनं, बुलै चंद्र बेनं ॥
छं० ॥४३१॥

बरदायि बाचं, कहै बीर[3] साचं । * * छं० ॥ ४३२ ॥

(१) मो.-अरज ।
(२) मो.-किहि । (३) ए. कृ. को.-कवि ।

वीर का कहना कि मैं शिवजी की जटाओं से उत्पन्न वीर भद्र हूं। वीरभद्र का पूछना कि यह कोलाहल क्या हो रहा है।

कवित्त ॥ दच्छ प्रजापति जग्य। रुद्र निद्रा सति संभरि ॥
तनु तिनु जिमि जग्गयौ। जलन जग्गिय मन मंजरि ॥
हय हय हय चिभुवन। नाग सुर नर गंध्रव गन ॥
भिरि भिरि नंदिय सुभग। भइय पुक्कार छंडि रिन।
भयभीत भूत वेताल घन। कपिल कंपि कैलास डरि ॥
तिहि चिसल तेज लग्गिय नयन। जट जुगिंद पिट्टिय सुफिरि ॥
छं० ॥ ४३३ ॥

सो जटा जनम तिन दिनह। नाम सुहि वीरभद्र धरि ॥
तात नांम चिपुरारि। जग्य विध्वंसि सीस हरि ॥
सतजुग संकर पनिय। तव चेता तुंवालिय ॥
द्वापर सुम्भर सलित। धम्म धरनिय प्रतिपालिय ॥
आनन्द निंद जोगिनि पुरह। काल नाम कलजुग्ग लहि ॥
आवत्त सोर फट्टै श्रवन। किम सुसोर कविचंद कहि ॥
छं० ॥ ४३४ ॥

कविचन्द का कहना कि युद्ध के लिये चामंडराय की बेड़ी खोली गई है उसीके आनंद बधावे का शोर है।

इह सुसोर सुनि स्वांमि। इन्द्र वृत्ता सुर लग्गिय ॥
इह सुसोर सुनि स्वांमि। राम रावन घर भग्गिय ॥
इह सुसोर सुनि स्वांमि। पंड कौरव फट्टै अभु ॥
इह सुसोर सुनि स्वांमि। जरा सिंधव जद्दव प्रभु ॥
इह सोर स्वांमि सामंत मिलि। सुपति साह गोरिय वयर ॥
चावंड राइ कढ्यौ लरन। इह सुसोर ढिल्लिय नयर ॥
छं० ॥ ४३५ ॥

बीरभद्र का कहना कि मैंने बड़े बड़े युद्ध देखे हैं यह क्या युद्ध होगा।

इह मनुष्य मत्ताई। देव देवासुर दिष्षिय ॥
से रंभातारिका। जुद्ध रोजक्क परष्षिय॥
रामाइन संडलिय। मग्ग मागध माँधाता॥
मान तुरंग दुरजोध। पथ्थ पंडव छह भ्राता॥
बरदाय द्रुग्ग द्रुग्गह सुजिय। भट्ट जाति जीहं दुनौ॥
सा भ्रम्म जुद्ध हिन्दू तुरक। कथ समंत ताथें सुनौ॥
छं ॥ ४३६ ॥

कबि का कहना कि आपकी देव संज्ञा है आपने देवताओं के युद्ध देखे हैं यह युद्ध देखकर भी आप प्रसन्न होंगे।

तुम देवह समदेव। जुद्ध देषैति सषाने॥
ए सामंत उमंत। भ्रू भ्रू देषत बिरुभानै॥
इन आवध आवधै। झाक बज्जै झाक झांइय॥
उत्तमंग उत्तरै। सीस हक्कै धर धाइय॥
जित रुधिर बूंद कंदल परहि। ते कंदल उठ्ठहि भिरन॥
उन बीर संग तुम बीर हुअ। निमिष नेह नच्चै फिरिन॥
छं० ॥४३७॥

देव देवानहि जुद्ध। ते पुब्ब देषे पुरषारथ॥
पन्न बीर अति सौम। धीर देष्यौ घट भारथ॥
देषि बीर मनि[1] हसिव[2]। कही मन्नौ नहि सच्चौ॥
उत्तमंग उत्तरै। सूर सथ्थह होय नच्चौ॥
बज्जै बिसाल असिवर निझर। सिव समाधि साधक षुलिय॥
जे पुब्ब देव भारथ दिषिय। दिषि भारथ चिंता डुलिय॥
छं० ॥ ४३८ ॥

तुम मनुछ गति देव। बोल बोलौ मनुच्छ सम॥
मे देषे जदु महिष। तौ न नच्च्यौ छुट्टिय भ्रम॥

(१) मो.-थनि। (२) ए. कृ. को.-हसत्रि।

घरी एक भै भीत। एक आचिज सुनि बीरं ॥
रगत वीर जसमान[1]। लच्छि दह होइ सरीरं ॥
अचरिज्ज मेर परवत ढहै। धर हल्लै पटतार वर ॥
कालक रूप काली धरा। सुपनि वीर दिष्यौ समर ॥

छं० ॥ ४३९ ॥

वीरभद्र का कहना कि मुझे युद्ध दिखाने वाला दुर्योधन के सिवाय और कौन है।

दूहा। तब जग्गि बीर मंडिग नयन। वयनह अलप प्रवोध ॥
मोहि जगावन जुद्ध को। विन दुरजोधन जोध ॥

छं० ॥ ४४० ॥

रुधिर बूंद कंदल परहि। असिवर सज्जिय हथ्थ ॥
कहै वीर न्रप वीर कहि। अमितचंद इह वत्त ॥

छं० ॥ ४४१ ॥

कवित्त। जग्गि वीर भैभीत। मुषं ज्वाला हवि छुट्टिय ॥
डक डकार कंपै चिलोक। कपि कंधर जग पुट्टिय ॥
छिन एक छिमि समूह। वीर हुंहुं उच्चारं ॥
विन दुरजोधन जोध। जोध दिष्यो न विचारं ॥
आमंत मनुष आमंत सुनि। पुव्व कथा दुरजोध सुनि ॥
करि राज जग्ग यगमन्न वर[2]। मन जग्गत नीसान धुनि ॥

छं० ॥ ४४२ ॥

दुर्योधन की वीरता और हठ रक्षा की प्रशंसा।

जिहि दुरजोधन जोध। संधि मानी न दैव बलि ॥
जिहि दुरजोधन जोध। भूमि दीनी न जीव कलि ॥
जिहि दुरजोधन जोध। दवा अब दसन परष्षिय ॥
जिहि दुरजोधन जोध। चीर कट्टत नन रष्षिय ॥
भष्षिया भष्ष[3] पर भूमि पर। धर समान धर नंषयौ ॥

(१) मो.-रगल मज्ज बीर जस मान। (२) मो.-करि राजगाइ गमन्न वर।
(३) ए० कृ० को०- भेष।

संकल कलप्प रुधि मंस सों। पंड भोग भुत्र चष्षयौ॥
छं० ॥ ४४३ ॥

महाभारत के युद्ध की संक्षेप भूमिका।

प्रान रष्षि रा पंड। डंड आरन्नि वास किय॥
हेत रष्षि बलिराय। सपत पाताल जाय जिय॥
भगत रष्षि प्रहलाद। तात दिषि नष्ष विदारत॥
क्रम्म रष्षि रघुराइ। दैत जुरि जग्य बिगारत॥
धन धवल गहव गंधारि उर। गदा कदंब बपु अटल धुत्र॥
उच्चरै बीर बलिभद्र मन। मान रष्षि दुरजोध भुत्र॥
छं० ॥ ४४४ ॥

न को जियत दिष्षियन[1]। मरन दिष्षियै न लोई॥
मात ग्रभ्भ जनमीय। काम अवसर जुग सोई॥
क्रोध लोभ माया न मोह। तार तंची जिउ भोगी[2]॥
विक्रम क्रम नच्चियन। जोग नंचै विधि रोगी॥
उच्चरै बीर बलिभद्र मन। बहुत काल इहि थान भय॥
हा हंत हंत तत गुर गनिय। सुनो भट्ट तत मत्तलय॥
छं० ॥ ४४५ ॥

भीष्मजी के विषम युद्ध का संक्षेप वर्णन।

भुजंगी। जिनै जोध दुरजोधनं जुद्ध कीनौ। जिनै दीहनौ दूनको ब्रत्तलीनौ।
जिनै अप्प अप्पं प्रतंग्या निवारी। जिनै नंदनंदं[3] परं पैज पारी॥
छं० ॥ ४४६ ॥
जिनै चक्रधारी कियौ चक्ररूपं। जंहौ जांहि रुंधे तहीं तांह जूपं॥
जबै पथ्थ रथ्थं चषं लोपि कोपं। कियौ षंड षंडं रथं बान धोपं॥
छं० ॥ ४४७ ॥

---

(१) ए० कृ० को—दिष्षिगन। (२) मो० जोगी।
(३) मो०—नंद नंदी।

हनूमानं पव्यौ[1] पताकी पतंगं । हन्यो सेत वाजी जुत्रं जोगि भंगं ॥
अपं तोन कढ्यौ नगं जीव गज्यौ । दियौ देवदत्तं धनुर्जीव वज्यौ॥
छं० ॥ ४४८ ॥

कियौ छीन छीनं सनोहंति छीनं । जटं देववादी रुधिदेव भीनं ॥
सुभं स्याम रत्तं सु स्यामं सुदेसं । मधू माधवें जानि माधुर्ज्य केसं॥
छं० ॥ ४४९ ॥

जकी जोगमाया बकी थान थानं । कहैं देव देवान जानं न जानं॥
न जानं न जानं न जानंति जानं । न तंत्री न जंत्री न मंत्री न मानं॥
छं० ॥ ४५० ॥

हयंती हयंती हयंती प्रमानं । भरंती भरंती घरंतीति वानं ॥
रयंती रयंती रयंगं सुपानं । * * * * छं० ॥ ४५१ ॥

कुरं पंडपंडं पलं पंड जूरं । सुरंगं सुरंगं वरं काल रूरं ॥
ततथ्थे ततथ्थे तथं न्रत्य वारं । निरंपंत फट्टं करंतं उधारं ॥
छं० ॥ ४५२ ॥

चवट्ठी चवट्ठी चवैं सिंध पूरं । विताली विताली करै तार तूरं ॥
फिरैं जोगिनी जोग माया सतत्यं । ढुंढे लोक लोकं चलोकं सुनथ्यं
छं० ॥ ४५३ ॥

स्वयं ब्रह्म पूछ्यौ धरे ध्यान ईसं । दिपे देव देवांग[2] भारथ्थ रीसं ॥
तहां आय दिष्यौ स्वयं ब्रह्मनाथं । कियौ वज्र रूपं कियौ वज्र हाथं
छं० ॥ ४५४ ॥

पथंतं पथंतं पथं पार पारं । झरंती झरंती झरंतीति सारं ॥
कथंती कथंती कथं मार मारं । * * छं० ॥ ४५५ ॥

वजंती वजंती वजं[3] घाय घायं । नवंती नवंती नवंतीत पायं ॥
लुटें[4] पट्ट पीतं कवी तेज वान्यौ । धवै सिंघ सैलं महामत्तजान्यौ ॥
छं० ॥ ४५६ ॥

करैं चक्र वक्रं उनके प्रवानी । भुले भट्ट नांही चितं मत्त वानी ॥

(१) ए० कृ० को—छट्यौ। (२) मो०—देवंग। (३) मो०—वजंती निघायं।
(४) ए० कृ० को०—तुटे।

उचै चरन उट्ठै लगे भूमि आवै। पिछे बीर अप्पै जु पाताल पावै॥
छं० ॥ ४५७ ॥

छुटी पट्ट छूटौ लुच्यौ पट्ट पीतं। नसंभूल बंभू भया भीम भीतं॥
छं० ॥ ४५८ ॥

दूहा ॥ अभय भीति भीगम सुभर। इष दिय अरष उदार॥
आलु आलु अवनिय धरन। कह्यौ संतन राजकुमार॥
छं० ॥ ४५९ ॥

भै भ्रित रोम सभ्रित्त भर। तारस लागि क्रिसान॥
दसों दिसिनि द्रिगपाल डर। मै अरन्य भ्रिह्मथान॥
छं० ॥ ४६० ॥

वीरभद्र का कहना कि ऐसा विकट युद्ध देख कर तब से मैं सोया हुआ हूं।

छित श्रोनित छिंछै सुतन[1]। सुतन लागि चष दून॥
जनों अमर पूजहि अमर। बर बंधन परसून॥
छं ॥ ४६१ ॥

सुकरि ग्यान सूतो सुमरि। हिय धरि ध्यान गुविंद॥
मंद हास मंडिग बयन। कहिं कविंद[2] कविचंद॥
छं० ॥ ४६२ ॥

तल वैतल धुंकिय धरनि। कारस चक्र लिय धाय॥
सुर नर नागनि बंधि घन। भै भग्गै अकुलाइ॥
छं० ॥४६३॥

चरन नीच उंचिय अवनि। कमठ पिट्ट दर नाग॥
चकित अट्ठ द्रिगपाल कुल। मुष चिक्करि भै भाग॥ छं० ॥४६४॥
प्रलै जलह जल हर चलिग। बल बंधन बलिचार॥
रथ चक्रह हरि कर करिय। परि पर बत परतार॥
छं० ॥ ४६५ ॥

(१) ए० कृ० को०--सुवन।　　(२) ए० कृ० को०--कहिद।

बीरभद्र की सुसुप्त अवस्था का भयानक भेष।

भुजंगी ॥ धरे ध्यान सूतौ बली बीरभद्रं । मनों पेषि आकास विंदं कविंद्रं ॥
हयं जोय एकं करं चक्र एकं । प्रनं काल सज्यो मनों ईस वक्रं ॥
छं० ॥ ४६६ ॥

भुम्रं भार भारं सुभारं सुनेनं । रिसा रत्त अरविंद संवै सवैनं ॥
सपा भीर हूई धरं भार भानं । चिपा छत्र छत्री न छत्री दिदानं ॥
छं० ॥ ४६७ ॥

भ्रिगू पत्ति जान्यौ सु तान्यौ धनुक्कं । करों हत्र जानी सुतानी पिनक्कं ॥
जुरी डंड षंडं पिता माहि मुक्क्यौ। तुमैं जानि पंडं पराक्राम चुक्क्यौ ॥
छं० ॥ ४६८ ॥

रजं ताल बीछी रथं बंधि उंचं । सिधं सत्त कट्टौ धरा पारि नंचं ॥
महारथ्य सारथ्य पारथ्य पानं । लघुं लाघ विद्या सुपूजै गियानं ॥
छं० ॥ ४६९ ॥

गुनं दिट्ठ लोनं[1] जुधानं धरानं । क्रिपालं क्रिपाकी क्रिपाके निधानं ॥
सुपं तो मुकंदं मुकत्ती प्रसादं । प्रतंग्या प्रमानं कली क्रत्ति वादं ॥
छं० ॥ ४७० ॥

अभेदं सरीरं द्रसं तोपि नैनं । क्रितं लोक सोकं भयं भै अभैनं ॥
क्रितं पुन्य पुन्नं न जानौ गुसाईं । ग्रसैं काल व्यालं भए को सहाईं ॥
छं० ॥ ४७१ ॥

दूहा ॥ मै दिठि दिट्ठि निहट्ठि हरि । धरि मिट्रिय निज निंद ॥
जिहि सुकंज सूरति हियै[2] । विसरि जाइ तेगंद ॥
छं० ॥ ४७२ ॥

कवि का बीरभद्र से कहना कि आप हमारे राजा की सभा में चलकर सलाह सुनिए क्योंकि आप तीन काल की जानते हैं।

कहन चंद उद्दिम कियौ । सुनन बीर धरि कान ।
भाषा सब्ब परष्यहुं । नव रस सब्ब सुरान ॥ छं० ४७३ ॥

(१) को.-तोनं। (२) ए. कृ. को.-तिहिजिये।

तुम भवस्य जानहु सकल। अकल अपूरब बत्त॥
सुमत बैठि सामंत सब। सुनहु तौ कह्हं कवित्त॥
छं०॥४७४॥

कवित्त॥ अगह मगह दाहिमौ। देव रिपुराइ पयंकर॥
कूरमंत जिन करौ। मिले जंबू बै जंगर॥
मो सहनामा सुनौ। एह परमारथ सुझ्झै॥
अष्षै चन्द बिरद्द। बियौ कोइ एह न बुझ्झै॥
प्रथिराज सुनवि संभरि धनी। इह संभलि संभारि रिस॥
कैमास वसिष्ट[1] बसीठ बिन। म्लेछ वंध बंध्यौ मरिस॥
छं०॥४७५॥

दूहा॥ सभा बत्त इह चंद कहि। सुनिय बीर धरि कान॥
राजन मन अंदेस धरि। जु कछु बिद्धि न्निमान॥
छं०॥४७६॥

बीर का जंभाई लेकर उठना और पृथ्वीराज की सभा में जाकर बैठना तथा सामन्तों के नाम पूछना।

कवित्त॥ सुनिय बत्त कविचंद। बीर अदभुत्त मंनि मन॥
एह बत्त आचिज्ज। सूर सामंत कहिय जन॥
उठ्ठ बीर करि जंभ। अंग मोरिय उत्तानह॥
जाय बयट्टौ पास। सूर सामंत सभा महि॥
पुच्छी सुबत कविचन्द सों। अहो चन्द बरदाय सुनि॥
लै नाम सूर सामंत सब। मोहि दिपावहु मंत गुनि॥
छं०॥४७७॥

कविचंद का सामन्तों के नाम बताना और जामराय यद्दव का कहना कि कैमास के मरने से मुसलमानी दल सहजोर हो गया है।

इ जैत राव चामंड राव। इह देव रा बग्गरिय॥

(१) ए. कृ को-वासिष्ठ.।

इह वलिय राव बलिभद्र । राम ज्ञारंभ संभरिय ॥
इह पीची राव प्रसंग । जाम जादौं भर भष्पिय ॥
रवनि[1] राज पहु प्रान । सांम दानह धर रष्पिय ॥
सामंत मंत कैमास विन । वल वंध्यौ सुरतान दल ॥
सामंत सिंघ दुज्जन सया । दया न किज्जै काल पल ॥

छं० ॥ ४७८ ॥

चामंडराय का कहना कि गत पर सोच क्या, जो आगे आई है उस पर विचार करो।

कहै राव चामंड । जांम जदौं सुनि वत्तिय ॥
गत्त सोच जिन करौ । सोच भग्गै वल छत्तिय ॥
सुष अंतर दुष होइ । दुषह अंतर सुष पाइय ॥
सुष दुष वंध्यौ जीय । जीव वंध्यौ मन गाइय ॥
मन स्वांमि ध्रम्म वंध्यो रहैं । स्वामि धरम वंधिय सुगति ॥
सा सुगति वंध सुरतान दल । मथिन सूर कट्टौ जुगति ॥

छं० ॥ ४७९ ॥

जामराय का कहना कि तुम्हारी तो अकल मारी गई है इधर देखो सौ में से सात बाकी हैं।

पुनि जंपै जद्दों जुवान । चामंड राव सुनि ॥
तुम पग लग्गो लोह । लोह लग्गै गत मत[2] हनि ॥
साम दान अरु भेद । वंक तौ कंक करिज्जै ॥
कंक वंक भरि होइ । वंक भर भूपति छिज्जै ॥
सुरतान षान षुरसान पति । दल वद्दल पावस मनौं ॥
प्रथिराज साथ सामंत सौ । तिनमहि छह सतह गनौं ॥

छं० ॥४८० ॥

चामंडराय का बचन।

तब जंपै चामंड राइ । जादौं जम बत्तिय ॥

(१) ए० कृ० को०—नरनि ।　　　　(२) ए० कृ० को०—मत्तानि मंतानि ।

हम पग लग्गो लोह । लोह लग्गो गत मत्तिय ॥
जौ तो ह्वं तूं कहै । तो राज को काज विनासै ॥
अद्ध रयनि उठि जाहि । करै दुज्जनपुर वासै ॥
हम पगनि बहुरि बेरी भरौ । लरि न मरैं जहों कहै ॥
जहं जहं सुदैव कुल संसवै । तहं तहं पंजर पुरस है ॥
छं० ॥ ४८१ ॥

वलिभद्रराय का वचन ।

तब कहैं राव बलिभद्र । काम क्रूरौ मंतानिय ॥
सबलों सों संग्राम । राज भज्जै राजानिय ॥
म्है म्हां कै ढोलरै । ढाल ढोरी ढुंढारी ॥
क्रूरंभा ऊपरें । डाढ़ ढिल्ली उच्छारी ॥
औरैं सुमुष्य अंसर उरी । मन सापी जानैं जनां ॥
असुमेध जग्य यौ हैं तनौ । जनसेजै वरज्यौ घनां ॥ छं०॥ ४८२॥

रघुवंस राम का रात्रि को धावा करने की सलाह देना ।

बर बीरह रघुबंस । राम रति बाह उचारिय ॥
जीव संक छची अभम्म । मिलि जु संकर पह सारिय ॥
आगैंही इहि बंस । बाच दिठ मरनह डिग्यौ ॥
सांम अम्म समलीह । अजै गिरि में रचि गड्डौ ॥
तुट्टै कमन्ध उट्ठै धपिग । बिपथ सीस हंकारयौ ॥
प्रथिराज संग बन्धौ मरन । परिय न्नपति अरि धारयौ ॥
छं० ॥ ४८३ ॥

रे गुज्जर गांवार । अब्ब तजि सज्जि सुमंतं ॥
मोहि ईस आसीस । लागि अंगन रवि रत्तं ॥
मरन सोय अरि हरन । सेन साहाब सबन मथ ॥
भान रथ्य षंचि है । देव देषै सु रुक्कि रथ ॥
भारथ्थ थंभि रष्षै अरी । रतन रष्षि बर रतन लजि ॥
चहुआन आन सुरतान सों । सामर[1] सजि लज्जी बरजि ॥
छं० ॥ ४८४ ॥

(१) ए. कृ. को.-सागर ।

बलभद्रराय का वचन।

फिरि उच्चरि क्रूरंभ। तंत मंतह उच्चारिय॥
जै पुच्छह बन्धान। टरै सननन्ध न टारिय॥
व्यास वचन जनमेज। सत्त जानी असत्ति करि॥
कूम बन्धन पैं आहि। मन्ति आयौ सुमंडि घरि॥
आचिज्ज हरिय उत्तर दिसां। मद्धैं वड़वानल बिसहि॥
वरजयौ सत्तवचननि तबै। तात जानि नाही असहि॥
छं० ॥ ४८४ ॥

सुनि अचिज्ज है हेरि। राज संमुह उच्छाइय॥
हरि दिष्षी मनु फिरै। जग्य वड़ बाजि बसाइय॥
वड़ बन्धा करि बन्ध। उंच उंवी जु सेंभेरी॥
व्यास वचन करि असति। जग्य जंपन कहि फेरी॥
सोइ जग्य कियौ पहु पंडकुल[1]। तरुन वीर बभन्न बरि॥
सनमंध जीव जुद्धह सुगति। सो न टरै टारीय टरि॥ छं० ॥ ४८५॥

दूहा ॥ ए उदार लज्जिय सुजंल। कवि बुधि उट्ठिय आस॥
मरन सुलज्जी बंधयौ। जंपि उदार प्रयास॥
॥ छं० ॥४८६ ॥

रामराय बड़गुज्जर के बचन।

कवित्त ॥ कहै राय रामदे। राइ रावत अज्जूना॥
हैं हथ्थी नौसाज। राज[2] लद्धौ पज्जूना॥
सामंता उभ्भार। जुद्ध अथ्था सथ्थानी॥
सौ अग्गानी सट्ठि। सट्ठि आनी पंगानी॥
म्हैं गामी गुज्जर गल्हियां। हंसाईं हंसाइयां॥
रतिवाह देहु सुरतान दल। रषि राजन लगि पाइयां॥
॥ छं० ॥ ४८७ ॥

तुम भोरें भीमकै। रत्ति सोभति ज्यों जित्तिय॥
ज्यों दुज भोरें अंब। घाय धत्तूरस पत्तिय॥

(१) ए. कृ. को.-पहुपंग कुल।　　　　[२] ए० कृ को०-रात।

आसामी असपत्ति। लाय ञुरकार[1] चढाइय ॥
हस्तीनी चिक्कार। फटै रासभ उरफ्फाइय।
पुंडीर राव भग्गौ भिरां। जे सुरतान बंधाइया ॥
आभंग जंग[2] अनभंग भर। ते कनवज्ज जुझाइयां ॥ छं० ॥४८८॥

चामंडराय का रामराय को व्यंग वचन कह कर हँसी उड़ाना।

दै गारी गुज्जरह। राय चामंड कहानौ ॥
ए जादों कूरंभ। जिय न बंछै सु सदानौ ॥
षीची राव प्रसंग। चोर बंधे सुपुराना ॥
ते बीरंग बिडार। डाक बज्जै उम्भाना ॥
गोयंदराज बोला बरै। महिल केलि कलपंत किय ॥
पंजाब पंच पंचह सुपथ। जात गात रघ्यौ सुजिय ॥
॥ छं० ॥४८९॥

दूहा ॥ लछ बल छुट्टे पंग पहि। सत छह छचनि छच ॥
समर सगण्पन देव तन। कहौ न सुद्द भरि तच[3] ॥
॥ छं० ॥ ४९० ॥

सब लोगों का हँसना और बलिभद्रराय का सबको धिक्कारना।

कवित्त ॥ तब सुराव बलिभद्र। हथ्थ जद्दों दै धारिय ॥
बड़ गुज्जर दाहिमा। बोल लगै अधिकारिय ॥
के सेवक कें सांई। कोन भर धर किन षाइय ॥
केहुं ना घर जरै। हाससे कैको आइय ॥
सनमंध राय सगपन कियौ। पच्छै को केही कहै ॥
सहगवन राज सुरपुर करै। ढोली कछु वासन लहै ॥
॥ छं०॥ ४९१ ॥

[१] ए० कृ० को०-साकुर। [२] ए० कृ० शो०-जुद्ध।
[३] ए० कृ० को०-बत्त।

रामराय यादव का चामंड की चिघ्घी उड़ाना।

तब कहै जैत पंवार। साम अस्मह इन जानिय॥
कारन अग्गैं द्रोपदी। चीर दुस्सासन तानिय॥
पिता दोष जान्यौ न। सेव अंगद घनमंडिय॥
बंध दोष वेरी प्रमान। राव चामंडह छंडिय॥
जो दोष सामि तुछ उप्परै। काम दुप्प बहुं करं॥
परसंग राव पीची सुनै। मुक्कि राज छंडिय वरं॥
॥ छं० ॥४९२॥

चामंडराय का गुस्से होकर जैतराव की तरफ देखना।

दूहा॥ चिसल तेज लग्गी चिखुअ। चपरता हवि जान॥
जैत राव बरजौ इन्है। इकटिह देलवियान[1]॥
छं० ॥ ४९३॥

इन कंठन दिल्लिय नगर। इन कंठन लगि राज॥
इन आवध काढै न्वपति। साहि आज की काज॥
छं० ॥ ४९४॥

जैतराव का दोनों के शान्त करके राजा से कहना कि लोहाना से पूछिए?

कवित्त॥ राज काज पामार। सिंघ उच्चार वार तिहि॥
हों जादों जामानि। वलिय वलिभद्र वार इहि॥
वह गामी गामार। राम रति वाह सुजंपै॥
ससि पंडौं षुरसान। अधर गुज्जर ग्रह जंपै॥
न्त्रिघात पात भज्जै सयन। गहन राज रवि उग्गहै॥
आजान बाह पुच्छौ न्वपति। स्वामि भ्रंम सिर न्त्रिग्रहै॥
छं० ॥ ४९५॥

लोहाना का कहना कि जहां रावलजी उपस्थित हैं वहां और कोई क्या कह सकता है।

तब लौहानौ आजान। बाह वह वह वक्कारिय॥

[१] मो.-एक टह दिवालीयां पान।

समर सिंघ रावर। समुष अग्गै हक्कारिय ॥
तुम सुधरम राजन। अनेय लज्जा अधिकारिय ॥
जो असंत सामंत। ताहि मंता उत्तारिय॥
दस लष्ष भष्ष सुरतान दल। तनु तुरंग उत्तंग वर ॥
रुधि मंस अस्ति बस प्रान तुम। कन पिसान दूषहि सुकर ॥
छं० ॥ ४९६॥

पुनः लोहाना वचन।

तब चिचंग नरिंद। चिंत चिंता चिंतानी ॥
भव भविष्य न्निम्मयौ। ब्रह्म जानै न बिनानौं ॥
तुम अजाब अंगवनि। जंग सुरतान विचारिय ॥
रत्ति बाह दिन बोहु। कलह केली सु सुधारिय ॥
सुभ थान प्रान पतिसाह कौ। राज पान संमुह लरै ॥
बत्तीय बिकत्ति जंपै सुकवि। बहसि बहसि बुल्ल्यौ बुरै ॥
छं० ॥ ४९७॥

चामंड राय वचन।

कहै राव चामंड। अस्ति कर दुष्पिन सागर ॥
काली कर दुष्षैन। रकत वर जोगिनतावर ॥
इन्द्र आदि दुष्षैन। पंफ प्रव्वत्त प्राहारै।
चंद हथ्थ दुष्षैन। गुह्र तारक्क वीचारै ॥
थक्कैन हथ्थ वर कारन सुत्र। मंस काज विभ्भूत बर ॥
संग्राम काम कारन भिरन। सो न थक्कै रजपूत कर ॥
छं० ॥४९८॥

पृथ्वीराज वचन।

पहुमि ईस पलटौस। रोस तजि रहसि बिचारिय ॥
प्रिया कंत सीसेस। तनं हँसि हँसि दिय तारिय॥
निसा अद्ध वत्तरी। देव कंदल नहि पिष्षै ॥
हम मनुष्य तन रूप। किक्ति कहि कहि कह भष्षै ॥
धवली सुरेंन धवली दिसा। धवल कंध सनमुष लरहि ॥

सोमेस आन सुरतान सों : जौ न जुद्ध इत्तौ करहि ॥
छं० ॥ ४९९ ॥

लोहाना आजान बाहु बचन ।

अद्ध रयन अंतरिय । जाम जामानि भतारिय ॥
सामंता रौ साथ । अरध चढ़ि[1] अरध उतारिय ॥
मुक्कि वान कम्मान । तुंग तरवारि कटारिय ॥
हथ्थ[2] घल्लि सिर मंडि । रुद्र लोहं उचारिय ॥
आजान बाहु इम उच्चरै । बावारी लंबी भुआं ॥
प्रथिराज काज इक्कै सरै । पै चित्रकोटि रावल दुआं ॥
छं० ॥५००॥

प्रसंगराय खीची वचन ।

विहंसि राव परसंग । पिजे पीचो चमरालिय ॥
राज नेंन दिय सेंन । वयन बुल्ल्यौ वेढारिय ॥
रे गुज्जर रे जैन । अरे चावंड राइ सुनि ॥
राजादों कूरंभ । वलिय वलिभद्र सीस धुनि ।
सुरतान छच अनछच करि । राज सीस छचह धरों ॥
इह समर सिंघ रावल सुनै । जौ न जुद्ध इत्तों करों ॥
छं० ॥ ५०१ ॥

चामंड राय का वचन ।

षिझ्यौ राव चामंड । चित्त लग्गि चय भूअ वरा ॥
अवर मत्त सामंत । वोल बोलैति मत्ति धरा ॥
राज मद्द धन मद्द । मद्द जोबन घन घारौ ॥
सवै मद्द उत्तरै । षग्ग सुरतान सुभ्झारौ[3] ॥
जे होय सूर सूरह सुवर । निपन सूर जुद्धं जई ॥
बोले न बेंन समझे घनं । संग्रामह अरि हंकई ॥
छं० ॥ ५०२ ॥

(१) ए० कृ० को०—चढ़ । (२) ए० कृ० को०--हाथ्थ वंघ गर घल्लि ।
(३) मो०—सूभारौ ।

बरहमंड चामंड। षग्ग उच्चरिग मंत मह ॥
षग्ग मग्ग अन दग्ग। भ्रम्म स्वामित्त रत्तरह ॥
उमरि साहि बिधि बद्ध। छिनन इत उत बर बज्जै ॥
टरै न द्रिग टारंत। बीर गाजै धर गज्जै ॥
नर मंत देव मंडल सुपह। सुपह सद्द अध अद्द हुअ ॥
बर बरै बीर दाहर तनौ। रहति चंद सन्नेति धुअ ॥
छं० ॥ ५०३ ॥

जैत प्रमार बचन।

कहै जैत पामार। बार बिग्गरी तुम्हारी ॥
कही सुनी चामंड। जाम जहों अधिकारी ॥
अप्प पान तोलियै। सेन सुरतान निहारौ ॥
मवन मंत चुक्कियै। धरम छत्री जिन हारौ ॥
सर बर सुबीर[1] संभरि धनिय। मुहि प्रतीत राजन तनौ ॥
जै अजै भाग भूपति बढ़ै। पै चढ़ै धार धारह धनी ॥
छं० ॥ ५०४ ॥

गुरुराम प्रोहित का बचन।

तबै कहै राम गुर राज। सेन तोलौ राजानी ॥
सुनौ सूर सामंत। मंत कलहंत प्रमानी ॥
किं जानै किं होय। सूर उट्ठै ढिल्लानी ॥
उतराधी उत्तरै। जाय संमद साहानी ॥
भज्जै भरम्म चहुआन कौ। मंत मझ्झ कलहंत भौ ॥
जानहि न जुद्ध बंभन मरन। इन महि छुट्टिय सग्ग भौ ॥
छं० ॥ ५०५ ॥

देवराज बग्गरी बचन।

देव राज बग्गरी। बीर बीरह बरु बंध्यौ ॥
करौ जु कोइ करि सकै। साम दानह मिलि संध्यौ ॥
मोहि राज प्रथिराज। काज केवल कलहंतिय ॥

(१) मो.-रस वर सुवर

जंत्र जोर सुर सारि। सार भग्गं रहि तंतिय ॥
जीवंन हथ्थ तुम सथ्थ सुर। तनक लाज दुहुं भुज धरौ ॥
मो बुझ्झि जुझ्झि संमुह लरौ। न लरौ तौ फुनि पच्छै मरौ ॥
छं० ॥५०६॥

गुरुराम वचन।

कुसुमै जुध कीजै न। सार भर धार भिरै कस ॥
अजै होत अरि हसै। विजै संदेह देव वस ॥
ता कारन घर घेरि। भिरत जुटि प्रथमं जोरी ॥
इन वात करत कुढंग। मूल वहुरंतर फोरी ॥
गुरु राज राम इम उच्चरै। समर सिंह प्रथिराज प्रति ॥
धर साम दान भेदह रहैं। जु कछु करौ सो मंत मति॥
छं० ॥ ५०७ ॥

पृथ्वीराज वचन।

तू कुपट्ट दुजराज। राज राजन क्रित कंपी ॥
जुद्ध रूप पुर प्रथम। जुद्ध करि जुद्ध निकंपी ॥
वस्तू जाइ भर जीय। मुकति कित्ती भर' अग्गा ॥
सोइ जव सुह भोगवै। चिहुंट चीरं जिम लग्गा ॥
कायरन काज आवै वसुह। वसुह न काइर घर रहै ॥
ज्यौं वसुरत्ती सुर सूर सुआ। त्यौं राजा वसि इल रहै ॥
छं० ॥ ५०८ ॥

वरि माल्हन वचन।

समुह वीर समवीर। मंत माल्हन इह सारिय ॥
राज समुह रासलह। दिट्ठ सूरति संचारिय ॥
सुमन जेम जन महै। क्रम्म गोरिय गुर ढिल्लन ॥
इअ अजब्ब मन मत्त। टरहु जीवन कलि पिल्लन ॥
अनुचरहु धरम चहुआन रन। मन सुसाहि साहाब सम॥
दुरजय दुराय छुट्टन मुगति। निय नियान छुट्टै सुदम ॥
छं० ॥ ५०९ ॥

(१) मो.-भग

गुरुराम बचन ।

बहसि गुजर परिहार । जियन जुग तत्त विचारिय ॥
सुभट मंत जानहु न । राज भंजै पच्चारिय ॥
मत पष्षै कै मास । जुड्ड बंध्यौ सुबिहानं ॥
बिरद मंत मंतयौ । सबर अरि तजि सुरतानं ॥
जप होम मंच बलिदान तप । दुष्ट ग्रहं ग्रह टारियै ॥
चौरासि जीव भोगै मनिछ । सो जीव मत्त विन डारियै ॥
छं० ॥ ५१० ॥

राम राय रघुवंसी बचन ।

सुनि गुज्जर गांवार । राम उच्चरै सत्ति बर ॥
सर पुट्टै गा हंस । अड्ड पिष्षियै अधा धर ॥
दै अचार कुल अधम । राम रोगौ नह बुझ्झै ॥
ताव जुरा घृत देइ । कित्ति अन कित्तिय सुझ्झै ॥
सुरतान सेन कित्तक बहन । अरु कित्ती कुल भंजियै ॥
पारथ्थि राव रावल सुनै । जिन कित्ती ते लज्जियै ॥
छं० ॥ ५११ ॥

आल्हन परिहार बचन ।

परसि अमत परिहार । गुज्ज गांवार बात सुनि ॥
जनम लोभ इह जानि । कित्ति मंडियै तनह फुनि ॥
जु कछु जंत न्त्रिम्मए । कहै सब माया मेरी ॥
माया मेरी कहत । निसुष चलतें नह हेरी ॥
सो मिच नंद अप्पन सुगति । जुगति मोह भंजै भिरै ॥
भोगवै दुष्ष जीवै बहुत । कहौ जु कछु जिहि उव्वरै ।
छं० ॥ ५१२ ॥

प्रसंगराय खीची बचन ।

फुनि कहै राव परसंग । बिहंसि बुल्ल्यौ चमरारिय ॥
इनहि सूर सामंत । बार बेरहं[1] नह[2] झालिय ॥

(१) ए० कृ० को०—हरन । (२) ए० कृ० को०—डालिय ।

विषम दोह लज्जी प्रमान। रति जाइ करिज्जै ॥
अजहु हलै संग्राम। फेरि सुरतान गहिज्जै ॥
रप्पनह राह ज्यौं उड़गनह। सयन चंद चँपि चंद गहि ॥
अह भजन भरम जामन मरन। किति काल क्रूटी फुरहि[१] ॥
छं० ॥ ५१३ ॥

सुनि सुमंत सामंत। सुचिय बंधवति पुत्र सम ॥
साम अग्गि गुर मंच। तत्त जानौ सु छुट्टि श्रम ॥
सहस धीर ज्यौं सूर। सहज लग्गीत ग्रहन[२] वर ॥
बुद्धि[३]·पराक्रम बंध। सुरन अप्पौ राजी वर ॥
चिचंग राव रावल समर। समर मोह ग्रह जस छुटी ॥
कविचंद छंद इम उच्चरै। यों अवाज सम्मर फुटी[४] ॥
छं० ॥ ५१४ ॥

देवराज बग्गरी वचन।

दूहा। देवराज जपि जैत सों। तुम जानौ सब तंत ॥
उहि दिन बहु जित्तै खद। इहि दिन इह गत मंत ॥
छं० ॥ ५१५ ॥

कवित्त। एक सुदिन सामंत। साहि गोरी गहि बंध्यौ ॥
एक सुदिन सामंत। पंग जग्यह घर रुंध्यौ ॥
एक सुदिन सामंत। चाय चालुक्क विडार्यौ ॥
एक सुदिन सामंत। राज रिनथंभ उधार्यौ ॥
दिन एक स्वामि सामंत कौ। मंत छंडि कलहंत रजि ॥
मुष लोकि लोकि जीवत जरिय। घरिय षट्ट घरियार वजि ॥
छं० ॥ ५१६ ॥

सब सामंत अमंत। सुनिय बोल्यौ गिरवर पति ॥
अहो सूर सामंत। अंत कालह विगरिय मति ॥
अप्प अप्प मुष चवै। भेद अंतर गति मंडै ॥

(१) ए० कृ० को०—लुरहि।
(२) ए० कृ० को०—ग्रहत।
(३) ए० कृ० को०—बहत।
(४) ए० कृ० को०—पुटी।

इहै अष्टम अत होय। अहित दित दोज षंड ॥
तुम करहु मंत एकंत मिलि। जुद्ध अम्म छचपत्ति छिति ॥
जानौ न और उपजै न कछु। इहै पंथ आदिहि विगति ॥
छं० ॥ ५१७ ॥

दूहा। समर समर बत्ती सुनी। हुए सबै मति एक ॥
इह जुगिंद अग्या दई। यहैं लरन कर तेक ॥ छं० ॥ ५१८ ॥

सामंतों की बात सुन कर रावाल जी का किंचित रुष्ट सा होना।

कवित्त। जुद्ध मंत सामंत। थपिय चहुआन प्रान घन ॥
सबै सूर सामंत। चिंत लागै सु जोर मन ॥
सुष्ष तेज असहेज। नेंन नंचै सु सूर रस ॥
उब्बलोक आपेष। अम्म अम्मैव स्वामि तस ॥
सा लष्षि अष्षि गिरि चिचपति। दुसह काल कारन धर्यौ ॥
सनमंध सगप्पन जानि जिय। सुअन सोम प्रति उच्चर्यौ ॥
छं० ॥ ५१९ ॥

सब सामंतों का कहना कि जो कुछ रावल जी कहें सो हम सबको स्वीकार है। रावलजी का कहना कि कुमार रेनसी को पाट बैठाल कर युद्ध किया जाय।

पद्धरी। उच्चर्यौ इष्षि दष्षिन नरेस। मन्नै व विषम क्रित काल एस ॥
संग्रह्यौ भेव अंतर उरेव। जग्गयौ बीर दैवात देव ॥
छं० ॥ ५२० ॥

दिल्लीव बंध बंधौ सु पथ्थ। रष्षहु कुमार भर रेन सथ्थ ॥
सभरे वत्त सा संभरेस। मन्नेव मत्त हित्तं हरेस ॥
छं० ॥ ५२१ ॥

बोलयौ राज जामानि ताम। साहाव अव्व बल विषम काम ॥
आरिष्ट इष्ट सोचहि अनंत। मंडौ बथित्ति पच्छेव मंत ॥
छं० ॥ ५२२ ॥

जंपी सुवत्त रावल्ल सहित्त । सच्ची सुलोय सुम्भा सुभित्त ॥
पुम्मान ग्यान जांगिंद राज । चैकाल ज्ञान सुझ्झै सुश्राज ॥
छं० ॥ ५२३ ॥
त्रयगुन अतीत बुझ्झै निलोइ । जग तंत मंत कारन सुजोय ॥
वैदेह जेह वैदेह अप्प । पग्गह सुबुद्धि सुव गंग तप्प ॥छं०॥५२४॥
ब्रह्मंड पिंड बुझ्झै पुरान । पट दृष्ट दूह विद्या विनान ॥
आगंम गंम बुझ्झै गुराह । बुझ्झैव ग्यान मग्गा अथाह ॥
छं० ॥ ५२५ ॥
अवधूत राइ गोरष्य ग्यान । नर लोइ देह दैवंग जान ॥
सनमंध सगप्पन अप्पनेह । जंप्यौ सुकित्य कारन्न तेह ॥छं०॥५२६॥
इस हीन आउ सामंत सूर । बुझ्झैव पच्छ मंडी समूर ॥
रष्षी सुपच्छ रैनं ससुझ्झ । रष्पहि सु देस दिल्ली सु गुझ्झ ॥
छं० ॥ ५२७ ॥
उच्चर्‌यौ ताम आदो सुजाम । धनि मत्ति गत्ति चहुआन ताम ॥
रष्यौ सु दृढ़ भर पच्छ काज । थंभै सुदेस रष्पै सुलाज ॥छं०॥५२८॥
जिहि पुत्त एक सा पुत्त ग्रेह । थंभै सुरोज कुल वट्ट तेह ॥
विन पुत्त जेम देवल्ल अथंभ । ढहि परै भिन्न भिन्नह अचंभ ॥
छं० ॥ ५२९ ॥
विन पुत्त पच्छ जानै न नाम । सुभ क्रंम धम्म को करै काम ॥
देवत्त देव देवीन लोक । मागंत पुत्त विन सवे फोक ॥
छं० ॥ ५३० ॥
तिन कज्ज राज इह मतौ मन्नि । चित्रंग राज जंपै सु धन्नि ॥
छं० ॥ ५३१ ॥

पृथ्वीराज का रावल जी का बचन मान कर जैतराव के ऊपर कुमार का भार देना ।

कवित्त । सुनिय बत्त[1] चहुआन । हित्त आभित्त मन्नि मन ॥
पहु चिंत्यौ पामार । छोनि[2] कुम्मार लाज तन ॥

[१] मो०-चित्त　　　　(२) को०-छोरि ।

मंत गंठि मन संठि। जैत रष्षहित राज रह ॥
धरिय हीय साधीय। अप्प गंभीर धीर तह ॥
सनमुष्ष आय सिर नाय करि। कहि राजन परसंस करि ॥
रावहु सुराज ढिल्लिय सुथल। राज चित्त जानहु सुघरि[1] ॥
छं० ॥ ५३२ ॥

सो संभरि ढिल्लीस। जैत अप्पह आभासिय ॥
करिय किति विधि नीति। रीति राजंग रहासिय ॥
रयन पान संग्रहौ। देस सिर भार सुधारौ ॥
रष्षहु रज चहुआन। प्रीति अप्पा प्रतिपारौ ॥
उच्चर्यौ गरुअ पामार गजि। षग्ग सीस आयास सजि ॥
आरत्ति नेन श्रुति बेन तन। उहसि रोम मुछां उसजि[2] ॥
छं० ॥ ५३३ ॥

जैतराव का राजा के प्रस्ताव को अस्वीकार करना।

तबै कहै जैत पामार। अहो ढिल्ली नरेस सुनि ॥
अज्ज कज्ज मोकंध। रेन कारन्न आनि गुनि ॥
आदि छच तुम सीस। अज्ज सिर सुझ्झ किति षल ॥
भर गोरी गरुअत्त। करौं उझ्झार झार दल ॥
संचरो मंझ बिंबे वहरि। विधि कारन मो कंध दिय ॥
को करहु बंध संधहि सकल। मैं जित्ते हरि लोक लिय ॥
छं० ॥ ५३४ ॥

प्रसंगराय खीची और अन्य सब सामंतों का भी दिल्ली में रहने से नाहीं करना तब रावलजी का अपने भतीजे बीरसिंह को राज्य का भार देना और सामंत कुमारों को साथ में छोड़ना।

पद्धरी। सुनि वत्त सच्च संभरि नरेस। परसंसि जैत अप्पह असेस ॥
परसंग राव षीची स बोलि। गरुअत्त गात उत्तंग तोलि ॥
छं० ॥ ५३५ ॥

(१) ए० कृ० को०—सुपरि। (२) ए०—उसासि।

तुम धरौ पानि कुम्मार रेनि : रष्यौ सु रज्ज काज्ज हत्ति एनि ॥
बोलयौ ताम पीची सुगाजि । उम्भेर अंग सूरत्ति भ्राजि ॥

छं० ॥ ५३६ ।

जित्तौं सुलोक सुरपत्तिराज । उद्धरौं सीस पग स्वामि काज ॥
कूरंभ राव वलिभद्र वोलि । पामार सिंघ ओडे सु ओलि ॥

छं० ॥ ५३७ ॥

जादव सुजात आरज कमंध । आभासि कहिय न्रप करहु वंध ॥
उभ्भरे सोय भर च्यार भार । गज्जेव गेन असि रुद्द भार ॥

छं० ॥ ५३८ ॥

जित्ते सुलोक जे उद्द उद्द । सज्जै विलास सुरतरु निरुद्द ।
जे जे सुराज आभासि सूर । जंपैव भेव तेते करूर ॥

छं० ॥ ५३९ ॥

अति दुमन देखि जंगल नरेस । चित्रंगराव चिंते सहेस ॥
निज वंधु सुअन वरसिंघ बोलि । सूरत्त गहर जिन लाज तोल ॥

छं० ॥ ५४० ॥

रष्पे सुभट्ट सै सत्त तथ्य । सूरत्त घत्त संग्राम हथ्य ॥
सह रष्पि पोस रेनं कुमार । वंधेव वंध सारज्ज सार ॥

छं० ॥ ५४१ ॥

ईसरह दास सुअ कन्ह सादि । कमधज्ज वीर चंद्रह सुवादि ॥
कैमास सुअन परताप मानि । सुअजैत करन आभासि आनि ॥

छं० ॥ ५४२ ॥

सामंत सिंह गहिलोत गानि । परतोप सुअन परताप जानि ॥
जयसिंह मदन सुअ वोलि वंदि । परिहार तेज सूरत्त नंदि ॥

छं० ॥ ५४३ ॥

आभासि सब्ब परसंस किन्न । गुन जंपि प्रथक उच्चान भिन्न ॥
रष्षै सु पान रेनं कुमार । वाजे अनंत वज्जे उदार ॥

छं० ॥ ५४४ ॥

हय दोय दोय दिन्ने सउंच । राषे सु सब्ब भर राज संच ॥

छं० ॥ ५४५ ॥

यह समाचार सुन कर कुमार रेनसी जी का युद्ध में जाने के लिये हठ करना।

कवित्त। तब सुनि रेन कुमार। पच्छ रष्षै राजानं॥
पंच पथ्थ कै काज। मोहि ढिल्ली धरवानं॥
इंद्रपथ्थ तिल पथ्थ। पथ्थ सोवन पानीपथ॥
बाग पथ्थ धर काज। और रष्षै सामंत सथ॥
छचीन ध्रम्म धर राज सुनि। जो आपन अनकन करै॥
हरै जनंम मानुष सुपति। अरु निहचै नरकह परै॥छं०॥५४६॥

पृथ्वीराज का कहना कि पिता का वचन मानना ही पुत्र का धर्म है।

दूहा। तब राजन बोलै सुपुत। आदि ध्रम्म सु विचार॥
पिता वाच मानै सु सुन। ते धर राषहिं सार॥छं० ॥ ५४७॥

कुमार का योग लेने के लिये उद्यत होना परंतु राजा और गुरु राम और कविचंद के समझाने से चुप रहजाना।

भुजंगी। तबैं जंपि तामं सुरेनं कुमारं। सज्यौ साथ राजंगं जगं सुभारं॥
पिता देव सेवं[२] सुसेवं विरंची। न चुकै तनं षचि राजं सु श्रंची॥
छं० ॥ ५४८॥
करो चूक सवि लागि राजं सुकाजं। सजौ बन्न मारग्ग बद्री सुश्राजं॥
जटा बंधि लंगोट अंगं तपेसं। महा मोनधारी वघं पंडवेसं॥
छं० ॥ ५४९॥
तपै जाय कासी प्रयागं सुथानं। ग्रहै घोर तप्यं करै धूम पानं[३]॥
इला आदि छची कर्‌यौ छित्ति कामं। रहौ लोभ माया धरे पच्छधामं॥
छं० ॥ ५५०॥
इसी बात कढ्ढैति कैं मूढ प्रानी। कही बाद बादै कुमारंति बानी॥
सनें[४] उच्चर्‌यौ ताम दिल्ली नरेसं। सदा विद्धि सिद्धी व राजंग एसं॥
छं० ॥ ५५१॥

(१) ए० कृ० को०—राषै। (२) ए० कृ० को०—देवं।
(३) ए० कृ० को०—नहीं मोह कामं पिता राजधानं। (४) ए०—मते।

महाजन्न मारग्ग बूझौ विचारं । तरं वेलि कित्ती चढ़ै ध्रम्म धारं ॥
तनं रीति आदित्त गत्ती समानं । पुनं जात अंतं पुनं जात आनं ॥
छं० ॥ ५५२ ॥

अहं संक्रमं प्रान सुरतान साथं । सजौ सूर राहं चलै किति काथं॥
कहै राज रामं गुरं पुच्छि दिष्यौ । कवीचंद बानी सुबानी विसिष्यौ॥
छं० ॥ ५५३ ॥

गुरं राज बोलै भटं चंद साषी । पिता बाच मानै इहै पुच भाषी ।
अहो आदि माता पिता मूल जानं । पछै तीरथं आठ सट्टं प्रमानं॥
छं० ॥ ५५४ ॥

कहै गंग गोदावरी ग्रेह माहै । जिनैं मात सेवा पिता सेव ताहै॥
धरा ध्रम्म राषे पिता बाचमानै । ग्रहै राज भारं सुरं पथ्थ थानै॥
छं० ॥ ५५५ ॥

व पूछिन्ति काजै धर्‍यौ सूर लाजै । अरी आय लागै तवै जुद्ध साजै ॥
तुमं काज ढिल्ली गरै लाज आनी । जवै आय लागै तवै काम जानी॥
छं० ॥५५६॥

तुमं सथ्थ सामंत पुचं सुभट्टं । सजै भारथं सार ठेलै सु थट्टं ॥
दूनं वत्त कज्जै तुमं पच्छ रष्यं । सनी राज पुत्तं न वोलेति भष्यं ॥
छं० ॥ ५५७ ॥

उस समय नाना प्रकार के भयानक अशकुनों का होना और इसके निर्णय के लिये राजा का ज्योतिषी को बुलाना ।

सोइ विद्धि आरिष्टसोचै अपारं । धरा व्योम पानं तरं वंन चारं॥
धरा धूरि गाजी रहै वारि वाहं । रसं छोनि मुक्कै दिगं दाह दाहं॥
छं० ॥ ५५८ ॥

फलंतं विकालं तरं सुम्म नारं । अवं श्रोन धारं वनं वार वारं ॥
गहक्कंत गाजै चईतं चिक्कारं । दिनं सद्द वदंति फेकी पुकारं ॥
छं० ॥ ५५९ ॥

करे मालयं धष्पि प्रासाद कोटं । प्रतिम्मा प्रतंती चलै आस नोटं ॥
मुषं धोन छोनं सनेनं प्रचारं । प्रती थान छुट्टै अपुट्ठी उसारं ॥
छं० ॥५६०॥

बहै अब्ब सम्मीर नीरं अपातं। भ्रमै गिद्धिनी चिल्हनी रूष रातं॥
विकंतं सकंतं अनूपं उद्दासं। षरी गौष जायं गवायं षरासं॥
छं० ॥ ५६१ ॥

सिरं दून चेवं अनेवं प्रसायं। नयंनं बयंनं श्रवंनं वियायं॥
बड़ बागवा चीय माद्दीष तामं। प्रसंवं सरुंडं अभूतं दुरामं॥
छं० ॥ ५६२ ॥

तनं कंप स्वेदं फरक्कंत रोमं। मनं भीत रीतं चरं चंच लोमं॥
सु पन्नं दुपन्नं सुदीसै उरानं। लषै सूर सामंत कैलास थानं॥
छं० ॥ ५६३ ॥

महा बुद्धि दैवग्य बुझ्झै वजासं।जगं ज्योति व्यासं हरी जैंति तामं॥
लहै सब्ब जोतिष्य विद्या विनानं[1]। उरं इष्ट भासे सरूपं सन्यासं॥
छं० ॥ ५६४ ॥

दुअं पुच्छि आभासि दिल्ली नरेसं।कही अंत आरिष्ट सोचै असेसं॥
कही विप्प भा सैवरा सेव सब्बं। निरष्षै सु कालं दुरासह अंबं॥
छं० ॥ ५६५ ॥

ज्योतिषी का अशकुनों का और ग्रहचाल का फल बतलाना।

कवित्त। तब जंपत जग जोति। व्यास हरि जोति अपारं॥
सुनौ राइ दिल्लीस। तजो मन षेद सुभारं॥
काल व्याल संसार। ग्रसै सब रिद्धि लोक रह॥
करौ न रोस सदोस। हम जंपैं सुविद्धि इह॥
उच्चरै राज प्रथिराज तब। कह्यौ चित्त छंडैद्र मय॥
आरिष्ट इष्ट सोचहि अनत। हिय हम मानहि अंत षय॥छं०॥५६६॥

हनूफाल। जंपे वतं जगजोति। हरि ज्योति वयासह जोति॥
विधि काल व्याल विनान। सुक मुनिय जान गियान[2]॥
छं० ॥ ५६७ ॥

आगंम आगम विद्धि। अति इष्ट बुद्धिय सिद्धि॥
ग्रहचार वक्र विगत्ति। षिति सयल भेद दिभत्ति॥
छं० ॥ ५६८ ॥

(१) ए० को० कृ०—विज्ञानं। (२) ए० कृ० को०—ग्यान विनान।

सनि वक्र दिल्लिय देस। सुरभन नयर विरेस॥
अरि ग्रेह कोप्यो अप्प। सुर असुर मंचि यदप्प॥छं०॥ ५६९॥
ग्रह विषम तन चहुआन। ग्रह दुष्ट छचि छितान॥
हुअ हिंदु युद्ध तुरक्क। रह उंच संजहिं ढुक्क॥ छं०॥ ५७०॥
दिल्लीस[1] गज्जन ईस। सम चलहि प्रान पुरीस॥
दिल्लीय के दिन राज। चहुआन रेन विराज॥ छं०॥ ५७१॥
साहाव सूअ सहाव। अति तेज होय सताव॥
करि वंदि जीतहि देस। दल जोरि जर अस हेस॥छं०॥५७२॥
सब करहि धरनिय पानि। सजि चलह कनवज थान॥
नन जुरहि कमंध नरेस। सिर करहि गंग प्रवेस॥छं०॥५७३॥
पिति जीति गज्जन ईस। सम जरहि दिल्लि सरीस॥
सम जुद्ध जंगल राज। मिलि करहिं आमि स थाज॥छं०॥५७४॥
सम जग्गि गोरिय जुद्ध। पद रेनि पामहि उद्ध॥
दस एक संवत सट्ट। सवि अग्ग द्वादस तत्त॥ छं०॥ ५७५॥
तावं तचेव समथ्थ। असुरान दिल्लिय तथ्थ॥
एवत्त वुझिझय राज। सं सच्चौ जरध काज॥ छं०॥ ५७६॥

ज्योतिषी की वाणी सुन कर राजा का कुपित और क्लान्त चित्त होना और सामंतों को समझाकर कहना की गोविन्द का ध्यान करके अपना कर्तव्य पालन कीजिए।

कवित्त। सुनिय बत्त दिल्लीस। रोस उभ्भार अप्प तन॥
मन उदास चिंतास। काल मन्निय सु क्रत्त मन॥
निरषि स्वामि सामंत। ताम घुम्मान स जंपिय॥
अब्ब काल संग्रहै। छोनि इह फेरि न कंपिय॥
रष्षहु सुरेन कुम्मार रज। धराबंध बंध्यौ सुमर॥
मम करौ मोह चिंतौ सुहरि। सजौ खरग सारग सुभ्भर॥
छं०॥ ५७७॥

(१) मो०—दिल्लेस।

तय जलद मेघ मंडिलिय। नयन पुंडीरिय सुसोभित ॥
चिसल पीत अंमरिय। गुंज मंजरिय अरोहित ॥
श्रुत कुंडल मंडरिय। मोर पंपरिय सिरोयनि ॥
मुरलि मधुर सुष्षरिय। चक्र बंकुरिय करोयनि ॥
इय ध्यान मंन राजन धरिय। मत्त घत्त पच्छै सरिय ॥
कैलास वास सामंत सथ। कलह केलि रची ररिय ॥छं०॥५७८॥

हनूफाल। वपु स्याम धर मति मेष। चष पुंडरीक सुरेष ॥
कच वक्र कुंतल लीन। मकरंद जै सुष पीन ॥ छं० ॥ ५७९ ॥
सुक्रीट हार बिहार। तम हरन किरन प्रहार ॥
श्रुत कुंड लेन विलाल। सक सकल ग्रीव विसाल ॥छं०॥५८०॥
निज नास मोति सुछंद। तिलकं सुसम अति बिंद ॥
तें प्रतिय[1] अमर प्रतीत। रघुवंस राजस रीति ॥छं०॥५८१॥
करि करिय सिंगिनि पानि। मधु मधुर मिष्टित वानि ॥
धरि पुट्टि तूर धनुक्क। जिय जासि जानि जनुक्क[2] ।छं० ॥५८२॥

कवित्त। सुमन मयन मंजरिय। रमन षंजरिय विरम्मिय ॥
तिलक अलक जंजरिय। असित अंजरिय द्रिगंमिय ॥
सुस्रित चिसिति अम्मरिय। चिहुर उम्मरिय सिरन्निय ॥
सरन[3] हंस भ्भंभ्भरिय। डंड डंमरिय करन्निय ॥
बर बिदुष सुष्ष कह हंकरिय। धरिय भगति दिसि नंजरिय ॥
अइय द्रग्ग पंपं परिय। राज ध्यान उमया धरिय ॥
छं० ॥ ५८३ ॥

दूहा। हरि माया उमया सुहरि। न्रिपवर चिंतिय ध्यान ॥
मन एकंत समंचरिय। प्रति बोधे सब्बान ॥ छं० ॥ ५८४ ॥

क्रोध और क्लान्त अवस्था में पृथ्वराजकी मुखप्रभा वर्णन।

कवित्त ॥ अति तरक्क[4] बर तिष्ष। षंभ तिष्षन[5] तररक्किय ॥
बंभ अंड विहरिय। मनहु दारिम दरक्किय ॥

(१) ए० कृ० को०—प्रीति। (२) मो०—जनक्क। (३) मो०—रसन।
(४) ए० कृ० को०—तरप्प। (५) ए० कृ० को०—तष्षन।

फनिन परिय फुंफारिय। फेन फुंकरिय फनिंदह ॥
परम उग्र वपु दुर्ग। दिग्ग सुद्दिग दिग अंतह ॥
नर हर अपुव्व नहपुव्व पर। दुरद दनुज दारुन दिसनि ॥
जन हेत विघुन्निय अधम उर। रुहिर चंद घुंटिय रिसनि ॥
छं० ॥ ५८५ ॥

नद्दिय भीमह नद्द। घुंभ घुंभिय अररक्किय ॥
अध धक्किय धर धरनि। सीस फनपति मुररक्किय ॥
पिष्षिय रूप अपुव्व। सव्व लोयन वल घट्टिय ॥
अट्टहास टह टह उघट्टि। वरपुंज निघट्टिय ॥
गहि पलय ताहि तिम दुग्ग द्रिग। नर हर तप्पिय तीन पुर ॥
षन्निय वहहु विद्दरि नषन। दप्पह चंद दवित्त[1] उर ॥
छं० ॥ ५८६ ॥

काल चक्र की प्रभुति और राजा का रैनसी जी को समझा कर उन पर दिल्ली राज्य का भार देना।

वाघा ॥ इह भविष्य बीतय दिलेसं। आवरि वीर अंग अस हेसं ॥
मंनि काल क्रित कारन रूपं। सादैवत्त आदि गति ओपं[2] ॥
छं० ॥ ५८७ ॥

कालं दैव देव संहारं। कालं मंदिर मेर ढहारं ॥
कालं जगत जगत्त विलोमं। कालं सिध साधक्क न ओमं ॥
छं० ॥ ५८८ ॥

कालं अजा जठर हरिवासं। कालं मानुष इंद्र विनासं ॥
कालं लंका गढ़ किय पाजं। कालं दिय स्वभषन राजं ॥
छं० ॥ ५८९ ॥

कालं जादव कुल संहारं। कालं द्वारिक समुद सिधारं ॥
कालं जलथल एक पसारं। कालं कन्ह वडपन्न सघारं ॥
छं० ॥ ५९० ॥

(१) ए. कृ. को.-तवित। (२) ए. कृ. को.-सा दैवंत आदि गति ओपं।

काल' बाल' काल' वृद्ध' । काल' जोगी काल' सिद्ध' ॥
काल' सूरिज काल' चंद' । काल' नवै डुंगरी नंद' ॥छं०॥५९१॥
काल' ब्रह्मा केइ संहारे । काल' ग्रह नव नाषिच तारे ॥
मन्नि काल गति उति चहुआन' । आवरि निज मारग कुल कान'[1]॥
छं० ॥ ५९२ ॥
तब सुनि रेन कुंअर कहि सार' । इह गति इह संसार असार' ॥
इतनी बार न बोल्यौ एस' । गुरु भट न्रप तीने सविसेस' ॥
छं० ॥ ५९३ ॥
इह अब काल वयाल गति जानी । ते हम ग्रहै तेग परिमानी ॥
बोलै अग्गर रेन कुमार' । किय परसंस राजगति सार' ॥
छं० ॥ ५९४ ॥
राषहु रयन थान गति थिती । जानहु चित्त रीति रज गत्ती ॥
का जानै सज्जी का भज्जी । जग जानै दुज्जर गति लज्जी[2] ॥
छं० ॥ ५९५ ॥
रष्षहु रयन दिल्ली रजभार' । तुम जानहु षिची षग सार' ॥
राषहु बंध नयर सुभसाज' । जं निरमित' सकल कुल काज' ॥
छं० ॥ ५९६ ॥
तब जंपै नसि रेन कुमार' । सेवा वाहै पिता अगि सार' ॥
कै साजो सेवा जुध अष्ष' । कै परसन बद्री पति दष्ष ॥छं० ॥५९७॥
बार बार जंपन नहिं काम' । अब हम तुम रष्षौ रजमाम' ॥
तब जंपै रावल प्रति राज' । तुम रष्षहु बुझ्झवि सुत आजं ॥
छं० ॥ ५९८ ॥
तब धरि पानि षुम्मान कुमार' । किय संबोधि सुचित चित सार' ॥
किय अप रेन कुमार सुचित्त' । जंपे सहु चहुआन सहित्त' ॥
छं० ॥ ५९९ ॥
राषहु कुमर सथ्थ भरसार' । जै रज्जै साजै रज भार' ॥
उट्ठिय संत चिंत करि राजन । बाध्यौ बीर धीर सब ताजन ॥
छं० ॥ ६०० ॥

(१) ए. कृ. को.-आवारिनि मारग कुलकानं । (२) ए०-लग्गी ।

जै जै जै बानी आग सह। सुनिय मंनि व्रित काल सुतासह ॥
छं० ॥ ६०१ ॥

रेनसी जी का कहना कि मैं तो युद्ध में पराक्रम करूंगा।

कवित्त ॥ * चक्रव्यूह भारथ्थ। रचिय द्रोण आचारिज ॥
दुरजोधन नृप कुंअर। नाम लषमना मद्धि सज ॥
दस हजार अनि कुंअर। रष्षि पारथ्थ जुध कज ॥
एक एक भुजबल प्रमान। भद्र जातीक अयुत गज ॥
ते हनिवि सकल कहि रयनसी। भंजि व्यूह लगि पग्ग रस ॥
अभिवन्न कुंअर अरज्जुन कौ। काम आय षोडस बरस ॥
छं० ॥ ६०२ ॥

कविचन्द का कुमार रेनसी को समझाना।

पद्धरी * ॥ कविचंद जंपि मधु वचन जोह। राजिंद कुंअर सुनि रयनसीह ॥
सत एक पुत्र हुअ रिषभ देव। बड़ पुत्र भरथ तिहि सुनहु भेव ॥
छं० ॥ ६०३ ॥
वैराग चित्त लग्गै सुरंग। माया अलिप्त भेदै न अंग ॥
तप करन चलिय तजि राज पाट। परमोधि आय मिलि रिग्ग घाट॥
छं० ॥ ६०४ ॥
पित मात जियत तूं तजहि देस। अपहास करहि अनि सुनि नरेस ॥
उत्तानपात सुत भ्रूअ जेम। रहि जाय वत्त इल अचलतेम ॥
छं० ॥ ६०५ ॥
पाटवी पूत छंडहि न रज्ज। आगम निगम वेदल वरज्ज ॥
इन भंति उक्ति अनेक उक्त। तिहि काज राज नवषंड भुक्त ॥
छं० ॥ ६०६ ॥
समझाय आनि ग्रह फिरि भरथ्थ। दै राज रिषभ निज हुअ अतिथ्थ॥
भागवत कथा संभलि प्रबन्ध। नगहट्ठ छंडि मन मद्धि समंध ॥
छं० ॥ ६०७ ॥

* ये दोनों छन्द मो० प्रति में नहीं हैं।

पृथ्वीराज का कुमार रेनसी का राज्यभिषेक करना।

कवित्त ॥ करिय सुचित भर सब्ब। राज दिन्नेव द्रव्य भर॥
मंगि मदन शृंगार। गज्जबर पट्ट मद्द भ्भर॥
रयन कुमर आभासि। दीन माला सुत्ताहल॥
असी बंधी निज पानि। बंदि कीनौ कोलाहल॥
आरोहि गज्ज कुम्मार निज। पच्छ बंध सा सिंधु किय॥
जोगिनिय बंदि चहुआन पहु। कृत्य काज मन्नेव इय॥
छं० ॥ ६०८ ॥

दूहा। रेन कुंअर सोचित्त थपि। ठयौ जुद्ध मति मानि॥
उट्ठि राज सब ग्रेह कों। दिय अग्या बर बानि॥ छं०॥६०९॥

दरबार बरखास्त होना और पृथ्वीराज का रावलजी को डेरे पर पहुंचा कर महलों को जाना।

अरिल्ल ॥ उठ्यौ मंत चित्त करि राजन। जै जै जै बानी आयासन॥
बज्यौ धीर बीर रस ताजन। सुनिय मंच किलकान सुतासन॥
छं० ॥ ६१० ॥

कबित्त ॥ उट्ठि महल प्रथिराज। मंगि आरोहन बाजिय॥
रावल प्रथम चढाय। चल्यौ चहुआन सुताजिय॥
करि अस्तुति सम सिंघ। तुमहि बड्ड बड्डाइय॥
तुम जोगिंद जग जित्त। कित्ति तुम कहिय न जाइय॥
परसंस करत अन्नेक परि। करि डेरा रावर समर॥
चट्ठनह[1] बर निसि सेष कहि। आयो बज्जन बजत घर[2]॥
छं० ॥ ६११ ॥

इधर से शहाबुद्दीन का सिंधु नदी पार करना।

बाजि घरिय घरियार। साहि उत्तरिय सिंधुनद॥
विषम वाव उड़ि खिंग। सिंधु छुट्यौ कि सद्द मद॥
तमसि तमसि सामंत। राज राजस किय तामस॥

(१) मो.-चढ़तिहि। (२) मो.-आयौ बजत बजन्न रव।

घुमरि घुमरि नीसान । थान जग्गे सन पोवस ॥
निसि अद्‌ध अनेही पीय तिय । पिय पिय पिय पप्पीह तिय ॥
पंपनिय फरकि अंपिय अनपि · उदय अनंद[1] सुवीर किय ॥
छं० ॥ ६१२ ॥

अर्द्ध रात्रि के समय पृथ्वीराज को शाह की अवाई का समाचार मिलना और उसका सब रसरंग त्याग कर जंग के लिये सजना ।

उदै अनंदिय वीर । वाजि रनजंग वीर वर ॥
क्रोध लोभ मद उतरि । मद्द पिन्नो सुगत्ति सर[2] ॥
अद्ध अनेही[3] राति । अद्ध नेह सुलितान ॥
दुहु मिलंत महिलानि । मिलत चित अच्छरि धान ॥
तिय मद्धि पंच घट्टीय घटि । वर मिलान पोमन्न करि ॥
वर वीर वेलि वद्धिय विषम । करन[4] छिमा छिम छन उसरि ॥
छं० ॥ ६१३ ॥

मोतीदाम ॥ सुवीर अनंद अनंदिय नंद। नच्चौ भ्रम छंडि भयानक छंद ॥
कला कल अप्पिह सुच्छिर वानि । सिपी सिप अभ्भ सिकंडिय जानि ॥
छं० ॥ ६१४ ॥

गये निज मंदिर समंत सूर। मिले नर नारि महारस नूर ॥
मिले रस राजस पंग कुँआरि। करी परिक्रम्म सुनेहिय नारि ॥
छं० ॥ ६१५ ॥

अनेक सुगंध सउद्‌ध अनूप । मिलंत[5] छिनेक सु सन्नहि भूप ॥
करी घन नेहिय नेह प्रकार । मिलंन सुमंनहि मंनहि सार ॥
छं० ॥ ६१६ ॥

करी नर नारि सुरंग उधंग । पुछै चर आगम साप सुरंग ॥
रजंनिय अंत रही इक जाम। कहै दोइ दूत सुआइय ताम ॥
छं० ॥ ६१७ ॥

---

(१) मो.-अनंदिय । (२) ए. कृ. को.-वर । (३) ए.कृ. को.-सनेही, सेनेही ।
(४) ए. कृ. को.-करिय । (५) ए.कृ.को.-मिलन्न ।

पिय करुना सुष पी सुष बीर। दियौ रस संकर अंतर चीर ॥
संयोग वियोग नवै रस बंध। लही चक्क चक्किय है निसि अद्ध ॥
छं० ॥ ६१८ ॥

षिय पिय पिट्टन दिट्ठ भवन्न। रहौ चित पुत्तलि जनि मवन्न ॥
पुरं पुर अस्मनि केवल साहि। मनों बिंब चोल करुन्न मिलाहि ॥
छं० ॥ ६१९ ॥

बिथा विथ कंपिन जंपिन सेइ। को पुच्छहि काहि को उत्तर देइ ॥
कथौ कथि ऋंगन अंगन ताहि। रहे चष जानि टगट्टग चाहि ॥
छं० ॥ ६२० ॥

क्रमं क्रम जग्गिनि लग्गिन नेन। गये रस छंडि मनो असु हैन ॥
रसी रस सिद्धिय विद्धिय माल। ग्रसें सब सुष्ष[1] भयानक वयाल ॥
छं० ॥ ६२१ ॥

निमेष करी करुना रसकेलि। उठी बर बीर बरव्वट बेलि ॥
दिषे दिषि कंत सु दंपति चाहि। मिलें चित मित्त सु अंगन साहि॥
छं० ॥ ६२२ ॥

जनों पर निद्धि सु देषिय रंक। टरै नहि चेतन ज्यों निधि संक ॥
भये रस संत प्रभात प्रामन। बजे रन जंग चढे चहुआन ॥
छं० ॥ ६२३ ॥

सुनें धुनि राज गवन्न गवन्न। तजे तिन मत्त भवन्न भवन्न ॥
घनंकि निसाननि नादानि वद्द। षलक्कि जंजीर उमद्द निसद्द ॥
छं० ॥ ६२४॥

घनक्किय संकर अंदुनि अद्द। ठनंक्किय घंट सु घंटन हद्द ॥
घुरक्किय घुग्घर दादुर भद्द। * * * छं० ॥ ६२५॥
जयंजय सद्द वदै चहु ओर। करै जनु प्रात सिषंडिय[2] सोर ॥
झनंकिय भेरि सु झझ्झर वद्द। रनक्किय बीरन फेरिय सद्द ॥
छं० ॥ ६२६ ॥

---

(१) ए०—मुष्ष। (२) ए० कृ० को०—सिकंडिय।

घरक्किय झूझ सुराज रवद्द। भरक्किय नाग गयो सिरखद्द॥
तुरक्किय तुंग तुरंगन हीस। सरक्किय सप्पय सेसनि सीस॥
छं० ॥ ६२७॥

परक्किय पष्पर पष्पर तोन। ढलक्किय ढाल सुढक्किय प्रोन॥
छलक्किय हाल फलक्किय नूर। धरक्किय घाम सु कातर क्रूर॥
छं० ॥ ६२८॥

कथं कथमान गुमान उमान। दुअं दस कोस मिलान मिभ्रान॥
सु हिंदुअ मेछ बज्यौ रन तोल। गयौ दिव देव कवी दिय बोल॥
छं० ॥ ६२९॥

निमेषक भूमि अयासह अंग। चल्यौ जनु इंद्र धनुक्कह रंग॥
जयं जय सद्द करी तिहि बीर। कह्यौ तिनि[1] राज रवन्नह पीर॥
छं० ॥ ६३०॥

कविचन्द का वीरभद्र से युद्ध का भविष्य पूछना और वीरभद्र का कहना कि पृथ्वीराज पकड़ा जायगा।

दूहा। तुम सु वीर जानहु भवसि। कहौ राज न्निम्मान॥
वीर कहै संमर परै। ग्रहै मेछ चहुआन॥ छं० ॥६३१॥

पृथ्वीराज का दिल्ली से चलकर दस कोस पर पड़ाव डालना।

साहस गहन सहन्न किय। हरिग रास चहुआन॥
पंच सबद बज्जिय सघन। दिय दस कोस मिलान॥
छं० ॥ ६३२॥

पृथ्वीराज के कूच करते समय संयोगिता की विरह बिथा का वर्णन।

कुंडलिया। नृप पयान पोमिनि परषि। घटि साहस घटि एक॥
सुकथ केलि पियूष पिय। जतन करहि सषि केक॥
जतन करहि सषि केक। हाय करि जैं जैं जंपहि॥
ह्रंत कंट कर मिंडि। थरक्कि थरहर जिय कंपहि॥

(१) ए० कृ० को०-तिहि।

इह प्रयान न्रप करत। परी संजोगि धरा धपि॥
सषी करत सब जतन। चलत पयान तहां न्रप॥
छं० ॥ ६३३ ॥

चोटक॥ जतनं जतनं किय झंझलियं। दिषि दीपक भोंन भरयौ सुहियं॥
भवनं भवनं भवना गरियं। धर मुच्छि परी बुधि सागरियं॥
छं० ॥ ६३४ ॥

ससि स्टर चयं रवि जोग ससी। विष ज्वाल असी सुमनं विगसी॥
द्रिग चंचल अंचल सोमुदयं। विरहा उर उग्ग ग्रसी सुधियं॥
छं० ॥ ६३५ ॥

अहि घुट्टि लियं षयरं जुलियं। षह तुट्टि सुधा निधि की विधियं
बर विंब बिलोकि सषी करियं। असु आसिक नासिक सें झरियं॥
छं० ॥ ६३६ ॥

अह कट्टहि निट्ठ निसान घटे। विरही घटिका जनु अग्गि पढै॥
बिरही बरनेइ अनंग कसं। भए जानि किरोग त्रिदोस वसं॥
छं० ॥ ६३७ ॥

सुबढी विरही न घटे न घटं। सु चढी जनु वेलिय झष्य बटं॥
जल नेननि बूंद परै कुचयं। तिनकी उपमा नयनं सचयं॥
छं० ॥ ६३८ ॥

जुरठी हुति पुब्ब कमोद कली। तिहि तारक सोम बसीठ हली॥
इहि सारन प्रान न मुक्कि पती। तिन मंडि रहे दुष देषि जती॥
छं० ॥ ६३९ ॥

चल चंदन चीरति सीर करै। लहरी विष जानित प्रान हरै॥
सषि स्टंठिन भूढ़ रसे सुतनं। घन सार निहारनि नारि थनं॥
छं० ॥ ६४० ॥

नटि नारिय नारिय पानि गहै। तजि जाहिन अंक वियोग सहै॥
पल ध्याननि आननि नैन चहै। अलि ओटन जोट वियोग सहै॥
छं० ॥ ६४१ ॥

घन घूमरि झूंमि समीप रहै। ठग टग्ग लगी चष कोन चहै॥
षिन दाषिन षीनह षीन भई। घरियार निहारत प्रात भई॥६४२॥

कुंडलिया ॥ घर घयार बज्जिग विघन । पल्लिग छिंदु दल छाल ॥
दुतिय चंद पूनिस जिसैं । वर वियोग वढ़ि बाल ॥
वर वियोग वढ़ि बाल । लाल प्रीतम कर छुट्टौ ॥
ऐ कारन हा कंत । स्वास आसु जानि न फुट्टौ ॥
देषंत नैंन सुभक्कै न दिसि । परिय भूमि संथार ॥
संजोगी जोगिन भई । जब बज्जिग घरियार ॥
छं० ॥ ६४३ ॥

कवित्त ॥ वढ़ि वियोग वढ़ बाल । चंद यिय पूरन मानं ॥
वढ़ि वियोग बहु त्रास । वृद्ध जोवन सनमानं ॥
वढ़ि वियोग बहु बाल । दीन पावस रिति वड्डै ॥
वढ़ि वियोग वढ़ बाल । लच्छि कुलवधु दिन चड्डै ॥
वड्डै वियोग बालनि विरति । उत रावन सेना चढ़िय ॥
सरदादि निसा मकरादि दिनं । बाल वियोगत सम वढ़ियं ॥
छं० ॥ ६४४ ॥

वही रत्ति पावस्स । वही मघवान धनुब्बं ॥
वही चपल चमकंत । वही वगपंत निरष्षं ॥
वही घटा घन घोर । वही पप्पीह मोर सुर ॥
वही जमीं असमान । सही रवि ससि निसि वासुर ॥
वेई अवास जुग्गिन पुरह । वेई सहचरि मंडलिय ॥
संजोगि पयंपति कंत विन । सुहि न कछू लग्गत रलिय ॥
छं० ॥ ६४५ ॥

दूहा । जल अधार[1] रष्यो जियन । व्रत रष्यौ नन प्रान ॥
अब रवि मंडल वर मिलन । कै जोगिनिपुर थान ॥
छं० ॥ ६४६ ॥

हरिह आदि अमर सकल । अलि रष्पह अलि और ॥
जोग भोग पिय संग रहि । तियन भ्रम्म घर और ॥
छं० ॥ ६४७ ॥

कै धरणी कै अम्मरह । कै अंतर तरु मूल ॥
दैवकाल बातूल मिलि । उड्डहि तंत तन तूल ॥
छं० ॥ ६४८ ॥

(१) ए० कृ० को०—अधीर।

पृथ्वीराज की चढ़ाई की तैयारी का वर्णन।

पद्धरी॥ चढि चल्यौ साह चहुआन सूर। धुंधरी बिदिसि दिसि दिपिकरूर॥
सुर धुनि निसान बज्जे सुरंग। नपफेरि रंग सिंधू उपंग॥
छं० ॥ ६४९॥

दल चलहि द्रवरि चंपे दुरंग। उरक्कंत पंथ दुत्ते कुरंग॥
सो सद्द बंदे संभरे सूर। उट्ठंति सुच्छ बंकी करूर॥
छं० ॥ ६५०॥

चिंतवै सूर सा अंम हेरि। मन कहै गहै सुरतान फेरि॥
बारन्नि बहै गजदान भद्द। क्रोधह कुरंग दीसै रवद्द॥
छं० ॥ ६५१॥

आरुहै मिट्ठ गज तुरंग बट्ठि। कातरिति कंमि गिरि धुम्र चट्ठि॥
धावंत तेज पुज्जै न धाइ। छुहै न प्रान जिन करै हाइ॥
छं० ॥ ६५२॥

मद सरक धरक जोगी समान। क्रम क्रमनि असे पयपयन जान॥
दीसै तुरंग अवधूत धूत। मानी सुदंति पब्बै सपूत॥
छं० ॥ ६५३॥

चतुरंग सेन सजि बर प्रमान। सिंधूरन ब्रह्म चढ़ि चाहुआन॥
षोले किपाट बर सुगति रूप। सोमेस पूत अवधूत भूत॥
छं० ॥ ६५४॥

चहुआन को चलते समय अशकुन होना।

कवित्त। चढ़त राज चहुआन। छीक अगनेव देव दिसि॥
मिल कुंजर बिन दंत। अश्रव अपलानि चिंत वसि॥
कूच मंत तुट्टयौ। राज दिट्ठ सु बिचारय॥
गौर कुंभ उप्परै। स्याम कुंभह अड्डारिय॥
तजि मोष रस्स संधी चिषा। आवै क्रित गवनन छचौ॥
असु नीम जोग पंचमि दिवस। चढयौ राज निस तुछ षचौ॥
छं० ॥ ६५५॥

(१) ए० कृ० को०— कार्य। (२) ए०—निज।

गजनी के गुप्त चरों का शाह को पृथ्वीराज के कूच का समाचार देना।

दूहा। दूह चरित्त पिप्पिय चरन। वह चरित्त नर राय॥
सो चरित्त सुरतान सों। सिंध उलंघिय धाय॥
छं०॥ ६५६॥

हुनि हमीर दल हाम करि। मन करि अग्गो पच्छ॥
दूधँ दह्यौ ज्यौं पियै। फूंकि फूंकि के छच्छ॥
छं०॥ ६५७॥

कुंडलिया॥ कूच कूच पंधार धरि। हल्लिग हिंद दल षींच॥
कह्यौ राज सुरतान कह। सिंधु विहथ्थै बीच॥
सिंधु विहथ्थै बीच। फेरि पुच्छै चहुआनं॥
कहौ मग्ग परिमान। जेह संख्या तुम जानं॥
कौंन ठौर जुध मेल। होइ चिंतौ तुव सोचह॥
सकल सबै सामंत। करौ नदि उत्तरि कूचह॥
छं०॥ ६५८॥

राजपूत सेना का पहला पड़ाव पानीपत में होना।

दूहा। जाय जलह पथ उत्तरयौ। दिल्ली वै चहुआन॥
सूरन अति आनंद हुअ। सहि संजोगी हान॥
छं०॥ ६५९॥

शाही सेना का चिनाब नदी पार करना।

कवित्त। दिल्लिय ते सत कोस। अग्ग सिंध[1] नदी कहिज्जै॥
द्वादस नद सतनंज। तहां न्रप दल सलहिज्जै॥
दिल्ली तें सत दोइ। नगर लाहौर सु थानं॥
असी कोस नदि वियह। परें लाहौरयि जान॥
उत्तरी सिंधु साहाब दी। विहथ परै आयौ सुरजि॥

(१) ए०–सिंध, कृ० को०–सिंह।

दिन सत्त अट्ठ महि जानिहौ। ओ आयो चिन्हाब गजि ॥
छं० ॥ ६६० ॥

दूहा। सा चिन्हाब लाहौर तें। कही कोस च्यालीस ॥
अप्पन सेन समाहिकैं। जाय मिलौ दिल्लीस।
छं० ॥ ६६१ ॥

पावस पुंडीर का उक्त समाचार पाकर पृथ्वीराज के पास जाना और क्षमा मांगना।

कवित्त। इह अवाज पुंडीर। सुनियं वह रोस उपन्नौ ॥
पावस राइ हिंसार। कोट छंडवि संपन्नौ ॥
आज राज कौ काज। करों तिल तिल तन बंटौ ॥
तौ धीरंजा धीर। स्वामि अग्गैं रन नट्टौ ॥
इनवार अत्य जग्गौ नही। छोनी छल कायर करै ॥
हारै जनंम मेटै सुजस। कहर क्रूर दोजिग परै ॥
छं० ॥ ६६२ ॥

आयौ छंडि हिंसार। राज सतरंग मिलन्नौ ॥
सबें स्वर सामंत। जाय अग्गें होय लिन्नौ ॥
लग्यौ पाइ रा जान। भाव रष्यै मन उंचो ॥
हेत बत्त पुच्छी न। नैंन ते नैंन दुसंचौ ॥
यौं कहै सबैं सामंत तब। राज पाय पुंडीर गहि ॥
अपराध कोटि बगसंत न्त्रप। हूई बात पिछली सही ॥
॥ छं० ॥६६३॥

पृथ्वीराज का पुंडीर वंश का अपराध क्षमा करना।

कुंडलिया। तब तुम लुटि छंडिय सहर। अब आए जुध भीर ॥
धीर लाज कबि लगी गनौ। रे पावस पुंडीर ॥
रे पावस पुंडीर। धरि लाजह जल रष्यौं ॥
नत[1] सोमसर आन। मान गढ़ते गहि नष्षौं ॥
हंसहि[2] मोहि सामंत। लैंजु आय तुम सब्बह ॥

(१) मो०—नन। (२) ए० कृ० को—सहहि।

कहै राज पृथ्वीराज । सहर लुट्यौ तुम तब्बह ॥

॥ छं० ॥ ६६४ ॥

कवित्त । तुम्म लुट्यो लाहौर । भौमिभंग तुमौ भग्गा ॥
लाम अस्स पय मुक्कि । यंय सो द्रह सुलग्गा ॥
अस्स धीर अरु सुकथ । पुब्ब भग्गा चंदानी ॥
राज मह्न चहुंगो । भंगि अग्गा गजानी ॥
पुंडीर राइ साधन सकल । अकल मोह बंधौ नजिय ॥
दिन अट्ठ द्रह्न चहुआन कौ । रहा न न्रप दरबार विय ॥

॥ छं० ॥ ६६५ ॥

धरिय च्यारि पुंडीर । छिमा छिम अदव परष्यौ ॥
सामंतन सब सुनत । मंत अच्छौ मिलि भष्यौ ॥
घलहि द्रोह लग्यौ दिवान । सुतौ सुरतानह जानै ॥
दोह सत्त अट्ठसं । छोड़ मौलिप चहुआनै ॥
जब लोह कोह परियारतें । काटि अरिन भंजौ सुरिन ॥
प्रथिराज काज तरवारि स्तर । जौव उड़वि लग्गौ तरनि ॥

॥ छं० ॥ ६६६ ॥

शाही फौज की चाल और नाके बंदी का समाचार पाकर पृथ्वीराज का कविचन्द को हम्मीर को मनाने के लिये लेजाना ।

दूहा । धरिय पंच बत्ती सुवर । कागद आय सपन्न ॥
अरियन दिसा जु विह्नी । जोग नेव कर दिन्न ॥

॥ छं० ॥ ६६७ ॥

साटक । सोतं श्री फल लाभ राजन वरं गोरी ग्रहे बंधनं ।
पावक्कं अरि रोह दाहन वरं भूभार उत्तारयं ॥
मानं पंगय पंग जग्य सरसं वग्गं वरं होमयं ॥
नेयं भूत विधान न्निमित वरं सामं भुजं राजयं ॥

॥ छं० ॥ ६६८ ॥

दूहा ॥ ॥ सो मतन मंतौ नृपति । वामन जंबू राइ ॥
और काम चहुआन कौ । कहँ सुकिज्जै धाइ ॥

॥ छं० ॥ ६६९ ॥

कवित्त ॥ सुभर उतरि सतनंज । चंद पट्टौ कंगुरह ॥
लै आयौ जालंध । राइ हाहुलि हंमीरह ॥
अरु जाल पाप रसि परस । परस दरसत इह अप्पौं ॥
आदि जुद्द दय दीन । सिंघ पष्षरि किन दिषयौ ॥
इम नमसकार करि पुचछयौ । अरु पुछमौ पछली विगति ॥
हु कहों सुतुम जानहु सकल । चलहु चंद अग्गे निरति ॥
छं० ॥ ६७० ॥

कवि चन्द का जालंधर गढ़ जाना और हम्मीर को समझाना ।

मुरिल्ला ॥ मग्गह चलंत नहि करि विरम्म । सामंत सूर सुभर भुदित्त तम्म॥
जालंध जाहु नृप पति सुकाज । रापहु तराज प्रथिराज आज ॥
॥ छं० ॥ ६७१ ॥

कवित्त ॥ कह्यौ चंद बरदाई । बत्त हाहुलि हम्मरींह ॥
स्वामि ध्रम्म चिंतियै । दोस टारियै सरीरह ॥
बहुआना दौ राज । धान जंबू ग्रह लग्गौ ॥
बोल वंक तजि कंक । साम ध्रम्मह पथ जग्गौ
जंमन मरंन भंजन भिरन । जंत रीति सह जानियौ॥
कंगुरह राइ बत्तें अचल । भई बचन परमानियौ ॥
॥ छं० ॥ ६७२ ॥

चलत मग्ग इह मंगि । राजा तव लगि इहि धीरह ॥
लै आउं जालंध । राइ हाहुलि हंमीरह ॥
नदि विषाह उत्तरिग । जाय कंगुर सपन्नौ ॥
पंच सत्त पंच पेडि । आय अग्गौ होइ लिन्नौं ॥
भोजन भगति बहु भांति किय । सव पुच्छिय राजन बिगति ॥
जालंध राइ जंबू धनि । सुनि हमीर चंदह सुमति ॥
छं० ॥ ६७३ ॥

प्रथम वाह असनान । अष्ट भुज देवि परसनसौं ॥
तहं सुदेह रा ग्राम । वान गंगा अव दरसौ ॥

नर पाप चलसंत। भेट दंगुर गढ़ शानी ॥
छोर सिलै हम्मीर। लालि अल्लफ लदि नानौं ॥
तुम कढि जुहार सासंत सव। अरु राजन वहु हंत धरि ॥
इन वार तुम्म हम्मीर नृप। सजौ सेन सुरतान परि ॥
छं० ॥ ६७४ ॥

दूहा ॥ सुप मिट्टी रुट्ठौ सुनी। चाहुलि राव नरिंद ॥
साल वंक सो कंवा भरि। जंपि सु सुप जै चंद ॥
छं० ॥ ६७५ ॥

कवि चन्द का हम्मीर से सब हाल सुनकर कहना कि इस समय पृथ्वीराज का साथ दो।

कुंडलिया ॥ ढिल्ली दै है गै दिसा। ता राजन लगि भीर ॥
तो तोतें रन आतुरह। चढ़ि हैवर हम्मीर ॥
चढ़ि हैवर हम्मीर। लाग्गि नदि सिंधु समुक्की ॥
साह सेन गोरी नरिंद। चहुआन सरुक्की[1] ॥
पग्ग मग्ग अकलंक। कित्ति वोहिय चलाई ॥
तौ लागो संग्रास। भार अप्पौ ढिल्लाई ॥
छं० ॥ ६७६ ॥

दूहा ॥ कै कारन भौ वै दिसा। चढि ढिल्ली वैं भट्ट ॥
वंक विसाहन भरह घौ। लै लाहौरी हट्ट ॥
छं० ॥ ६७७ ॥

कवित्त ॥ इन लाहौरी हट्ट। कंक करि बैर विसाही ॥
इन लाहौरी हट्ट। वीर व्यापार वसाही ॥
इन लाहौरी हट्ट। मूल विन व्याज साहि लिय ॥
इन लाहौरी हट्ट। बाल चहुआन सत्य किय ॥
लाहौर हट्ट अजहू सकल। करहि जग्य व्योपार वर ॥
चाहुलि हमीर दो पन्न बचि। करौं धरहर साहि वर ॥
छं० ॥ ६७८ ॥

(१) मो०—भान चहुआवनह रुक्की।

बोलां बंकस कंक। केलि संभलि रा गोरी॥
वे उन्हां उन्हां कहै। पंचो नद मेरी॥
जुह्वानी बज्रागि। जागि बीरां उन्हाई॥
हो हम्मीर नरिंद। चंद जायो न बुझाई॥
षगधार भ्रम्म षत्री तनौ। चूकै न्रक निवासियै॥
जै काम स्रूर साधन चलै। धूधू मंडल वासियै॥

छं० ॥ ६७९ ॥

हम्मीर बचन।

के हीहां[1] लगि केलि। करौ काहे लगि झुझझौ॥
हट गल्हां सों लागि। जाइ कौरव[2] कुल बुझझौ॥
हो हमीर हम्मीर। चंद बत्तां करि दिष्षौ॥
जो पंचानदि पंच देस। अड्डा अध नष्षौ॥
कहियै न सुष्ष नर लोक को। किंसुर लोक सुहाइयां॥
सिष्टान पान भामिनि भवन। पुच्छो तोहि कहाइयां॥

छं० ॥ ६८० ॥

कविचन्द वचन।

ध्रिग्ग सुष्ष संसार। ध्रिग्ग सिष्ठान पान बर॥
सुपन सें ईषइ पत्त। मिष्ट लग्गै हाहुलि पर॥
न्रक्क संधि में परै। क्रम्म घर बंध भार गिर॥
कातर मन छंडियै। जीह सल बंधै दुब्बर॥
सुर लोकहु नर न्रक्कपन। जस अपजस बंधी रवन॥
मो बुझि झुझि्झ पच्छै मरौ। जानि वक्र ग्रह सुगति पनु॥

छं० ॥ ६८१ ॥

हम्मीर वचन।

कहि हमीर सुनि चंद। नाम तुम चंद न्याय धरि॥
कह्यौ मंच कुल वद्द। कबहु उतरै न संभरि॥
राज नीति जानहु न। साहि दिष्यौ दल अप्पन॥
गल्हां कवि मरिहौ जु। विरद लभ्भौ उर कंपन॥

(१) ए०कृ०को०—हीहां। (२) ए०कृ०को०—कोरों।

जद्यपि सुभोन उत्तर तपै। जदपि संभ्क चंपिह गहन॥
चहुआन अंग ते दिन नही। गहन राज ते रिपु रहन॥

छं० ॥ ६८२ ॥

कविचन्द वचन।

सुनि हम्मीर नरिंद। बिधिनि बंधे बंधन वर॥
डोरी घन न्निम्मान। काल षंचौ निकह कर॥
पय लग्गोनिय मींच। मंत कौ करै जियन कौ॥
विधि विधान न्निम्मान। झूठ उच्चार कियन कौ॥
गलहां न संच संचै ननह। सो न[1] रहै गलहां रहै॥
उच्चरै चंद जंबू धनी। साच एक जुग जुग चहै[2]॥

छं० ॥ ६८३ ॥

हम्मीर वचन।

कहि हमीर सुनि चंद। हुस्रे दिन अदिन विचारौ॥
जब रावण हरि सीत। कियौ गढ लंक संघारौ॥
अदिन काज पंडवनि। जूत्र सों हेत विचारौ॥
अदिन काज परिछत्त। रिष्य गल अप्प हकारौ॥
इह अदिन बुद्धि सामंत सब। कलह केलि अति बल सरिय॥
हरि हरा देख इंद्रादि सुर। वरजि गये अति गति बुरिय॥

छं० ॥ ६८४ ॥

मिटै न बर संबंध। इतौ अनयो क्यों सहिय॥
चंद विंब चहुआन। भूमि भारह न्निब्बहियै॥
जैत सुभर बलिभद्र। बौर बंधन सुविहानं॥
बड़ गुज्जर रा रोम। झूठ बंधै बर बानं॥
बीरंम भग्ग मन जिहि बरनि। नर बरनि तिहि सोइ नर॥
जानियै न मनः छिज सबर सुगति[3]। यो धर बंध पूरंन कर॥

छं० ॥ ६८५ ॥

कविचन्द वचन।

चंद कहै हम्मीर। अनष पचौ क्यों आवै॥

(१) ए० कृ० को०—मोन। (२) मो० रहै। (३) ए० कृ० को०—सुगाते।

जबहि समर संभजै। तबहि अंबर सिर लावै।
जहां हथ्यों तहां मरै। घाट अवघट न विचारै।
जस लज्जा गल बंधि। स्वामि भ्रम्मह उत्तारै॥
संसार अथिर सामंत मत। सक सहाव बंधन भिरिन॥
जानहि पराक्रम पुच्छ तम। इन भग्गें को वर कारन॥
छं० ॥ ६८६ ॥

हम्मीर बचन।

काली काल विष धरै। डंक बीछी उच्छारै॥
नीलकंठ सिव वरै। मोर महोरंग निहारै॥
काल अंब हरि जाहि। जीह पप्पीह पुकारै॥
धर्ष्पे वहै गयंद। चढै शिकार सिआरै॥
सुरतान काम सह्ने सलष। जैत राइ विरदां वहै॥
हाहुलि राइ भट्टै कहै। को अनंष इत्तै सहै॥ छं०॥ ६८७॥
हावानल पांवार। अनल चहुआन सहाई॥
घटजनमा रिषिराज। समद सोषै धरताई॥
जैत राव कंठीर। हथ्थ सामंत राज सिर।
पहु पहार पांवार। घडै भंजै गोरी धर॥
अम्बुआ राव अग्गै पहर। विल न जोर जंबू रहै॥
चुंगलिय बाज जोगिनि पुरिय। जं जं भावै तं कहै॥
छं० ॥ ६८८ ॥

कविचन्द बचन।

सुन हम्मीर नरिंद। सरन आवै अभाग मति॥
अंत काल बिक्कम नरिंद। भष्षि वायस अविद्धि गति॥
सरन वार वर भोज। धूम्म मुक्क मलेच्छ भौ॥
सरन काल पंडवन। ग्यान छुट्टौ ओहि सम्भौ॥
जित्तौ न चिंत चिंतह नहौ। नरक निवासी होंहि नर॥
धिग धिग सुबीर बसुधा करै। तो न छुट्टै नर काल भर॥
छं० ॥ ६८९ ॥

हम्मीर वचन ।

सुनौ भट्ट कविचंद । रहसि बुल्लौ जंबू पति ॥
सो जिय इय चंदेस । मंत पुच्छौं जालंध गति ॥
उभै लिषे कागद प्रमान । राज राजन सुलितानं ॥
बीय अग्गै मुक्कियै । सोइ अप्पै फुरमानं ॥
बत्तौ विवेक दुग्गा सुपत । इय समप्पि हम्मीर कर ॥
आरंभ होइ दुह बत्त गति । सुबर बीर जंपौ सुबर ॥

छं० ॥ ६९० ॥

कविचन्द वचन ।

असत राज जब ग्रहै । नीति ध्रम दूरि बिडारै ॥
सती असत जब ग्रहै । पैसि भांडै भंडारै ॥
जती असत जब ग्रहै । कनक कामिनि मन मंडै ॥
सूर असत जब ग्रहै । मरन माया तन मंडै ॥
सो अबुधि न करि जंबू धनी । इह सुबुद्धि कौ पुच्छियै ॥
जालंध देवि गम अगम बुधि । सो बुधि पुच्छन इच्छियै ॥

छं० ॥ ६९१ ॥

हम्मीर वचन ।

कुंडलिया ॥ मगि वायस जग्गिय अलुक । षपि परवार कपोत ॥
भीम नदी बंधाइ बंध । धरक न मानै जोत ॥
धरक न मानै जोति । धरक मुक्कै न धरद्धर ॥
धर मुक्कै मुक्कहि न मान । सिंघ सा पुरिस बाज बर ॥
देव दिसिह चढ़ि चरौं[1] । चंद जन मांतहि षग्ग ॥
कौ अनंघ इह सद्दै । कहै सामंत सुर मग्गं ॥

छं० ॥ ६९२ ॥

कविचन्द बचन ।

कवित्त ॥ सोइ ज सूर सा ध्रम्म । जुग्ग सा ध्रम्म न पुज्जै ॥
दया दान दम तित्थ । सबै सो ध्रम मनि दुज्झै ॥

---

(१) ए० कृ० को०—चलै ।

साँमि भ्रम्म वर सुगति । नरक वर तिथ्य निवासौ ॥
सुनि हमीर सा भ्रम्म । करै सुरपुर नर वासौ ॥
सा भ्रम्म सुकति बंधै रवन । सांमि भ्रम्म जस मुगति वर ॥
अब किति किति करतार कर । नरक चूक झुझ्झौति नर ॥
छं० ॥ ६९३ ॥

हम्मीर वचन ।

अब्बूरा पांवार । जैत हाहुलि कहि वुल्लै ॥
सुनि कन्नां चहुआन । ताहि प्रथिराज न पल्लै ॥
पृछानी चामंड । डंड संगै लाहौरी ॥
जिम खाना गंधान । कोल लद्दौं कारोरी[1] ॥
उच्चार भार बोलै हरै । राज उलग्यौ साहनी ॥
उपरैं जांम जद्दौं लगर[2] । सुभर उभारै षाहनी ॥
छं० ॥ ६९४ ॥

कविचन्द वचन ।

इन वेरां हम्मीर । नही औगुन बंचीजै ॥
इन वेरां हम्मीर । रुचि भ्रम्मह संची जै ॥
इन वेरां कै सिंघ । वर विषर जेम उंभारै ॥
इहि वेरां हम्मीर । स्वर क्यों स्यार सँभारै ॥
वेरां हमीर पौरुष पकरि । इह सु बात रंडां ररी ॥
सामंत राज काजह समथ । न करि ढील निंदा करी ॥
छं० ॥ ६९५ ॥

हम्मीर वचन ।

की खोहानै जंग । साम लग्गा अजमेरी ॥
कैमासैं उच्छेरि । तुरी तूंवर विच्छेरीं ॥
जेती तारुझ्झांमि । ढाम ढंढा ढुंढारा ॥
कूरंमा पज्जून । काम किन्नो कुट्ठारा ॥

(१) ए० कृ० को०—कालोरी । (२) ए० कृ० को०—गरल।

तांबडै भुम्भ्स्स उल्भिख्खगा । लोहानै लग्गी वही ॥
छछंगा वंधन लेवरा । तें भट्टां द्रुव्या लही ॥

छं० ॥ ६९६ ॥

कविचन्द वचन ।

लखष अलष करि जुद्ध । साहि गज्जन वैसाह्यौ ॥
कैमासें वर वंधि । भीम भोरा घर गाह्यौ ॥
तूंवर वर उच्छारि । अप्प वाचा कहि फेरी ॥
कलधज धरधक धोरि । धरनि जित्ती अजमेरी ॥
वों भट्ट चट्ट जस अजस पढि । भरों साषि सूरह समर ॥
हम्मीर मंत चुक्कत सभर । हसहि देव दानव अमर ॥

छं० ॥ ६९७ ॥

हम्मीर वचन ।

भोरै रा भारथ्थ । कथ्थ जाने तूं भाई ॥
पासारां पज्जून । लिये पट्टन वै साई ॥
से कह्यो कैमास । हथ्थ भीमा वट्टानी ॥
तूं जानै चहुआन । वार वर तूं इच्छानी ॥
सलषां सलभ्भ ग्रब्बां हुआं । अब लग्गाई वत्तरी ॥
सुरतान काल्हि आनों धरा । आज तुम्हारी रत्तरी ॥

छं० ॥ ६९८ ॥

मुह कट्टानी वत्त । चंद जानी पहिलाही ॥
ते सौई रै काज । भरकि उट्टे अच्छांही ॥
तूं आरज आजान । वार ढिल्ली घर[1] अड्डा[2] ॥
तूं रष्षन हिंदवान । पान राजन तो चड्डा ॥
आगर बुलाह गो बंभनां । गर बड्डा पड्डा मुहा[3] ॥
जालपा जागि पुच्छाइयां । जो राषै अम्मा दुहा ॥

छं० ॥ ६९९ ॥

---

[१] ए० कृ० को०—नर । [२) मो० चढ़ा ।
(३] ए०कृ०—गर वढा पडा सुहा ।

चहुआना रै रजधान । सोमंत लड़ाई ॥
ते बोलो बर लागि । जाइ कनवज्ज झझाई ॥
ए गोरी साहाब । दीन जानै पहिलोना ॥
हसम हय गय रैस । देह दप्पौ दह गोना ॥
कै काम कलह कंदल चढौ । कै कल्लां मत्तां गढौ ॥
बे काम भट्ट गल्हां पढै । जिन भंजी दिल्ली सढौ ॥

छं० ॥ ७०० ॥

कविचन्द बचन ।

गल्हां काज हमीर । देव देवी सिर दिन्ना ॥
गल्हां काज हमीर । अग्ग सध्यौ जुजजिन्ना ॥
गल्हां काज हमीर । राज मुक्यौ रघुराई ॥
गल्हां काज हमीर । मंस[१] कप्यौ सिव सांई ॥
हम गल्हवांन गल्हा करैं । तुम गल्हां लग्गै बुरी ॥
म्रत लोक जीव जम पंजरै । तुम जानौ छुट्टै दुरी ॥

छं० ॥ ७०१ ॥

हम्मीर बचन ।

अरे चंद तुम गल्ह । इहां नाही अधिकारिय ॥
ए घर जानी षेल । लही डिभह षिल्लारिय ॥
इहै अग्गि नहि दीप । अहै आगैं होइ दिष्षैं ॥
जब फुट्टै आकास । कौंन थिगरी हरष्षै ॥
हम दुरें नही जीवन मरन । नह लागै गल्हां बुरी ॥
मो मत्ति इहै अप उब्बरौ । करौ मंति गो ब्रह्म छुरी ॥

छं० ॥ ७०२ ॥

कविचन्द बचन (आख्यान कथाओं का प्रमाण दे कर हम्मीर को समझाना)

सुन हमीर इक अलुक । गरुर गाढी मिचाई ॥
तब्ब उलूकह देषि । गरुर जीरा मुसकाई ॥

[१] ए० कृ० को०—संग ।

तब अलूक भय भयौ । गरुर अग्गैं करजोरै ॥
मोहि तहां लै जाहु । जहां कोई जीव न तोरै ॥
धरि पंष ढंकि साइर गुहा । तहं बिलाव भष्यह भरन ॥
सनमंध देह जष्यह शरन । मिटै न सो राजन मरन ॥

छं० ॥ ७०३ ॥

दूहा । पारधि बागुरि सिंघ कौ । दावानल भय मानि ॥
ससि मंडल में म्रग बसत । ग्रहन राह सोइ आनि ॥

छं० ॥ ७०४ ॥

गाथा ॥ ईसं सीस मयंकं । सरन रष्यिय जा भय मंने ॥
रुंड माल छल राई । अनचिंतियं आय घेरिय तथ्थं ॥

छं० ॥ ७०५ ॥

हम्मीर बचन ।

कवित्त । केहरि कंदर द्वार । भिल्ल मुगता फल पायौ ॥
फिटक जानि पाषान । मूढ अज गल बंधायौ ॥
कोइक समै पारषी । मिल्यौ जवहरी विचष्यन ॥
मुह मंग्यौं दै मोल । तोल करि आनि ततष्यन ॥
अवलोकि तेज पानी सरस । महिपति जरिय किरीट महि ॥
इहि रीति चिंति कविचंद कहि । हाहुलि राव हमीर कहि ॥

छं० ॥ ७०६ ॥

पुनि अष्षिय हम्मीर । सुनहु देविय वर दाइय ॥
मार पिट्ठ मोरिंग । अंग सोभा दरसाइय ॥
तिन को लै मंदमति । चोटि नंषत करि लघुता ॥
मंडल ग्रसी रमंत । बडिय सो पावत प्रभुता ॥
ब्रजनाथ हाथ गहि माथ धरि । मुरली मुख बज्जावही ॥
मिलि सकल गोप गोपंगना । मुकता फल सुबधावही ॥

छं० ॥ ७०७ ॥

कविचन्द बचन ।

षरचि तेल सिंदूर । बहुरि बंधे सिर चंमर ॥
आभषन पहिराइ । ढंकि ऊपर पाटंबर ॥

चलावंत सुष चग्ग। दुरद नरपति कैं दिट्ठ ॥
भगरि भुंड में घात। घाय बल संभ अपुट्टे ॥
पष पग्ग उतन लग्गत सदा। मिट्टौ छाडंखि राव धन ॥
कविचंद कहत पिल्लताइगौ। मत्ति करै दिसि जवन मन ॥

छं० ॥ ७०८ ॥

हम्मीर वचन।

दूहा ॥ यहुत कहत हम्मीर सुनि। अय कछु रहत रसन्न ॥
यान भिष्ट सोभत नहीं। नर नष केस दसन्न ॥

छं० ॥ ७०९ ॥

कवित्त ॥ दसन दुरद सौं भइय। पहिर बनिता कर चूरिय ॥
सयहि केस सोभइय। राज सिर सभा संपूरिय ॥
केहरि नष सोभइय। कनक मढि कुंअर घलत गर ॥
सूर बीर सोभइय। सिघ सा पुरस परद्दर ॥
एहि कहंत कविचंद सुनि। अन्न जुगति बन बहि घनिय ॥
पहिले न करिय आदर भरनि। मन विचारि संभरि धनिय ॥

छं० ॥ ७१० ॥

कविचन्द वचन।

अरनि मद्धि धसि कूप। परत नर पथिक अड्ड फर ॥
पट बद्धौ अवलंबि। नाग अवलोकि चरन तर।
सिर पर सिंधुर आय। सुंड गहि साष हलावत ॥
लुह छत्ता मुह आलि। उडि तिहि तन पलटावत ॥
मधु बुंद परत चट्टत अधर। सकल दुष्ष जिय भुल्लइय।
इम विषय सुष्ष कविचंद कहि। किम हमीर मन डुल्लइय ॥

छं० ॥ ७११ ॥

कविचंद और हम्मीर का जालंधरी देवी के स्थान पर जाना।

दूहा ॥ तब बक जानौ सबै। इम माया इछांमि ॥

चलि जालंधर देहरै। मिलि जालय पुच्छांमि ॥

छं० ॥ ७१२ ॥

नालिकेर फलदल सुफल। कर कपूर तंमोर ॥
उभै सुनर पूजन चलै। दै सब सथ्थ बहोरि ॥

छं० ॥ ७१३ ॥

जालपा के स्थान का वर्णन।

कवित्त ॥ देषि थान जालंध। पच षोडस बारस गुर ॥
करित कोट अछिरन। पंति पंतिनि दिष्षत बर ॥
मनि न्रिप उत जंबू नरिंद। चंद बंदी बंदत उर ॥
मनो बड़वा नल लपट। कोटि फुट्टी जालंधर ॥
मनो मोहनी रूप ह्वै अवतरी। कै महिल कहल भाई बंधी ॥
ससि एक कोटि घर ज्यौं जुवह। सो कविराज ओपम सधी ॥

छं० ॥ ७१४ ॥

च्यारि कोट वज्जंग। मद्धि जालपा सुथानह ॥
इम छच जरि मुत्ति। मंचद्रुग्गा जंपानह ॥
करिय सनान पविच। धोइ धोवत तन मंडिय ॥
सम सुगंध पढि छंद। जाय कुसमंजलि छंडिय ॥
करि धूप दीप नैवेद मिलि। राज अंदेस संदेस कहि ॥
बोली न बयन देवि तदिन। अजुत हमीर सुबत्त लहि ॥

छं० ॥ ७१५ ॥

कविचन्द का देवी की पूजा करके स्तुति और निवेदन करना।

दूहा ॥ कुसुम मंडि मंडलि सिरह। चंदन चर्चित चंदि ॥
मुक्ति गंध दिय धूप दिव। जै जालंधर बंदि ॥

छं० ॥ ७१६ ॥

अवनी अंबी अंब सुनि। अंबी अंब सुबंभ॥
अंबनि चंद उचार किय। सुतन अनंदिय संभ[1]॥
छं० ॥ ७१७॥

देवी (जालपा) जालंधरी की स्तुति।

भुजंगी॥ द्रुग्गं हिंदु राजान बंदीन आयं। जपै जाप जालंधरं तूं सहायं॥
नमस्ते नमस्तेह जालंध रानी। सुरं आसुरं नाग पूजा प्रमानी॥
छं०॥ ७१८॥

ह्रीं कार रूपं सुआपे विराजी ह्रींकार झंकार हंकार साजी॥
जंकार रुपं ओंकार धारी[2]। प्रियं कारनं कारनं सार सारी[3]॥
छं०॥ ७१९॥

सिवं संपुटं बीज पनग्र रुपं। स्वहाकार षटकार हंकार ओपं॥
सुरं षोडसं रूप चोदस्सि मानी। चयं जीस[4] ब्रन्ने सुविन्ने प्रमानी॥
छं०॥ ७२०॥

चयं रुप ब्रह्मादि संध्या सकत्ती। चयं काल त्रैलोक चैवेद रत्ती॥
अदम्भुत रूपं सुअवै समायो। गुनातीत आतीत[5] जालंध राया॥
छं०॥ ७२१॥

जपै तोहि जापं सुधामं प्रमानी। दियौ अब सिद्धिं सुरिद्धी सुरानी॥
प्रथीराज बहुअ न दीनौ उतारं। तहां दुंद भामी करै अब्बसारं॥
छं०॥ ७२२॥

कह्यौ तोहि प्रन्नाम[6] मो सिद्धी देवी। प्रकारं सुधारं विवद्धी सुसेवी॥
अहं माकरयौ हाहुली पास काजं। तिनं पुच्छमं माव साक्रित राजं॥
छं०॥ ७२३॥

कह्यौ कारनं अब साराज अंबी। पुहं पंजली छंडि सीसं सुलंबी॥
रह्यौ आप थहो दुअं पानि मंडी। अगं कारनं जानि बोली न चंडी॥
छं०॥ ७२४॥

---

(१) ए० कृ० को०—सिंभ। (२) ए० कृ० को० साजी।
(३) ए. कृ. को.—राजी। (४) ए.—त्रयं जीम।
(५) मो.—आनीत। (६) ए. कृ. को.—प्रमान।

हम्मीर का देवी से निवेदन करना ।

कवित्त ॥ कहि हमीर सुनि देवि । तम वादी कवि आया ॥
की को हिंदू को तुरक । कौंन रंक सु को राया ॥
का नरिंद को हिंद । कौन तापस को छाया ॥
का साहब को राज । कवन सुकवि कह गाया ॥
इह परस हंस संसार हित । तूं माया तूं मोह मत ॥
जानौं न नाम दच्छिन कारन । हौं सांई संसार रत ॥

छं० ॥ ७२५ ॥

कविचन्द का देवी के मंदिर में बन्द हो जाना और हम्मीर का शाह की सहायता के लिये जाना ।

इह परत्तर दीह । चंद जान्यौ चहुआनं ॥
जिन भुजानि धर भार । भोमतीय अधरं भानं[1] ॥
छनन हय गय देस । दीह घट्टै बल घट्टै ॥
धन्न हरन तिन जानि । महल सिर सारे पट्टै ॥
आवृत्त बात जोगिनि पुरह । सब भवस्य इह विसयौ ॥
कविचंद रक्कि भंच्यौ जियन । ग्रिह गोरी हाहुलि गयौ ॥

छं० ॥ ७२६ ॥

उक्त समाचार पाकर पृथ्वीराज का क्रोधित होना ।

दूहा ॥ सुनिय वत्त चहुआंन न्रिप । धरिय धीर मन पान ॥
हौं अभंग अनभंग बर । हौं भंजन सुलतान ॥

छं० ॥ ७२७ ॥

कुंडलिया ॥ रोकि कविंदहि अप्प मिलि । सो सुरतान अबुझ्झ ॥
सुनत राज प्रथिराज कै । हवि लागी उर मझ्झ ॥
हवि लागी उर मझ्झ । संझ आई गुर गल्हां ॥
भट्ट बसीठह रोकि । अप्प है वै दिसि हल्लां ॥
दस हजार हैवरनि । लष्ष पयदल अम वृंदा ॥

(१) ए० कृ० को—भोमति अंभर भानं ।

मिल्यौ जाइ सुलितान। रोकि देवलो कविंदा ॥
छं० ॥ ७२८ ॥

चामंडराय का कहना कि सब लोग चार चार तलवारें बाँधें, जो जिसमें जा मिला सो जानदो।

दूहा ॥ चवै राइ चामंड इम। कहो राज प्रथिराज ॥
च्यारि च्यारि तरवारि करि। भर बंधै सब आज ॥
छं० ॥ ७२९ ॥

मरन तुच्छ मारन बहुल। हम उन अंतर एह।
एक सु पक्षी निजर की। अरि कर काची देह ॥
छं० ॥ ७३० ॥

कवित्त। सुनिय राज इह रीति। बीर संसार सपन्नौ ॥
अवर रत्त संकुचित। गुनज मुक्कित अपन्नौ[1] ॥
सहन अगर[2] तन संग[3]। मनह छत्रिय छल लग्गा ॥
क्रोधतअम्म मथिबचन। लोभ लग्गा सह अग्गा ॥
लज्जिता सुनीर वित्त सरद। अनब सुष दंपति भिली ॥
आसोज बीज संसार कर। रंज रंजि राजन मिली ॥
छं० ॥ ७३१ ॥

पृथ्वीराज का धीर के पुत्र पावस पुंडीर को हम्मीर को रोकने के लिये बीड़ा देना।

बोलि राज प्रथिराज। पान अप्पै से पानं ॥
तूं धीरं जा धीर। भीर भंजन सुरतानं ॥
है हमीर आधीर। सांइ द्रोही सिर बंधी ॥
लाज बडप्पन षाइ। सिंधु हम्मीर जु संधी ॥
सामंत सूर सगपन सरै। सुतेग वेग बंधै न कोइ ॥
पुंडीर राइ पावस्स सुनि। बंधि तेग रावत्त सोइ ॥
छं० ॥ ७३२ ॥

(१) ए० कृ० को०—अवसर जहां सकुचि गुन जनुकंत अपन्नौ।
(२) ए० कृ० को०-अंगार। (३) मो०—अंग।

पावसपुंडीर का बीड़ा लेकर तैयार होना।

पानि तामिलिय हथ्थ । वंदि सुरसदि पढि आद्य ॥
वीर दर्शनि अवलकंत । गाच पारवत जसझाइय ॥
सुघर राज प्रथिराज । सजिय बर अप्प तुरंगम ॥
नृप सनाह पावस नरिंद । हरचंद अभंगम ॥
हय मग्गन अरि आवृत्त बर । बंधन छाहुलि राव भर ॥
रनधीर धीर तन तन दलन । पुहप भ्रमभा पावस सहर ॥
छं० ॥ ७३३ ॥

चौपाई ॥ मनो नागपति कन्ह जगायौ । कै प्रले काल चैनेच लगायौ ॥
कै हर हरन त्रिपुर सुरधायौ[1] । कै छिति हरन हरनाकुंस सायौ ॥
छं० ॥ ७३४ ॥

जामराय यादव का मुसलमानी सेना के निकास का रास्ता बांधना और पावस का सीधी पसर करना।

कवित्त ॥ तब पावस पुंडीर । बोल्लि राजन जमजद्दौं ॥
दै कोसन सुलतान । कोस कै प्रथ्थत बंदौं ॥
बोल्लि राव रंघरौ । निरत कीनी कोहानी ॥
पंच पान परवत्त । सत्तपानं सुलितानी ॥
जंगली ग्राम सामंत सह । सेन वढी बाढी बलह ॥
हम रुप्प जाहि मीरां दिसी । चढि पावस पावस कलह ॥
छं० ॥ ७३५ ॥

तब पावस रा पुंडीर । सज्जि सन्नाह सँपन्नौ ॥
तीन सहस पुंडीर । बंध अग्गै रस भिन्नौ ॥
अप्प अप्प चिंतयौ । होय अग्गी जन मानं ।
लच्छि सु लूटन काज । रंक धावै धन धानं ॥
लियै रावत्त कित्तिय कला । है गहि मोह माया तजे ॥
दुति भम्म भम्म सोमंत दुति । धीर धवल कंधह सजे ॥
छं० ॥ ७३६ ॥

---

(१) मो०—कै हरन्न हर त्रिपुरार सुधायो।

पावस पुंडीर की पसर का रोस और कांगुरे को तिरछा देकर सीधी राह जाना।

दूहा ॥ पावस चढि पावस अगमि। घन छवी छिति रूप ॥
गावहि नीर हमीर घर। सुकि जवास उर भूप ॥
छं० ॥ ७३७ ॥

चढि पावस पावस रवनि। गजि दल बद्दल निसान ॥
धनि षग पंति[1] सनाह तुअ। मनु बद्दल विज्जुल भान ॥
छं० ॥ ७३८ ॥

पावस पावस मेघ सम। कै सम सुरति[2] प्रमान ॥
चित्त सुमन पुंडीर धरि। बाजि गुड्डिग्ग निसान ॥
छं० ॥ ७३९ ॥

कवित्त ॥ सह सेना चालीस। मधय सत पंच तुरंगम ॥
टारि सूर सामंत। बज्र करिवार बज्र सम ॥
सस्च तेज जम जुत्त। जुद्ध आकूत अभंगम ॥
पुच्छि भ्रम्म सा ध्रम्म। क्रम्म बंधीन बंध भ्रम ॥
कंगुरौ तिरच्छौ मुक्कि कै। बर अग्गें को धाइया ॥
तिन ठाम चूक चिंत्यौ हतौ। मिलन सरोसन पाइया ॥
छं० ॥ ७४० ॥

हम्मीर की और पावस पुंडीर की आगे पीछे छुआ छाई होते जाना।

यौं छेटी भंजीय। सुद्ध भंजै नर धायौ ॥
चच्छया अवा भज्जंत। गरुर आगें नन जायौ ॥
ज्यौं अरथ न छिपै कविंद्र। मोह नन जाय ग्यान अग ॥
सुनि न जाय गम भावि। रुप नन जाइ दिष्ट अग ॥

(१) ए० कृ० को०–षंति।

(२) मो०–गुरति।

बन जाइ किरन खगपति दुत्तन । पाप जाइ नल गुरब अगि ॥
नन सकै जाय हम्मीर निल । इल हर्कौ पावस सुलगि ॥

छं० ॥ ७४१ ॥

पावस पुंडीर का नदी का घाट जा बांधना ।

प्रात गयौ हम्मीर । सांझ पुंडीर सपत्तौ ॥
रंच नाव थकि गयौ । अजहु पत्तयो जिवन्नो ॥
पंथ बान पुच्छयौ । बली पावस धर जित्तौ ॥
रा हमीर उत्तरयौ । राव बीरत्त बिरत्तौ ॥
घाडौ उलगि पारेव बजि । धार धार सौं उत्तरी ॥
सोहां सुलहरि तप छंडि वपु । दिसि कंगुर संमुह भिरी ॥

छं० ॥ ७४२ ॥

तेही बार सज्जित्त । नीर लग्गौ दो कंठ छलि ॥
ज्यौं बछैल तिय मिलत । पाप छन्नै सुभ्रस्स कलि ॥
ज्यों समंद सित पष प्रमान । कित्ति फल करै सलिता ॥
लिह कष्ष क छिप ईस । फूल चल्लै सुप हलता ॥
यों परस जीव दायह सुहत । वज्र कोट तारन सगुर ॥
दुहु सेन संभि सलिता परिय । सो ओपम जंपी सुवर ॥

छं० ॥ ७४३ ॥

वज्र काय दिष्यियै । सूर दिष्यियै नीर लुर ॥
ज्यो मृनाल दिष्यियै । कमल दिष्यियै उपर धर ॥
प्रबल बाल सैसव समूह । मस्किक्ष जोवन चिन्ह न लषि ॥
अरुन उदै ज्यौं भान । किरन रत्तो सुमंत पिषि[१] ॥
द्रिग लषै क्रोध हिय मक्ष्झतें । अंजुलि में जल दिष्यियै ॥
सुर सहस मक्ष्झ बह्तेि घट । सत वज्र बढ़ाई अष्यियै ॥

छं० ॥ ७४४ ॥

हम्मीर की सेना के नदी पार करते समय पुंडीर सेना का हमला करना । दोनों की लड़ाई ।

तजिय राव हम्मीर । बीर उत्तरति विषम घट ॥

(१) ए० कृ० को०—पपि, पष ।

लुह जोजन संभवति। रोकि पुंडीर सते[1] थट॥
कलपंतर फिरि रोकि। बार उतरि हथि पारं॥
मार मार उच्चार। दीह घट्टति पछिवारं॥
पुंडीर धीर नंदन नवल। दिसि हमीर असिवर कढ्ढिग॥
उच्चरिय वेन पछिवान हरि। बीर वलिय संमुह चढ़िग॥
छं० ॥ ७४५॥

रा पावस पुंडीर। बोलि षंगा[2] रस पुंछी॥
वे बरह लिषि धीर। बीर बीरा रस कंछी॥
कंक वंक रस पंक। बीर षुत्ते रस जुट्टी॥
दोउ' बल धुनि प्रान। कंक क्रित क्रम अवट्टी॥
बिब्भाय भाय षंजर कढ्ढिग। बढ्ढिग बीर बल्ली सुभर॥
सद मोष जानि छुट्टे जुरन[3]। बज्जिग लोह सह सूर धर॥
छं० ॥ ७४६॥

छं धीरं जा धीर। सस्च लुट्टे पुंडीरं॥
पावस पावस राव। धार उज्जल झरि बीरं॥
षग्गानी झिल्लोर। सार बुट्टे तिन गानी॥
मनो बीजली बाल[4]। सध्य उब्भासैं पानी॥
घरी एक जुद्ध आवृत्त करि। जुद्धानी गंजागि लगि॥
हम्मीर राव पावस पुरिस[5]। बरिषा विय आवृत्त जगि॥
छं० ॥ ७४७॥

दूहा। अंबू छांछुलि राव सों। जज्जर बज्जि सनाह॥
भिरि संमुह पुंडीर बजि। बन जज्जर अगि दाह॥
छं० ॥ ७४८॥

---

(१) ए. क्र. को.—सर्वे।
(२) ए कृ. को.—षंधार।
(३) ए० कृ० को०—लरन
(४) ए०—बाज
(५) ए० कृ० को०—सरिस।

इस लड़ाई में पांच पुंडीर योद्धा और हम्मीर के दो भाइयों का मारा जाना। हम्मीर का भाग जाना।

कवित्त ॥ निकरि बीर जल छंडि । रुद्धि जंबू पति अग्गा ॥
भग्गा बर हम्मीर । पुच चिय फेरि विमग्गा ॥
पंच सहस पुंडीर । जुद्ध कीनौ अधिकारी ॥
द्वो हम्मीर नरिंद । षेत बोल्यौ हक्कारी ॥
पुंडीर राव पावस पहर । झर उझार लग्गौ गयन ॥
कट्टैति लोह परियार तें । सुनहु सूर सूरन बुनम ॥
छं० ॥ ७४९ ॥

बीर रूप उन्नयन । सरुच बिज्जल कड्डी बर ॥
भय पावस पावस प्रस्थान । गज्जि घन बात रस्सगिर ॥
क्रोध पवन तट ईंट । टाढ़ कंपे कर करिवर ॥
सागर सलित सुसस्च । रुधिर जल बहै सारझर ॥
सुष हुए सूर संजोगिनौ । बीर वियोग कारंन कथ ॥
बैठेति चिंत पावस रिषह । संजोगिनि नरपत्ति हथ ॥
छं० ॥ ७५० ॥

दूहा ॥ उभै पूत रन परिग वर । बर बंधे गिरि पुत्त ॥
रोस चढ्ढि फिरि बज्जि बर । उतरि सलित्त सुरत्ति ॥
छं० ॥ ७५१ ॥

पुंडीरा भग्गां भिरै । गहन हरं जुध भीर ॥
विषम तज आवृत्त नर । धनि धीरंजा धीर ॥
छं० ॥ ७५२ ॥

कवित्त ॥ सो पुँडीर वर जुद्ध । भिरे बुड्ढे सा रानीं ।
तीर छुटे जह नीर । तहां हम्मीर जुठानी ॥
बरवि मिले सो बीर । तूटि मंडे बर नीरं ॥
मनु वृछय भार सो भज्जि । रुरै तुटि अंतर झीरं ॥
उरझे सरीर तुट्टे षगां । तार जेम वज्जे सुभिर ॥
निवरत्त सिद्ध मिटि कंक रव । पन हमीर मुक्कि षेत तर ॥
छं० ॥ ७५३ ॥

उभै बंध हम्मीर। षेत बंध रघुनंसी ॥
पंच बीर पुंडीर। सुगति लद्धी रन गंसी ॥
ज्यौं बारुनि मुक्कि धाइ। लग्गी पानी बर अग्गा ॥
गहवि बाग पुंडीर। नीठ फेरे बर अग्गा ॥
यौं लहरि लोह बाजी विषम। रा पुंडीर भारथ्थ जित ॥
हम्मीर भंजि हम्मीर पें। चढि तुरंग गोरी सुगत ॥
छं० ॥ ७५४ ॥

दूहा ॥ असी सत्त ग्रह गगन बर। परे स्फुट्टि[1] पुंडीर ॥
सामि दोह नट्ठौ गयौ। मिले राज रनभीर ॥
छं० ॥ ७५५ ॥

चरन लागि सो राज कौं। जै वीरां गिर युत्त ॥
सकल सूर धनि धनि कहैं। जिति हाहुलि राधुत्त ॥
छं० ॥ ७५६ ॥

पावस पुंडीर के हम्मीर पर विजय पाने पर पृथ्वीराज का पुंडीर योद्धाओं को चौतेगी होने का हुक्म देना।

बद्धाइय बाजी घरह। ढिल्ली वै वर थान ॥
हम्मीरह भज्जे भरह। जित पुंडीर प्रमान ॥
छं० ॥ ७५७ ॥

राजन अप्पन उचित करि। दिय सिर पाव सुच्यारि।
हुकम वेग बंधन कियौ। च्यारि च्यारि तरवारि ॥
छं० ॥ ७५८ ॥

पुंडरि वंश की सजनई का ओज और शाह का समाचार पाना।

कवित्त ॥ च्यारि च्यारि तरवारि। बंधि पुंडीर सहस चिय ॥
बज्र काल बज्र बहन। बज्र झल्लै सुबरन जिय ॥

(१) ए० कृ० को०-मुंडि।

यों पन्न व यत्त हमीर । छंडि एप्पन सनाह अग ॥
वीर सूर साविह । पंच वीरह पावस सग ॥
भै द्रुग्ग वीर निधि सज्ज जग । दुसह साहि अड्डौ सुचलि ॥
लगि लग्गि धीर पंडोन ज्यों । सजत सथ्थ उत्तरह पुलि ॥
छं० । ७५९ ॥

इह सुनि वत सुलितान । चर[1] धाय साहि पें पत्त ॥
कहिय चरित पावस सरिस । साहिब धीर नमत्त[2] ॥
छं० ॥ ७६० ॥

हाहुलिराव हम्मीर का शाह के पास पहुंच कर नजर देना।

कुंडलिया ॥ चमर पसर[3] लग सद मधुर । वाजी कष्ट कँठौर ॥
मिल्यौ जाइ गोरी धरा । हाहुलि राव हमीर ॥
हाहुलि राव हमीर । हाम[4] हाही घर लग्गी ॥
सील साच[5] तप तेज । भरस धुर धारनि भग्गी ॥
नौ विग्रह पप छंडि । और प्रग्रत पति पासर ॥
मिल्यौ जाप सुरतान । मधुर सृग सद लै चामर ॥
छं० ॥ ७६१ ॥

दूहा ॥ च्यारि च्यारि तरवारि कर । भर बंधै चर धाय ॥
इह चरित्त चहुआन दल । कह्यो साहि सों जाय ॥
छं० ॥ ७६२ ॥

शाह का कहना कि पक्की पकड़ी हुई एक तलवार चार को मात करेगी।

तबै हाय वज्जी सुवर । धुनि पुच्छी सिसताइ[6] ॥
भुभक्क परट्टयौ हिंदुदल । रहैं निदान कि जाइ ॥
छं० ॥ ७६३ ॥

---

(१) मो०—वर ।
(२) मो०—साहि वंध रन मत्त ।
(३) ए०. कृ० को०—परम ।
(४) ए० कृ० को—साव ।
(५) ए० कृ० को०—सांइ ।
(६) ए०कृ० को—साव ।

बाल वृद्ध जुव्वन कहिय । वे मत्ते मत्ताय ॥
तेग एक पक्षी ग्रहैं । चौ कच्ची भग्गाय ॥
छं० ॥ ७६४ ॥

करि निवाज सुरतान कहि । किंत्तिय बुद्धि दिल्लीस ॥
गहिव साहि कंधै हनो । अब जित्तों इमि[१] रीस ॥
छं० ॥ ७६५ ॥

शाह का काजी से भविष्य पूछना।

कुंडलिया ॥ इह गंदी मट्टी मुरद । तुम मरदों मरदानि ॥
तुम अव्वी सब्बी हरन । मैं फकीर सुलतान ॥
मैं फकीर सुलतान । आप कहि पुच्छिय काजी ॥
भिस्ति भाष जौ कही । होइ हाजी कै गाजी ॥
जो उमेद जिय होइ । राज दोइ अल्लह बंदी ॥
कोइ गुमान जिन करौ । कहै काया इह गंदी ॥
छं० ॥ ७६६ ॥

पृथ्वीराज की सेना का हिसाब और उसकी अवस्था।

दूहा ॥ सज्यौ सेन सोहन समँद । जंगल वै चहुआन ॥
घर अंगन संगन सरिग । सुनत सूर अहुलान ॥
छं० ॥ ७६७ ॥

सबे सेन सत्तरि सहस । घटि वढि ऋन्नत बार ॥
जे भर भीरह सुह सधै[२] । ते बत्तीस हजार ॥
छं ॥ ७६८ ॥

सहहि भीर न्रप पीर जिम । लज्जा धर भर भार ॥
धरनि धरनि तिन वर गनत । ते मर[३] बीस हजार ॥
छं० ॥ ७६९ ॥

वीस हजारन मद्धि दस । जे अग्या बर स्याम ॥
कर वज्जह वज्जी सहैं । ते पहु पंचह ठांम ॥
छं० ॥ ७७० ॥

(१) ए० कृ० को०—इहि।
(२) ए० कृ० को०—सजै।
(३) ए०—नर।

तिन मद्धि कवि गनि पंच सें । नाम आप द्रढ़ काज ॥
देव गत्ति दैवान सों । तिन मद्धि पहु प्रथिराज ॥
छं० ॥ ७७१ ॥

पृथ्वीराज का पुंडीर पावस को शाह के पकड़ने की आज्ञा देना ।

कवित्त ॥ चढ़ी सेन न्रिप राज । वंधि पुंडीर तेग चव ।
धीर वोल वर पुच्छ । दाय चहुआनह छथ्थव ॥
सुरहर चप सुलितान । वंधि अप्पौ परिमानं ॥
दई दुवाह पावस नरिंद । गहन उचरि सुविहानं ॥
करतार हथ्थ केतिक कला । नर अवरें जंपै वयन ॥
संजूह वार भावी सगति । पग्ग काम लग्गै गयन ॥
छं० ॥ ७७२ ॥

दूहा ॥ देपि सेन चर साहि पें । लै चरित्त चहुआन ॥
च्यारि च्यारि तरवारि वर । सह वंधी सुविहान ॥
छं० ॥ ७७३ ॥

पावस आगम धर अगम । दल साजे दोउ दीन ॥
अंवर छायौ अभ्भरन । छिति छाइय छचीन ॥
छं० ॥७७४॥

उक्त समाचार पाकर शाह का सरदारों से कसमें लेना ।

कवित्त ।। सिंधु उतरि सुलतान । वत्त कहि पां षुरसानह ।।
षां ततार रुस्तमा । कुञ्जो तुम साच मुसाफह ॥
में आलम षालंम । सकल हिंदू रा उप्पर ॥
जिहि ग्रहि छंड्यौ वार । वेर सो आप अप्प कर ।
तिहि ग्रहन हेत इंछौ सुमन । साच झूठ करतार कर ॥
भग्गहु अभग्ग मत संग्रहै । धरहु लाज निज कुलन मर ॥
छं० ॥ ७७५ ॥

सरदारों के शाह प्रति बचन।

बोलि षान पुरसान। षान रुस्तम पां ताजी॥
षां ततार पीरोज। षान असमान बिराजी॥
षां नूरी हुज्जाब। षान षाना षुरसानी॥
हबस षान हबसी हुरेब। षान सुबिहान बयानी॥
सुबिहान षान षुरसान पति। बीरम सूरति रत्ति करि॥
इहि बेर मरन जीयन भिरन। गहैं साहि चहुआन लरि॥
छं०॥ ७७६॥

शाह का पुनः पक्का करना। और सरदारों का कसम खाना।

षां ततार रुस्तम। साहि अग्गें करि जोरें॥
आन साहि सुबिहान। हिंदु दरिया ढंढोरैं॥
गहि सुमाक गोरी चरन। परत भज्जन भज्जौ बर॥
हों ग्रहयौ उन बेर बेर। छुट्टे व डंड भर॥
बर बंटि फौज दिष्यौ निजरि। सिंधु उतरि सुबिहान बर॥
सत पंच सूर लोलषि घटी। बंधी बीर द्रोनति सुधर॥
छं०॥ ७७७॥

पुनि षुरसान ततार। षान रुस्तम कर जोरहि॥
आन साहि मरदान। आन चहुआन बिछोरही॥
है हमीर हिंदून। दीन रोजा रंजानहि॥
पंच निवाज बे काज। जाय गोरी गुमानहि॥
सुलतान आन चहुआन सों। जो न चाल बंधे भिरहि॥
दै मथ्थ हथ्थ सिर अज्ज हम। नहि दरोग दोजिग परहि॥
छं०॥७७८॥

शहाबुद्दीन का सेना सहित सिंधु पार करना।

चितिय षट्ट सेना सुलष्षि। सजिय सन्नाह सदिष्षिय॥
अद सेन किय अच्छ। वज्र सस्त्रं भिल अष्षिय॥

तिन में पंच तिलष्य । वज्र भिल्लै कर बज्जी ॥
एक लष्य दस भाग । फेरि दीयं न सुसंज्जी ॥
तिन मझ्झ एक सहसं सुभ्रित । अद्ध पंच प्रपंचनि अधिक ॥
तिन में सब सत समुद्र वर । पुन जेही गुन गुन सधिक ॥
छं० ॥ ७७७ ॥

दूहा ॥ सजी सेंन गोरी सुवर । सिंधु उतरि सुविहान ॥
राति सब्ब वर तिन सयन । आन षान षुरसान ॥
छं० ॥ ७७८ ॥

महमद रुहिल्ले का शाह से प्रतिज्ञा करना ।

कवित्त ॥ समन कमन मो नदी । मीर महमुंद रोहिल्लौ ॥
नव सुकोरि भुअ दंड । एक टूक लहै दुकल्लौ ॥
कितौक गढ्ढ ढिल्लरी । कोन मंडल दुह वारह ॥
कितेक सूर सामंत । कोन हम सम झुझ्झारह ॥
साहाब दीन सुरतान सुनि । प्रगट एह परं तंग वहि ॥
दी जिग्ग मग्गहम संचरहि । जौन देंइ चहुआन गहि ॥
छं० ॥ ७७९ ॥

शाह का चिनाब के उस पार तक आ जाना ।

सजल पूर सतनंज । चरन साहाब सुमुक्किय ॥
षां कमाल गष्परिय । निरति सेना रसु लष्यिय ॥
परि प्रतीत सत्तन सयन । देस नव नव बल तोलन ॥
अय जुवार[1] परवर दिगार । जुम्मी[2] जुर बोलन ।
दिव निसा देषि हित चित्त दल । कलन लोह कुंजर हयन ॥
बचन भेष[3] लष्यन पिषन । करि कग्गर अग्गर बयन ॥
छं० ॥ ७८० ॥

तम जित्तै जित बचलिय । राज राजन ग्रह गुड्डर ॥
हमस हांम सामंत । मंत पूरन भर सुब्भर ॥

(१) ए० कृ० को०—जुआर ।
(२) मो०—जम्मी ।
(३) ए० कृ० को०—भाष ।

राज मिलन सुलतान। लिपि सुकग्गर फुरमोनं ॥
हवि वचन्न असमान। असंष गज्जिय सुरतानं[1] ॥
सम सिफाति सील उत्तर तरह। दिसि दुस्तर संग्राम रन ॥
सम विषम बत्त पारसि कुसल। स्वामि बचन हिंदू सधन ॥
छं० ॥ ७८१ ॥

शहाबुद्दीन का पृथ्वीराज के पास खरीता भेजना।

बचनिका ॥ बंधानौ कै लाजरी। कागर वंधी हेसांजरी ॥
मसि रुद्दीई सद्दे। काजी कतेव सद्दे ॥
सुल्लांन उचार उच्चै। वंचन राजा श्रोतान सच्चै ॥
राजा प्रथिराज आगें। सामंत सूर संचार लागे ॥
इन विधि सरजन हार जोरे। सुरतान जलाल दीन लोरे ॥
इनि विधि हिंदू मुसलमान सुहानी। वयन नीरां रा जंजे सुरतानी।
छं० ॥ ७८२ ॥

शहाबुद्दीन के पत्र का आशय।

भुजंगी॥ बने भिस्ति बेषा षमे पान संडौ। सजे षंभ थंभं नए रंड डंडौ ॥
इला सल्च रत्ती न केली सुहावं। जमी जोर संनै न ओरं किसावं ॥
छं० ॥ ७८३ ॥
हमं तुम्म एकं दुरं देव दाने। समं सिंध लोरै नहीं एक बाने ॥
विनै देव भस्सं कुरानं पुरानं। न जानं सुने है कि आने सुमानं ॥
छं० ॥ ७८४ ॥
उभै रीति उत्तंग दुत्तंग देही। छिनं भंग भंजे सुकामंध केही ॥
मिलौ आदि मीरा सुभीरा भिरंदे। बिबी गव्ह मल्है सुसद्दै सिरंदे॥
छं० ॥ ७८५ ॥
प्रियं प्रीति पैगंबरं साहि सज्जौ। सुभ्रं जोर बंध्यौ सुलितान मझ्झौ॥
मिले हाहुली हेत हिंदू हमीरं। जनं जोर ठट्टै गुमानं गंभीरं ॥
छं० ॥ ७८६ ॥
कियौ साहि सिष्टा सआपै आपनं। छलं छच हिंदू सिरं दीन मानं॥

(१) मो०—पुरसांन

मिलौ साहिं साहाब सोहैत बंधी। दहै देस छचंज पंजाब अद्धी ॥
छं० ॥ ७८७ ॥

वरं षग्ग षुरसान सों मंडि छंडों। सुतं रेन उद्दव सौ सेव मंडौ ॥
इला जुद्ध कीने कहा लाभ पंडौ। नियं नेहनी जोतिसों सेव षंडौ॥
छं० ॥ ७८८ ॥

सदो जोर हिंदू नथे मुसलमानं। जुराजोध दुज्जोंध संसार आनं ॥
उवं ज्वाव देहं सुसामंत राजे। तटं चन्द्र चिन्हाव सुरतान बाजे ॥
छं० ॥ ७८९ ॥

वरं बोल चामंड रायं सुनंदे। चितं चेत चिंता सुदेही भरंदे ॥
छं० ॥ ७९० ॥

शाही दूत के प्रति चामंडराय के वचन।

कवित्त ॥ सुने सद्द चामंड राइ। सुरतान बसीठं ॥
अप्रमान बोलहु वयंन। राजन सों ढीठं ॥
तुम जानहु सामंत। मंत जेहा अभ्यासै ॥
सारुंडैं पट्टनै। पंन पानी पथ ग्रासै ॥
बोला न बोल कित्ती बढ़ै। हेला हंकि हमीर सुनि ॥
जालिम्म जोर मै मेछ धर। सार बहंढै धार धुनि ॥
छं० ॥ ७९१ ॥

पुहुवि नरेसर सबल राइ। हैं वै हठ जित्तौ ॥
काटि सुभट थट विकट। कलह घघ्घर में वित्यौ ॥
गंजि गोरि रुमीं तुरक। मरिया षत्ताई ॥
बंधे साहिब दीन। लियौ अजमेर चढाई ॥
इम जंपै चंद बरद्दिया। कपिसुलिङ्ग कुंदी कनै ॥
दस सहस लड्ड तें डंड में। अजहुँ सुथक्कै गज्जनै ॥
छं० ॥ ७९२ ॥

सिंघ स्यार परधान। बंध कीनों इक जंतह ॥
मिल्यौ न भष्य दिन एक। स्याल आन्यौ षर मत्तह ॥
सिंघ फाल चुक्कयौ। गयौ षर जीवत थानं ॥

फुनि आन्यौ समझाइ। हन्यौ केहरि वलवानं ॥
विश्राम सिंघ हिरदै सुक्कंन। भष्पि गिद्द जब पुच्छयौ ॥
नहि कन्न रिदै इहि सिंघ सुनि। देषि गत्त पच्छौ अयौ ॥

छं० ॥ ७९३ ॥

दूहा ॥ एहि विधि तुम पति साह की। कही सुबंचा ध्यान ॥
निलज मेछ लज्जै नहीं। हम हिंदू लजवान ॥

छं० ॥ ७९४ ॥

दंत दरिद्री द्विपद रज। एपरि निपट घटंत ॥
सिंघ सिंचानौ सापुरिस। ए परि परि सुउठंत ॥

छं० ॥ ७९५ ॥

जद्दव जुआन और बलिभद्र का वचन कि तुम नमकहराम हम्मीर के भरोसे पर मत गरजो।

बर जंपै जद्दू जुआन। बलिभद्र सुध्रम्म ॥
हम सुलतान सुकम्म। सेव कीनी बहु स्रम्म ॥
तुम आछानी तक्कि। बक्कि हाहुलि हम्मीरं ॥
थट्टा बंभन बास। पास उतरे गंभीरं ॥
हम तुम्म तेक में सीस धरि। बीच करीम कुरान की ॥
बंचौ जु सोंह सांद्रोह दर। लभ्भौ लभ्भ पुरान की ॥

छं० ॥ ७९६ ॥

मुसलमांन दै हथ्थ। हाम हम्मीर मुहाई।
राज कुमारह रेंन। सेव संचार दुहाई ॥
तुम मांगै पंजाब। अह पहु[१] ग्राम न मुक्कै ॥
दाइ मित्तह उद्दोत। परी जम्मौ जित सुक्कै ॥
हम लभ्भनि तुम्भ लराइयां। नर भराहिं सिंघह समर ॥
गुफ अभै स्थानि संचरि रहै। सुभ सियार चष्षहि अमर ॥

छं० ॥ ७९७ ॥

मभ्भह रावल समर। सिंह सिंह त्तन पुच्छिय ॥
जे मंता मंतेह। हवै लहु[२] दुअ लच्छिय ॥

---

(१) ए० कृ० को०—यह। (२) मो०—दुअ।

जौ जीवंदे जित्त । मुत्ति तो सरग समानी ॥
ना दिष्यो प्रथिराज । मुरै सुग्गन्न चहुआनो ॥
अवृत घत्त मतां लहौ । पर कज्जां सज्जां समर ॥
ततग्राहत त्तत्र पराइयां। अप्पै दैव दानव अमर ॥
छं० ॥ ७९८ ॥

शाह के यहां से आने वाले सरदारों के नाम और पृथ्वीराज का उनको उत्तर देना।

पा पट्टीय वसीठ । सब्ब सुरतान कहंदे ॥
तुम सारा हैं भुज्ज । डंड भरि जीव रहंदे ॥
के भूले उपगार । कन्ह उपगार सुझ्झ भस्झा ॥
होहि न वड्डा बोल । चढ़ चंपी अन वुझ्झा ॥
दिय दूत हथ्थ कागर दुजर । अगर पंच मन साहि दिसि ॥
सोनो सुजान नीसब्ब कय । कहन बोल वर बीस बिसौ ॥
छं० ॥ ७९९ ॥

सा वट्टू को थली । पंच तेरह करि मंडिय ॥
लप्पां छप्पिय च्यारि । पास कागर करि छंडिय ॥
षान षान ततार । षान रुस्तम षां हाजिय ॥
षां षीराज कुसाब । हिंदु तुरक्को पढि काजिय ॥
दीहांइ पंच पंथे वह्यां । दल सुरतानति संमुहा ॥
पंजाब मद्धि टिल्ला पहर । मिलि मध्यानति विम्मुहा ॥
छं० ॥ ८०० ॥

कहि सोनी पतिसाहि । दुष्ट होइ कैसट भंगिय ॥
या लज्जो[1] सुरतान । सिंधु कह कज्ज उलंघिय ॥
पैगंबर दै बीच । मिटै बालां वर संधिय ॥
एक वेर दूवेर[2] । वेर वेरह इन बंधिय ॥
सौ न होइ पहिलोन हल । सुष देषावन देषिया ।

(१) मो०—लज्जीवा। (२) ए० कृ० को—एक वार दुरवास।

क्षित हित्त चित्त मर्ले¹ नहीं। कहै बढ़ै गुर सिष्पियां ॥
छं० ॥ ८०१ ॥

सतलुज पार करके शाह का आगे बढ़ना और दिल्ली से लौट कर गए हुए दूत का समाचार देना।

त्रिपथ पंथ पव्वा पहार। गट्ठी दिसि वासह ॥
जेल्लं लंगर ग्राव। विहथ बंधी जथ नावह ॥
साहि तक्कि ताजिय चढंत। सुनास सुन्नारह ॥
दैकागर दूतान। कियौ सोनार सलामह ॥
औ बंचि अप्प कुव्वाहिया। न किहु किय करतार कर ॥
बच अड्ड कढ्ढि षिज्जिय षलां। बंधि याहि चंपौ सुधर ॥
छं० ॥ ८०२ ॥

तब बोलै साहाव। प्रति पट्टए चहुआनह ॥
सो आयौ सानंमि। प्रान जोरे रव्वानह ॥
बुझ्झै गोरी नरिंद। सयल जंगलपति जानह ॥
तब बोल्यौ कम्माल। सुनौ वत्तां सब्भामह ॥
सामंत सूर सब जोर बर। बिन वेरी चामंड किय ॥
भ्रित अम्म स्वामि रत्ते रहसि। तिन वर सज्जै तांम जिय ॥
छं० ॥ ८०३ ॥

चहुआन सेना का बल सुन कर शाह का शंकित होना।

दूहा ॥ सुनिय वत्त गोरी गरुअ। तनमन कंप्यौ ताम ॥
चल्यौ मंद गति मन विकल। ज्यों ग्रेह नउढा काम ॥
छं० ॥ ८०४ ॥

अन्य दो दूतों का आकर कहना कि राजपूत सेना बड़ी बलवान है।

कवित्त ॥ विहथ कंठ साहाव दीन। सुरतान संपत्तह ॥

(१) ए० कृ० को०—मिट्ट।

दल बहल दरिया हिलोर । उप्परि लग्गि अंतह ॥
समय तास दुअ दूत । धाय अति हित्त सत्त वर ॥
सोलप्पे सुरतान । बोलि बुझ्झै सुवचचर ॥
नरि कहै गरुअ गोरी सुनौ । चाहुआन वर जोर जुति ।
मिलि आय सुभर सामंत सव । प्रान कलप्पे काज पति ॥
छं० ॥ ८०५ ॥

शाह के पूछने पर दूत का राजपूत सेना के सरदारों का वर्णन करना ।

दूहा ॥ पुनि गोरी पुच्छेव चर । दल संष्या चहुआन ॥
जे आगम संजोर दल । कहौ सुभट सग्रान ॥
छं० ॥ ८०६ ॥

पद्धरी ।संवचहि दूत प्रति गज्जनेस । चहुआन सुदल बल असहेस ॥
उत्तर्यौ आय सतनंज सेन । सामंत सूर सिरं लग्गि गेन ॥
छं० ॥ ८०७ ॥

पुम्मान राव पति चित्रकोट । सनसंध सगप्पन आय जोट ॥
दह तीन अग्ग सेना समथ्थ । भर लाज सुदल वल सिद्ध हथ्थ ॥
छं० ॥ ८०८ ॥

कथ्या जुलोह चावंड राव । चित्तै सुधत्त जुद्धां जुदाव ॥
पुंडीर आय चव सहस सथ्थ । चव तेग बंधि सज्ज्यौ समथ्थ ॥
छं० ॥ ८०९ ॥

पामार तेत अब्बुअ नरेस । पहुमी सकाज आयौ असेस ॥
पोमार सिंघ अनभंग जंग । लग्गौ सुअप्प रन रोह रंग ॥
छं० ॥ ८१० ॥

परिहार मद्दन सम पीप बंध । लग्गौ सुलाज भर जुद्ध कंध ॥
कूरंभ राव बलिभद्र सथ्थ । परसंग पग्ग जा जुलिय हथ्थ ॥
छं० ॥ ८११ ॥

जामानि राव सव सथ्थ ताम । जा काज सोज साजंग मांम ॥
बग्गरी देव देवंग पेत । परसंग राय षीचिय सनेत ॥
छं० ॥ ८१२ ॥

सात्हन सु तेज बीरत सहेज। गुज्जरह राम जज्जा[1] अजेज ॥
आजानबाह मांजि जुधान। अनभंग सूर जुद्दह जुतान ॥
छं० ॥ ८१३ ॥

सोकल्यौ चंद कंगुर सुठांम। हाहुलि काम जुद्दा जुराम ॥
सुकाम आय सम संतुलेस। संजुरे सुभर सव्वां असेस ॥
छं० ॥ ८१४ ॥

चै अग्ग सयन[2] अस्सीस उद्ध। भर सबे सुद्ध एकंग जुद्ध ॥
इहि बिधि सबै सेना सुगाजि। जानिव साहि साजौ सुकाज ॥
छं० ॥ ८१५ ॥

* जिहि थान उस्स इम रहे जाई। सो भू दुहथ्थ नंषी पुदाय ॥
हिंदू तुरक्क घन परिय अंटि। छिति छोति लेटि जलगंग छंडि ॥
छं० ॥ ८१६ ॥

सुभि श्रवन बयन साहाब दीन। छन एक रहिय मन होइ मलीन॥
दिल्ली दिसानि तरवारि तोलि। गज्जनेस गज्जि पुनि कुप्पि बोलि॥
छं० ॥ ८१७ ॥

हिंदवान थान नंषो उषेरि। कैं बच्च बेलि जिम कप्पि हेरि॥
कर फेरि मुंछ दट्टी सुलग्ग। असपति परत्त घरि फेरि पग्ग ॥
छं० ॥ ८१८ ॥

जितौं संग्राम चहुआन जब्ब। सनमुष्प करौं सिर पध्घ तब्ब ॥
छं० ॥ ८१९ ॥

शाह का सब सरदारों को बुलाकर सलाह करना।

दूहा। मुरग पेच फुनि बंधि सिर। कर षंचै कम्मान ॥
सब उमराव बुलाइ ढिग। मतौ मंडि सुविहान ॥
छं० ॥ ८२० ॥

सरदारों का उत्तर देना कि अबकी बार चहुआन को अवश्य पकड़ेंगे।

कवित्त ॥ चिंति साहि सोहाब दीन। सुरतान तांक कुबि ॥
बोहि सबै उमराव। मंत सोंचिंत स्वामि तबि ॥

(१) मो०—जाजा। (२) ए० कृ० को०—अयन।

* छन्द ८१६ से लेकर छन्द ८२१ तक मो० प्रति में नहीं है।

घर घरिह चढ़्ढ़्ढ़ न। सदिय तो साहिस्रु घंतह ॥
सोइ चिंत चिंतेव। मयौ सग्र[1] मिलि मंतह ॥
संपेव तांम तत्तार तसि। करै चिंत साहाब चित ॥
कै सजहि मिस्ति मारग सकल। कै तुम आनहि जुद्ध जिति ॥
छं० ॥ ८२१ ॥

काजी का शाह से कहना कि मेरी बात पर विश्वास कीजिए अब की चौहान जरूर पकड़ा जायगा।

भुजंगी ॥ तपै पुच्छयौ तांम काजी मदन्नं। तनं वृद्ध विद्या सुराज्जै[1] सदन्नं ॥
सदा वंदिगी सांइ आगै सुमग्गं। सदानं[2] कुरानं सुभासै सवग्गं ॥
छं० ॥ ८२२ ॥
कहै ताम काजी सम साहि गोरी। धरौ सुम्मझ्झ वातं परं चित्त छोरी ॥
दिनं काल्हि हुक्कं दिनं उंच दीनं। गहौ चाहुआनं कला इंद्र पीनं ॥
छं० ॥ ८२३ ॥
परै सैन दूनौ भरं भार भारं। रनं रौद्र वित्तै अभूतं सुसारं ॥
पलं रुद्र रस्सं अभूतं भयानं। विभच्छं समथ्थं उदथ्थं सयानं ॥
छं० ॥ ८२४ ॥
चढ़े काल्हि चंपौ चिरं हिंदु सेनं। न चुक्कै कुरानं सुभानं सबेनं ॥
गहौ जीन हिंदू पलं दुष्ट भेसं। करौ पोदि पोषी तनंइं प्रवेसं ॥
छं० ॥ ८२५ ॥

सब मुसलमान सरदारों का वचन देना और शहाबुद्दीन का आगे कूच करना।

दूहा ॥ सुनी वत्त साहाब सोइ। वंध्यौ जोर जुरान ॥
चढ्यौ अनी[3] नीसान दै। चित्ति चित्त ईमान ॥
छं० ॥ ८२६ ॥
कवित्त ॥ आनि पान सुरतान। साजि साहाब सुद्दित्त ॥

(१) ए० कृ० को०—सज्जै। (२) ए०—मदान
(३) ए० कृ० को०—अप्प

डेरा षाना नानि। करी प्रस्थान मिलत्तं ॥
धरे धीर उड्डंग। षंग सुरतान चढंडे ॥
मन बढ़ै हम्मीर। सत्य लै लोह कढंडे ॥
दस सहस संग आलम्म के। रजु देह दह पंच बस ॥
संसार सकल पूजै बली। करी जोर छोनीय गस ॥
छं० ॥ ८२७ ॥

दूहा ॥ मेछम सूरति सत्य किय। बंचि उराम कुरान ॥
बीर बिचारति रत्ति हुअ। दिय मैलान मिलान ॥
छं० ॥ ८२८

शाही सेना की तैयारी वर्णन।

चोटक ॥ सजि सेन सुगोरिय साहिरनं। सु मनों दल बद्दल पंति बनं ॥
दसमत्त पयोहर पंच गुरं। इह तोटक[1] छंद प्रमान धरं ॥
छं० ॥ ८२९ ॥

घन गज्ज निसान दिसान सुनं। थलह्रं जल जल सुपल्लवनं ॥
बिसरी द्रिग अठ्ठ न सुझ्झयनं। झु बजे घनघंट निसान[2] घनं ॥
छं० ॥ ८३० ॥

रन नंकहि भेरि न केरि घुरं। सुबजे घन सिंधुअ राग सुरं॥
सुभयं गजराज उतंग उभै। सुचलै गिरि कैं मनु जंम सुभै ॥
छं० ॥ ८३१ ॥

गज गुघघर उघघर यों गुबरै। सु मनों तस के तन सो बुहरै ॥
वर गात परब्बत से दिषियं। छर वच्छर मेरति तेल लियं ॥
छं० ॥ ८३२ ॥

दिन छिप्पिय रेंन दिसा गुनियं। वर सद्दन कान नही सुनियं ॥
छं० ॥ ८३३ ॥

दूहा ॥ सवद कान सुनियै नही। मुंदि निसा दिन जान ॥
मीर पीर पैगंबरहु। सजि चल्लौ सुरतान ॥
छं० ॥ ८३४ ॥

---

[1] ए० कृ० को०—मोदक।
(२) ए० कृ० को०—निघट।

सुसज्जित शाही सेना की पावस से पूर्णोपमा वर्णन।

पद्धरी॥ सजि चल्यौ साहि आलम असंभ। उप्पन्यौ जानि साइरन अंभ॥
जय तथ्य साहि सेना सुदीस। उन्नयो मेछ¹ वर वैर रीस॥
छं० ॥ ८३५ ॥

बाजहि निसान घन जिम दिसान। दामिनी तेग वर बक्कमान॥
बारुनि बहंत मद बूंद गंध। सुभाऊ न भान दिसि विदिसि धुंध॥
छं० ॥ ८३६ ॥

धुम्मलिय मिलिय कलग निगसंद। झंझलग² सूर लुइ सुरिग मंद॥
प्रज्जरहि पंथ पट्टननि सिंध। मिजि चलहि सिंगि आरम्भ गिद्ध॥
छं० ॥ ८३७ ॥

सिंधुर धरंनि संचरिहि सान। सुनियै न वयन सह दुरिग कान॥
चक्कीय चक्क मुक्क विक्कलंत³। निसि दरस सरस सारस मिलंत॥
छं० ॥ ८३८ ॥

प्रतिविंब ग्रंब अंबरनि तार। क्षुकातै न सुगति मंजर सिवार॥
धुंकार धुनति गाजहि निहंग। दस दिग्ग धरा पूरे समंग॥
छं० ॥ ८३९ ॥

षक्कित सुचित्त मन मिंत्त चित्त। रस उभय अप्प आनंद चित्त॥
दीपै अद्रप्प आलोल नैंन। विसरीय लोक सुर मग्ग वैन॥
छं० ॥ ८४० ॥

निद्दुरिय ढाल धर धरिय कोक। संचिय सुलाल संभरिय सोक॥
हसि चक्क चकी सों कहिग छंद। माननिय जानि दामिनिय चंद॥
छं० ॥ ८४१ ॥

असपति असंभ धर गहन छिंद। कोप्यौ कमाल गोरी नरिंद॥
⁴दिवि दिवस स्यार इक करहिं फेर। जोगिनि अनंद अच्छरि सुमेर॥
छं० ॥ ८४२ ॥

(१) ए०—मेघ। (२) मो०—झंझछि।
(३) मो०—विच्चलंत। (४) मो०—माधव दिवस्स इक कराहिं फेर।

कुह किलकि सौन वर बरहि बीर। उच्छरहि मीन धर गरुव नीर॥
आवरत सेन द्रुल हलिग[1] साहि। गाहन असंषि अदि भीम धाहि॥
छं० ॥ ८४३ ॥

अग्गें सुरेंन पच्छैं पुकार। साषसिय संक्रमन सन्निवार॥
रवि धरह राह अरु केत गत्ति। जानी न चंद ग्रह ग्रहन सत्ति॥
छं० ॥ ८४४ ॥

दूहा ॥ कएहि चंद रन अम्भरन। मरन सुधन्न धनाह॥
बर नरिंद दल हिंदु कौ। भई सनाह सनाह॥
छं० ॥ ८४५ ॥

राजपूत सेना की तैयारी वर्णन।

पद्धरी ॥ कहि कूह बहि सन्नाह सद्द। संगिय सुहिंदु षुरसान रुद्द॥
डंमरिय डहकि अंमरिय रत्ति। संभरिय रोव रावत्त सुबत्त॥
छं० ॥ ८४६ ॥

अंबरिय बीर रोमंच उट्ठि। ब्रह्मान अंम कसि अंग पुट्ठि॥
अस्सानि हेम कमलानि कंठि। बंदिय विभूति सिंगिय सुगंठि॥
छं० ॥ ८४७ ॥

अवधूत धूत जोगिंद राज। चढ्ढी सुसक्क गढ़ चित्त लाज।
धज धुंज धज्ज नीसान नद्द। आहुट्ठि राइ असि कसिग हद्द॥
छं० ॥ ८४८ ॥

सध्ध सक्ति नाग भुज भाग साजि। प्रज्जरिग अन्न मुष अन्न गाजि॥
नभ मिलिन रन्न चष द्दिट्ठि दिट्ठि। मंडिय सुटोप सिर[2] निठ्ठ निट्ठ॥
छं० ॥ ८४९ ॥

मृग जाति काय पष्षर पवंग। सित असित पीत कुंजनि कुरंग॥
उर राह बाए रावत्त भीर। निरमलिग नेह जनु लज्ज नीर॥
छं० ॥ ८५० ॥

गुन गनत तत्त बज्जी सुबत्त। बंधिय सुहंसि सिर छहति सत्त॥
हिल्लुरिग अंब बर बरन बीर। प्रिय प्रियम हेत त्रिप तिरन तीर
छं० ॥ ८५१ ॥

(१) ए० कृ० को०—लहिग। (२) ए० कृ० को०—सन।

पंडव सुपंड चहुआन पंड। सजि चढिग राज जोगिंद दंड ॥
सुनि निज नफेरि संजोई कंत। आरुह्यौ गरुर हय हय हसंत ॥
छं० ॥ ८५२ ॥

जामराय यादव का पृथ्वीराज से कहना कि ईश्वर कुशल करे रावल जी साथ में हैं।

कवित्त ॥ पानि जाम जद्दौं जुवान। लगि कान कह्यौ इह ॥
प्रिथा कंत इह वार। तात कुसलत्त होय ग्रह ॥
छंद राइ क्रूरंभ। सिंभ पूजन[1] पति जंपिय ॥
कहन हथ्थ पुंडीर। राव पावस क्रत कंपिय ॥
सहि सहन सीह सिद्धं गुरिग। तिह सहाय रावर समर ॥
तुम सम न कोइ हिंदू तुरक। भिरि न सकहि दानव अमर ॥
छं० ॥ ८५३ ॥

पृथ्वीराज का समरसी जी से कहना कि आप पीठ सेना की देख भाल कीजिए।

गरुर हंकि दानव नरिंद। दिसि वाम काम तत ॥
झलकि झलकि झिंगुरिग। नेन दग[2] वेन कहत वत ॥
तुम दष्षिन गिरि गरुअ। संग रन रंग हरष्षय ॥
तुम समान कोइ आन। हमहि[3] हम हितू न रिष्षिय ॥
जब लग्गि मुझ्झ भीर न परै। तव लगि भट भिरन न करौ ॥
आरज्ज सोम संकट सतिन। सजिन सेन चंपत परौ[4] ॥
छं० ॥ ८५४ ॥

(१) ए०—पजून।
(२) मो०—द्रग।
(३) मो०—हमहि हिन्दू नह दिष्षिय।
(४) ए० कृ० को०—फिरौ।

रावल जी का कहना कि समर से विमुख होना धर्म नहीं है।

हँसि नरयंद आनंद। राज राजन प्रति पत्तिप।
तुम सनेह सम्मरिय। मोहि दप्पन लगि बत्तिप॥
ना हं ना तुं ना जगत। न मिच्छ इच्छ नन॥
नहिन सूर सामंत। सूर अंकुर गहन मन॥
संग्राम धाम धर छत्रियन। पर इत पुर परतर लहै॥
चहुआन आन सोमेस सुअ। विमुष जीह जंतनि कहै॥
छं०॥ ८५५॥

रावल जी और पृथ्वीराज दोनों का घोड़ों पर सवार होना।

दूहा॥ दय दच्छिन दच्छिन अपन। प्रथम प्रिथा पति कंत॥
गरुर कंध थप्परि प्रयुत। प्रभु प्रथिराज सुभंत॥
छं०॥ ८५६॥

असुर सेन सम संचरिग। दल वद्दल विष मंत॥
बहुरि बियौ प्रब्बत सुभित। प्रथुरु संजोई कंत॥
छं०॥ ८५७॥

भुजंगी॥ दुअं सेन आवृत्त उत्तंग अंगं। दुअं छत्र सेतं पियं नेत रंगं॥
दुअं सार सिंधू उरं अग्र दीनं। दुअं बीच सा चंग लंकाल भीनं॥
छं०॥ ८५८॥

दुअं पथ्थ रथ्थं सरथ्थं परामं। दुअं सेन आपासि आपा विरामं॥
दुअं जोर जीवा रजं नार कंधं। समय एन संमं कलिं कहत धंधं॥
छं०॥ ८५९॥

रावल जी का पृथ्वीराज से इशारे से कुछ कहना और राजा का उसे समझ जाना।

दूहा॥ तन अलंग अंगह उभय। अप अप्पानैं सेन॥

काछु भुजन्न लगिकें कह्यौ। [1]सुन न्टप परपिय वेन ॥

छं० ॥ ८६० ॥

रावल जी के इशारे पर सेना का व्यूह बद्ध किया जाना।

पद्धरी ॥ रस प्रीति सुसाजन धार तिन्न। न्रप भेटि समर रावर सुकिंन ॥
रस करन सथ्थ पावस पूँडीर। इनिवंत जिसौ धीरह समीर ॥

छं० ॥ ८६१ ॥

उनलंक जालि परवत्त पारि। धंजनिय अनिल ग्रम्भह विचार ॥
रस मरद देषि जादौंनि जांम। वय रूप रूप रकह सुमांम ॥

छं० ॥ ८६२ ॥

गल कंठ माल्ल सोतिय सुमेलि। संजोगि तात दन्नियत[2] केलि ॥
लिय लष्य हेम कैलास गूर। रेसमिय सोप उद्दोत भूर ॥

छं० ॥ ८६३ ॥

अदभूत देषि वलिभद्र सह। गाजने साहि मे हरन मह ॥
अभिलाष हास्य घट जीव कीन। अनलषिय आन लपियै प्रवीन ॥

छं० ॥ ८६४ ॥

वीभच्छ नेंन मस लहन सीह। जय लागि गरुअ एय छंडि लीह ॥
निरवान राइ रंधन सुसंत। गल गहिय[3] नेन लांगत पंत ॥

छं० ॥ ८६५ ॥

संजोगि सयन अंगुलि बताय। सम समर साहि रावल दिषाइ ॥
नर सहित नेत बंधै नरिंद। मनि मरन भीन जिम सुक मुनिंद ॥

छं० ॥ ८६६ ॥

पहु परी छित्त अवतार सुम्भ। हरि चक्रवान राधै सुग्रभ्भ ॥
उहि बरन भेष चिचंग राव। मिलि दैव जोग संजोग दाव ॥

छं० ॥ ८६७ ॥

इन लभ सुलभ्भ लाह्न विषानि। इन मरन जियन देषियन हानि॥

(१) ए० कृ० को०—सुनत परच्छिय वेन।
(२) मो०—दिछियत, ए०—दिन्नियत।

कोइ गुभ्भ मंत समझी न अग्ग। कहि जांम देव सौं कान लग्गि॥
छं० ॥ ८६८ ॥

आगम सुबात भव भूत हेत। सिर जैत अप्पि तहां छच सेत॥
गहि पान पानि पंच्चौ पमार। लिय दच्छिनेस ढिल्लन पहार॥
छं० ॥ ८६९ ॥

चावंड राइ सुप राषि नाइ। भ्रम छोड़ मोहि जिहि पातिसाहि॥
* षोड़सह दून रस[2] रति तिवार। अंगुलिन गनित दस कहिग[3] सार॥
छं० ॥ ८७० ॥

राजपूत सेना का सुसज्जित होकर शाही सेना के साम्हने होना।

कवित्त ॥ बिलुखि साह ढिल्लरिय। साह लल्लरिय निरप्पिय॥
जुरन जैत जग हथ्थ। नाथ सिर छच हरष्षिय॥
आसमान पांमार। रहन झंडे झुकि गड्डे॥
अब्बू राइ नरिंद। बाद बीरति कर छंडे॥
करन दूत बान बानैत जनु। चाव सबय नेह कुरिय॥
सित रत्त पीत कज्जल ललित। सलित कमल दल संकुरिय।
छं० ॥ ८७१ ॥

सुरिल्ल ॥ लज्जिय लौ बज्जिय लौ सारं। गज्जिय लौ अरतिय उभ्भारं॥
सज्जिय लौ हिंदू दल धारं। जानि कि मेघ घटा करिवारं॥
छं० ॥ ८७२ ॥

घट घट जिय विज्जलिय विराजैं। गरुअ पंति रति रनि तहां साजै॥
तत्त तहां तोरन तिल लाजै। मंत मरन दिष्षै इक गाजै॥
छं० ॥ ८७३ ॥

बंधिय फौज राज जपि सारिय। रंगी जानि क्रिसान दिषारिय॥

---

(१) ए० कृ० को०—गलगिय (२) ए०—सर
(३) ए० कृ० को०—गमार। *राजा प्रथीराज री फौज हजार त्रयासी जी की सरव्यई तुक में कही। षोड़ दून बत्तीस, रस नौ, रति छः, तिवार दारेह लिया ३६=३२-९६३६ (कृ० प्रति) ठाकुर कृष्ण सिंह जी की टिप्पणी।

दंगी दोवर दोस निकारिय[1]। दिट्ठ दिट्ठ मिले इइकारिय ॥
छं० ॥ ८७४ ॥

पृथ्वीराज की तैयारी के समय के ग्रह नक्षत्रादि का वर्णन।

कवित्त ॥ वर मावसि सनिवार। राहु रवि ग्रहे[2] संपतौ ॥
न्नप संमुह जोगिनी। पंछि पच्छिम औलितौ ॥
वाइ विषम संमूह। चक्र जोगिनि दिस रुंधी ॥
राहु न्नपति सत्तमौ। भान अष्टम गुर संधी ॥
साभ्रम्म वढ़िय नभ छह्यौ। वाम काम छुट्टे दरस।
जम रोज षत चढ़ि दीन विय। सुकति वीर वंछै परस ॥
छं० ॥ ८७५ ॥

राजपूत सेना की चढ़ाई का ओज और व्यूह वर्णन।

भ्रमरावली ॥ सलिता जनुं सत्त समुद्दलियं। दोउ राज महाभरथं मिलयं ॥
करकादि निसा मकरादि दिनं। वर ब्रिद्दत सेन दुवाल मिनं ॥
छं० ॥ ८७६ ॥

दोउ राज रपत्त सुरत्त उठे। बहुरे मन पावस अभ्भ वुठे ॥
निसि अद्ध विभत्ति निसान घुरं। दरिया दिव जानि पहार गुरं ॥
छं० ॥ ८७७ ॥

सहनाइन फेरि कुलाह लियं। रस वीरह वीर मिले वलियं ॥
ठहनंकित घंट निघंट घुरं। कल कौतिग देव पयाल पुरं ॥
छं० ॥ ८७८ ॥

लगि अंवर वंवर उंमरियं। विसरी दिसि अट्ठति धुंधरियं ॥
समसेर दुसेन समा इन से। दमकै दल मद्धि तराइन से ॥
छं० ॥ ८७९ ॥

चमकै चव रंग सनाह घनं। प्रति विंवति मिंत मयूष वनं ॥

---

(१) मो०—दिपारिय।
(२) ए० कृ० को०—घर।

दरसी दल की दल ढल्लरियं । सुमिरैं घर कायर वल्लरियं ॥
छं० ॥ ८८० ॥

जिनकी सुष सुंछनि मच्छरियं । निरषें तिनके तन अच्छरियं ॥
न्प जोइ फवज्ज सुबंटि लियं । सुइ मारक चावंड राय दियं ॥
छं० ॥ ८८१ ॥

भुज दच्छिन अब्बुअ राव रच्यौ । सिर छच सपेद सुआनि रुच्यौ ॥
भुज की दिसि वाँम पुंडीर भरी । कटि कंध कवंध गिरंत लरी ॥
छं० ॥ ८८२ ॥

कूरंभ अरंभति अप्प अनी । सुधरी कविचंद सुनी सुभनी ॥
दल पुट्ठ सुमोरिय राव सुन्यौ । कवि उत्तिन संच सुन्यौ सुभन्यौ ॥
छं० ॥ ८८३ ।

निरवान चंदेलति जुद्ध मिले । इय मुकि लरें जम सों जुरले ।
तिन मद्धि सुसंभरि वार इसौ । भुज अर्जुन अर्जुन वार जिसौ ॥
छं० ॥ ८८४ ॥

भ्रमरावलि छंद प्रमान कियं । न्रिप जोइ फवज्ज सुवंटि दियं ॥
छं० ॥ ८८५ ॥

राजपूत सेना की कुल संख्या और सरदारों की स्फुट अनीकनी सेना की संख्या वर्णन।

दूहा ॥ अप्प अप्पनी फौज बंटि । नाम ठाम सामंत ॥
संख्या दल कविचंद कहि । तिन बल जुद्ध अनंत ॥
छं० ॥ ८८६ ॥

भुजंगी ॥ सवं सेन साइस अस्सी त्रयग्गं। चवै फौज साजी जयं जुद्ध जंगं।
सुरं संषि इज्जार सा फौज वामं । पतिं चिच कोटं जयं क्रत्य कामं॥
छं० ॥ ८८७ ॥

तहां साजि साहाइ साजाम देवं । बलीभद्र कूरंभ सथ्थे सुनेवं ॥
सुअं धीर पुंडीर पावस्स तथ्थं । तहां पारिहारं महन्नं समथ्थं ॥
छं० ॥ ८८८ ॥

सजी जैत अन्नी सुदाहिन्नि भारं । भरं राज इज्जार इकईस सारं॥

तिन मझ्झ आरज्ज कमधज्ज राजं। अचल्लेस भट्टी सुजादव्व[1]जाजं॥
छं० ॥ ८८९ ॥

तहां बंकटी राव पामार धीरं। बडं गुज्जरं चन्द्र सेनं सुवीरं॥
वरं सिंघ पंचाइनं चाहुआनं। धरा भ्रम्म रायं पलं पित्त टानं॥
छं० ॥ ८९० ॥

न्वपं देवती लष्यनं धार ईसं। बिजै राज वद्घेल सथ्थें सजीसं॥
तहां दछय परिहार ते जल्ल डोडं। सजै जैत भीरं षरी साल सोढं॥
छं० ॥ ८९१ ॥

सुपं अग्ग सेना सुचामंड राजं। तहां साजि साहस्स सासच काजं॥
तहां पीप परिहार भारथ्थ रायं। भरं दाहिमा जंगली राव सोयं॥
छं० ॥ ८९२ ॥

रचें ढंठरी टांक पुंजं पहारं। भरें भीम चालुक्क वज्जैन सारं॥
तहां राज रावत्त सथ्थें सपेतं। सजे जूह दाहिम्म सा सुम्भनेतं॥
छं० ॥ ८९३ ॥

सजे सेन पुट्टीय सा चाहुआनं। भरं तथ्थ एज्जार उनईस थानं॥
सथं सिंघ पामार षीची प्रसंगं। बड़ गुज्जरं राम देवं अभंगं॥
छं० ॥ ८९४ ॥

तहां बग्गरी देव आजान बाहं। गुरू राम देवं सुसथ्थेव ठाहं॥
गुरं चाल गे हिल्ल सो पंच थानं। भरं अन्य सज्जे न्वपं ठान ठानं॥
छं० ॥ ८९५ ॥

सजी फौज लष्यै सुदिल्ली नरेसं। चढे इष्यनं इम्भ राजं सुरेसं[1]॥
चढे व्योम विम्मान अप्पं अपानं। मिली अच्छरी मंजि रज्जे सुजानं
छं० ॥ ८९६ ॥

पिलै नारदं तुंमरं तंति तारं। करे ह्हह हाकं गुरंगै उछारं॥
मिलै वीर वेताल पेयाल पेतं। मिली चौसठी सक्ति सोयं अनेतं॥
छं० ॥ ८९७ ॥

घनं धप्प गोमाय गिद्धी गहक्कै। पलंचार श्रोनं चरं दंद हक्कै॥

(१) ए० कृ० को०—नरेसं।

मिलै ओनचारं लपे मोन³भारं। अनी जाम बंधी न्रिपत्ती करारं॥
छं० ॥ ८९८ ॥

शाही सेना का संतूलपुर के पास आना।

कवित्त ॥ सजि आयौ सुरतान। जूह सेना अति आतुर॥
तुरिय लष्ष दह सुभर। दंति दस सहस मंत वर॥
पुर संतुल सा निकट। आय दलबल संपत्तौ॥
सज्यौ देषि दिल्लीस। नाम गोरी अनुरत्तौ॥
पुछ्यौ सुमंत ततार षां। षुरासांन साहाब सदि॥
टट्टौं सु सज्जि जंगल सुपह। रचौ बंध अप्पान² रदि॥
छं० ॥ ८९९ ॥

शहाबुद्दीन के आज्ञानुसार तत्तारखां का अपनी सेना को व्यू बद्ध करना, शाही सेना के सरदारों के नाम।

पद्धरी ॥ संबच्यौ तांस तत्तार तंमि। षुरसान षान साहाब लमि॥
बंधौ सुअनी साजै सुबानि। संहरौ सेन ग्रहि चाहुआन॥
छं० ॥ ९०० ॥
संची सुबत्त सब्बान ताम। बंधी सुअनी पंचौ दुराम॥
दाहिनी सेन सज्ज्यौ ततार। द्वै लष्ष तुरिय सारह सार॥
छं० ॥ ९०१ ॥
द्वै सहस दंति उनमत्त मंत। संजूह सब्ब बानै अनंत॥
नौ चम्म षान रुम्मी समथ्थ। नारंग निह्नरनि सिंघ हथ्थ॥
छं० ॥ ९०२ ॥
साहाब बंध सुअपान षान। महमुंद षान रुस्तम षान॥
गज गरुअ षान तह षुरेस षान। जे हान षान जंगी जनाम॥
छं० ॥ ९०३ ॥
हमियाम षान भै³ हंस भार। मीरां मसंद पख पित्त ढार॥

---

(१) ए० कृ० को०—जुद्ध।
(२) ए० कृ० को०—आनंद।
(३) ए० कृ० को०—मैर्क।

काजी कमाल हवसी हुसेन। सादी मलिक्क घट्टिय अनेन[1] ॥
छं० । ९०४ ॥

मारुफ़ न हंस हम्मीर तथ्थ। सह संच पंच गप्पर गुरथ्थ ॥
सज्जे सुसब्ब सेना ततार। बंधी सुअनी भर भीर सार ॥
छं० ॥ ९०५ ॥

बांई दिसान पुरसान सज्जि। हंलप्प मीर गरुअत्त गज्जि ॥
गज सहस इक्क सारद्ध सथ्थ। बाने विरद्द बंधरि बिहथ्थ ॥
छं० ॥ ९०६ ॥

ईसफ्फ पान आली अपूब। गाजी बपान गर बर हबूब ॥
आलील पान दम्माद ईस। सारीर पान सुरतान जीस ॥
छं० ॥ ९०७ ॥

पीरोज पान पाहार पीर। अलि असद पान उस्माद मीर ॥
महमुंद पान मीरन सुधारि। सारीर पान सेरन सुभारि ॥
छं० ॥ ९०८ ॥

ताजंन पान तुरकाम ताम। कम्माल पान गरवर गुराम ॥
रोचन्न पान रोहन्न राज। सल्लेम पान सेकंद ताग ॥
छं० ॥ ९०९ ॥

महमुंद सैंद फत्तेन ऊब। अबदुल्ल मीर मुलतान जब ॥
साजे सजूह मारूफ पान। सावह नह अनभूल वान ॥
छं० ॥ ९१० ॥

साहाब सेन परठे सुपुट्ठ। सारद्ध लष्प सेना सुदुट्ठ ॥
गय सहस एक साजे सुभार। बानैत वान अनभूल सार ॥
छं० ॥ ९११ ॥

सथ्थेव साजि मारुफ मीर। पीरोज पान फत्ते नसीर ॥
पीरन्न मीर सेरंन सादि। मरहट्ट मान गाजी सुरादि ॥
छं० ॥ ९१२ ॥

कंनर कनक्क हरचित्त सेन। मारंग देव गब्बर सबेन ॥

---

(१) ए० कृ० को०—अलेन।

उम्माद् षान फत्ते फरीद। बंकट्ट राव वामन वरीद ॥
छं० ॥ ९१३ ॥

संचे सपुट्ठि सेना सहाव। परसंसि सूर सब्बान आव ॥
सजि मधय सेन गज्जन नरेस। द्वै लष्प मीर साजै सुभेस ॥
छं० ॥ ९१४ ॥

गज सहस चैव मंते उमंत। बंबर विरद्द वाने वहंत ॥
षालिन मलिक्क गालिब्ब बंध। वाजंन षान गोरी विरद्ध ॥
छं० ॥ ९१५ ॥

मंगद्द राव मरहट्ट सेह। कोतन अमंन गष्पर अरेह ॥
सनमुष्प सज्जि मारूफ षान। सुत्र गज्जनेस गरुअत्त वान ॥
छं० ॥ ९१६ ॥

चै लष्प मीर सेना समाज। द्वै सहस इम्भ सारद्ध साज ॥
संमन कमंन महमुंदमीर। मों नदी अग्र सेना सधीर ॥
छं० ॥ ९१७ ॥

तीसंन मीर ताजंन षान। ओलील सैद षाना सुवान ॥
सादीप षान हबसी सलेम। आबूब षान रुम्मी अलेम ॥
छं० ॥ ९१८ ॥

महद्दीय सहद्दी मीर बंध। रत्तेव क्रन्न वक्रंत कंध ॥
सल्लेम षान साकत्त सेप। जा जन्न जमन मीरां विसेष ॥
छं० ॥ ९१९ ॥

सल्लेम सैद सेना सकूप। मोसम्म मीर सुलतान रुप ॥
हाजिय षान न्याजी सताज। अहमद्द षान षिति षग्ग लाज ॥
छं० ॥ ९२० ॥

साजिय अनीय साहाब पंच। गज बाज बिरद बाने न संच ॥
उम्मरा मीर साजे असंष। को गनै पार अप्पार तंष ॥
छं० ॥ ९२१ ॥

संषै पं चंद जंपै समूह[1]। आभूत सेन गोरी गरूह ॥
षट तीय लष्प संष्या गिनंत। सेना अनंत पयदल मिलंत ॥
छं० ॥ ९२२ ॥

(१) ए० कृ० को०—सतूह।

सर बंधि संधि सोजूह भार । आवरै अंग भर अनिय धार ॥
गज बाज सुद्दल बल पय पगार । बाजे अनंत बज्जे करार ॥
छं० ॥ ९२३ ॥

जंबूर भूर हय नारि भार । आतस चरित्त अद्भूत पार ॥
बाजंत राग सिंधूर बद्द । धर पूर व्योम नीसान नद्द ॥
छं० ॥ ९२४ ॥

बहु रूप विरद बाने अनंत । सुरपत्ति विपन रज्जयौ बसंत ॥
आरोह एक डंमर डरान । लोपंत व्योम सुझ्झै न भान ॥
छं० ॥ ९२५ ॥

सुर बैठि रथ्थ साजे अनंत । धर अतुल चार अडन अंत ॥
पल चार श्रोन चर इपि अनंद । हसि हस्सि धीर नच्चै पसंद ॥
छं० ॥ ९२६ ॥

दुअ सेन साजि राजे रवद्द । ठट्टै सुआय आसुर उरद्द ॥
छं० ॥ ९२७ ॥

श्रावण वदी अमावास्या शनिवार को दोनों सेनाओं का मुकाबला होना ।

दूहा ॥ साक सु विक्रम रुद्र सौं[1] । अट्ट अग्र पंचास ॥
सनि वासर संक्रांति क्रक[2] । श्रावन अद्धौ मास ॥
छं० ॥ ९२८ ॥

सावन मावसि सूर सुअ । उभय घटी उद्यत्त ॥
प्रथम रोस दोउ दीन दल । मिलन सुभर रन रत्त ॥
छं० ॥ ९२९ ॥

दरसे दल बद्दल विषम । रागरूलाग निसांन ॥
मिले पुब्ब पच्छिमह तें । चाहुआन सुलतान ॥
छं० ॥ ९३० ॥

सारन धौरी सारहै । धीर न धरै ⁻⁻मान ॥
चाहुआन गोरी सरिस । गोरी रा चहुआन ॥
छं० ॥ ९३१ ॥

(१) ए० को० को०—सत्त सौ । (२) मो० क्रम ।

बड़ी लड़ाई का संक्षेप (खुलासा) वर्णन ।

भुजंगी॥मिले चाय चौहान सुलतान पग्गं । मनो बारुनी छक्किवे बारु लग्गं
उठे हथ्थ हक्कं कहं कूहकालं । जुटे जोध जोद्धं तुटै ताल तालं ॥
छं०॥ ६३२ ॥

भए सेल मेलं दुहं मार मारं । वढ़ी संग लग्गी वजी धार धारं॥
सुभट्टं सुथट्टं सुरीसं समेक्कं । भई सेलमेलं अनी एक एकं ॥
छं० ॥६३३॥

परें घाइ अघ्घाइ केकेन सुद्धं । कटै अद्ध अद्धं कमद्धं कमद्धं ॥
परै सूर सभ्भ्रं उतंगं सुधारं । भ्रमै व्योम विम्मान आरंभ हारं॥
छं० ॥ ६३४ ॥

छुटे बान चहुआन आवद्ध राजं । लगे मेछ अंगं मनों वज्र बाजं
फुटै संगि संनाह के अंग अंगं। उठै श्रोन छिंछे जरैं जानि ढंगं॥
छं० ॥ ६३५ ॥

हते राज प्रथिराज सामंत सेतं । भए मेछ अद्धे मनों राह केतं ॥
बक्यो बीर नन्दी सुसूली अनन्दी । नचै भूत भैरूं बके जानि बंदी
छं० ॥ ६३६ ॥

भिरें जुद्ध जानीय जुथ्थानि जुथ्थं।ग्रहै गिद्धि,सेवाल लुथ्थानिलुथ्थं
चुवै श्रोन सट्टी किलकंत घुंटैं । ग्रहं मेछ लागे जुरै सूर छुट्टै ॥
छं० ॥ ६३७ ॥

भिरै जाम दुअ जुद्ध हिंदू सुमीरं । परें पंच पंचास चोवंड बीरं।
परे दाहिमा बग्गरी हक्कि दूने । परे देवरा जेद्ध ते दून जने ॥
छं० ॥ ६३८ ॥

परे सांषुलो सव्व भाटी सुराने । परे हंस मालहन मिलि हंस थाने॥
परे राह रट्ठौर रनभूमि ठोरे । मनों सार संसार रन सामि छोरे॥
छं० ॥ ६३९ ॥

परे चाइ चालुक्क ते सार दूने । मुरे मोरिया सव भए जाति सूने ॥
परे सहस षट सूर कूरंभ वाला ।[1] परै गज्ज सिंदू कते ढालढाला॥
छं० ॥ ६४० ॥

[१] मो०—" फिरै गज्ज सिंदूक ठालेति ठाला"

परे पीचिया पग्ग पेल्लै सुपाला । परे टांक चंदेल पुंडीर माला ॥
सद्दै भीर रन रंग जे तुंग लाला । चले ब्रह्महंसं पुले मुत्तिमाला ॥
छं० ॥ ६४१ ॥
परै जैत पम्मार आवु सुराया।करी अप्प चहुआन प्रथिराज छाया॥
परे पंच से पंच चहुआन वट्टे। रहे सत्त सर सत्त प्रथिराज ठट्टे[१]॥
छं० ॥ ६४२ ॥
परे सहस पचीस सब सेन गोरी । रहै तुरक हिंदू मनों षेलिहोरी ॥
भिरे देव दानव्व जिम बैरू बित्यौ।मुरयौ सेन चहुआन सुरतान जित्यौ ॥
छं० ॥ ६४३ ॥
परे लुथ्यि अगिनंत जानों न संख्या।रची जांनि जोगिंद सा मुंनि दष्या॥
मिले षान सुरतान रनभूमि पिष्यौ । तहां एक देवास सें देव दिष्यौ ॥
छं० ॥ ६४४ ॥
परी विटं राजंग सा अंग सीरं । करी कुंडली काल रज्यौ कठीरं ॥
कथें काव्य कुव्वेर सांई सु अग्गे । चितं अत्ति आनंद उब्भास लग्गे ॥
छं० ॥ ६४५ ॥

देवी जालपा, वीरभद्र, सुवेर यक्ष और योगिनियों का शिवजी के पास जाना।

कवित्त । तांम ठांम ग लष्प । जाय जटधार सपत्तौ ॥
आहुत्तौ बलिभद्र । वीर वीराधि सहित्तौ ॥
आति आदर दिय देवि । पुच्छि परपंच संच विधि ॥
वर आसन उत्तान । मान रष्पिय सु प्रान उधि ॥
आयौ सु जच्छि सुबेर तहं । सँग जोगिनि वेताल साथ ॥
वीतो सु जुद्ध हिंदू तुरक । कहिय ईस दिय भेट अथि ॥
छं० ॥ ६४६ ॥

महादेवजी का पूछना कि हिन्दू मुसल्मान के युद्ध का हाल कहो।

तब कहै ईसमन मंडि । [२]अहो सुब्बेर दच्छ सुनि ॥

[१] ए०कृ०को०—वट्टे । (२) मो०—अहाँ सु वैर द्रव्य सुनि ।

किम हिंदू तुरकानि। पान[1] जंपौ जुद्ध गुनि ॥
दूहै जोग सारत्त। मंत दिष्यौ जुध जग्गिय ॥
दूहै बीर उनमद्द[2]। साषि भष्यौ सा अग्गिय ॥
बलिभद्र कहिय अति उद्ध कथ। रूद्र सूर सामंत रन ॥
भारथ्थ कथ्थ लग्गै अतुल। कहौ पान उत्तान तन ॥
छं० ॥ ९४७ ॥

सुवेर यक्ष का कहना कि प्रथम युद्ध के पहिले राव बलिभद्र और जामराय यादव का रावलजी से नीति धर्म पूछना और रावलजी का नीति कहना।

दूहा। कहिय दच्छ कैलासपति। सुनि रन संकुल सार ॥
चाहुआन सुरतान षिति। जे भर जुट्टे धार ॥
छं० ॥ ९४८ ॥

कहै सूर सामंत सह। जस जीतन यों काज ॥
जो जीतन तुम होय नहि। तौ रष्पहु प्रथिराज
छं० ॥ ९४९ ॥

प्रथम जुद्ध आवृत्त सचि। कर यक्ष दोउ दीन ॥
औसरि दल दूनौ रहै। ज्यों प्रमुदा रस भीन ॥ छं० ॥ ९५० ॥
मिले सूर सामंत मत। पति चिचंगे पुच्छि ॥
तुम माया मद जित्त हौ। हम मानव मन तुच्छ ॥ छं० ॥ ९५१ ॥

बलभद्र और जामराय का रावलजी प्रति प्रश्न।

कवित्त। विपथ राव बलिभद्र। सुपथ जादौं पति कथ्थिय ॥
समरसिंघ रावलह। समर साहस गति पिथ्थिय ॥
राज भ्रम्म व्रत ध्रम्म। ध्रम्म छत्री सालोकिय ॥
कह सु हंस आनंद। बुद्धि कहि तत्त सलोकिय ॥
कहं कहां सु मोह मरयाद कह। कहां सुजीति जोतिहि लहै ॥
जोगिंदराव जगहथ्थ तुअ। जग सु देव तत्तह कहै ॥
छं० ॥ ९५२ ॥

(१) मो०—पात। (२) मो०—उदमद।

रावल जी का उत्तर देना ।

विपथ सुबंध्यौ मोह । सुपथ जिहि स्वामी निवरत्तै ॥
राज सु अग्या रवन । सेव तिन बज्र प्रवृत्तै ॥
छित सु स्वामि सोरत्त[1] । नीय निंदा न प्रगासिय ।
अह निस बंछहि मरन । सु पहु संकुरै निवासिय ॥
हा हंस हंस मंडल रूरै । मन अनंत अंतहि रूरत ॥
सामंत सिंघ रावर चवै । सुगति सुगति लब्भै तुरत ॥
छं० ॥ ९५३ ॥

प्रश्न "क्षत्रियों का धर्म क्या है और सायुज्य मुक्ति किसे कहते हैं।"

कहै राव जामानि । अहो चिचंग राव सुनि ॥
तुम सु जोग जोगिंद । जोगधर मूल ब्रम्ह गुनि ॥
तुम सुधीर अवधूत । व्यास जिम लहौ सकल गति ॥
तुम सुज्झै चयलोक । समाल काल कलय तुम्झ मति ॥
हम कहौ ध्रम्म छचिय सुधर । राज अंस अत अंस ॥
सालोक साज सज्जौ प्रथक । कहौ मुत्ति[2] सारूप भर ॥
छं० ॥ ९५४ ॥

रावल जी का वचन कि धर्मरहित मायालिप्त पुरुष नरकगामी होते हैं ।

तब कहि रावर सिंघ । सुनहि जामानि राज वर ॥
भल पुच्छिय भर समय । सार संसार कला धर ॥
कहिय पुराननि बत्त । रिष्य आगम बहु विथ्थरि ॥
कपिल गाय कह्यौ भरथ । कहिय पारथ ग्यान सु हरि ॥
इन काल द्रष्ट इय चित्त निज । सुप अग्गै आसुर सयन ॥
संषेप कहौं तुम तत्त मत । मझ्झे गहि रापौ सुमन ॥
छं० ॥ ९५५ ॥

काल तिमिर पर वर्यौ । चिंति तिहि अंस न बुझ्झऔ ॥

(१) ए० कृ० को०—सौरत्त ॥ [२] ए० कृ० को०—मुत्ति ॥

अंतकाल सुप अद्ध। ग्यान त्रय कालह सुझ्झै ॥
जनम भयैं भयौ मूढ़। राति चैकालै[1] पलट्टै ॥
निंद मद्द धन काम। धाम आवरदा घट्टै।
बंधनह अप्प अरमुघ्घ किय। गज्ज जेम उनमद फिरै ॥
रिधिजात जंत दिष्यो नयन। नहि अचिज्ज नरकहि[2] पिरै ॥
छं० ॥ ६५६ ॥

प्रश्न क्षत्री भव पार कैसे हो सकता है।

दूहा। [3]कहैं राइ जामानि तब। किमि भव तरियै पार॥
कहौ राइ जोगिंद तुम। गुरमति त्रिभुवन सार ॥
छं० ॥ ६५७ ॥

रावलजी का बचन-क्षत्री धर्म्म और सालोक मुक्ति कथन।

कवित्त। जाग्रति सुषपति सुपन। तुरिय अवस्था ये च्यारहि ॥
ता मध्ये वय ग्रहै। लहै सद असद सु सारहि ॥
मात पित्त मानै सुदेव। देवकरि आवध मानै ॥
स्वामि ध्रम्म आचरै। दुष्ट क्रित धरै न कानै ॥
समपै सुक्रम सह हरि सहस। अगम गंम पायन धरै ॥
सुष दुष्य स्वामि निज सुद्दरै। इम पत्री पारह तिरै ॥
छं० ॥ ६५८ ॥

बेद[4] नीति धर चलै। स्वांमि ध्रम्मह नन चुक्कै ॥
जोग विद्ध जोगवै। अप्प हरि ध्यान न सुक्कै ॥
सवद जोति रहै लीन। ध्रम्म क्रत वासर क्रम्मै ॥
जुद्ध काल संपत्त। आय अरि षुत्तह अम्मै ॥
संकलपि सीस सांई सरिस। मनह निरंजन जोति द्रग ॥
मधि रचै सूर बिंबह सुमन। एह मुगति[5] सारूप मग ॥
छं० ॥ ६५९ ॥

---

(१) ए० कृ० को०—त्रैह (२) ए०कृ०को०—नरकह पैरै।
(३) ए० कृ० को०—"कहौ राय जोगिंद गुर, तुम मत त्रभुवन सार।
(४) को०—देव। (५) मो०—मुकति।

पियै सगति धर श्रोन । पिंड पावक आहारै ॥
सांइ समप्पे प्रान । सीस उर ग्रंकर धारै ॥
श्रंत तुट्टि पय चंपहि । डिंभ लग्गहि स्रग गिद्धिय ॥
जय बंछै निज स्वामि । लगै तारी मन बद्धिय ॥
मंडलह हंस हंसह जुरै । जीय जोग गति उद्धरै ।
निरकार ध्यान रापै सु निज । इम भव सारूपह तिरै ॥
छं० ॥ ९६० ॥

नृबैर भूत भव सकल । अकल आनंद कलन मन ॥
काम क्रोध मद रहित । अहित हित चित्त ग्रेह तन ॥
निंदा अस्तुति समति । रमति स्वांमित्त समर रन ॥
लज्जा धर कर बज्ज । अङ्ग बज्जंग अरिन गन ॥
जंप्पौ सुगस जामानि जद । अनहद सद मत्ता मवन ॥
जानंत विदुप मति सकल तुम । बहुत बात जंपत कवन ॥
छं० ॥ ९६१ ॥

प्रश्न-राजनीति का क्या लक्षण है।

दूहा ॥ राजनीति पुच्छिय सुफरि । जद्दव जाम सुभाइ ॥
किम छची भव उत्तरै । जंपि समर न्रप राइ ॥ छं० ॥ ९६२ ॥

रावल जी का वचन-राजनीति वर्णन।

पद्धरी ॥ भव पार तार उद्धार बात । सुनि कहौं जद्द जामानि तात[1] ॥
रजनीति बिद्द पहिलै सुध्रम्म । मालीय काम त्यौं[2] न्रपति क्रम्म ॥
छं० ॥ ९६३ ॥

लटि गये मूर तर जरनि हीन। तिन पोषि पानि फुनि पुष्टि कीन ॥
तिम करै सुहित ते हीन पुष्टि । मनसा प्रसन्न सद रहै तुष्टि ॥
छं० ॥ ९६४ ॥

फल फूल डार लुनि लेइ कच्छि । न्रप सचिय करपि कर हरै लच्छि ॥
नहि लेइ माल न्रप करि उपाइ । सरिजाइ सुफल त्यों लच्छि जाइ ॥
छं० ॥ ९६५ ॥

(१) कृ० ए०—बात, मो०जात ।
(२) ए० कृ० को०—ज्यों ।

सिरजोर सीस सचित्र जौ होइ। होइ साप भैद विपरीत कोइ॥
ज्यों कौन पातवै रोचनेव। नृप सावधान मन रहै तेव॥

छं० ॥ ९६६ ॥

लघु बढ़ि हछि ज्यों करि उतंग। त्यों हीन नरनि[1] नृप करै चंग॥
हुअ बंक डार जे चलहि झूलि। तिन छंटि छुटि बढ्वै खूल॥

छं० ॥ ९६७ ॥

जे ध्रत्त राज मन्ने न पंक। तिन जर उपारि कट्टै सुवंक॥
बंबूर बारि ज्यों बाग होइ। कंटकनि वंक भट रष्पि जोइ॥

छं० ॥ ९६८ ॥

जे धरा काज धरधरै धाइ। अंकुस गयंद त्यों जोर जाइ॥
वर जोर सचिव बघकर अपान। द्रिष्टतव[2] सरप ज्यों दुगध पान॥

छं० ॥ ९६९ ॥

परधान चीय नृप जोर जाहि। धर जात बेर लग्गै न ताहि॥
[3]सेवकिनी पत्ति जित रामै नाह। विलसै ससचिव लै लच्छि लाह॥

छं० ॥ ९७० ॥

दूहा ॥ इह जामानी कथ्थ कथि। कहि संषेपिय उद्ध॥
सजौ जूह सज जुद्ध भर। सनसुप अरि वेनु युद्ध[4]॥

छं० ॥ ९७१ ॥

रावलजी का सब राजपूत योद्धाओं को समझना और सब का रणोन्मत हो का युद्ध के लिये उद्यत होना।

पद्धरी। संबोधि सुभट षुम्मान राइ। आभासि सबें अप्पा सुभाइ[5]॥
सामंत सीह अरसिंह बोलि। जैतसी लषमन लष्प ओलि॥

छं० ॥ ९७२ ॥

साजंन सीह सदि लषम सीह[6]। सत स्याम सीह[6] रतनं अबीह॥
तेजसी राव कुंडल करंन। देवरा देव न्त्रिभभै सरन्न॥

छं० ॥ ९७३ ॥

---

(१) ए० कृ० को०—जनानि। (२) ए० कृ० को०—दृष्टंत।
(३) ए० कृ० को०—ज्यों सव किनी पत्त जिम रमै नाह।
(४) ए० कृ० को०—वे बुद्ध। (५) ए० कृ०को०—राइ (६) ए०कृ०को०—वामंनसिंह

आभासि भीम भय अभय सिंघ। सूरत्त दत्त एकंग रिंघ॥
सासंग राइ भर समर राउ। उद्दसे रोम भ्रगुटी उयाउ॥
छं०॥ ९७४॥

जंपेव ताम दष्षिन गुरेस। आयस्स सांइ अप्पौ सुरेस॥
उच्चरहि ताग आहुट्ट ईस। अप्पौ सुमंत सामंत दीस॥
छं०॥ ९७५॥

प्रोकम्म काम्म उभ्भार दुट्ठ। असि दाय घाव नंपौ अदिट्ठ॥
दैवत्त क्रत्य आघात अप्प। रप्पै सुदंड चारी सु दप्प॥छं०॥९७६॥
तुम उंच नाम सूरत्त साप। नप्पियै एक सभ्भेव लाप॥
सव सज्जौ उद्ध सौजुद्ध मत्त। कीरत्ति अत्ति वट्टै कवित्त॥
छं०॥ ९७७॥

जंपहि सुभट्ट सुनि समर राज। लप्पहु सु घत्त साद्रत्त काज॥
असि स्राक वाक वर्ज्जै अयास। सम मिल्लहि सूर नर जोति भास॥
छं०॥ ९७८॥

उच्चरिग ताम सामंत सींह। निज भ्रात जुद्ध लप्पहु स लीह॥
सामंत सूर चहुआन भार। वुक्कस्रामि धीर वाजंत सार॥
छं०॥ ९७९॥

आये सुभट्ट रावल रहस्सि। उभ्भरे व्योम लग्गे उहस्सि॥
आयौ सुकन्ह सुहवन्न तोम। सुअ अनुज वंधसिप्पहि सुरोम॥
छं०॥ ९८०॥

वाने विरद्द वंधें सुच्चार। आवरिय अधिक सूरत्त भार॥
भर हरिय भीर अग्गर सहार। संकरहि विषम सुर साइ पार॥
छं०॥ ९८१॥

भज्जनां राइ संकर पगार। सरनैत अत्त वाहां उगार॥
झल हलिग तेज वर भाल भास। सूरत दत्त लग्ग अयास॥
छं०॥ ९८२॥

उद्दसे रोम भ्रगुटी उयाह। वीरत्त घत्त वद्धै वराह॥
विस्साल अंग आरत्त ओप। जग्गैव प्रलै मनु काल कोप॥
छं०॥ ९८३॥

रोमंच उच झल्लरि उयाल। उच्चरयो सिंघ अग्गे सुढाल॥

इह मत्त रत्ति अस्माव सानि। उतमेछ सज्जि उभ्भै उतानि।
छं० ॥ ९८४ ॥

बलिभद्र वीर कैलास वान। कुब्बेर दच्छ मंते मतान॥
इह जुद्ध विद्धि अष्षै वषान। कलहंत केलि लग्गी भरानि॥
छं० ॥ ९८५ ॥

उब्भरै सद्द सुनि सुनि निसान। संभरिय राइ चहुआन पान॥
आतुर अनंत षग मग्ग दान। पति सरस सुगध वांछित विहान॥
छं० ॥ ९८६ ॥

शिवजी का यक्ष से कहना कि इस युद्ध का संपूर्ण वर्णन करो।

कवित्त। सुनिय बत्त जटधार। चित उब्भार रहसि रजि॥
मन विलास तन भास। रोम उल्लास तास सजि॥
कहै दच्छ सम ईस। कहो वेताल विवरि कथ॥
अति लग्गै आनंद। प्रेम पूरन भारथ्थ कथ॥
प्राकंम नाम सुभटन प्रथुक। कहै वीर सा विवरि विधि॥
असुरांन पान हिंदू तुरक। ताहि सु जंपौ जुत्त अधि॥
छं० ॥ ९८७ ॥

यक्ष का युद्ध का विधिवार हाल कहना।

दूहा॥ कहै दच्छ कैलासपति। सुनि धर श्रवन सुठान॥
सुभर जुद्ध लग्गे अतुल। चाहुआन सुलतान॥
छं० ॥ ९८८ ॥

प्रातःकाल होतेही राजपूत वीरों का घर द्वार को तिलांजुली देकर युद्ध के लिये उद्यत होना।

कवित्त। होत प्रात सब सूर। बज्जि घरियार फट्टि पहु।
लिखि बारन वर राज। बीर संदेस तत्त कहु।
स्वर्ग मग्ग रुक्किये। चित्त रष्षौ पुनि धीरं॥
अच्छरि वर संग्रहै। लेहु अच्छरति सरीरं॥
इत्तो न हेच दंपतिय हित। दहंन सरन हित आजयौ॥

जाने कि चित्र पुत्तरि लिषिय । जीव कविन इन लग्गा ॥
छं० ॥ ९८९ ॥

दूहा । दै पानी ढिल्ली धरा । मन सा पानी रष्पि ॥
सो चिंत्यौ संभरधनी । जन्म सुकित्तिय अप्पि ॥
छं० ॥ ९९० ॥

लज्ज सुद्दी गहियै दुखा । कदृय किंत्ति न लग्गि ॥
दिन सो नर मिलि आइयै । गोरी अग्गि सुजग्गि॥
छं० ॥ ९९१ ॥

रावल जी का कन्हा से कहना कि तुम पीछे की सेना की सम्हाल पर रहो ।

जोर मंडि कन्हा रहै । वढ़ गुज्जर रप्याइ ॥
सज्जि सेन चतुरंगिनी । उत्तर रतन वजाइ ॥
छं० ॥ ९९२ ॥

हात स्नूर सो उग्गते । बहुआना सह पार ।
क्रूक मच्चिच सरुहौ सरिय । जग्गि अभंगे भार ॥
छं० ॥ ९९३ ॥

स्नूर सुअन जुह्नित अथिग । गई सु तिथ्थि अतीत ॥
वाम कलह कंदल अनी । सौ प्रतिपदा अदीत ॥
छं० ॥ ९९४ ॥

कन्हा का कहना कि हम तुमसे पहले जूझेंगे ।

चित्रकोट पति सों कहै । कन्ह सुभर वर ताह ॥
हम तुम अग्गे झुझ्झिहै । इह जुह्नानी राह ॥
छं० ॥ ९९५ ॥

कवित्त ॥ गिर संभरि दष्षिन नरेस । निज भत्त मंत वर ।
तुम जंपहु सामंत । स्नूर अति तेज जुद्ध जुर ॥
आज देव तुम सेव । कौन साजै जुध हथ्थं ॥
पल असंष परदहि । पयांर बंधौ वर हथ्थं ॥
पल परहि जाम तुद्दहि धरनि । जाम हहु कहै सुभर ॥

दह गुनो वीर वीरत्त जगि। तास तेज बंधहि सुभर ॥

छं० ॥ ९९६ ॥

रावल जी का पुनः समझाना परंतु वीर कन्हा का हठ करके युद्ध में प्राण देने को उद्यत होना।

विअष्षरी ॥ तव रावर जंपै सम कन्हं। हौं वुझ्झौं तुम तेज मछन्नं ॥
तुम रष्षहु सुपच्छ धर बंधं। तुम राजौ गति राज सु संधं ॥

छं० ॥ ९९७ ॥

तुंधर तेज नेज दल तोहं। तू रापै दच्छिन गिरि सोहं ॥
[1]तो पच्छां जेहौं वर वीरं। है सुर है राजै तौ नीरं ॥

छं० ॥ ९९८ ॥

तब हसि कन्ह कहै पति बंधं। रजै नही तुम विना निबंधं ॥
हौं बंधो वर बिरद चियारं। लहियै सो[2] लागंते सारं ॥

छं० ॥ ९९९ ॥

मैं बंधेव बिरद तुम सोहं। सो जागें झेलंते लोहं ॥
अज्ज[3] कज्ज साईं मो कंधं। मो कंधै जोगिनि पुर वंधं ॥

छं० ॥ १००० ॥

जुड अज्ज[4] मो इन्द्र निरष्षै। अज मो कंदल देव दनु लष्षै ॥
पल परबत्त रचौं गढ़ भारं। सलिता श्रोन प्रगट्टै सारं।

छं० ॥ १००१ ॥

जुध कौतिग कारी आनंदं। जोगिनि जच्छ वीर उनमदं ॥
रनचर आस करौं पल पूरं। को सामंत सत्त भर सूरं ॥

छं० ॥ १००२ ॥

तब समसिंघ कहै घुम्मानं। हौं वुझ्झौं तुम तेजर नानं ॥
मैं रष्षन तुम दिल्ली न किन्हं। सोइ कारन मैं चिंतन चिन्हं ॥

छं० ॥ १००३ ॥

रहैं नही वर सिंघ पच्छ वर। बिनसै क्रत कारन जोगिनि पुर ॥

(१) मो०—तो पच्छ जैहै वर वीरं। (२) ए०—मौ।
(३) मो०—अन। (४) ए० कृ० को०—कज्ज।

तुम प्राक्रम्म जद्दौ भर सारं । दंधह्हु बंध सिरौ भर भारं ॥
छं० ॥ १००४ ॥

तब रावर मिलि कन्ह प्रसंसे । आलंने राजे रह अंसे ॥
छं० ॥ १००५ ॥

रावल जी का कन्ह की प्रशंसा करना ।

कवित्त ॥ धरिय हथ्थ सिर कन्ह । अप्प अति अत्ति प्रसंसे ॥
आभासिय वर भर । अपान जंपे गुन अंसे ॥
उभै पप्प सम सप्प । बंध बंधे भर दप्पै ॥
न्निमल नेह निज लीह[1] । धम्म स्वामित्त सुलप्पै ॥
उभ्भारि तेग एलेक अग । स्वामि अग्र बोलै विहसि ॥
दप्पेव अग्र आसुर सयन । गयन लग्गि गज्जै रहसि ॥
छं० ॥ १००६ ॥

रावल जी के आज्ञानुसार राजपूत सेना का गरुड़व्यूहाकार रचा जाना ।

अप्प सुभर आहुट्ट । ईस दैपे आति दुज्जर ॥
तास हरपि सुघ तेज । गज्जि बीरत्त बीर वर ॥
तत्र जद्दव कूरंभ । इप्पि चिंते मन अप्पं ॥
अनिय व्यूह सज्जन । सुभार उभ्भर दल दप्पं ॥
वुक्कत्त व तास चिचंग पहु । वर आसुर क्कक्कार वर ॥
भिद्दै न अकल अरिहर गहर । आति आवट्टहि दुट्ट बल ॥
छं० ॥ १००७ ॥

तव जद्दव कूरंभ । राय रावल[2] प्रति वद्दिय ॥
चामर छत्र रपत्त । ग्रद्ध व्यूहं रचि गढ्ढिय ॥
एक पंप वलिभद्र । एक पंपह जामानिन्न ॥
चुंच[3] कंध पुंडीर । सेन संमुह सुरतानिय ॥
पग पिंड सिंघ आहुट्ठ पति । पुच्छ रच्चि मारू महन ॥
बामंग अंग प्रथिराज कै । सुभर जुद्ध मत्तौ गहन ॥

(१) ए. कृ. को.-नेह । (२) मो. जद्दल । (३) ए. कृ. को.-चैंच ।

छं० ॥ १००८ ॥

उधर हम्मीर को बीच में देकर यवन सेना का चन्द्र व्यूहा कार होना।

दूहा ॥ उत असुर सेना रची। मझ्झ[४] हाहुलि जंबु ॥
वह देषी चहुआन न्रप। सुष झलहलि लगि लुंब ॥[५]
॥ छं० ॥१००९ ॥

पुंडीर सेना का धावा करना।

कवित्त ॥ अरध चंद्र तत्तार। षान षन षान षुरेसी ॥
षां रुस्तम मारुफ। गरुअ गष्वरति गुरेसी ॥
हाहुलि राव हमीर। चमर बंधै दल दोही ॥
जिहि संसारह आय। सांइ दोही सिर जोही ॥
बिहु भाय ढलकि बद्दल मिलिग। करिगह मीरह दुअ बहसि ॥
पुंडीर राइ पावस न्रिपति। लरन लोह कढ्ढे सुहसि ॥
छं० ॥ १०१० ॥

दूहा ॥ फुनि पावस पुंडीर पति। बर करि बिनवै बत्ति ॥
गहि आनौ सुरतान कौं। कै हमीर सिर लत्त ॥ छं० ॥ १०११ ॥

पृथ्वीराज का पावस पुंडरी से कहना कि नमक हराम हम्मीर का सर अवश्यमेव काटा जाय।

तब राजा प्रथिराज कहि। सुनि पावस पुंडीर ॥
इतनौ परिहस सार[१] तुअ। काटहि सिर हम्मीर ॥
छं० ॥ १०१२ ॥

जथ्थ गरुअ गोरी सयन। गगन लग्ग उंडीर ॥
हुकम हंकि प्रथिराज दिय। तथ्थ भिरन पुंडीर ॥
छं० ॥ १०१३ ॥

(४) मो.-मद्धे। (५) मो.-मझ्झ लहलि लागी लंव।
(१) ए. कृ. को.-साह।

पुंडीर योद्धाओं का युद्ध।

रसावला ॥ जे पुंडीर जत्ती । महामल्ल घत्ती ।
लगें लोह गत्ती । मनो वीज पित्ती ॥
छं० ॥ १०१४ ॥
अविहात छत्ती । जुटे मेछ पत्ती ॥
मुदंगी सुरत्ती । रुरी भोरि[1] मत्ती ॥ छं० ॥ १०१५॥
गजं घाय अत्तौ । सतं वानि रत्ती ॥
गहे दंत दंती । चढी कुंभ मंती ॥ छं० ॥ १०१६ ॥
नचै जुग्गवंती । मनो इन्द्रपंती ॥
रुधी धार रत्ती । मनो इन्द्र हुत्ती ॥ छं० ॥ १०१७ ॥
इसी वीर वत्ती । सु भारथ्थ नत्ती ।
निरष्षी फिरत्ती । मनं वेन रत्ती ॥ छं० ॥ १०१८ ॥
दुहं सेन अत्ती । सुअं वानि रत्ती[2] ॥ छं० ॥ १०१९ ॥

कवित्त ॥ घरी अद्व आहत्त । मेछ हिंदुअ जुध जुट्टे ॥
सार धार न्त्रिहार । सार भर सारह तुट्टे ॥
दई वाह आहुट्ठ । समर पारस रह धाइय ॥
घरिय एक घरियार । सार वज्जै घन घाइय ॥
प्राहार धार धारह धनी । कन कलंक सम्हौ चढ़िय ॥
प्रतिपदा सघन आव्रत्त जुध । घरिय एक आवृत वढिय ॥
छं० ॥ १०२० ॥

हम्मीर की रक्षा के लिये तीन हजार गष्षरों सहित कई यवन सरदारों का घेरा रखना।

सहस तीन गष्षर गुराय । हाहुलि हमीर वहि ॥
मुररि मुररि मारूफ । ओट तत्तार षान रहि ॥
षल षुरेस षन षान । जानि लंडिय षग झिल्लिय ॥

(१) ए. कृ. को.—भीर । (२) ए. कृ को.-वर्त्ती ।

मनहु महिष मध मत्त । [1]कहर कानी दइ ढिल्लिय ॥
पुंडीर राइ पावस पहुर । झर उझार लग्यौ गयन ॥
कूरंभराय अरु जादवनि । अमर मोह भुलल्यौ सयन ॥
छं० ॥ १०२१ ॥

पुंडीर सेना का हम्मीर पर धावा करना।

हाय हाय उच्चार । भिरे पुंडीर सूर झलि ॥
बजिग लोह तन घन विहार । ब्रह्म संधी न मुष्ष पुलि ॥
पग्ग झटकि पायक प्रमोन । बीर उत्तरे सरम्भर ॥
रज्जि मेर बज्ज प्रहार । घाय अभग भंग धर ॥
चढि कंध कमंधन जोगिनी । सह मह उन मह फिरि ॥
नारद सु तुंमर जुद्ध चर । जै जै जै उच्चार करि ॥
छं० ॥ १०२२॥

रसावला ॥सु पुंडीर भारी, महमे पचारी। सुअं षग्ग झारी[2], सु सौभै उभारी
छं० ॥ १०२३॥

सो नंगा सु नारी, हकारै उभारी। दई देवि तारी, गिधिं उत्त फारी॥
छं० ॥ १०२४ ॥

करि नैर तारी, गिरिचा प्रहारी। कुलं सत्ति तारी. लगैं जानि भारी॥
छं० ॥ १०२५ ॥

षिझै बीर कारी,रतं नैन सारी । मह मोह धारी, छिनं मैं विसारी ॥
छं० ॥ १०२६ ॥

कहूं अस्स तारी,[3] सुभै रथ्य कारी। उतंमंग पारी. धवै षग्ग धारी ॥
छं० ॥ १०२७ ॥

निषंदी विधारी, असीसं उचारी। तिनं जोग गारी मुकत्तीन[4] हारी॥
छं० ॥ १०२८ ॥

(१) ए. कृ को. कहर कानि दई ढिल्लिय
(२) ए. कृ. को.-भारी। (३) ए. कृ. को.-नारी।
(४) ए. कृ. को.-मुकत्तीत।

पगं मग्ग पारी, झिनं मस्क रूपारी। सिरं ईस सारी. हर् यौ ब्रह्मचारी ॥
छं० ॥ १०२९ ॥

हम्मीर के एक भाई, पुंडीरों में से बारह योद्धा और बेंजल खवास का काम आना।

कवित्त ॥ परिग घाय नारेन। बंध हंमीर सुकतिवर ॥
द्वादस पट पुंडीर। सुभट उत्तरिय पग्ग झर ॥
धीर पवास वेजुला। झार धर धर तुटि वंधर ॥
उप्पर मंडि उचार। वस्यौ छाहुलि हंसंमर ॥
भजि वंस अग्ग पारिग परी। परिगह सौसह सीर धरि ॥
जीवत मरत्त भंजन दुजन। सांम द्रोह कीजै न वर ॥
छं० ॥ १०३० ॥

पुंडीर सेना के धावा करते ही यवन सेना के एक लाख जवानों का हम्मीर को घेर लेना।

दस हजार असवार। लष्ष पैदल सुपंति करि ॥
जवर जंग डरवान। छूटि हथनारि कूह करि ॥
सवर सूर पुंडीर। सार सहि सन्हो धायौ ॥
मार मार उच्चार। वीर वर वीर उचायौ ॥
पन वढ्ढि सूर कायर घटे। धरिय दीह उधरीय वर ॥
हम्मीरराइ जंवू धनी। लरन लोह पावस पहर ॥
छं० ॥ १०३१ ॥

पावस की पावस से उपमा।

सुरिल्ल ॥ झरि पावस सिर वर प्राहारं। वरषत रुद्धि धरं छिछवारं ॥
पग विज्जुल जोगिनि सिरधारं। वग्गी सौ जंवू परिवारं ॥
छं० ॥ १०३२ ॥

त्रोटक ॥ कटि टूक करें जिनके किरयं। मनौं इंद्रवधू धरमें रचयं ॥
[1]झमकै सषग्गीन षग्गनि वजै। सुनि दद्दति झिंगुर सद्द लजै॥
छं० ॥ १०३३ ॥

(१) ए. कृ. को.- झमक्कै स षग्गा नग्गन वजै।

लपटांइ सुसोकिय वेलतरं। पर रंभन रंभन रंभ वरं ॥
अक्रुरी बढि बेलि सुबीर वरं। बहि पावस पावस झारझरं ॥
छं० ॥ १०३४ ॥

पावस पुंडीर का हम्मीर का सर काट लेना।

कवित्त ॥ स्वामि बचन संभारि। हक्कि हैगै पावस तह ॥
लाषति दल मिलि गयौ। साम द्रोही हंमीर जह ॥
उहि सोंही करि संग। इहित कर पग्ग समाह्यौ ॥
घरी सुतन षिजि षेत। सीस दुरजन कै वाह्यौ॥
बाहंन षग्ग कंप्यौ पिसुन। धमकि अंग धरनिहि पर्यौ ॥
नारद्द बीर बेताल मिलि। जोगिनि सद जैजै कर्यौ ॥
छं० ॥ १०३५ ॥

दूहा ॥ सीस छेदि लिय संगि वर। मद्धि साह्र दल मीर ॥
आय सूर सामंत पें। धनि धनि जंपत धीर ॥
छं० ॥ १०३६ ॥

कवित्त ॥ पिरिग धरनि हम्मीर। भीर भंजी सेना भिरि॥
निघटि सेन हम्मीर। तदिन ठढ्ढौ पुंडीर लरि ॥
षान षान षावास। चल्यौ धोराहर तह ॥
स्वामि ध्रम्म पावस सुपति। चढे कित्ती चित सद्दौ ॥
दलमलिग नाम दुज्जन सुपर। दह भज्जिय प्रथिराज चर ॥
धीरंज धीर धीरहु तनो। जस सुध्रम्म लीनो सुधर ॥
छं० ॥ १०३७ ॥

पावस पुंडीर का हम्मीर का सर काट कर राजा के पास आना और राजा का उसे स्वामिधीन कहना।

जित्ति सेन हम्मीर। माम मरदे हम्मीरं ॥
बजिय बाज नीसान। धजिय गज सबद सुबीरं ॥
न्रप अग्गी उर दक्षत। सुतन चंदन भो चंदन ॥
अंस्रत संषिमम उल्लसि। भयौ अरि कंद निकंदन ॥
सों दोइ कह्यौ षहुआन बर। तिन मुष सों साध्रम्म कहि ॥
पुंडीर धीर तसलीम करि। तेग वेग चौहथ्थ गहि ॥
छं० ॥ १०३८ ॥

एक भूप रेवंत। तास पुत्री रेवंती ॥
पर नावन की बार। सदा सो धनुष वहंती ॥
ब्रह्म अग्ग कै जोय। रही जभी लुघरीय दुत्र ॥
तिहि घट काके गिलत। जाप छचीस वरष भय ॥
ते परन नरिंद कविचंद सुनि। काल आनि इक दिन हरिय ॥
लोमंत खूर न्रप मोह तजि। वीर भद्र इम उच्चरिय ॥

छं० ॥ १७०९ ॥

पिप्पलाज रिपराज। करत कैलास तुंग तप्र ॥
पुत्र हेत मन आनि। गयौ ब्रह्मा देषन अप ॥
होइ प्रसन्न कह्यौ संगि। तोहि इछावर अप्पहु ॥
तिहि अप्पिय सुह अचल। रा[illegible] अप्पहु ॥
हँसि कहिय मात सा[illegible]। पुत्र भजन भगवान करि ॥
संसार [illegible] साचौ अवर। ताहि छंडि [illegible] तम उधरि ॥

छं० ॥ १७१० ॥

वीरभद्र का कवि के सिर पर हाथ रखकर मुल गुरु मंत्र देना।

दूहा ॥ तव हथ्थ धर्यौ सिर भट्ट कै। पल बंधन कविनथ्थ ॥
तव चिकाल सुझ्झिय सनह। गहि जोगिनिपुर पथ्थ ॥

छं० ॥ १७११ ॥

कवित्त ॥ तव कहै वीर कविचंद। ग्यान गुर कहौं गहौ उर ॥
नालि एक संषिनी। मद्धि दस लोपि गम्मि गुर ॥
तिहि संपूरन रस भर्यौ। ब्रह्म रंभ्रह सधि आसन ॥
उलटि कमल उद्धर्यौ। बंधि तारी सुर सासन ॥
प्रज्जारि जोति प्रग्गट कर्यौ। चढ्यौ तेन आयास हुति ॥
छुट्टौ सुमोह भव पास सह। भिलिय अप्प हरि आस जुति[1] ॥

छं०॥ १७१२ ॥

---

(१) ए०-क०-को०-हुति।

कवित्त ॥ परम हंस फल वंस । राम वाचिष्ट मंच सुनि ॥
अवधि राज रघुवीर । नटिय सभ संड़ि छच धूनि ॥
छिन नरिंद चहि निंद । भयौ चंडाल परस तह ॥
न छुअ न छुअ सुद्दित्त । सुद्दि सु लग्यौ कलंक इह ॥
जाग्रत जोग दिय्यौ सुपन । नकरि चंद सनमंध दुप ॥
संचरिय लोक सोकह वसन[1] । कह कविंद्र लम्भिय ससुष[2] ॥
छं० ॥ १७०५ ॥

सोक लोक संसार । [3]मिटै ओव सर ब्रत्त कह ॥
तुअ जुगिंद जट पुच । ग्यान गोरष्य तत्त लह ॥
हो मनुच्छ माया समंद । तिर तह तन वुड्डिय ॥
हरि तरंड लागंत । कोह कंदल सों जुड्डिय ॥
बीराधि बीर जपा[illegible] । जहां सुजीव दुष्यन लहै ॥
देवाधि[illegible] कमल । सों [illegible] सच्चिय[4] वहै ॥
छं० ॥ १७०६ ॥

जग्य करन भूपति चसंग । वाचिष्ट वुलायौ ॥
विश्वामिच सों समर । पर्यौ अंटो नह आयौ ॥
नेंम रिष्य मष मंडि । सुन्यौ वाचिष्ट लोपि गुरु ॥
श्राप दियौ करि कोप । भयौ चंडाल भूप डरु ॥
तप जोर ओर दिस लोक रचि । विश्वामिच पद इंद्र दिय ॥
कही वीरभद्र कविचंद सम । च्यार जुग्ग लगि अमर किय ॥
छं० ॥ १७०७ ॥

विश्वामिच तिहि रचिय । सार तरवर लय मानुष ॥
प्रात समय जिम कुसुम । प्रफुलि नन पाय महा सुष ॥
नव रस करत विलास । धरे उर अंदर मच्छर ॥
संझ परत कुम्हिलात । कहत बहु जिए संवछर ॥
तुम तो नरिंद राजस भुगति । बहुत दिवस मृत लोक महि ॥
संताप सोक माया तजहु । बीरभद्र समझाय कहि ॥
छं० ॥ १७०८ ॥

(१) ए० कृ० को०—सवन ।　　(२) मो०-सुसुष ।
(३) ए० कृ० को०--मिटै आवन सर ब्रत कह ।　　(४) ए०-सज्जिय ।

तुहि लग्गा जालप्प । काज न्रिप काज अरिय तय ॥
तुहि भयौ इष्ट आभिष्ट जे । साइ क्षित कारन आनि जिय ॥
संचरहु दिल्लि मारग सुकवि । करहु राज उद्धारनिय ॥
छं० ॥ १७०१ ॥

कवि का कहना कि मैं बाल स्नेह के कारण विकल हूं।

कहै ताम कविचंद । अहो बीराधि बीर सुनि ॥
हम मनुच्छ मय[1] मोह । उदधि बुड्डै सुतत्त तुनि ॥
हमहि राज इकवास । सथ्य उतपन्न संग सदि ॥
नेह बंध बंधियै । करिय अति प्रीति राज रिदि ॥
सामंत सकल अति प्रेम तर । बाल नेह उर धुर कियौ ॥
वलिभद्र नेह संसार सुष । किम सुनेह छंडै जियौ ॥
छं० ॥ १७०२ ॥

वीरभद्र का कवि से कहना कि अब चिंता न करके राजा का उद्धार कर।

तब हँसि जंप्यौ वलिभद्र । अहो वरदाय मोह मय ॥
कहौं ग्यान अति आदि । उआ संग्रहौ मोय सय ॥
तुम उतपन संग राज । षपति हाय है जुराज सँग ॥
तुम सहाव सम्मान । आय बंध्यौ सुब्रह्म अँग ॥
मम करह मोह चिंता चतुर । धरहु अथ्य गुर ग्यान हिय ॥
तुम चलौ सु कवि जोगिनि पुरह । करहु राज उद्धार दिय ॥
छं० ॥ १७०३ ॥

दूहा ॥ कहै सु कवि गुर वीर सुनि । जिहि आदि अंत जुति संग ॥
नेह गंठि रस रंजियौ । किम चुक्कै चित रंग ॥
छं० ॥ १७०४ ॥

बीरभद्र का कवि को प्राचीन इतिहासों का प्रमाण देकर समझाना कि एक दिन सब का अंत होता है होनी अमिट है अस्तु शोक न करके कर्तव्य पालन करो।

(१) ए० कृ० को० मन।

जगसन्न राव धंधेर [1]सांम । सम सथ्थ षेत छंड्यौ पराम ॥
निक्कर्यौ राव हाडा सुमेर । हम्मीर सुतन तन लोह भ्केर ॥
छं० ॥ १६९३ ॥

गष्षरह राव सारंग देव । निक्कस्यौ पंच हय कट्टि तेव ॥
चालुक्क वंभ वर भान साह । हय अट्ठ कट्टि गुर गिम्म गाह ॥
छं० ॥ १६९४ ॥

रनसट्टि घाव वींध्यौ जुअंग । उप्पारि लीन जब वित्त जंग ॥
परिहार वीर[2] आयौ सुपुट्ठि । रन बीर सुतन करि तिथ्थ तुट्टि ॥
छं० ॥ १६९५ ॥

सुध्यौ सुषेत नर [illegible]ट्ठि आय । उप्पारि षेत भर केकजाइ ॥
सर सत्त रह्यौ रन चाहु[illegible]न । तिन कह्यौ सुक्रम अदभुत्त पान ॥
छं० ॥ १६९६ ॥

गुर राम अंग अनभंग कीन [illegible]दि सस्त्र सव अंग तीन ॥
संग्रह्यौ मेछ हिंदू नरिंद । कट परे असुर हय गय सुभिंद ॥
छं० ॥ १६९७ ॥

सव सहस्स वीस परिहंदु सेन । दुअलष्ष मिच्छ [illegible] पित्त तेन ॥
अनि सुनिय कथ्थि जे कहिय दच्छ । सुनि चंद श्रवन धर पर्यौ मुच्छ ॥
छं० ॥ १६९८ ॥

दुहा ॥ करि जुहार ढिल्लिय नयर । मुक्कि नयर जुगिनेस ॥
जस भावी तस न्रिम्मयौ । करिन बीर अंदेसु ॥ छं० ॥ १६९९ ॥

राजा का बंधन सुनकर कवि का मूर्छित होकर गिर पड़ना ।

सुनिय वत्त कविचंद न्रिप । तन मन कंप्यौ ताम ॥
पर्यौ विकल धुक्किय धरनि । कट्टि मूल तर जाम ॥
छं० ॥ १७०० ॥

वीरभद्र का कवि को प्रबोध करके समझाना ।

कवित्त ॥ कवि आश्वासित वीर । बाहु धरि धरनि उठायौ ॥
सुष आरोहिग पान । ग्यान गुर तथ्थ सुनायौ ॥
न करि दुष्ष हो भट्ट । काल गति कठिन दुरिय जय ॥

(१) ए० कृ० को०—ठेठरे । (२) ए० कृ० को०—पीर ।

रनं बग्गरी देव गुर राम रानं । हनू जोह जोहान छीहान तामं ॥
छं० ॥ १६८३ ॥

परसंग भारथ्थ पूजा पहारं । घटं चाट संग्राम वंकट्ट धारं ॥
कान कुंडली राइ छत्रभंग भारे । जुरे जाजु आवाज चयलोक नारे ॥
छं० ॥ १६८४ ॥

अरें लुंधुले सोपियं ओन कंठं । परीहार पीपा हरं माल संठं ॥
परे सत्त दह सूर सामंत पग्गे । ग्रहं भान जिम मीर चित्रकोट लग्गे ॥
छं० ॥ १६८५ ॥

सुनिय चंद बरिदेन जल उरह सोपं। गहै दिष्षि रुलदेव सुरतान घोरं ॥
छं० ॥ १६८६ ॥

दूहा ॥ कहै वीर हिन्दू तुरक[1] । सुनि कविचंद सुजान ॥
बदि सावन पंचमि दिवस । गह्यौ मेछ चहुआन ॥छं०॥१६८७॥

युद्ध में मृत सामंत एवं रावत योद्धाओं की नामावली।

पद्धरी ॥ सुनि चंद भट्ट कहै भद्र वीर । परि सुभट सूर चहुआन धीर ॥
पति चित्त कोट परि समर राव । दस तीन सहस अरि करन घाव ॥
छं० ॥ १६८८ ॥

चामंड राव परि दंड दाह । जदु जाम जूझ आजान बाह ॥
कूरंभ राव बलिभद्र वीर । पामार जैत जुझि पग्ग धीर ॥
छं० ॥ १६८९ ॥

परसंग राइ पीची प्रचंड । बग्गरी देव अरि पारि ठंडि ॥
परि राज काज गुर राम राज । सक सिलह दार सारंग साज ॥
छं० ॥ १६९० ॥

परि पल्ल धार परिहार षेत । [2]गुज्जरह राम परि स्वामिहेत ॥
लाहाव सेन करि लूम लोम । दिपि प्रात तार जनुथान थाम ॥
छं० ॥ १६९१ ॥

मुरि सुगध षेत जिन स्वामि जीन । बिन जुद्ध बुद्ध को[3] बुद्ध हीन ॥
संकरह सिंघ मोरी सुराव । बिन लोह छोह छंड्यौ पराव ॥
छं०॥ १६९२ ॥

---

(१) मो०—चरित । (२) ए० कृ० को०-परि जुझिझ जुद राजि स्वामि हेत ।
(३) ए० कृ० को०—को ।

दूहा ॥ पहिचान्यो तिहि चंद कवि । वीर भद्र तन वीर ॥
जा जुग्गिनि पुर जंगलिय । अब धरनि न रष्षै धीर ॥
छं० ॥ १६७५ ॥

वीर भद्र पहिचान रज । पुछिछ वत चहुआन ॥
कय भारथ पारथ सुप्रथु[1] । किम जित्यौ सुरतान ॥
छं० ॥ १६७६ ॥

वीरभद्र का युद्ध का हाल कह कर पृथ्वीराज के पकड़े जाने का समाचार कहना ।

[illegible] दुह कोद मीरं गही वग्ग हौइ अग्गन्निप वीर मीरं ॥
[illegible] गौं ॥ बजी हक्क दिग धक्क [illegible] फटै धरनि दर राय वर राइ जोरं ॥
तुटै गेलं गुरग्गैर होय घोर सोरं ।
छं० ॥ १६७७ ॥

[illegible] हरकि भर भरकि मन भुवनदीसं ॥
धरकि सेन सम साहि धरि ढाल सीसांतरं [illegible] चारुपानं ॥
पर्यौ चिकुट गढ कूट लंकेस थानं । करपि विकट दनुजं [illegible]
छं० ॥ १६७८ ॥

बरकि कन्ह कर करकि घन घोर पब्बं । झरनि सम झमझार गहि चक्क गब्बं ॥
ठव्यौ सागरं आगरं पब्ब पत्तौ । इतौ उट्ठि चहुआन आनि आन यत्तौं ॥
छं० ॥ १६७९ ॥

पर्यो सिंध धर तुट्टि आघाट वाजं । चिहुं ओर सुरतान नीसान गाजं ॥
मनों पंजरं बान हनुमान ओपैं । घनं घाय सोमेस तन बीर कोपै ॥
छं० ॥ १६८० ॥

चिहुं[2] बाह सामंत साधट्ट कट्टै । छतं छक्क उड्डि छिंछं[3] भुअ भीर पट्टै ॥
सुअं ईस उस्सा बलीभद्र काछ्ये । भरं भीषमं द्रोन भारथ्थ पछ्यें ॥
छं० ॥ १६८१ ॥

[illegible] असौ । घिरे बंनरं बीर नीरद्दितैसौ ॥
पर्यौ कंठमाल जरि कंठ दूष्षे । तहां चंद ठट्टौ उरं माल दिष्षे ॥
छं० ॥ १६८२ ॥

बलीभद्र जैतं जदौं जाम सिंघं । भरं चांमंड पावसं बीर बंधं ॥

---

(१) मो०—कि प्रभु । (२) ए० कृ० को०—चिहु बांह सावंत सामंत कट्टै ।
(३) ए० कृ० को०—सीस ।

बेणीदत्त का पृथ्वीराज से भोजन करने को कहना और पृथ्वीराज का स्नान करके भोजन करना।

दूहा ॥ तब बेनी दत विप्र कहि। सुनि बंधन सुविहान ॥
अन प्रसाद राजन करौ। आम मांस चहुआन ॥छं०॥१६६८॥

कवित्त ॥ तब चिंते चितराज। संभु वर बोल संभारिय ॥
मानि कियो आहार। तिने सब परिकर सारिय ॥
दस बंभन रहै पास। चिन तरं भोम सुधारिय ॥
करे पाक विधि विप्र। विविध व्यंजन रस कारिय ॥
जल उस्न राज असनान किय। वर रोहिय धौतह वसन ॥
करि ध्यान संभु जप निति किय। आहारे अनह व्यसन ॥
छं० ॥ १६६९ ॥

दूहा ॥ इहि विधि विति चहुआन रहि। वर सेज्या सुभथान ॥
बत्त पुरान कवित्त प्रति। सुनहि बचन गुर ग्यान ॥छं०॥१६७०॥

वीरभद्र का कविचन्द के पास जाना और कवि का उससे युद्ध का हाल पूछना।

त्रोटक ॥ इति दछ्य कथा सुकथी कथियं। अलिकावलि अंग नमं सथयं ॥
भव राजित धूम्ररसं धुनियं। तन जग्गित रोम रोमावलियं ॥
छं० ॥ १६७१ ॥

कर डोरुअ डक्क डहक्क कियं। विथुरे सिर अर्क कुसुंम छियं ॥
उनमत्त पहुप्प पराग कियं। वड़वा नल नैंन झलं मलयं ॥
छं० ॥ १६७२ ॥

गल चंद लिलाट अमी घिसयं। पुनि डंमर डोंरु पुने उचियं ॥
सिर गंग सिरोहिय कै धसियं। सिव आनव देपि लिवा हँसियं ॥
छं० ॥ १६७३ ॥

मुनि वघघ चरम्म करीम जियं। पुछ उच्चत नंदिय के वछयं ॥
चुहकारत भेष लग्यो अछियं। इय चंद कवी कविता कथियं ॥
छं० ॥ १६७४ ॥

(१) ए० कृ० को०—तन।

पद्धरी ॥ विन द्रग्ग भयौ चहुआन रोन । मन संक्षि रोस सुभिक्षग परान ॥
उहास रोस घुंटहि नरिंद । आहार पान जल तजिग निंद ॥
छं० ॥ १९९१ ॥

रजनी सुअंत महुरत्त बंभ । देषंत दरस-सुपनंत सिंभ ॥
आरोहि वृषभ सिर पंच तुंग । अंबहं उद्ध सरि चर्म अंग ॥
छं० ॥ १९९२ ॥

उर रुंड उरग कंठ कालकूट । रजिभाल चंद वुध जटाजूट ॥
इह बाह पूरि आवद्ध अप्प । रज्जिय विभूति प्रमि पार तप्प ॥
छं० ॥ १९९३ ॥

[illegible] विसाल । बडवान मद्धि झलकंत झाल ॥
नैनेत तुंड प्रति [illegible]
इह रूप आय उच्चरयौ[1] [illegible] । मम मन्निषेद चहुआन जीस ॥
छं० ॥ १९९४ ॥

आहारि अन्न मति हो [illegible]लीन । छुट्टौ सराप [illegible] प्रचीन[2] ॥
आहारि अन्न मति छंडि मंद । उद्दरै आय तुहि भट्ट चंद ॥
छं० ॥ १९९५ ॥

कारन्न परहि तुअ अग्र प्रान । मम करहु पान बल आसमान ॥
इम कहि ईस हुअ अंतध्यान । जग्गयौ राज मौभर[3] विहान ॥
छं० ॥ १९९६ ॥

शाह का बेनी दत्त ब्राह्मण को पृथ्वीराज को भोजन कराने की आज्ञा देना ।

कवित्त ॥ भौ विहान सुबिहान । बोलि हज्जूर हुजाबह ॥
बेनीदत्त सुविप्र । आय सनमुष्ष सितावह ॥
दिय आयस साहाब । रहौ तुम राजन पासह ॥
[illegible] । [illegible] उदासह ॥
आए सु उभै राजन्न प्रति । बेनीदत्त सुविद्धि कहि ॥
प्रथिराज अहारो अन्न रस । हम जच्चे तुम पास इह ॥
छं० ॥ १९९७ ॥

(१) ए०-उदरयौ । (२) ए० कृ० को०-पूरन प्रवीन । (३) ए० कृ० को०-मौ वर ।

काढ़ौ बीर बेताल । सूर सामंत कालप्पिय ॥
काढ़ौ बीर संकलन । बीर सनि ज्यौं ग्रह लंघौ ॥
को छिंद्रू दल जानि । ग्यान दिन इक न पंघौ ॥
आरिष्ट राह झंपै रबिहि । चंद जोति चक्रु दिसि द्रवै ॥
ग्रह साल जोइ बंदै नहीं । नीर मंक्षि रप्पै हवै ॥

छं० ॥ ११७५ ॥

दच्छ बंध कुव्वेर । नाम सुव्वेर सु ब्रत्तिय ॥
तुम सह कंदल कल्यौ । सूर सामंत कलप्पिय ॥
के मनु छिंदनुं क्र [illegible] नंदि करि उट्टिय ॥
किम अरिष्ट आ [illegible] षलि फट्टिय ॥
किम किम सु द [illegible] त दंती उप्पारि [illegible] गह गह गहिय ॥
भारथ्थ कथ्थ भावै भ [illegible] अभ्भ लगि पग्ग उपारि [illegible] हिय ॥
[illegible] रावत्त बिहद्यौ ॥　छं० ॥ ११७६ ॥

[illegible] इन्द्री बल सूर । गुरू ग्याही सनि त [illegible] ॥
नोंम सुक्र बिन सुक्र । जनम मंगल बुध बीजौ ॥
राह केत सुष रष्पि । विप्र दच्छिन हरि चिंतिय ॥
जोति चक्र जुध चक्र [illegible] दानह करि मित्तिय ॥
चय त्रिपुर जीति त्रिपुरारि हुअ । पत्तनि मद्धि रष्यौ तिनहि ॥
ग्रह ग्रहनि गंठि पूजै पुहप । सुपहु जुद्ध जीतें पिनहि ॥

छं० ॥ ११७७ ॥

दुतिया सोमवार का युद्ध वर्णन ।

अरिल्ल ॥ वाम अनी कदल सों बीत्यौ । प्रती पद आदित्य अतीत्यौ ॥
सोम दिनह दुतिया तिथ रज्यौ । दाहिन कलह सुकंदल सज्यौ ॥

छं० ॥ ११७८ ॥

निसा भई आक्रम्मि सुसेनं । दल बल अप्प अप्प मिलि एनं ॥
फुनि सामंत सेन वर गज्यौ । दिच्छिबंध[1] कहनह को सज्यौ ॥

छं० ॥ ११७९ ॥

(१) ए०—दिसी बध ।

दूहा। अति आतुर जित्तन असुर। अरु जित्तन सुर लोक ॥
प्रतिपद रवि निसि यों गई। ज्यों रस रमनी कोक ॥
छं० ॥ ११८० ॥

दोनों सेनाओं का दुतिया के प्रातःकाल का मेल ॥

भयत प्रात निसि मुदित हुअ। उदित सूर छिन मंझ ॥
वीर वीर संमुह चढे। चाहुआन सुर तंझ ॥
छं० ॥ ११८१ ॥

शाही व्यूह का बल वर्णन।

कवित्त ॥ सेत छत्र सिंदूक। सेत चिान सद्धि झलग ॥
सेत धजा आभरन। [illegible] मम मन्निषेद चहु[illegible]ज ॥
हेम मुत्ति [illegible]टारह ॥
चवनि [illegible] ति हो [illegible]लीन। छुट्टौ [illegible]धक पुंतारह ॥
सुरतान अ[illegible] अग्गे मद्दह सरक ॥
दुअ वाह सेन सनाह बनि। मनु पच्छिम उग्यौ अरक ॥
छं० ॥ ११८२ ॥

राजपूत सेना का व्यूह बल वर्णन।

सेत छत्र नीताय। जैत उभ्भौ दिसि वांई ॥
आव चलन चित धूम्र। धूम्र रष्षन चित सांई ॥
दिसि दच्छिन चावंड। पाय मुक्कै सिर नग्गा ॥
समर सिंघ रावर नरिंद। साहि रुक्कै रन अग्गा ॥
सुरतान छत्र पावार परि। चतुरंगिय चंपिय सयन ॥
आवत्त रत्त दुनियां विषम। देवरथ्य बंधे गयन ॥
छं० ॥ ११८३ ॥

दूहा। उन जीते जित्ते तुरक। उन भज्जे भज्जाइ ॥
उररि सेन पम्मार परि। सेत छत्र नेताइ ॥
छं० ॥ ११८४ ॥

कवित्त ॥ तब हाइ हाइ आरिष्ट। दिष्ट चामंड अंबरिय ॥
रे जद्दव वग्गरिय। राम कूरंभ संभरिय ॥

पीची राव प्रसंग । सोधि पावक दुंडीरह ॥
चप्प चप्प नृप छंडि । जाय सज्जौ भर भीरह ॥
नव जैत राय उप्पर करन । दई दुवाह दाहर तनय ॥
तिरछौ सुतहि लग्गौ करन । सनौ अग्गि जज्जर वनह ॥
छं० ॥ ११८५ ॥

चामंड राय के मुकाबले पर गाजी खां का उतरना।

दूहा ॥ विषम सरस सुरतान दल । वग्ग प्रति वज्जी धाय ॥
जैत छत्र सित उपरैं । तुरी वन्न वर साय ॥
छं० । ११८६ ॥

कवित्त ॥ रत्त कूर सामंत तदंती उप्पारिग ॥
सिंध छंकि गय सिंघ । अभ्भ लगि पग्ग उपारिग ॥
लुत्थ सोम नंदलह । रत रावत्त विरुद्धौ ॥
अति करकस जु कमंध । चित्त को रहे जु सुद्धौ ॥
भर हरिग पान पंधार लषि । वर विरुद्ध दाहर तनय ॥
विभ्भार धंस धर सिर जुरन । सुकल कित्ति सुर वर सुनय ॥
छं० ॥ ११८७ ॥

चामंड राय का विषम युद्ध।

रसावला ॥ मेछ हिंदू दलं । हाल लग्गी दलं ॥ वीरवीरं बुलं । सीस धक्कै चलं ॥
छं० ॥ ११८८ ॥

अंभ कौतूहलं । जोग जोगं गलं । पान छुट्टी पलं । छत्र पत्ती चलं ॥
छं० ॥ ११८९ ॥

घोर भूरं भलं । उड्डि लग्गी कलं । काजसाई छलं । दीन दोई दलं ॥
छं० ॥ ११९० ॥

हाय हालं बुलं । दाहिदाहि मलं । उंच साहीथलं । मिच्छ किन्ने तलं ॥
छं० ॥ ११९१ ॥

दोय दोयं डलं । मेछ हिंदू थरं । एक एकं गरं । भारि वहुं कारं ॥
छं० ॥ ११९२ ॥

कारिजा कप्फरं। गेन लग्गा बरं। गिद्धि जाला जरं। दोसि नंचे धरं॥
छं० ॥ ११९३ ॥
सीस हक्का करं। दंति दंत सरं। अंत आलुझ्झरं। इम्भ सोहै परं ॥
छं० ॥ ११९४ ॥
लाल कट्टै सरं। ढाल पील परं। केलि साषा ढरं। बीर सा बंबरं॥
छं० ॥ ११९५ ॥
जानु कट्टै परं। कांध बंधे भरं। ताल बज्जे हरं। सट्टि कंठे तरं॥
छं० ॥ ११९६ ॥
पंच पंचं घरं। सुत्ति लद्धी लुट्टं। राइ चामंडरं। बीर गोरी लरं ॥
छं० ॥ ११९७ ॥
सुत्ति लद्धी भरं। पंथ बोली दरं। रुद्धि नंद्दी घलं। पंक पंनं पलं॥
छं० ॥ ११९८ ॥
साघि साघं गलं। अस्सियं झलझलं ॥ .... । .... ॥
छं ० ॥ ११९९ ॥

कवित्त ॥ झलकि सेन सुरतान। कलकि हिंदू कार बज्जिय ॥
सार धार आकुत। वाज राजह तुटि तज्जिय ॥
स्वामि संस है संस। सानि संकट किय एकं ॥
लोथि हथ्थ सें पंच। नेह कीनी निजु केकं ॥
निज भृत्त निरष्वत संभरिय। राज रंजोइअ अंषरिय ॥
संग्राम धाम तुट्टिय सकल। साग सुनाई पंषरिय ॥
छं० ॥ १२०० ॥

पहकि पंति पंषिनिय। हक्कि मंकिनिय सुझ्झो रुअ ॥
जहकि जच्छि अच्छरिय। कहकि अच्छरीव सु हरुअ ॥
हनकि जग्गि जोगिनिय। रहकि रुधि रंग सुरत्तिय ।
दहकि मंस जंबुकिय। हलकि सिद्धिनि असु वत्तिय ॥
धर नरन हरन हिंदुअ तुरक। अरक मझ्झ चामंड किय ॥
द्व दिट्ठि मिट्ठि सारह सरस। सुकल कित्ति कलजुग्ग जिय ॥
छं० ॥ १२०१ ॥

दूहा ॥ लगि गोरी चहुआन सों । मरे रुधिर जल पूर ॥
बहु दल अरि तन गंजि कै । तिन संघारिग सूर ॥
छं० ॥ १२०२ ॥

जैतराव का घोड़े पर सवार होना ।

चढ्यौ जैत है संगि कै । थप्परि कंध सुपानि ॥
दल सुमिच्छ तिल तिल करन । करि जुहार चहुआन ॥
छं० ॥ १२०३ ॥

चामंडराय की वीरता का बखान ।

कवित्त ॥ ये साहस सातरह । करिय पावारह आनं ॥
लप्प दलह मिलि गयौ । कियौ साहस आजानं ॥
लत कलत्त षेलंत । धार उद्धार पिलंतह ॥
सिर तुट्टे संमुहौ । भिर्यौ कमंध सिर बत्तह ॥
सिर तुट्टि सुधर संभौ भिर्यौ । धर कटंत सिर विप्फुरिय ॥
विन सीस सहस अध पारि रन । इम सु केलि कासिम करिय ॥
छं० ॥ १२०४ ॥

रसावला॥पग्ग बेले घनं। साहि गोरी अनं । जैतछत्तं तनं । अंबुआ रायनं ॥
छं० ॥ १२०५ ॥

सेछ भंजैं जिनं । अद्ध अद्धे तनं । बाह वाहं घनं । रुंड मुंडं विनं ॥
छं० ॥ १२०६ ॥

बेलिता लम्भनं । पेषि साचं मनं ।उक्क लग्गी बनं । इप्पि थोरं यनं ॥
छं० ॥ १२०७ ॥

बंदि बंदे खिनं । लोक लोकं गनं। मग्ग मग्गे सनं ।जोग मग्गे जनं ॥
छं० ॥ १२०८ ॥

षग्ग लग्गे छनं । देव पचीयनं । स्वामि छुट्टे रनं ।स्रोन रेनं घनं ॥
छं० ॥ १२०९ ॥

पिंड सारे घनं ।सूर भिरितं यनं । कव्वि चिचं छिनं ।बंद बंदाइनं ॥
छं० ॥ १२१० ॥

देव बरदायनं । गरुञ्च गोरी सनं ॥..........।........॥

छं० ॥ १२११ ॥

कवित्त ॥ भिरि सारथ दाहिम्म । छुट्टि रन चीय प्रकारं ॥
मात पित्त अरू स्वामि । बाघ सन क्रम्म सुधारं ॥
बेद मग्ग उथ्थापि । मग्ग षप्पे धर धारं ॥
जोग मग्ग लम्भैन । क्रम्म नष्षे भरतारं ॥
आहत्त जुद्ध गिरि जुरिग[1] भर । भिरिग सूर सामंत नर ॥
अग पित्त षगिग दोउ दीन बर । चढ्ढि भंति बर विप्पहर ॥

छं० ॥ १२१२ ॥

दो पहर होने पर जैतराव का हरावल सम्हालना।

बर विपहर संमान । जैत रुध्यौ गज गोरिय ॥
ल्हइ कुराह पावार । बज्रपित वज्रह जोरिय ॥
दंति अंति आघात । तंत जरि मंच समाइय[2]॥
अवल पीर ज्यौं कन्ह । दंति गावहि रुकि धाइय ॥
प्रथिराज बीर उप्पर करन । सिंह समर सो रंग भर ॥
बर बिषम तेज घन छांह छल । हक्कार्यौ बर वीर बर ॥

छं० ॥ १२१३ ॥

मियां मनसूर रुहिल्ला और चामंड राय का द्वंद युद्ध। दोनों का स्वर्गवासी होना।

मोतीदाम *॥ सबै दल गज्जन वै सुरतान। हलकि गहन्न चव्यौ चहुआन ।
बजावति नौवति सिंधुअ राग । देवासुर कंक मनौं फिरि लागि ॥

छं० ॥ १२१४ ॥

छुटे हथनारि तुवक्क जंबूर । षिवै जनु बीज गरज्ज गरूर ॥
बगत्तर पष्षर टोपन थाग । बचै किमि सिप्पर उप्पर लागि ॥

छं० ॥ १२१५ ॥

कबूतर ज्यौं धर लोटन लोटि । परै चतुरंगिनि एकहि चोट ॥

---

(१) ए० कृ० को०—भरिग ।
(२) कृ० ए०—बिचारिय, को०—उचारिय । *यह छन्द मोतीदाम मो० प्रति में नहीं है।

मच्चै भय भीति अंकारिय बार। भयौ तब संभरि वार किंवार ॥
छं० ॥ १२१६ ॥

सहस्सह च्यारि गिरै असवार। नग्यौ हय दाहिम वग्ग उपारि ॥
झलंमलि लोह अनी हुक मेक। हयग्गय पाइल पारि अनेक ॥
छं० ॥ १२१७ ॥

वही असि कुंत सरंजम दट्ठ। धरातर मंस चरं चक चट्ठ ॥
भ्रमक्कत श्रोन चले परवाह। मनों नदि पावस मास अथाह ॥
छं० ॥ १२१८ ॥

चमू असुराइन चौसठि पग्ग। दई सुत दाहर ठेलि अलग्ग ॥
जहां जह आइ पर्यो न्रप भार। तहां तह पारथ हथ्थ दिषार ॥
छं० ॥ १२१९ ॥

गहब्बह सेन करंतह चूर। दिष्यौ मफरद मियां मनहूर ॥
चवद्दह से तजि अश्व रहिल्ल। धरै कर सिंगिनि साइक चिल्ल ॥
छं० ॥ १२२० ॥

कटिं कस कंध भुजा उर थूल। सधे तस पाइक वद्द अभूल ॥
क्रमे करि साहिब दीन सलाम। गहे मन बेगम लुट्ठि विराम ॥
छं० ॥ ११२१ ॥

कहैं मुष जीवत लेहु सुबद्धि। लंकापति ज्यों हनुवंत उदद्धि ।
निजै मन आगम जानि मरन्न। पवंगम पागर काटि चरंन ॥
छं० ॥१२२२ ॥

उपानह छंडिय चावंड राइ। पवन्नह वेग जवन्नह धाइ।
जिनं पथ भारत पार उतारि। तिनं हरि कौ उर ध्यान सुधारि ॥
छं० ॥ ११२३ ॥

करे किलकार प्रकारिय संग। फुटी मुफरद्द हियै अरधंग ॥
करष्षि कमान तज्यो सर मीर। लग्यौ उर मध्य कैमासह वीर ॥
छं० ॥ १२२४ ॥

तिनें मनहूर पहुंचिय आय। छलंकरि पिट्ठ कियौ असि घाइ।
कटे सिर दाहिम कट्टिव षग्ग। हयौ मनहूर पर्यौ कटि भग्ग ॥

इसी कर मह्नि सुभै किरवान। जिसी सुतद्रोन कौं दी सिवदान ॥
रही धप जीव सद्दाव कि ओर। धकें परि सिंधुर ढाल ढंढोरि ॥
छं० ॥ १२२६ ॥

छिस्यौ पहिले गज सारन राज। ढह्नावत सोव गयंदन आज ॥
गए घर काढ्डन राजन लोह। लरै इन भंति सुन्याय ससोह ॥
छं० ॥ १२२७ ॥

कामंध कियौ धपि अधम एम। मनौं फरसी हर अंधक जेम ॥
करें असतूति परे दुइ दीन। रिनंमद चढ्डि अहक्क सुपीन ॥
छं० ॥ १२२८ ॥

मिले रिन अंगन बीर बिताल। घुसी छोइ नाचि वजावति गाल ॥
दिषे कहि कौतिग कोरि तेतीस। अपच्छर ईस कि पूरि जगीस ॥
छं० ॥ १२२९ ॥

चवट्टिय तुट्टिय संवह पुरि। अपुट्टिय फौज फिरी सब सूर ॥
घनं घन जंगन के जितवार। तिनं तिन सुम्भर पारि पयार ॥
छं० ॥ १२३० ॥

संघारिय भारिय गोरिय सेन। सक्यौ नह कोइ सुस्कोरिय सेन ॥
करे घन उप्पर जैत पवार। दुअंतिय बार वजाइ कें सार ॥
छं० ॥ १२३१ ॥

चवद्दह सें कटि षेत ससंद। पर्यौ धर दाहिम जंपिय चंद ॥
छं० ॥ १२३२ ॥

कवित्त ॥ च्यारि सहस असवार। सषि चामंड दहिस्सौ ॥
चौदह सें मफाद्द। मियां मन सूर रहिस्सौ ॥
छुह हक्क किलकार। सीस तुट्टहि धर धावहि ॥
आनंदित अपछरा। आज इच्छावर पावहि ॥
चावंड राइ दाहर तनय। हर हारावलि सठ्ठयौ ॥
मफरद षान पीरोज सुअ। तेजवंत भिस्तिहि गयौ ॥
छं० ॥ १२३३ ॥

जैतराय का वीरता के साथ काम आना।

पर्यौ जैत पांवार। छच नीचै छिति पूरिय ॥

ढाहे मीर मसंद । पंति पष्खलि[1] परि नूरिय ॥
सहस वीस इक ब्रन्न । सकल आसुर परि संथरि ॥
हड्ड मंस कड्ढवमु । श्रोन गूद्ह तथ्थं करि ॥
किलकंत जुथ्थ जोगिन नची । रची रथ्थ अच्छरि बरी ॥
डहकंत डक सुर बीर हर । रजिय गनन जंबुक ररी ॥

छं० ॥ १२३४ ॥

जैत के मुकाबले में ग्यारह हजार सेना के साथ शाह के भांजे का आना ।

सजिय जूह साहाव । रौद्र बज्जी रिन संगिय ॥
परे पेषि पामार । पूरि असि छत्र उछंगिय ॥
यां ताजन सा तप्पि । पेलि गज जोत समौ अरि ॥
देषि दिष्ट प्रथिराज । कोपि तनताम थरथ्थरि ॥
हक्केव अप्प उप्पर जवन । भिरन अप्प जपै अटल[2] ॥
षंच्यो[3] सु गज्ज राजन्न जुरि । ताहि सार सुषुंदि षल ॥

छं० ॥ १२३५ ॥

पद्धरी ॥ संमरिय राम ढिल्ली नरेस । दिधाय जाति उक्सिन सेस ॥
विस्साल बिंब सम प्रात रत्त । सम लजित लाँम सुष तेज तत्त ।

छं० ॥ १२३६ ॥

थरकंत अहर फरकंत वांह । रोमंच अग मुक्कां उछाह ॥
उघधरिय भ्रकुठि चिकुटी करार । कोपे सुसार कर दड धार ॥

छं० ॥ १२३७ ॥

उप्पारि वेग्ग उभ्भारि षग्ग । सारथ्थ हंस सम सूर अग्ग ॥
सूरिमा मुख्य हंकारि हक्क । न्रिघात जेमधावंत धक्क ॥

छं० ॥ १२३८ ॥

---

(१) ए० कृ० कौ०—सुप्पालि ।

(२) मो०—अतुर ।

(३) ए० कृ० को०—भज्यो ।

हय छंडि दंति गहि दंत दंपि । सिर फेरि लिंपि उभझार झंपि ॥
हुअ हड्ड चूर धुर हंस गज्ज । धर नंपि छोनि ताजन्न तज्जि ॥
छं० ॥ १२३९ ॥

राजन्न षान ताजंन बंध । भानेज साह साहाव संध ॥
नव सहस मीर सम आय गज्जि । आतस्स जानि आहुत्ति जज्जि॥
छं० ॥ १२४० ॥

लग्गे सु घाव सम चाहुआन । षट पट्ट षग्ग गाजी परान ॥
तुट्टति घाव जौसन्न होय । हल हूर सिलह होयं विभाय ॥
छं० ॥ १२४१ ॥

आसन्न युद्ध लग्गो अपार । तुट्टंत सुधर झर सुझ्झि यार ॥
उड्डंत श्रोन तन उद्ध अत्ति । दव लग्गि जानि आयोस भत्ति ॥
छं० । १२४२ ॥

देखियन जुद्ध दावन दनेव । नच्चंत नच्चि नारद्द भेव ॥
राजन्न लग्गि राजन्न सुष्ष । चहुआन रज्जु संगी सुवष्प ॥
छं० ॥ १२४३ ॥

धर धार धरनि राजं न झारि । दल भग्गि फारि मनु फुट्ठि पारि
फिरि आय राज उप्परि पवार । अरि जित्ति राइ बुल्ले विचार ॥
छं० ॥ १२४४ ॥

जैतराव की मृत्यु पर पृथ्वीराज का दुःख करना ।

दूहा ॥ पर्‌यौ राव जैतह सु रन । पति अब्बू घन घाय ॥
हूर राय सोमेस सुत । करिय अप्प सिर छाय ॥
छं० ॥ १२४५ ॥

कुंडलिया ॥ हम दिय छच जुछांह कौं । तुम लिय छच मरन्न ॥
हम दुर्जोधन जोधभय । तुम कलि करन करंन ॥
तुम कलि करन करन्न । हंकि उठि सिंध सिंघ पर ॥
झर उझारि झंझोरि । तोरि गहि दंति दंत धर ॥
गौ वच्छां प्रति मोह । दोह लग्गौ सुदाह कह ॥
कहै राज प्रथिराज । छच हम दियौ छांह कह ॥
छं० ॥ १२४६ ॥

दूहा ॥ राजन अंचर छोरु क्ररि । जैत प्रसंसन काज ॥
दिल्ली धर अग्गर हुई । जुझ्झ परयौ धर आज ॥
छं० ॥ १२४७ ॥

गवरि हार उचिग अबनि । पुच्छिय दच्छ प्रबंध ॥
समर सुपन सुपन कि समर । आपु सुनै कविचंद ॥
छं० ॥ १२४८ ॥

खीची प्रसंग राय का युद्ध के लिये अग्रसर होना।

कवित्त ॥ हस्ति पीत पष्वरयौ । पीत चांवर गज गाहिय ॥
पीत टोप टट्टरिय । लोह हय चष्य सनाहिय ॥
सारि सिलह प्रज्जरिय । पीत बानावलि सोभित ॥
राज राव परसंग । षिष्ति झुझ्झै परियां भति ॥
तनसार धार घटि भार घट । अबर लष्य बर पंच सै ॥
अनभंग बीर आइय न्रपति । सौस नवाइय सत्त सै ॥
छं० ॥ १२४९ ॥

शाही सेना के राजा के ऊपर आक्रमण करने पर प्रसंग राय का युद्ध करना और मारा जाना ।

गीतामालची ॥ बिंटयौ मीरं राज धीरं अस्स हीरं असिसयं ।
गज्जे सनूरं सूर सूरं सा करूरं कस्सियं ॥
उंचे सुगातं सुष ष रातं तेग तातं रोसए ॥
माते मसंदं अस्सि वंदं सा गिरद्दं गोसए ॥
छं० ॥१२५० ॥

बिंटयौ राजं मीर गाजं सब्ब साजं संकुलं ॥
चौ अगति सैनं गज्जिगेनं अप्प तेनं उज्जलं ॥
वज्जे सुवाजं सिंग राजं जेर नाजं जंगयं ।
जंपियो गोरी झल्ल षोरी जुड रोरीं रंगयं ॥
छं० ॥ १२५१ ॥

गज्जौ सुप्रानं चाहुआनं रन्न ढानं रज्ज ए।
संभरी मीरं अप्प मीरं संगु हीरं गज्ज ए॥
हक्के मसंढं खेहु बंधं राज सद्दं संक्रमे।
देषे प्रसंगं स्वूर अंगं जुद्ध अंगं उम्भ्रमे॥

छं० ॥ १२५२ ॥

गज्जं सुराहं गज्ज गाहं रषै ढाहं रज्जए।
बाहंत मीरं बंधि तीरं नेह भीरं जे जए॥
लग्गो करारे अनी धारे चित्त षारे पग्गए।
बाजंत तारं षग्ग थारं जीह मारं जग्ग ए॥

छं०॥ १२५३ ॥

ओनं प्रवाहं पूर पाहं राह राहं रस्सए।
मारंन षानं मीर मानं राजधानं धस्स ए॥
देषे प्रसंगं संमु षग्गं ओय अंगं अंग ए।
बाजे विहारं हार मारं रोहि आरं रिंगए॥

छं० ॥ १२५४ ॥

सेलं प्रहारं अस्थि झारं सार सारं वज्ज ए।
झाक झरक्के धक्क धक्के दोय हक्के गज्ज ए॥
प्रस्संग राजं वीर गाजं मीर साजं दुट्टए।
मरुहे प्रहारं तीन तागं झार झारं बुट्टए॥

छं० ॥ १२५५ ॥

चय बीर जुट्टे दुट्ठ दुट्ठे मिले रुट्ठे मत्तए।
वे हथ्थ षंडं हथ्थ थंडं तुट्टि रुंडं गत्तए॥

छं० ॥ १२५६ ॥

दूहा ॥ दुने मीर षीची प्रसंग। सानि अनो अनमंस।
बाज घड्ड ससुझिन परै। भयौ कीच पल अंस॥

छं० ॥ १२५७ ॥

कवित्त ॥ परयौ राव परसंग । पग्ग पीची पति पुत्तौ[1] ॥
घोर सोर गजनाद । भार दारुन ज्यौं जुत्तौ ॥
ले पक्खै सें छडय । मेंन भंजन किय गानह ॥
बरन बृच्छ धरसिच्छ । श्रोह श्रोनह किय पानह ॥
संभिरय राव संभरि धरा । सघन घाय संमुह लरिय ॥
जिम जिम सुजुझ्झिक्क धरनि परिय । तिम तिम इन्द्रासन टरिय ॥
छं० ॥ १२५८ ॥

बग्गरीराय की वीरता और उसका पांच मुस्लमान सरदारों को मार कर मरना ।

मोतीदाम । परयो रन पीचिय राव प्रसंग । तिलत्तिल वीर सुनंटिय अंग ॥
पुनी भय मेछ गहक्किय ठान । कूमे फिरि कुंडलि राजन ढान ॥
छं० ॥१२५९ ॥
घनं घन पष्पर पारस भीर । ढनक्किय घंट रनंक्किय तीर ।
एनं घन सद्द सुबज्जिय घाक । धरद्दर वज्जिय[2] पग्गनि धाक ॥
छं० ॥१२६०॥
चमंकहि पग्गरि संभिरि राज । मनो घन मद्धि सु वीज बिराजि ॥
फडप्फहि फेफ तडप्फहि मीर । [3]नचै तिन नद्द सुनद्दिय वीर ॥
छं० ॥१२६१ ॥
पलक्कहि पोनिय श्रोन[4] सपूर । बरै वर अच्छरि सुच्छरि सूर ॥
प्रबोधहि जोधहि गोरिय अप्प । करै प्रथुसिंघ समावरि घप्प ॥
छं० ॥ १२६२॥
गहक्किय गज्जि मसंदह राज । चले गुरु हक्कि गहक्किअ गाज ॥
नयो सिर सांइ सुबग्गरि बीर । मिल्यौ मनु कुंजर संभ्भि कंठीर ॥
छं० ॥ १२६३ ॥
नच्यो हय संभ्भि सु ताजिय तार । जंप्यौ मुष बच्चिल उच्चित मार ॥

(१) ए० कृ० को०—सुत्तौ ।
(२) मो०—गज्जिय । (३) मो०—नचै तिन सद्दह मद्दह वीर ।
(४) मो०—श्रोनाहि ।

एए चव मीर ससंद सुढाइ । पर्यौ हय षेत सुघाय अघाइ ॥
छं० ॥ १२६४ ॥

छयौ हयराज सुमार ससंद । दयो तव बग्गरि राय सुविंद ॥
चढ़े हय नंषिय राज प्रसंग । चव्यौ हय ताम हुऔ हय अंग ।
छं० ॥ १२६५ ॥

दयौ फुनि राज हए अरि वाज । चढे सोइ भंजिय बग्गुरि गाज ॥
दयौ फिर राज सु बाजह देव । कढे हय दस्स अनो अनि एव ॥
छं० ॥ १२६६ ॥

टर्यो रनि बग्गरि घाय अघाय । हए दह पंच ससंद सुराइ ॥
.... ॥
छं० ॥ १२६७ ॥

कवित्त । पर्यो रूक्खिक्ख बग्गरिय । बरुन रूग्गरिय सुरंगिय ॥
सुरहलोक शिवलोक । लोक जारथ्य कुरंगिय ॥
बालप्पन जोवनह । बडे वड़पनह वड़ाइय ॥
समर राज प्रथिराज । वाज दस वेर चढाइय ॥
दिव दिवसु देव जैजै करहि । पुह पंजरि अच्छै धरनि ॥
तजि लोक लोक लोकन[1] सघन । वर्यो देव मंडलि तरनि ॥
छं० ॥ १२६८ ॥

शाही सेना का पृथ्वीराज को घेरना । सिंह प्रमार का आड़े आकर १५ झुंड सरदारों का मार कर आप मरना ।

भुजंगी॥ पर्यो बग्गरी देषि गोरी नरिंदं।भयौ राह रुपं ग्रस्यौ जानि इंदं
कहैं सब्ब मीरं समं सह नंषे[2] । चितं आतपं जानि ग्रीषम्म धंषे ॥
छं० ॥ १२६९ ॥

धरे लेहु लेह्व सबै हिंदु राजं । चले चाल बंधे गुरं मीर गाजं ॥
धरे पारसं कुंडली चाहुआनं । मिले मीर हक्के ढुके राज थानं ॥
छं० ॥ १२७० ॥

(१) ए० कृ० को०—लोकंत ।
(२) ए० कृ० को०—तंषे ।

गर्जै नद्द नीसाल भेरी भयंद्दं । सुरं तूर पूरं नदे सिंघ नद्दं ॥
गर्ज विट्टयं राज सद्दं सुमत्तं । ठनक्कं घनं घूघरं घंटयंतं ॥
छं० ॥ १२७१ ॥

घनक्के पितं पष्परं पान यानं । फिरं ढाल ढालं पताकं परानं ॥
झनक्के सवें धीर वानैत वानं । हनं हन्न सद्दं बुलं चाहुआनं ॥
छं० ॥ १२७२ ॥

चमक्के चमक्कं सनाहं सनाहं । किलंकार धक्कार हक्कार ग्राहं ॥
गहे हथ्थ हथ्थं कमानं वामानं । धरे नेज पग्गं उचज्जे उपानं ॥
छं० ॥ १२७३ ॥

वचे दीन दीनं सुरत्तं मसद्दं । झलक्कैं सुपें मीर तेजं लुद्दंदं ॥
छिपे मीर राजे गिरंदे गहक्के । दहे चाहुआनं कृपानं लुहक्के ॥
छं० ॥ १२७४ ॥

छिदे राज पामार सिंघं सत्तुष्पं । नयौ सांइ सीसं फिर्यो रिम्म रुप्पं॥
हनूमंत दृष्टं जपे जाप तामं। कृम्यौ सिंघ जेमं गजेदंति दामं ॥
छं० ॥ १२७५ ॥

मिल्यो धाय गज्जे गजे मीर जूहं । घटं धीर पंडे कलं संचि ब्रूहं॥
हने सिंघ पग्गं गुरं गज्जि गज्जं। हने सुंडि दंतं पयं कंध भज्जं॥
छं० ॥ १२७६ ॥

धमक्के धरा नाग नागं सभागं। भजै केवि चिक्कार छंडे विभागं॥
धके वीर पांमार रूपं विरूरं । ढरैं मीर सीसं धरन्नी करूरं॥
छं० ॥ १२७७ ॥

भ्रमै आवधं भूर सामुष्य सुप्पं । यलं अंवुजं पूरि ला सीस रुप्पं॥
करं अग्ग कढ्ढै तिनं बाहु तुट्टै । सुषं अग्गहै धरा नास लुट्टै ॥
छं० ॥ १२७८ ॥

द्रिगं मंडि देषै सिरं तुट्टि तेषै। हयं मंस मीरं कटे सानि सेषै॥
भरक्के स भज्जै सकज्जै सुमीरं। करी मंझ पामार गज्जे कठीरं ॥
छं० ॥ १२७९ ॥

फिरै कुंडली तेंक तारं[1] करोरं। फिरै मीर जे मंमनों दंड धारं॥

(१) ए० कृ० को०—तं कतारं।

लघे द्रिग्ग पामार सा मुक्कि वामं।मनी प्रातमीरं ढकै मैन' तामं॥
छं० ॥ १२८० ॥

गजं बाज तुट्टै असी सिंघ सेसं। षलक्कै सुश्रोनं परे षंड वेसं॥
भरक्कै विभज्जै ड्रिगं जेय सथ्थे। हवं भान मध्यान ग्रीषम्म रथ्थे॥
छं० ॥ १२८१ ॥

जबे देषियं सोह भाजंत सेन'। जपे तात मातं विरूरं सुवेन'॥
तबै षान राजन्न ताजन्न सेरं। अली षान आकूव हारंन हेरं॥
छं० ॥ १२८२ ॥

बली मीर रोसंन दोसंन दाहं। अलीषान आसन्नि अलीषां उमाहं
दहं पंच साहाब सापास वानं। बरं तेक सूरं समं प्रान थानं॥
छं० ॥ १२८३ ॥

विषल्ली जबे सिंघ साहाव सेनं। करे हक्क कुस्से दहं पंच तेनं॥
सयं आप सिंघं समं जुद्ध लग्गे। सहा सार[2] आवद्ध आवद्ध जग्गे॥
छं० ॥ १२८४ ॥

हहं पंच मीरं षवे सिंह हथ्थे। सयं सेन घायं अघायं समथ्थे
छं० ॥ १२८५ ॥

महाबीर ज्यों भूत सेनं सुनंचै।सकै[3] क्षोनि नाही धरं ढाहि रंचै॥
तबै पेलयौ गज्ज गोरी सहावं। हयौ षग्ग पामार भासुंड तावं॥
छं० ॥ १२८६ ॥

काटे सुंड दंतं समं जार धार। फिर्यौ गज्ज भग्गौ विरग्गौ विरार॥
धुक्यो घाय अघ्घाय सा सिंघ सारं। सिरं देव सुम्मन्न नंपे अपारं॥
छं० ॥१२८७ ॥

ढर्यौ अप्प सुभ्भाय तब्बे परन्नं। सुतं निरभयं निरभयं अप्प मन्नं।
पर्यो सिंघ पामर सामार बच्चै। षस्स षेत ज्यों भूत भैरू सुनच्चै॥
छं० ॥ १२८८ ॥

घुलै देषि सिंघं भभक्कं सुमीरं। रहे वान मानं फिरै फौज तीरं॥

(१) ए० कृ० को०—नेनं।
(२) ए० कृ० को०—मारं।
स(३) मो०—समो क्षोनिधं नाहि धर ढार ।

उर्यौ सिंघ ज्यो संघ लेनौ सुपेतं। नच्चे सुमीरं रजेही रहेतं॥
छं० ॥१२८९॥

कवित्त। परत सिंघ आचिज्ज। विरद सांई भुज पंजर॥
सुनहित कढ़्यौ जीह। नतरु रष्यौ सुष मंजर॥
ले वातार कुंडलिय। राम मंडली उलल्लिय॥
दल दल सुष सुष चंद। इंद वर सरवर फुल्लिय।
घनघाय अघाय निघाय अरि। लत सुभाय परतंग करि॥
दल होत शोन जोतिहि तिनहि। मिलत सूर दिष्यौ सुहरि॥
छं० ॥ १२९०॥

शाही सेना का और जोर पकड़ना और लोहाना का अग्रसर होकर लोह लेना।

उत्तम संदह सत्त। इत सामंत अट्ठ परि॥
घरिय वीह दिन वित्त। वहिय सलिता श्रोनह भर॥
उभै ईस हुअ विभर। विरत हालाहल वित्तौ॥
यक्के अंग समेत। करत जुद्धह तन रित्तौ॥
दिष्यौ सु राजरन सीस पर। करत युद्ध हक्कत सुभर॥
मोनदिय मीर मीरह समन। गहन राज दौरे दुआर॥
छं० ॥१२९१॥

दूहा। आवत अमीर अभीर है। विन है गहन सुराज॥
टेंपि लोहानौ दौरिपरि। ग्रहि असिवर गुर गाज॥
छं० ॥ १२९२॥

लोहाना का खंड खंड होते हुए भी अतुल पराक्रम कर के अपने मारने वाले को मारकर मरना।

भुजंगी॥ तवै गज्जियं वीर आजानवाहं। मिल्यौ मीर अह्लो सुरं जुद्ध राहं॥
असी वक्र उम्भारि गज्जे निहंगं। लई अंस कावें रजं कज्जि जंगं
छं० ॥ १२९३॥

लगै मीर सों धीर जुद्धं जुधारं। तवें आय अह्ले भरं साठि सारं॥

तिनै जुद्ध अनभूत सत्तौ अपारं। तिनं तेग बज्जे अरुझ्झे करारं॥
छं० ॥ १२९४ ॥

तबें संमरे दुष्ट आजान बाहं। छुपं उच्चर्यौ वीर मंचं विवाहं॥
तिनं छाक धाकं सुवज्जी विरूरं। सच्यौ जुद्ध आनुद्ध जूरं करूरं॥
छं० ॥ १२९५ ॥

सिरं तेक तुट्टे न उड्डंत दीसं। बिना पंष पंषी परे नभ्भ सीसं॥
कटे मूल बाहं लषे उद्ध जानं। मनो आननं पंच चीलं चिरानं॥
छं० ॥ १२९६ ॥

दियौ तार तारी चवट्टी अनंदी। दिपै वीर कौतिग्ग सारंग मंदी॥
झरं झार उझ्झार लाहं लुहानौ। किन्नं लत्त आलत प्राहार प्रानौ॥
छं० ॥ १२९७ ॥

परे मीर बीसं उभै अग्गिवानं। तवै आयसं मंत तेगं उभानं॥
दिषै मोन दीनं जये दीनं रहं। समं राज दौरै गजे मेघ सद्दं॥
छं० ॥ १२९८ ॥

तिनं उंच गातं बरं उंच हाथं। अंग अंग तुट्टै तिन लात घातं॥
तबै आइयं अड्ड आजान बांहं। तिनं जुद्ध लग्गयौ करूरं कराहं॥
छं० ॥ १२९९ ॥

मिले लोह लोहान सम्मन्न मीरं। उभै सूर साभ्रम्म गज्जे गहीरं॥
उभै तेक उतंग उम्भारि भारं। मिले वीर तत्ते उभै नेकतारं॥
छं० ॥ १३०० ॥

हयौ झाक तेकं सुउन्नै उनाही। उभै सीस तुट्टे परे भूमि थाही॥
लग्गे वथ्थ हथ्थं वलं दून सक्कं। हयौ मीर कट्टारि लोहान धक्कं॥
छं० ॥ १३०१ ॥

पर्यौ मीर संमन्न भूमी भयानं। चढे देंव कौतिग्ग देषंन जानं॥
तबै आय तेकं हयौ मोन दीनं। कटी मध्य तुट्टी दुअं भाग कीनं॥
छं० ॥ १३०२ ॥

धर्यौ अद्ध भागं धरन्नी सुएसं। उधं भाग कंठं लग्यौ काल भेसं॥
हयौ मोनदी ताम कट्टारि जरं। धरा ताम नष्यौ महामेछ गूरं॥
छं० ॥ १३०३ ॥

परयौ जाम लोहान षंडं धरन्नी । जयं सद्द भासंत सेना परंनी ॥
* * * * छं० ॥ १३०४ ॥

कवित्त । परयौ होय आजान । बाह खषंड धरन्नी ॥
जै जै जै जंपंत । सुष्प तब सेन परन्नी ॥
धनि धनि जंपि सुरेस । सु धुनि नारद उचारं ॥
करिग देव सब कित्ति । बुट्ठि नभ पुह्प अपारं ।
लौतिग्ग सूर थक्यौ सुरह । सद्दय टगट्टग सुब्भ भरनि ।
आसंत कारैं अच्छरि सयल । गयो भेदि मंडल तरनि ॥
छं० ॥ १३०५ ॥

लोहाना के बाद कमधुज्ज राजा का धावा करना ।

स्वामि षग्ग निज घत । जानि कोप्यो कमधज्जं ॥
षग्ग आलहि वर देह । आनि कुल अप्पन लज्जं ।
परे सु धन सामंत । षग्ग देषे सुरतानं ।
सजे हयग्गय सूर । वीर वर वीर कमानं ॥
जुध करत राज दिष्यो दुहरं[१] । अप्प मंच भैरव जप्यौ ॥
उब्भारि षग्ग चौडन उक्कसि । करि किलक संमुह धप्यौ ॥
छं० ॥ १३०६ ॥

आरज्ज सिंह का पराक्रम और एक मुसलमान सरदार का उसे पीछे से आकर मारना ।

भुजंगी ॥ किलक्कार हक्कार कस्यौ वामद्दं । सयं भैरवं आय सौमंच वद्दं ॥
चली जोगिनी सथ्थ सद्दे भयानं । चढे आयसं सद्द देषंत जानं ॥
छं० ॥ १३०७ ॥

भरं आरजं रूप देष्यौ अनूपं । किते नैन ढंके किते जुद्ध जपं ॥
धरी जूह मध्ये क्रम्यौ षग्ग धारं । गजे सिंघ आवद्द वाहै अपारं ॥
छं० ॥ १३०८ ॥

वियं षंड वाजी नरं तेक तुट्टे । तरं जानि कव्वारिया झूट छुट्टे ॥
निजं प्रान षंडे करे विन्नि षंडं । भजै गज्ज चिक्कार फुट्टै भसुंडं ॥
छं० ॥ १३०९ ॥

(१) ए० कृ० को०—दुहर ।

असीतार नंचंत वीरं चिघाई । नचै जोगिनी श्रोनघुंटै अघाई ॥
सहस्सं च पंच पंचं सधे सद्दि दिष्यौ।चल्यो तथ्थ मग्गं जुद्ध तंजु रष्यौ॥
छं० ॥ १३१० ॥

जवें आय अड्डे सतं मीर एकं।मिल्यौ मद्धि जुद्धं तिनं तंमि तेकं॥
करे लाघवं षग्ग वाहंत वेगं । लरं केवि तुट्टै धरं केवि रेगं ॥
छं० ॥ १३११ ॥

परे मीर षंड विहंडं धरन्नी । टगं टग्ग लग्गी जुधं जोय रन्नी ॥
सिरं तेग तुटंति उड्डंति दीसे । दुरे वाय मानो फलं ताल जीसे॥
छं० ॥ १३१२ ॥

परे पग्ग आयास तुटटी धरन्नी । मनो अच्छरी साल नंषै वरन्नी॥
परे षोल उड्डे जनची जुवासं । परें मानु जोतिष्य व्रिन्नं अयासं॥
छं० ॥ १३१३ ॥

पलं कीच मच्चौ धरं श्रोन धारं । करै भैरवं मद्द मत्तौ फिकारं॥
परे बीस अग्गं दहं पंच मीरं । विए निक्करे प्रेत नट्टे सभीरं[1] ॥
छं० ॥ १३१४ ॥

पर्यौ दिट्ठ आरज्ज साहाव सम्मं । मध्ये पंच साहस्स मीरं दुरम्मं॥
चल्यौ मार मारं जपे जीह तामं। भजै आसुरं सेन देषे दुरामं॥
छं० ॥ १३१५ ॥

चंप्यौ साहि बाजीसनं सुष्य अप्पं । करीआरजं सिंघ जेगं सुधप्पं॥
करं अच अभार षंडौ करूरं । भरक्कंत सेना करै क्रूर क्रूरं ॥
छं० ॥१३१६ ॥

दिष्यौ साए संमीप साछप षानं। चपै अस्व आयौ चपी अस्सठानं॥
तजे आय पुट्ठी हए असिसं तामं।वरं सीस तुट्यौ फिर्यौ भूमि ठामं
छं० ॥ १३१७ ॥

सनं सुष्य साहाव संमीप सन्नं । बिना सीस धायौ करे षग्ग उन्नं ॥
ह्यौ षंड भाकं हयं कंध तुट्यौ।हयं जुत्त साहाव साभूमि लुट्यौ ॥
छं० ॥ १३१८ ॥

---

(१) मो०—सरीरं ।

गिर्यौ भूमि आरज्ज तारज्ज हूरं । कुसम सुनषैं सिर देष भूनं ॥
छं० ॥ १३१९ ॥

सोमवार के युद्ध का विश्राम ।

दूहा ॥ मिले थान पट्टान सब । ग्रहे षंचि लिय ताहि ॥
भयौ अस्स विस्रम्म जुध । धनि धनि जंपिय ताहि ॥
छं० ॥ १३२० ॥

योगनी और बेतालों का शिव के संमुख युद्ध की प्रशंसा करना ।

कवित्त ॥ नह देवासुर जुद्ध । चंद तारका न होई ॥
नह पारथ भारथ समांन । राम रावन जुध जोई ॥
नह सुचि पुर त्रिपुरारि । देव दानव नन मानव ॥
समर सिंघ नारद नरिंद । सतु कहै जुध जानव ॥
चामंड राइ वर जैतसी । समर सिंघ राजन्न बलि ॥
संग्राम जिम्म[3] भारथ्थ जित । [4]अमर महा वलत्रेर तुलि ॥
छं० ॥ १३२१ ॥

दूहा ॥ हय्य एक एकह विहथ । विहथ एक हक षंड ॥
दस राजन समुझि न परी । वाज राज चामंड ॥
छं० ॥१३२२ ॥

तव कुक्कस वज्जिग दसन । असन जेस चितिनार ॥
कलह सुप्रिय मनमथ मथन । सुनि गवरिय[5] उर हार ॥
छं० ॥ १३२३ ॥

यक्ष का वीरों के शीस ले जाकर शिवजी को देना और मृत वीरों का पराक्रम कहना ।

कवित्त ॥ दच्छ सीस लै पंच । ईस अग्ग सुसपन्नौ ॥
समर सिंघ चामंड । जैत जदव वल दिन्नौ ॥
जोर वित्त भारथ्थ । सेन षुट्टी सुलतानी ॥

(१) ए० कृ० को०-जैं । (२) ए० कृ० को०-रावल । (३) ए० कृ० को०-सिम्म । (४) ए० कृ० को०-अमरहा वर तेज तुलि । (५) मो०-गरिय ।

दै दुबाह दुअ जुद्ध । जास बोली सुर बानी ।
दिन अथ्थित निसि वर उदित । सर भग्गी दिव दीन भौ[1] ॥
सामंत सत्त षेतह परिग । एक सलर रावर उभौ ॥
छं० ॥ १३२४ ॥

अठ रथनि उतरिय । जुद्ध वतरिय संपत्तिय ॥
अट्ठ अट्ठ जोगिनिय । अट्ठ बेताल विछन्तिय[2] ॥
जालंधर संसुपिय । ईस अग्गें इह कथ्थिय ॥
भिरि जिते हिंदुअ तुरक्क । भारथ जो वित्तिय ॥

चावंड राय की तारीफ ।

चावंड राइ सिर समर सिर । सिर जद्दव कूरंभ बलि ॥
पांवार सीस पंचौ पवित्त । रुद्र माल गंठिय सुगलि ॥
छं० ॥ १३२५ ॥

महन सीह बल्लार । नाम जानौ रोहिल्लौ ॥
दल लोसन सुरतान । अग्ग अग्गें सु इकल्लौ ॥
ताइय धर झल्लरिय । सार हिंदू सर बुट्ठै ॥
पग पच्छा न फिरंत । षग्ग फेरै मुख उट्ठै ॥
षग भार मान तेतीसनौ । रुहिर भषै झल्लौरियौ ॥
कट्टिय कुलाह[3] कलहंत रह । ढकी ढाल ढंढोरियौ ॥
छं० ॥ १३२६ ॥

मारू महनंग राय की तारीफ ।

मारु रा महनंग । धक्कि नीसान दियंदे ॥
बर कंबर बंगाल । तरसि तोष्षर चढंदे ॥
समर सिंघ रावर सभीर । वीर पावस रा अग्गी ॥
सारष्षर षरष्षरहि । तेग तेरह सें भग्गी ॥
कचरत्त षान ततार सों । वर बिचाल बोल्यौ समुष ॥
सुहि मरद जानि मिलि मरद हौ । हौं सुहिंदु तुअ मेछ रुष ॥
छं० ॥ १३२७ ॥

(१) मो०-सौ, मौ । (२) ए० कृ० को०-विवथ्थिय ।
(३) ए० कृ० को०-कहार ।

परत पान ततार । प्रग नाह रा सग्गन ॥
हय कंधह दिय पाइ । उलगि चिपकन्न सुलग्गन ॥
उंच गात करनाद । तेग छंवी उभ्भारिय ॥
धात पंभ त्रिघघात । जानि झज्झरि झल्लारिय ॥
दर दारिय तुट्टि फुट्टिय सुसिर । रुहिर धार संमुह ढरिय ॥
लोभियहि सुभट हिन्दू तुरक । जस जोगिनि जै जै करिय ॥
छं० ॥ १३२८ ॥

नाहर राय परिहार की तारीफ ।

इत नव सहस नरेस । उत्त पंधार ततारह ॥
इत गोरिय कुल सवल । उत्त नाहर परिहारह ॥
दुबै सेनपति सूर । पूर हंकार हवाइय ॥
इत संभरिय सहाय । उत्त पुरसान सहाइय ॥
सद सोप छुट्टि जुट्टिय विसर । दुअस्स[1] तेग लगिय सुभर ॥
पौ उदर वृत्त लज्जिय सुभर । दुहु नरिंद फुट्टिय सुसिर[2] ॥
छं० ॥ १३२९ ॥

जिहि सुष कूर कपूर । सुवर तंबोल प्रकासिय ॥
जिहि सुष मृग मद वह । सुद्ध किसना गिर वासिय ॥
जिहि मुष रम्यह रम्य । अधर रसधरनि पराइन ॥
जिहि सुप हरिहर भजन । सुत्ति लम्भय पाराइन ॥
सो सुष्प परपि परिहार पर । पग ततार संमुह भिलिय ॥
सोइ साम काज हिन्दू तुरक । सो सुप पंड विहंड किय ॥
छं० ॥ १३३० ॥

यक्ष का रावल समरसिंहजी की तारीफ करना ।

दूहा ॥ सित संदेह समुच्चरिय । वंध कुवेर सुवेर ॥
दिसि दस राय दलंत रहि ॥ समर समप्पन वेर ॥
छं० ॥ १३३१ ॥

---

(१) मो०—दुतर । (२) को०—सुमिर

कवित्त । दिषित राव दिल्लेस । देव मंगल पुर वासिय ॥
समर सिंघ रावर रव । अग्गे गृह गासिय ॥
अंच जंच तंचह छलंग । छित छल बल जग्यौ ॥
भिरन तेग गोरिय ततार । गज्जवि गल लग्यौ ॥
भट्टि मद्दन सीह उप्पर बरन । हरन हार सिर मुक्कयौ ॥
चाचग्ग बीर हथ्थह सुहथ । धरनिधार धर धुक्कयौ ॥
छं० ॥ १३३२ ॥

परत ताहि परतष्षि । बीर जद्दव गसु लिन्नौ ॥
जोति जगत उच्छरिय । मद्दन सीह दिट्ठ दिन्नौ ॥
कलि कलाप रंभरिय । राय बंसं छल वुट्टौ ॥
तन तिल तिल व्है मत्त । मरन जीवन पहि छुट्टौ ॥
सामंत राय सिर सिंघलय । कछु सुवार बीरह बढिय ॥
सित कंत तंत तिहि बार तब । विवरि विवरि जप्पह कहिय॥
छं० ॥ १३३३ ॥

दूहा ॥ सुविधि येक हम कुल कलिय । कै सुनि दक्षन कान ॥
गुरजन गुर बंचत रहै । अमी पयंपि पुरान ॥
छं० ॥ १३३४ ॥

कवित्त ॥ एव देव सन्यास । सुगंध तारुनि व्रमचारिय ।
इन्द्रिय दल दलमलिय । पुरुष पर चरन न नारिय ॥
एक सचल छंचिय संध्रम्म । ध्रमंतं स्वामि सुभ ॥
गुन गौ ग्रह ग्रह धंमि । बीर बलिय सुवाद उभ ॥
मंडलिय मरद मेवार पहु । मिलि प्रधान पुच्छिय प्रसन ॥
रिषि कहिय सहिय संम्रित सकल । सुविधि वेद षंडिय सु सुन ॥
छं० ॥ १३३५ ॥

दूहा ॥ तुम वय उद्दिम सार मन । उन रस सरस न दिट्ठ ॥
बल दस रंध बिरंध कथ । सुनहु सुनावन इट्ठ ॥
छं० ॥१३३६॥

---

(१) मो०—बेचिय ।

कवित्त ॥ वीर संद वादरिग । नाद दिप्पत दैवग्गिरि ॥
समर सिंह रावल रवद्द । भिरत्तह धाइ वरि ॥
ते उभान मंडल नरिंद । छन्द छत्र धर ॥
सन्ध लसी उड्डय गज्जग्ग । पूजिग गवरी वर ॥
सिर सिरह दीन सुरपति सुपति । विपति वीर गवरिय दसह ॥
ततार षान सुरतान छन्न । विषम वीर कंदल करह ॥
छं० ॥ १३३७ ॥

अन्यान्य मृत सरदारों के नाम और उनका पराक्रम ।

तब सुरंत हिंदुअ नरिंद । मुष किय सह नंसिय ॥
पारिहार परतप्पि । दुष्पि मंडलए न हंसिय ॥
जुरि जुआन सारंग । अंग ठेलिय दल गोरिय ॥
उह लमेछ सम सूर । रहत हिंदुअ वर जोरिय ॥
प्रिय प्रथम राव पोची पिज्यौ । पिग पिन पिन सारए झरिय ॥
अरू अंत दंत दंतीय तन । सुपति राव पुन्नर परिय ॥
छं० ॥ १३३८ ॥

दूहा ॥ पट अंसिय निसि पट घरिय । भरिय सुभूमि भयान ॥
पलचर चरवर विधु विनह । सुरत भूमि सुलतान ॥
छं० ॥ १३३९ ॥

एक सूर सामंत पट[1] । सह परिगए पट दून ॥
विंटि राज प्रथिराज कौं । फिरि पारस दिसि सून ॥
छं० ॥ १३४० ॥

कवित्त ॥ छक्कै सार नरिंद । षग्ग पारस दल सज्जिय ॥
वर आतुर पतिसार । सैन चावद्दिसि मुक्किय ॥
सर्वै सथ्थ प्रथिराज । रष्पि साईं दल ढुक्किय ॥
षग्ग मग्ग बोहिथ्थ । वीर अवसान न चुक्किय ॥
लोपंत लोह गोरी सुभर । पति अड्डो पति मेर भौ ॥
तन लग्गि धार धोरह धनी । पर्यौ वीर सिर भंग भौ ॥
छं० ॥१३४१॥

(१) ए. कृ. को.-सत ।

सारंगराय के मारे जाने पर परिहार वीरों का पराक्रम करना ।

परत भोमि सारंग । गुरज वज्जिय सिर गोरिय ॥
वज्ज्र बीर कर वज्ज्र । वज्ज्र अग्गे वर जोरिय ॥
सस्त्र घात आघात । कट्टि कुट्टर ग्रहि तारं ॥
पव्वै पति तब विंटि । मेछ लगि असिवर झारं ॥
परिहार परिग्गह सामि सम । फेरि राज पारस परिय ॥
चहुआन वीर संमुह असुर । गह गह गोरी उच्चरिय ॥
छं० ॥ १३४२ ॥

सुनि गह गह सुविहान । भाव भर मान रष्पि रय ॥
चरन अचल चल हथ्थ । चित निहि निह निहचल काय ॥
सस्त्र तेज जम जुत्त । दंत कड्ढै मतवा रुन ॥
दोउ अस्तुति उच्चार । पुहय नंषै सुरताउनि ॥
पितभार भ्रम्म जल सामि कै । धार असीधर धार वर ॥
वुड्यौ विंव पामार भर । प्रकति बुझै नन अप्प कर ॥
छं० ॥ १३४३ ॥

परत षेत पामार पान । वर धार धार चढि ॥
वर द्रोपति जिम चीर । सत्त वेली सुरंग बढि ॥
वर गोरी बै सेन । प्रंच क्रम मग्ग चलावै ॥
परि पावस चहुआन । फिरत छिन मग्ग छुड़ावै ॥
साभ्रम्म मग्ग जिहि बंधयो । सो धार धार होय उत्तरिय ॥
चंपयौ फेरि गोरी गरुअ । फेरि राज पारस परिय ॥
छं० ॥ १३४४ ॥

दूहा ॥ कटि मंडल सहसेन वर । उभै परिग्गह राज ॥
गई आस गोरी गहन । गहन मोह गह आज ॥
छं० ॥ १३४५ ॥

कवित्त ॥ उभै बंध परिहार । सन दुहु मग्ग समाही ॥
दल घघ्यौ प्रथिराज । बल न घघ्यौ बलघाई ॥

बार बेर रकुधान । लहि मुद पहि गज चढ्ढी ॥
पञ्च पट्ट तिन छीन । आय कमार षग वढ्ढी ॥
फिरि दास लग्ग उभ्भौ न्नपति । है पट्टै पलट्टै नहौ ॥
सधयान पांत कौ नीर ज्यौं । कहु अग्गया भंजै जही ॥

छं० ॥ १३४६ ॥

परत नीर मारुत । वीर वज्जिय सुरतानह ॥
देव भूमि दस पान । जान जानीहि रसानह ॥
एक राय दस पान । धान घुंटिय धर पग्गह ॥
आसमान अच्छरिय । भयौ कोतूहल सग्गह ॥
सुर कहिय ससीहर आपनौ । अप अपलोक सुपन्नौ ॥
नर वीर वीर सित कांत सहु । जानि सुहागिन सुपन्नौ ॥

छं० ॥ १३४७ ॥

दस हिन्दू या मुसलमान वीरों की बहादुरी ।

सारंग सारंग रूप । मिलि दसपान महोमद ॥
यौं गज्जयौ गुर रन्न । जंत सुनि हक्क गरुअ सद ॥
पग वंवरि उच्छारि । ढारि हथ्थर पथ्थारं ॥
सार श्रोन झंझरिय । नष्य प्राक्रम्म सथ्थारं ॥
ताकीय कहं जगदीस दिय । सुप सुमृद्धि संभर धनिय ॥
सवलोक लोक मंडल गयौ । धरकि हंस एकह मनिय ॥

छं० ॥ १३४८ ॥

षूब पान तत्तार । षूब मारू मह नंसिव ॥
षूब पान आषूब । जेन सध्यौ रन गंसिय ॥
षूब ध्रम्म सामित्त । षूब सिर तेग प्रहारिय ॥
नाहर राय नरिंद । परिय पष्षर भाहारिय ॥
अदिहार हिन्दु साहिब सुदिन । बह झोरी बह षेत सुभ्भ ॥
ढालंक नेज नीसान ढरि । सेन सयन मंडी सुधुभ्भ ॥

छं० ॥ १३४९ ॥

दूहा ॥ गिरिजा गुन पुच्छिय गुपत । सुनिय सुपुष्ष निधान ॥

जुद्ध धरिय लग्गिय लरत । चाहुआन सुरतान ॥

छं० ॥ १३५० ॥

द्वितिया सोमवार का युद्ध समाप्त ।

कवित्त ॥ द्रुतिय दिवस संग्रम । धाम धवरिय दिसि उत्तर ॥
देवराज दोलति थान । जुट्टिय रन दुन्तर ॥
दुश्रौ राय सामित्त । मुंड मुंड झरि झरि आवध ॥
सिर सिर सिर तुट्टंत । तंति बज्जिय सुरगावध ॥
कय कमल केलि कमला पतिय । दुअग दच्छि दुस्सह कथियं ॥
सुनि सुनि श्रवन भट धर जुगह । सुगति संगि नंदि पारथिय ॥

छं० ॥ १३५१ ॥

सुबर बीर बन सिंघ । धीर जिहि धर उत्तारिय ॥
मिच्छवान सुरतान । लोह लाहौर उबारिय ॥
ता पौरुष परतष्षि । द्रष्षि अष्षर कवि चंदह ॥
देवासुर दलन ज्यों हिय । भिरिय मुश्र पर भुज दंडह ॥
आवरत रीठि नन पिट्ठ दिय । पहर एक वज्जिय विषम ॥
अम जुरन छध्य लग्गिय न कछु । सूर मंडि मंडल सुषम ॥

छं० ॥ १३५२ ॥

रात्रि व्यतीत होने पर पुनः दोनों सेनाओं का युद्ध आरंभ होना ।

नववति निसि नंसीय । बज्जि नीसान सवद्दिय ॥
हिंदवान सुरतान । हिंदु धर बर करि सिद्धिय ॥
गय भग्गिय अग्ग लह । सहु संभरि संभरयौ ॥
चिन चिन जन जन जुरन । कीलि गोरिय घर घरयौ ॥
तह्हिन तुरंग मोहिल मरद । अरुन अरुन मंडल गहिय ॥
पुचकारि चित्त चिचंग पहु । बर विषान रंधह रहिय ॥

छं० । १३५३॥

गहकि सेन हिंदुअ नरिंद । चंप्यौ धरि आवध ॥
तब आए भर दुसह । सीस धारंत साइ उध ॥

सत्त सुभट सामंत : चंद भर रावर सिंघह ॥
तिन छिप्यौ प्रथिराज । सुद्ध रन रत्त रिंघह ॥
नृप नारि सीस अस्सर उकासि छकि सुलग्गो वीर रस ॥
उट्टे सुसोह दुअ सांमि छर । सब तत्त चालिसय उकासि ॥
छं० ॥ १३५४ ॥

पृथ्वीराज के रक्षक सरदारों के नाम, राजपूत सेना के पराक्रम से यवन सेना का विचल पड़ना ।

विअप्परी ॥ सोलंकी भीमह वर वीरं । पारिहार दच्छन रनधीरं ॥
कमधज्जह रयसिंघ महाभर । भाटी अचल अचल आवध भर ॥
छं० ॥ १३५५ ॥

विजय राज बघ्घेल गुमझ्झगह । मोलन सेंगर रत्त सुद्ध रह ॥
मल्लन सावर अरसी सूरं । आए निज पति अग्ग करूरं ॥
छं० ॥ १३५६ ॥

तीन सुभट रावर नमि सिंघं । आए पहु प्रथिराज उरंघं ॥
सिलहदार भापर वर अंगं । सुअन धाय दुज्जन छल जंगं ॥
छं० ॥ १३५७ ॥

पग्ग धार देदल पावासं । आये चपि पहु जंगल पासं ॥
वीर करारे आवध वज्जे । भरहरि मीर अपुट्ठे भज्जे ॥
छं० ॥ १३५८ ॥

परिय भीर देषिय पहु सिंघं । दिय आयस प्रथिराज अरंघं ॥
गये सूर दह रावर चट्टे । आए षान साठि तमि अट्टे ॥
छं० ॥ १३५९ ॥

षां पिरोज नव राजन सूवं । आलम सालम फते अपूवं ॥
पीरन रेसन महवति मीरं । राजन ताजन हाजन पीरं ॥
छं० ॥ १३६० ॥

तोगन कालन हाजी गाजी । सेरन षोन गनी षां न्याजी ॥
हासन षां विरहमषां षानं । गजनी षान दादुषां मानं ॥
छं० ॥ १३६१ ॥

मुस्तफ षां उम्मर षां अत्तन । को जग षान जलाल समत्तन ॥
मीरन मीरन हेगन दोसन । लाल नगालिब षान समोसन ॥
छं० ॥ १३६२ ॥

ए रन मीर एलची षानं । तीसुन मूसन सो सन वानं ॥
अलीषान हूरेस सुरेजं । सक्कत षान जलू षां भेजं ॥
छं० ॥ १३६३ ॥

कायस षान मीर जा मद्दी । ओसन षान जलेवस द्दी ॥
मत्तौ मार समर सी अग्गें । मनो कज्जि सिंघं सो लग्गे ॥
छं० ॥ १३६४ ॥

आवध आवध बज्जि अपारं । सेलहि सेल सों सारे सारं ॥
असी भर कर पटा पहारं । धरव हार चढ्ढिय षग धारं ॥
छं० ॥ १३६५ ॥

झूझे कंठ कंठ एकेकं । करे घाव छलि काछल केकं ॥
अंत अंत रुझ्झे सम हूरं । मानों कचर जुद्द करूरं ॥
छं० ॥ १३६६ ॥

केस उकस्से तुट्टे आवध । धर ऊपर भर करें महाजुध ॥
औन प्रवाह षलक्कै षालं । फुरके फेफर तुट्टै वालं ॥
छं० ॥ १३६७ ॥

षरिय पंच जुद्दह परचारं । हिंदु मेछ घन परे पथारं ॥
साठि षान दस राय रवद्दं । परि धरनी क्रित करे रवद्दं ॥
छं० ॥ १३६८ ॥

आर्या ॥ यह रावर दर बीरं । सट्टिय षान ढान भर धीरं ॥
झुझ्झे गये सुरेहं । रोहत रवि बिंब राय षुम्मानं ॥
छं० ॥ १३६९ ॥

दूहा ॥ भगी सेन सुरतान रन । गए पास बन षान ॥
देषि अप्प होर्यौ बिहसि । सज्जि सीस असमान ॥
छं० ॥ १३७० ॥

शाही सेना में से शाह के मौडे खानखाना का अग्रसर होना और उसका पराक्रम वर्णन।

भुजंगी ॥ तब तज्जयौ षान षानौ करूरं। सुरत्तान भानेज जुद्धं जरूरं॥
सहस्संघ एचं बरं बंधि फौजं। बचै बाच दीनं सुदीनं सरोजं॥
छं० ॥ १३७१ ॥

हहक्कारि गज्जे सुमीरं गुहीरं। करी सब्ब मानं सुरक्की कठीरं॥
ननलुष्य रा स्वामि चित्तंगं कोटं। सहस्सू चिबीरं बरं बंधि ओटं॥
छं० ॥ १३७२ ॥

मिले धाय दूनं उभै हिंदुमीरं। बकै उंच बाकं जुटै जुद्ध धीरं॥
दुवं डारि ओडंन गज्जे गहीरं। घनं घाय अघघाय तुट्टे सरीरं॥
छं० ॥ १३७३ ॥

फरक्कंत फेफं सुअंतं अलुझ्झे। चलें ओन धारं षलक्कीच रुझ्झे॥
परं अंग अंगं सुभट्टं सुरेसं। कटै गात गौरं अधं बाल वेसं॥
छं० ॥ १३७४ ॥

झझक्कंत दक्कंत धारं करूरं। उभै हथ्थ वथ्थं मिले सूर सूरं॥
नचै वीर आवद्ध तारी चिघायं। उक्कस्संत कस्से छुलिक्का छुरायं॥
छं० ॥ १३७५ ॥

मिले दिट्ठ षानं षुमानं सजरं। चलै सम्मरी संग दक्के करूरं॥
चढे जन दूनं भरं बीर रूपं। मिले बोल बोलं सुभै सब्ब जूपं॥
छं० ॥ १३७६ ॥

हयौ षान षुम्मान संगी सजरं। चले षंग सीसं हयं पग्ग सूरं॥
समंजीन फुट्टी हयं जीन जामं। धनं धन्य जंपंत आयास तामं॥
छं० ॥ १३७७ ॥

फिरे आय पुट्टे सुषानं जमानं। हयं षग्ग लग्गं कटिं तुट्टि थानं॥
करै धार हंमेल लीनौ समुष्षं। हयौ ताम कट्टार नामुष्ष(१) कष्षं॥
छं० ॥ १३७८ ॥

चली जोति षानं षुमानं अयासं। समं तेज तेजं समं सूर नासं॥

(१) ए० कृ० को०—सुष्ष।

परे सहस चय मीर हिंदू सहसं । कटे मंडलं हून भर रूक रसं ॥

छं० ॥ १३७९ ॥

खानखाना के सिवाय अन्य १४ मीरों को मार कर समर सिंह जी का स्वर्गवासी होना ।

दूहा ॥ मचि आहत्त सुजुद्ध बर । तुटि षुट्टे सब सस्च ॥
अनो अन्न सममंस सुनि । किरच किरच बहु अस्च ॥

छं० ॥ १३८० ॥

कवित्त ॥ समर सिंघ सिर सीस । छंद छलनी कृत आसह ॥
इह अमुष्य नन भाष्य । हयं कूदति आरासह ॥
नन धाई आचरन । आन अच्छरी उछंगह ॥
धर धरन्त तुटि तन्न । तान जोगिय भग्गा मह ॥
असवार सनाहति अस्सु बर । धार पार होइ उत्तरिय ॥
चिचंग राइ रावर समर । बिहुन अस्त समझि न परिय ॥

छं० ॥ १३८१ ॥

जब दल षान ततार । मार मथ्थे परिहारं ॥
समर सिंघ अवलोकि । हयौ आडन करिवारं ॥
चपल हथ्थ बरमध्य । सीस तुट्यौ रडवंडह ॥
रुड मुंड हुअ षंड । सुंड कट्टे दती बंडह ॥
परि टोप अग्ग बगतर जिरह । षां अपुठ भेरें[1] भरां ॥
ढहि गजरे, ाज साज झलपट भयौ । समर सिंघ पावक करां ॥

छं० ॥ १३८२ ॥

बर दिट्ठ मुट्ठि षंधार । षान नवरोज रिसानिय ॥
भिस्ति छंड़ि दोजिग परंत । तुच्छ अग्गैं हिंदवानिय ॥
वे भग्गिन मारूफ़ । गुलब गाजी सुनि संमन ॥
ष्या काफर फरजंद[2] । फते पीरोज षां कंमन ॥
दे चमरेज गुंजार षां । पढ़ि कलमा मुष करिकहौं ॥
सुरतान आन चहुआन सम[3] । सब हिंदू एकत ग्रहौं ॥

छं० ॥ १३८३

(१) ए. कृ–को. फेरे । (२) ए. कृ. को.-फरइंद । (३) ए. कृ० को०-कौं ।

दूहा ॥ समर सिंघ केते कतें । अप्प तन्न कहि सार ॥
गनैं कोन इयगय स्नरे । परेपान दस च्यार ॥ छं० ॥ १३८४ ॥

कवित्त ॥ *परे पान नवरोज । टूक टूकह तन तच्छिय ॥
पो स्निन मोरूफ । सार सुभ्भिय सुप अच्छिय ॥
परे पान गुल्लाव । समन रेचम मम रेजह ॥
गुंजार पान वाजी । समर सिंघ सें हथ्थ ढहि ॥
पीरोज पान मीयां मरद । वे षोडन घल्ले सु वथ ॥
षिघंग राव षावद्दिसा । चवै ईस अच्छरि सु कथ ॥
छं० ॥१३८५ ॥

दूहा ॥ सिरदारह दस च्यार गिरि । समर सिंघ घन घाइ ॥
ह्व विद्दान उत्तरि परे । चहुं पीस संगाय ॥ छं० ॥ १३८६ ॥

कवित्त ॥ दिष्षि पान पुरसान । गुर वर जंमध्य उपदिय ॥
समर सिंघ लुप चहर । हिंदु मेछन मिलि जुट्टिय ॥
गिद्धिन पल संग्रहन । जुथ्थ लंवे रन आइय ॥
श्रोन परत निज्झरत । पच जुग्गिनि लै धाइय ॥
पल चरिय मेछ हिंदू सहर । अच्छरि मल षति जग्ग किय ॥
लहद्देय सीस वंधे गरां । काल झरपि लीनौ[१] नुजिय ॥
छं० ॥ १३८७ ॥

प्रिया कंत परदीप । लज्ज संकर गर वंधिय ॥
जिय वासुर दोइ च्यार । वहुरि कलिजुग्ग सुपथ्थिय ॥
सोई लज्जा कें कज्ज । रज्ज मुक्यौ रघुराइय ॥
रावन लंक विनास । लज्ज वंध्यौ सरिताइय ॥
लज्जां सु कज्ज नग देव न्रप । सीस कट्ठि हथ्थां धरे ॥
इह कवित एक लष सरिस । लरनहार लज्जां फिरे ॥
छं० ॥ १३८८ ॥

मोतीदाम ॥ परयौ धर रावर सावर धाइ । षयं षग षेग तनं सिलताइ ॥

---

* इस छन्द के चतुर्थ चरण सें मालूम होता है कि बीच में कोई एक आध कवित्त छूट गया है केवल उसके पंचम या षष्ट चरन की यह एक पंक्ति शेष रह गई है ।

(१) मो०-लीयौ ।

घटत्तठ घाइ निघाय अघाइ। कटे कट युत्तर उत्तर नाइ ॥
छं० ॥ १३८९ ॥
उथ्यौ दल षां षुरसान अपार। मनो दधि गंग मिलान प्रचार ॥
अगें गजबाज चिकार छंषार। मंडी धर वाघुर घोर निकार ॥
छं० ॥ १३९०॥
फरक्कत नेजनि नेत उतंग। मनौ रति राज विराजत दंग ॥
झरै गज रत्त द्रवै गिरि घत्त। परै गन मोतिय आरति तत्त ॥
छं० ॥ १३९१ ॥
चमू चतुरंग चवै चवसट्ठि। बजावत ताल विताल अतट्टि ॥
परे मह मीर महाभर भार। वजै षग कुंतनि तारनि तार ॥
छं० ॥ १३९२ ॥
लरथ्थर लुथ्थि अलुथ्थि पलुथ्थि। झरफ्फर गिद्ध तरफ्फर तथ्थि॥
उड़ै घन छिंछ लगै असमान। उठै जनु होरि फुलिंग प्रमान ॥
छं० ॥ १३९३ ॥
लगे वर लावध आवध वथ्थ। नचै धर मीर विना धर मथ्थ ॥
जयज्जय सद्द सुवद्दहि एत। परयौ कटि रावर राइ सु षेत ॥
छं० ॥ १३९४॥
मिल्यौ प्रथिराज विराजत[1] रेन। परयौ गज सिंघ अवीहन सेन ॥
करयौ पयपान धरी गज भाल। कढ़ै रथ कालिय नथ्थ गुपाल ॥
छं० ॥ १३९५ ॥
ढरै धर गज्ज वहै रत भार। निसातम भै चँप छुट्टि अपार ॥
हुए सम षानहि एक्क सेर। उरप्पर जरध अद्ध विरेर ॥
छं० ॥ १३९६ ॥
मनों द्रुम राज लगे दोउ वीर। निकस्सय एमय पारनि सीर ॥
भरे अगतून तनं तन राज। लगे अहि धाय मनौं तर राज ॥
छं० ॥ १३९७ ॥
लगी सुष संगिवि षान षँधार। बजावति मागध भेरि भँकार ॥
परे कर कुंत गहै कर षग्ग। महष्षह सेन वियं गज मग्ग ॥
छं० ॥ १३९८ ॥

(१) ए० कृ० को०-विराज विरेन ।

परी गज कुंभनि कुंभनि तार। धधध्धन वीज छुटी अतिभार ॥
छुते परि सीस सुंतोर समेत। छते परि लोग सिंदूक समेत ॥
छं० ॥ १३९९ ॥

भए चद चोदनि सीरनि सीर। लगे रवि ते घट वीरनि वीर ॥
लग्यौ न्रप रस्स झारझ्झार पग्ग। जगो जनु वीज घनं घन वग्ग ॥
छं० ॥ १४०० ॥

चलै रत वान चलै घन वुंद। गनं रज निद्धि अनुं सिटि दुंद ॥
गिरें दह दाह मसंद सु घाय। गिनै कुन नाम तिनें अततार ॥
छं० ॥ १४०१ ॥

पटा झट कुंतनि वाननि मान। परे गज कुंभति कुच्छ प्रमान ॥
परे कटि पट्टनि षंडनि षंड। फरस्स फिरत्त तरप्फर तुंड ॥
छं० ॥ १४०२ ॥

विधारिय दूरिति श्रोन अपार। मनों नषि धीमर जार मझार ॥
गहै छुत उत्त सु गिद्धनि गिद्ध। मरालिय अंचि सिवाल अतिद्ध ॥
छं० ॥ १४०३ ॥

विचें सिर रूह तिरै सिर सार। तिरै मनु वारि वतक्कनि लार ॥
करै ववसट्टिनि मंगल चार। नचै नव नारद जुद्ध विहार ॥
छं० ॥ १४०४ ॥

कटे जुग तोन दहं नवछूर। रएै धधकट्ठि सबें वर मूर ॥
.... । .... छं० ॥ १४०५ ॥

दूहा ॥ के सांई भर उप्परह। के भर उप्पर सांइ ॥
कटि मंडल हिंदू तुरक। हय गय घाय अघाइ ॥ १४०६ ॥

नाई अनी का युद्ध समाप्त हुआ जिसमें दस राजपूत सरदार और ६० यवन सरदार मारे गए।

रावर सिंघ रहंत रहि। साठि षान दसराइ ॥
परत मद्दन परिहार रन। मेछति सहस सवाइ ॥ छं० ॥ १४०७ ॥

भुजंगी ॥ परे साठि षानं दसं देह रायं। ढहे ढाल नेजानि नीसान ठायं ॥
छुटै मंत मैमंत दीसै दिसानं। चढी पंति पंषी परे पीलवानं ॥
छं० ॥ १४०८ ॥

उलोल म आल म छची छितान । जुटे जोट जुट्टे भए भै भयान ॥
रुप्यो रंघरी राव बाराह षेत । रह्यौ रोह आपूव पानं सु जैतं ॥
छं० ॥ १४०९ ॥

भरै बान सन्नाह सुभ्भै सु देही । वियौ चष्प लष्पै अपे जानि सेही॥
गहै षग्ग धावै सु बाउ पचारै । लगै घाइ पुंडीर सांई सभारै ॥
छं० ॥ १४१० ॥

नियं भंस रष्पै सदाव्रत गैही । हडुहुइ षेलंत बालक्क जेही ॥
परी का भषै का जरै का हुतासं । अछूतीन तेकै घरं की अयासं॥
छं० ॥ १४११ ॥

किय जुट्टि हहु रन रत्त रत्ती । सही मुत्ति छचीन सुछिस्स गत्ती॥
फटे सेन दूनू भरंगो उभारं । दिपें थान थानं जिसे प्रात तारं॥
छं० ॥ १४१२ ॥

म्लेच्छ सेना द्वारा पृथ्वीराज के घेर जाने का वर्णन ।

दूहा ॥ वाम अनी कंदल भयौ । सो जान्यो' दछिराज ॥
सित संदेह समुचरयौ । श्रवरन रुंध्यौ राज ॥
छं० ॥ १४१३ ॥

भुजंगी ॥ चंपी सेन दून चहुआन गोरी । वजे घाइ आवत्त असुरत्त जोरी
उवं घाइ छिछं सु सोहै, मझारं । मनो वीर राय वसंत सवारं॥
छं० ॥ १४१४ ॥

तुटे मंस अंसं चलं छूर छूरं । तिनं देषियं भंति कंती करूरं॥
वजे घाइ झाई मिटे जो निसानं । उडें गिद्ध सिद्धी सु पावै न जानं॥
छं० ॥ १४१५ ॥

उडै बीर बत्ती सु भारथ्थ जित्ती । मिसे मत्त मंतं लगें लोह तत्ती॥
.... छं० ॥ १४१६ ॥

रसावला ॥ इत्त अैसें भरी, सेन भग्गा परी ।
सोहि जा ढलरी, वोहुं पष्पा फिरी ॥ छं० ॥ १४१७ ॥
राइ जा संभरी, लेह, लेहछरी ।
ढिल्लि रा जंभिरी, उट्टियं अम्मरी ॥ छं० ॥ १४१८ ॥

(१) ए० कृ० को०—अष्षौं ।

नैन रत्त मरी, घोलिय धंजरी ।
एक एकंतरी, आनि विज्जु झरी ॥ छं० ॥ १४१९ ॥
षग्ग षग्ग धरी, भूमि लुट्टै करी ।
वारि तुच्छ घरी नेज चोरों मुरी ॥ छं० ॥ १४२० ॥
श्रोन रंग तरी, देव देवं हरी ।
बरन अच्छी वरी, सुगति पोली दरी । छं० ॥ १४२१ ॥
दीन दीउंटरी, सामंत चै परी । छं० ॥ १४२२ ॥

पृथ्वीराज को अपने को घिरा हुआ जान कर गुरुराम को कुंडल दान करना ।

कवित्त ॥ या रष्षै गुर राज । राज विग्रह सुष पायौ ॥
पंच दूत कुंडलिय । लहै द्रव्य कोरि सवायौ ॥
जा ओगिनिपुर देव । राज राषहु चहुआनिय ॥
मौं लाया बल भग्ग । संग तै हु सुरतानीय ॥
दुग हत्त मंडि छंड्यौ तुरंगौ । [1]मोहद जुड विपद्ध दिन ॥
छिन भंग देह विज्जुल छटा । दुष्य न करषिं मउंत मन ॥
छं० ॥ १४२३ ॥

गुरुराम का कुंडल लेकर चलना और मुसलमान सेना का उसे घेर लेना ।

पानि मंडि किय दान । सुत्ति भनि वेद मंच दिय ॥
मंच जाप जालपा । राज अंगह अभंग किय ॥
सार धार त्रिघघात । भेद छेदन राज[2] वप ॥
सिलहदार सारंग । सध्य किय इन्द्र देव जप ॥
वजंग पाट गाजीय सकति । घररि घंट गोरीय सुघर ॥
सुनि हक्क धक्क हैगय मुरिय । सहस पंच उत्तरिय भर ॥
छं० ॥ १४२४ ॥

रहस पंच उत्तरिय । षान षुरसान सपतौ ॥
पहुपच्छै पतिसाह । आय सुरतान मिलंतौ ॥

(१) ए० कृ० को०-मोह रुक्त विपुद्ध दिन । (२) मो०-राय ।

तीन बान पज्जून। मारि अंकुस गज फेरिय ॥
चक्रवान चतुरंग। षंपि षावद्दिसि घेरिय ॥
परि सिलहदार सारंग दे। गहब्ब षान गोरी गसिय ॥
उर उरनि उरजि अच्छरि अछिनि। उर बंसी हिरदै वसिय ॥
छं० ॥ १४२५ ॥

कुंडलिया ॥ दिन कुंडल पस्स्वस्ति धपि। फिरि दष्षिन गुर राज ॥
मरन जानि इच्छौ मरन। स्वामि सु सुल्ल्यौ काज ॥
स्वामि सु सुल्ल्यौ काज। सु दल धायौ दल ग्रोनह ॥
वहै न सस्त्र समथ्थ। उभै बड गुज्जर ध्रोनह ॥
उर षंप्यौ कट्टार। मेछ हथ्थह रन मंडलि ॥
विप्र जाति न्रप हेत। अषिय स्वस्तिय दिय कुंडलि ॥
छं० ॥ १४२६ ॥

बहवल खां का गुरुराम का सिर उडा देना, गुरुराम का पडते पडते शाह के भांजे को मार गिराना ।

कवित्त ॥ गुर ढिग कुंडलि देषि। पेषि वहवल्ल षान धपि ॥
द्रोपद सुत जिमि तेग। बेग भारी भनंग[1] भपि ॥
राम सीस लिय ईस। कमल बिन पंजर कढ्यौ ॥
हथ्थ छेदि उर षान। पीठि पच्छै दल बढ्यौ ॥
वामंग हथ्थ अचरिज सुनहु। अरि कटि तें असिवर लियौ ॥
भानेज साहि साहावदी। हय समेत चव षंड कियौ ॥
छं० ॥ १४२७ ॥

दूहा ॥ द्वै बंधव भानेज दै। दै दुष कीनौ साहि ॥
दुज कौ दुज प्रथिराज भय। गुरु बिन वंदो काहि ॥
छं० ॥ १४२८ ॥

गुरुराम की मृत्यु पर पृथ्वीराज का पश्चात्ताप करना ।

कवित्त ॥ कहै राज प्रथिराज। बाघ तजिहौं पनि झुझ्झौं ॥

(१) ए० कृ० को०—कनंक ।

मुऔ राम गुरु राज। मंत कासों मिलि बुझ्झौ॥
आज मुऔ सोमेस। आज कैमासह झुझ्यौ॥
आज कन्ह गोयंद। सूर सामंत न सुझ्झ्यौ॥
इह जान दयौ कुंडल करन। हम जान्यौ गुर जाय घर॥
कूरंभ कहै चहुआन सुनि। दुष्ष न करहि महंत नर॥
छं० ॥ १४२९ ॥

दूहा ॥ हम अब दुष्ष न सुष्ष मन। नह दिष्षिय धन धाय॥
मोरें मेछ मसंद जुरि। इह लग्गी मन चाय।
छं० ॥ १४३० ॥

पृथ्वीराज को म्लेच्छ सेना का घेर लेना।

भुजंगी॥ मिले चाय चहुआन सुविहान गोरी। महा स्रंम जल्लं रही जानि ओरी॥
तिनंकी उपम्मा कविचंद घट्टे। उभै झूट पील्लं सटं इष्ट भट्टे॥
छं० ॥ १४३१ ॥

तिनं मझ्झ षग्गं सुवंकी चमक्के। कियं भेस चंदं वलं बान हक्के॥
धवै गिद्ध सिद्धी दुअं षेम षग्गा। धनं रत्त धारं बरषन्न लग्गा॥
छं० ॥ १४३२ ॥

निसानं क घायं अवाजं फुरक्के। मुदै सत्त तिन्नं षजै धार वक्के॥
चली लालची जोगिनी पच छंडै। घुटै रुद्र रुध्री सुरत्तीव कढ्ढै॥
छं० ॥ १४३३ ॥

तुटै सीस भारी द्रयौ द्रोन नंचै। मनों बीर नट्टं सयं अंग रच्चै॥
षिज्यौ षान तत्तार चंप्रै सयन्नं। दिषे साहि गोरी झुकै बीर तन्नं॥
छं० ॥ १४३४ ॥

कवित्त ॥ सकल सूर सामंत। परी पायस चहुआनं॥
षेत हथ्थ चढ्ढयौ। तारि कढ्यौ सुरतानं॥
षां ततार मारूफ। हक्कि चतुरंग चलाइय॥
विषम लोह वज्यौठयौ। बीर बर नंचि चधाइय॥
तुटि वंध कमंध ननच्चिवर। धार धार धर उतर यौ॥

परसे सु सगर सौभाग पर[1] । असु भ,व मंडल चित्तर,यौ ॥

छं० ॥ १४३५ ॥

गुरुराम के दिए हुए कवच के प्रताप से राजा की रक्षा होना ।

कर आशिष गुर राज । मंत्र सन्नाह कवच दिय ॥
नष रष्या नर सिंघ । चरन चष,भुज रष्ष किय ॥
पग पिंडी जग पिंड । बसे बैकुंठ जंघ वर ॥
सीस रषनि कटि रष्षि । गूढ़ गोविंद गदाधर ॥
थल उरहए पाउर परजयौ । भुज वामन कंठह हरी ॥
मुष रसन कान द्रिग सेस वर । काल बंध हुत्ती करी ॥

छं० ॥ १४३६ ॥

दूहा ॥ सम समंम सुगंम करि । धग अमग्ग चहुआन ॥
दिसि दच्छिन प्रथिराज पर । उत्तरि सेन सुविहान ॥

छं० ॥ १४३७ ॥

कवित्त ॥ प्रथु आयध फुट्टिह न । गुरज वज्जिय गुज्जर पर ॥
जनु पषान पर बुंद । दंद लग्गिय दुज्जर धर ॥
टुटि टट्टर सिर ओन । छिंछ उड्डे भुसि बुट्टिय ॥
रुर गिरह मन मंत । लहरु आवध लै उट्टिय ॥
अब्बुकैत साय[2] दूराम घरिय । जरियति जीय डरियति परिय ॥
घन सेन साहि गोरी गहब्ब । तिरन तुंग तिनवर करिय ॥

छं० ॥ १४३८ ॥

रामराय बड़ गुज्जर और वीर पंचाइन का पराक्रम ।

बड़ गुज्जर रा राम । ढान ढुट्टहि सुरतानह ॥
ऐ गै नर बिच्छिथन । जानि म्रगराज म्रगानह ॥
सबें सेनपति साहि । कंध कट्टिन भक भ,कै
कुटिल दिष्ट जहं फिरै । सकल मिलि मित्तह रक्कै ॥

---

(१) ए०—असुक्रव मंडल वित्तस्यौ ।
(२) ए० छ० को०—आउ ।

उल्सरिय उच्छदि पोम्गिन पलै। निन निस धंज वंबरि नसै॥
हसु हिद दस्स गंभ्रद्ध नन। लगति रूर्र विसिदि कसैं॥
छं० ॥ १४३९ ॥

दूहा ॥ संत मंत दो दंत पर। इनी सग वर राम॥
कहूँ कार उकडै नहीं। वस्त काहन भए ताम॥
छं० ॥ १४४० ॥

कवित्त ॥ खप्य खप्प काहु गहिय। कठिन कुक्स कूस वानिय॥
सुरिन मीर मारंत। सोझ संसारह जानिय॥
सुर नर गन गंध्रब्ब। तिनहि लगि सत्त न छंड्यौ॥
पंगद मिल पंकुरयौ। भीम जिय भारथ संड्यौ॥
उडे बहरनि हिंदू तुरक। धरह धाज लो विस्तरन॥
कारि उर हनंत तुट्टिय काटकि। सुरी संगि पारन फवन॥
छं० ॥ १४४१ ॥

लुधिन दोस यह देह। सु मेरौ वंचन दूस सुनि॥
स्वामि काज संदेह। करत विसठार लवनि सन॥
एक धरनि लरथरहि। एक गहि धेरनि पछारै॥
तीषे तरल तुषार। तिनहि तिनुका करि डारै॥
व्रिस्सलिय संगि कुंजर डरह। तुमे सु तेज अग्गर बहिय॥
मन सुरिय राम रंजवि मनह। रुधिर पीयत लुत्थि सुरहिय॥
छं० ॥ १४४२ ॥

मोटक ॥ नचि नंचि नरे[२] जुथयं जुथयं। ततथे ततथे तह यान थयं॥
कसिजं कसिजं असि झंझलयं[३]। लुथि लुथ्थि उलथ्थिय मत्त पथयं॥
छं० ॥ १४४३ ॥

गज वोज फिरक्कि फिरे हथयं। गन गंध्रव जप्प कथै कथयं॥
जुध भारथ पारथ जेम थयं। दिवि दिट्टिय सोन तुनी अथयं॥
छं० ॥ १४४४ ॥

---

(१) ए० कृ० को—रंजाहि।
(२) ए० कृ० को०—जुरे।
(३) मो०—झंझालियं।

उड मंडल लो उड़ता कयय । ठग ठग्गिय नैन निसेन थयं ॥
छं० ॥ १४४५ ॥

भुजंदडामर॥सक सात सुमाल सु चाल सुचाल एहंकि जमाल हल मिलय॥
अगिवान रुवाल विवान रूभान किवान रुपान किसान जल ॥
धर जा पढ़ि मंच लु ससच समस्त रनोरन रत्तिन छच हल ॥
किल किंचित बीर सुमीरहि भीर गए रन भीर जलोज थल ॥
छं० ॥ १४४६ ॥
किन नंकि तुरंग कुरंग कि ओध विश्राह सुविस्तिम भार भर ॥
घटि कायर सिंघ गए दिव विद्ध परें इत हिंदुअ लेह धरं॥
.... छं० ॥ १४४७ ॥

कवित्त ॥ सुष निहारि छंच धार । पर्यौ पंचो पंचानन ॥
गोरिय दल बल अक्यौ । चुंगल चंप्यौ सेछानन ॥
एक सार उर धरिय । एक धारह उर धारिय ॥
एक मार सम्मार । एक झारह उर झारिय ॥
बर बरनि बिहसि दच्छि जु कथै । रहसि रहसि पुच्छे जुरह ॥
घरि एक तरंगिनि रक्कि जल । कमल जानि नचै जु सर ॥
छं० ॥ १४४८ ॥
राज राव परसंग । देव बग्गरी बड़ गुज्जर ॥
षग्ग मग्ग छकलंक । सिंघ सांई भुज पंजर ॥
राज गुरू द्विज राम । कलिय बंभन भय भंजन ॥
सिलहदार सारंग । सार सिंधुर भर गंजन ॥
छिति छच धार पंचाइनौ । सहस अद्ध अड्डेस सर ॥
सिव सुनि सुदच्छ अस्तुति करै । साषि भरै गिद्धिन समर ॥
छं० ॥ १४४९ ॥

एक गिद्धनी का संयोगिता के पास युद्ध का समाचार वर्णन करना ।

पंन धारि दिय पष । कंन लग्गवि कर सायौ ॥
पंग पुषि किय पचि । बंधि संदेस सुनायौ ॥
भ्रमिय गयौ कल चंद । कमल मंडिय सुमान सर ॥

गति गयंद गत इंद । रूप रति रंभ सुरगहर ॥
मति[1] मान विनय लच्छी सहज । मोर पंछ केसो समन ॥
हाइंत तार इक्कयौ हियौ । उडै न हंस तुअ हंस बिन ॥
छं० ॥ १४५० ॥

संयोगिता का संकट में पड़कर सोच विचार करना और गिद्धनी का संक्षेप में वर्णन करना ।

सोषे सर न्रप फुट्टि । हंस पंजर दुष विद्धे ॥
दस लष्षां बरनेह । बीर मंजुर आलुद्धे ॥
प्रीति आउ उर हंस । हंस बिन हंस न उड्डै ॥
छिन पंजर परि भई । वाम कहि माया चड्डै ॥
भंकौव हंत चल्लै नहौ । चित्त पंथ उत्तर गही ॥
हंसनी हंस औ हंस को । हंस हंस करती रही ॥
छं० ॥ १४५१ ॥

रे पन्नधार परिहार । हंसनी हंस हंस किय ॥
हंस परा भव गत्त । उडै षग्ग नह्नि सुकिय ॥
सोइ हंस हंस सों नेह । हंस बिन नेह न जोई ॥
मोह हंस सों बंध । हंस बिन मोह न होई ॥
आबुद्ध हंस हंसह सरस । सुनयौ मोह छंड्यौ हियौ ॥
उड्डै न हंस न्रप हंस बर । जोल मुद्ध मुहह कियौ ॥
छं० ॥ १४५२ ॥

पन्नधार परिहार । गुह्य गांमार वार तिहि ॥
सु ग्रह नारि उर धारि । कहै संदेस वार इहि ॥
निवर पेम संकरिय । सबर संकर गल लज्जिय ॥
छल बल कल छुट्टै न । जानि जिम बाल सा लज्जिय ॥
तुअ काम नाम केहरि कमल । सार धार चड्डै विमल ॥
पल चारिय जाइ जोगिनि पुरह । कहै कथ्थ गिद्धिनि सकल ॥
छं० ॥ १४५३ ॥

---

१) मो०—मन ।

कुंडलिया ॥ जाम जानि अंतर मिलन । जोगिनि पुरह अवास ॥
अरन लग्गि वंल्यौ अरन । सह परि गरह अवास ॥
सह परि गरह अवास । जन सदिय जानि संजोएह ॥
कास घास धज्जारि । पार छंडिय परिहारह ॥
छत्र धार सुरतान । सारि सिरपां सनमुष्षह ॥
करहि देव वंदना । अग्ग आवास जनम कह ॥
छं० ॥ १४५४ ॥

दूहा ॥ इह कहंत कुरन वयन । उढै आनंदी वीर ॥
आहुआन उप्पर परिग । होउ दीन अस मीर ॥
छं० ॥ १४५५ ॥

गिद्धिनी का संयोगिता के महल में राजा का ऊपर डालना और सखियों का उसे पहिचान कर दुखित होना तथा संयोगिता का गिद्धिनी से हाल पूछना ।

कवित्त ॥ अमर अंग लीसान । आन वर वाग बिछुट्टिय ॥
सुभ्भ[1] विहार सैराह । गौर जंबूरन छुट्टिय ॥
धीर हार धा चिन्न । धीर ढारत धर भग्गिय ॥
धर अंबर संचरिय । चंद कारि मावसि उग्गिय ॥
गहि चुंग घरी इक सुजसरिय । जोगिनी पुर जोगिनि विलस ॥
हिंडोल देस संजोगि ग्रह । अमर डारि गिद्धनि समस ॥
छं० ॥ १४५६ ॥

कुंडलिया ॥ दाह तन कीनी सखिन । दिषि गिद्धिनि हिंडोल ॥
अमर इक्षि चिंतनु कियौ । नग मोती अंमोल ॥
नग मोती अंमोल । साहि तरुनी उर अंप्यौ ॥
इह सांई संदेस । समस गिद्धिन सुष जंप्यौ ॥
उहिक अघ आरम्भ । कह्यौ भारथ कथ कंतह ॥
अमर अंपि उर तरुनि । हास कहुन हो हुंतह ॥
छं० ॥ १४५७ ॥

(१) ए० कृ० को०—भुँइ ।

गिद्धनी का आरंभ से युद्ध का वर्णन करना ।

त्रोटक ॥ पति वृत्त सुनंत सँजोगि सती । समली अरु गिद्धनि उद्ध मती ॥
उह कालिह कुह्न दिन कंद लभौ । घटि एक घटं महि रष्षिन ज्यौ॥
छं० ॥ १४५८ ॥

प्रथमं प्रथ कंत कथंत कथं । फुनि राज बधू नव राज सथं ॥
दिसि वाम उठी षुरसान अनी । तिनके मुष रावर सिंघ रनी ॥
छं० ॥ १४५९ ॥

कर सिंगि जुनाग मुषी विगसी । पहिले रिस इस्तम षां नगसी ॥
न सही प्रभु जंबुक की जरकैं । धक ही धक धींग परयौ धरकें ॥
छं० ॥ १४६० ॥

गिरयौ षग षान षुरेस गिरयौ । दस पैंड दिवान ततार ठिरयौ ॥
विछि षेत रह्यौ षग षानि जिहां । ते आन जुवान जहान तहां ॥
छं० ॥ १४६१ ॥

षग सेल हुलै हमला हल कें । गिरवानह सेल भुजा बल कें ॥
उर पार फुटें हुलसे निकसे । जनो पल्लव केतिकि के विगसे ॥
छं० ॥ १४६२ ॥

जिन रावर राइ पुंडीर वहयौ । तिन मार नगाडव कौन रहयौ॥
मनुं पंच हजार तिलथ्थि मिले । दस तीन कमंध उठंत षिलै ॥
छं० ॥ १४६३ ॥

सिर हकि सियाल सुगिद्धन सी । इति कथ्थ कही समली सरसी ॥
फुनि गिद्धनी ग्यान कहै रहसी । जिम हिंदुअ मेछ भए विहसी ॥
छं० ॥ १४६४ ॥

दूहा ॥ ते सब मिलि वर जंपि कथ । रावर राज नरिंद ॥
सो वित्त भारथ्थ मे । सो कहि दुष्प अनंद ॥
छं० ॥ १४६५ ॥

हे चिल्ही भारथ्थ कथ । जंपि सुगिद्धनि सुद्ध ॥
सुनिय श्रवन भारथ्थ कथ । उड्डं हंस बर सुद्ध ॥
छं० ॥ १४६६ ॥

(१) मो०—मग ।

कवित्त ॥ पिथ्थं कंत सुनि बत्त । शुद्ध सालंत समर कौ ॥
बर मनुष्य जानैंन । जान दानव अंमर कौ ॥
सिर तुट्टै धरि खग्ग । कोन लषि घसि बर झारिय ॥
सबैं सेन सुलतान । षान अस्तुति उच्चारिय ॥
सिर तुट्टि कमंधन सपिय हुआ । लो जीपल बरदाय पर ॥
बर जपत जिमी गज्जे बरह । परजोरी शुम्भार बर ॥
छं० ॥ १४६७ ॥

दूहो ॥ हय बंध हुए बरन किय । सीस ईस को दीय ॥
तन धारा धर उत्तरिय । प्रलपर भूषन कीय ॥ छं०॥ १४६८ ॥
कहि गिद्धन समजी सुबहि । ज्यों बित्यौ भारथ्थ ॥
समर बीर सध्थह परी । सुबदिन सुमर भर कथ्थ ॥
छं० ॥ १४६९ ॥

कवित्त ॥ पर्यौ सुभर पावास । सेन सुरतान ढंढोरिय ॥
षरि सुगौर नाहर नरिंद । रेह रष्षिय पग्गसेरिय ॥
पर्यौ बंध सुरकिबह । दांध छह्विग कबंध बनि ॥
परि अुआल गुज्जर सुधीर । सार सुरतान भज्जि मन ॥
रावर नरिंद सत जद्दु परि । परि भग्गा भग्गा न पग ॥
तातारषान षुरसानपति । मुष चहुँ आहुट्ठ रग ॥
छं० ॥ १४७० ॥

साटक ॥ आछिज्जौ आछिज्ज राजन रनं भूपाल भूपालयं ॥
भारा कंत निवर्तयंत धरनी निघातयं घातयं ॥
भारा धाव सु धुंध धह्ह धरनी सूरं सुरत्तानयं ॥
गोरी सेन षिवार तुंग तरुनी ताराय तारायनं ॥
छं० ॥ १४७१ ।

दंती दंत उमत्त मत्त उमडी कृपाई कृपाइनं ॥
ढालं ढाल उढाल भाल उलल मभाइउनं ॥
छायं छाय सु हंस हंस तुभ्रगी जूते जटो जूटनं ॥
लूटा लूटि सुषग्ग षग्ग षचरं षह्नामि षायाननं[२] ॥
छं० ॥ १४७२ ।

(१) ए० कृ० को०—सत । (२) ए० कृ०—सायइनं, को०-षायइमं

कंती कंत सु कंत रोद्र उडनं पुंगाय चुंचूपटं ॥
रंभी रंभ सुरंभयाइ वरणी बंभाइ रंभाइनं[1]॥
थामंडाय प्रचंड जैत छितयं लेछं समुद्रं मही ॥
नेजं नेज सुनेत नेत किरयं लम्भाय मुत्ती सही ॥ छं० ॥१४७३॥
नव हूरा बड गुज्जराइ सिरयं श्रोलं छिता श्रोनयं ॥
सारूरं[2] घर डंकि गोरिय धरं धर नामितं गिद्धरं ॥
ताकं लखंत बकंत कुंडलि जिमं बाना छिता वानयं ॥
सा बानं सुनि मिच्छ इच्छ डवनं श्रोराभितं अंमरं ॥
छं० ॥ १४७४ ॥

तब भीमच्छ पुंडीर पावसरसं सिंघा छिलं रावरं ॥
षां षाना पुम्मान जीति उभयं हूंछानि हूंछं उरं ॥
बाहंते कूरंभ षग्ग षलयं जामानि जद्दों दलं ॥
है हैं कंति कहंति हुंति उरवी न्हंकंति नायं पुरं ॥ छं० ॥१४७५॥
सा मुलयं षडुआल सीस धुनयं झूमी विष्रराइनं ॥
चोरं ढार सुघोर पानि उडयं सकतस्य उप्पारयं ॥
सा सक तिंग रजंत साह पुलयं छोसंत देवं पुरं ॥
जंगी जंग विछुट्टि छुट्टि भरयं चंदाय आयासनं ॥
छं० ॥ १४७६ ॥

चामर चुंगल चंपि अचचमियं एकं घटी जुड्यं ॥
सा जुंडं प्रथिराज राजन इकं मेछानि से सत्तयं ॥
सैं मुष्पं षुरसान षान भरियं छिंदवान हिंदू हदं[3] ॥
बाहं साहि सहाब गोरिय धरं कम्मान भूनष्पायं ॥
छं० ॥ १४७७ ॥

अरवखां उज्जवक का पृथ्वीराज पर आक्रमण करना ।

कवित्त ॥ सारे आलम का गुमांन । आरब उजवक्किय ॥
पासवान सुरतान । सार लग्गै नह छक्किय ॥
दह भारा कम्मान । तीन सायक तेरह सैं ॥

(१) ए०-संभाइने। (२) मो०-सापूरं। (३) ए० कृ० को-दहं।

अट्ठारए जोए दा। बंध कढ्ढै सुर हंसै ॥
पेहथ्थ करार्यं हथ्थ को। सथ्थ राज घत्तन कहै ॥
भुजनंद भुसाइत[1] छंडि हय। तहि तहि सम्मुह रहै ॥
छं० ॥ १४७८ ॥

थए तदै प्रथिराज। राज कै उड़ितोरन ॥
दिट्ठ दिट्ठ करार। जिपै मरदां मुष जोरन ॥
बाई उत्त आई। पाप पुंगल उच्छट्टिय ॥
सारंगी सारंग। भील वनसद्धि उपट्टिय ॥
चहुआन कमान प्रत्थि करि। अग्गिवान ठट्टर वहिय ॥
लगि पान पषान क्रिसान उड़ि। वहर नहि अल्ली रहिय ॥
छं० ॥ १४७९ ॥

पृथ्वीराज की बानावली से यवन सेना का छिन्नभिन्न होना।

बीय बान सिंदूर। लद्धि सुरतान जान वहि ॥
पट्टबल षां छिल्लरिय। सीस सिप्पर समेत ढहि ॥
तीय बान तावंत। छोड़ि करि आलम गोइय ॥
पेद बाग पुरसान। षान मुष मद्धि समोइय ॥
पंचमौ धरत धरम्मिय धरहि। भरकि पुट्ठि गोरिय सुभर ॥
आस उंच बाघ अस्तुति करै। चूव चूव हिंदु सुहर ॥
छं० ॥ १४८० ॥

मोतीदाम ॥ धरै गुन पंच उभै दृग तोन। रह्यो रूपिराज गुरू जिम द्रोन ॥
सुरंगिय भूमिय पाय श्रोन। तमी तलके मति घट्टित जोन ॥
छं० ॥ १४८१ ॥

समी सम जुद्ध विहल्लनि मोन। क्रमे पहु पंजुलि अंमर गेन ॥
क्रमी क्रमि अच्छरि कच्छरि ढोंन। वदै वर गिद्धनि संमर दोन ॥
छं० ॥ १४८२ ॥

भुरी घर गोरिय साहि सुदुट्ट। पराक्रम राज प्रथी पति रुट्ट ॥
.... छं० ॥ १४८३ ॥

(१) ए० कृ० को०—भुषाइत।

संयोगिता का कहना कि युद्ध का अंत कहु ।

दूहा ॥ रन रंभा निरखि चाहि । सिरि संजोगि कांत ॥
ललकी स्वाल सुलच्छनिय । चढ़ि जिय कहि न्रप अंत ॥
छं० ॥ १४८४ ॥

सस्तु सिखनी का सारे युद्ध का वृत्तांत कहना ।

लघुनाराच ॥ धार धारपि धांवंड वान । फटि थान अगिभर वान ॥
चढ़ि पंच तेज प्रमान । लगि उपल उडत क्रिसान ॥
छं० ॥ १४८५ ॥

जनु लोरि जारिय अग्गि । लगि नगर उडि गय नग्ग ॥
दुति लीसरं सिंदूर । ढहि कंध जोगिनि कूर ॥
छं० ॥ १४८६ ॥

सुरतान बसंत सनूर । यह बहु ढहरि चूर ॥
चिढ़ बान तहि करप्पि । धन सेन सिंध भरप्पि ॥
छं० ॥ १४८७ ॥

बरदह वेदहि सप्पि । बढि छुट्टि अंचि परप्पि ॥
कुरलान रदन सुपंडि । धर दसन इक सुमंडि ॥
छं० ॥ १४८८ ॥

धर धरनि पंचम वान । बढि पिट्टियं सुरतान ॥
सुर असुर कौतिग कीन । दिन अवधि अनहि सुभीन ॥
छं० ॥ १४८९ ॥

गज मत्त जिहि सर फुट्टि । पहु प्रान तजि धर लुट्टि ॥
रवि दीह अन सुरपत्ति । वर वरनि अंत सुगत्ति ॥
छं० ॥ १४९० ॥

धर सच्छ करि भर पाज । रन विंटयौ प्रथिराज ॥
फिरि घेरियं न्रप मीर । जनु गिरन लागे वीर ॥
छं० ॥ १४९१ ॥

बल प्रबल करि करि सेन । रन रैन छद्दित गेन ॥
गज कंध गोरिय साहि । गन सूर सनमुष चाहि ॥
छं० ॥ १४९२ ॥

षुरसान षां गज चूरि। सनमुष्ष आलन पूरि ॥
जनु अनल अग्ग उतंग। चिहुं पास विंटित गंग॥
छं० ॥ १४९३ ॥

भर लेच्छ छूट प्रकार। सधि इंद सनो सुनारि ॥
धरि कंध धनु न्नपघास। गहि कुलिस सुत नित तास ॥
छं० ॥ १४९४ ॥

दिव दैव दैवै रूप। परि बलनि बज्जिय भूप ॥
जल जलधि थिरित बढ़ि। जनु मंदिरा गिर सढ़ि ॥
छं० ॥ १४९५ ॥

गह असन भर सुरतान। प्रिथिराज बधन प्रमान ॥
धरगेन सुर सुझ्झ छूर। तिय लोप चरपति सूर ॥
छं० ॥ १४९६ ॥

कविचंद दंदन देषि। इह दइय रोस अलेषि ॥
छं० ॥ १४९७ ॥

वीरभद्र का शिव से कहना कि सब सेना के मर जाने पर पृथ्वीराज ने एकाकी युद्ध किया।

दूहा ॥ ललुष गरह सिव अग्र कथि। वीर भद्र सम वीर ॥
रह्यौ एक संभरि धनी। लाज कोटलै धीर ॥
छं० ॥ १४९८ ॥

साटक ॥ कृष्णानं कृष्णोन मांनय पर्न दति वंस पासज्जरं।
पुंजं कुंजर छूटि तूटि समयं पौरस्स जा सिद्धरं[१] ॥
तदनं तेज समान गैन दलयं धृढ़ीर घत्तं घनं।
सा षग्गं षिरपान पत्त गहियं उभ्भारि बंका दिनं ॥
छं० ॥ १४९९ ॥

दूहा ॥ है चिहिहनि गिरहन सुजग। धज सम धवल नरिंद ॥
और न पल पंपिन परैं। अलप जलप्पय निंद ॥
छं० ॥ १५०० ॥

उड़ि पंषिनि पंषिनि निरषि। अषिल[२] अषंडल लागि ॥

(१) ए० कृ० को०—सिद्धयं। (२) ए० को०—अषि।

घरी एक पाछैं प्रगटि । वीर बिभाई जागि ॥

छं० ॥ १५०१ ॥

दूहा ॥ चय जु समर गिद्धिनि समल । कहि पहपंगि सहाय ॥
पवधि कुंक बुद्धह सुबुधि । आइय कहन बिभाइ ॥

छं० ॥ १५०२ ॥

बुद्ध की रात्रि को संयोगिता का एक डंकनी को स्वप्न में देखना ।

कवित्त ॥ डंबरु उघ्य डंकिनिय । दसन एकय अधरानन ॥
स्याम तिलक जुषियिल । कंन लंबे कंधानन ॥
उरध केस सिर हरिग । नेन पंगिय कुल नंगिय ॥
पिय आलिंगन अलग । चमर अंबर कटि ढंगिय ॥
पुस्तक प्रसंग बच्चय बिघत । राजरवनि मंडपि अवन ॥
बरवान बिब्रनी पंचमी । सुनि सुन्दरि जुद्धहि रवन ॥

छं० ॥ १५०३ ॥

डंकनी का युद्ध का समाचार वर्णन करना ।

भुजंगी ॥ उवं जुद्ध द्ध सुजं पे बिभाई । जहां सेन छंच पती पातसाही ॥
जहां सेत चोरं जु मौरं धिमाही। जहां बैरषं सेत ता गज्ज गाही

छं० ॥ १५०४॥

जहां सेत गज झंप गज मुत्ति झौरं। जहां पष्षरी सेत मौजं हिलोरे।
जहां सेतवासं सिता नेज झंडे । जहां सेत दंतीन आवद्ध मंडे ॥

छं० ॥ १५०५ ॥

जहां सेत आरंभ पारंभ सेतं । जहां सेत ताजी सिता ग्रीव नेतं ॥
जहां सेत उच्चारिका सेत साजं । जहां सेत सारंगही फौज राजं॥

छं० ॥ १५०६ ॥

जहां सेत सिंदू सिता लागि वाजी। जहां सेत ढालं सुआलम्म गाज॥
तहां नंषि वाजी धरे लाज राजं । जुटे देषियै ख्रते स्वामि काजं ॥

छं० ॥१५०७॥

पद्धरी ॥ भर हरत भार नृप सार मार । परहरल पलक सरकार अपार ॥

थरहरत मेछ झुग्गल हमीर । सरहरत सेस घर हरत धीर ॥
छं० १५०८ ॥

फरहरत एक धर परत तुट्टि । भरहरत रगत सिर गुरज फुट्टि ॥
छरहरत छुट्टि सत एक षेत । ढरहरत ढार ढरि साग सेत ॥
छं० ॥ १५०९ ॥

तरपरत एक उप्पर चढंत । धरपरत कंध धर असि कढंत ॥
परहरत धीर धावंत रुंड ॥ पारंत चीह वक्कि बेन मुंड ॥
छं० ॥ १५१० ॥

बरहरत बीर बर करन बार । भरहरत तुंग असिवर हुभार ॥
उड्डंत सार बुड्डंत मीर । रुडंत अंत जल रत्त नीर ॥
छं० ॥ १५११ ॥

फारंत फरड हडमंस तुट्टि । इम समर सूर तुअ नाथ जुट्टि ॥
छं० ॥ १५१२ ॥

पृथ्वीराज का अतुल पराक्रम वर्णन ।

कवित्त ॥ वज्रपात निरघात । धरनि कै अंबर तुट्टिय ॥
दरिया दधि किय मथन । मद्धि गिरराज अछुट्टिय ॥
हनुअ द्रोन उप्पारि । आनि लंघिय किलंक तट ॥
गीरवधन गोकुल कि लाय । छंडयौ कि नीर घट ॥
दल धरकि सिरन सिष्पर लई । दैव कि किन उप्पर परै ॥
डंकिनिय कहै तुअ कंत इम । सू बिहान अस्तुति करै ॥
छं० ॥ १५१३ ॥

पद्धरी ॥ देषेव षान चहुआन च्यारि । प्राक्रम तास लभ्भं न पार ॥
कीनौ सुगुरु आलुह तेम । उपमान मनहि आवै न नेम ॥
छं० ॥ १५१४ ॥

मन भयौ विकल गोरी नरिंद । भग्गै सुमीर भषषे रविंद ॥
अलि फसे मीर महमुंद ताम । आएव साह्नि कीनौ सलाम ॥
छं० ॥१५१५॥

---

(१) ए० कृ० को०—रकत।

उत्तंग अंग परचंड भूअ। भुज लंहै कोरि एकेक जूअ॥
हय उंच जाति ऐराक बंस। आरोहि तेन बानी उधंस॥

छं० ॥ १५१६ ॥

सम पूरि सिलह दोउ अंग आप[1]। अंदभूत तेज षग षचि ताप॥
कम्मान काल सिर धारि ढाल। पेषंत सेन भज्जै पराल॥

छं० ॥ १५१७ ॥

बोलयौ गाजि सम गज्जनेस। चहुआन षान कट्टन[2] सरेस॥
जंपयौ ताम गोरी सहाब। बिन हयं किति बढ्ढै सुआब॥

छं० ॥ १५१८ ॥

हम बेर बेर इन गहे मुक्कि। करतार ताइ कढ्ढै सुसुक्कि॥
संग्रहौ तुम्म जंगल नरेस। हम तेज ताप दैयौ असेस॥

छं० ॥ १५१९ ॥

सुनि फिर्यौ सज्जि महमुंद मीर। [3]बंधन सुपानि चहुआन धीर॥
सम आय पास हय तक्कि तार। प्रथिराज दिट्ठि दिट्ठी करार॥

छं० ॥ १५२० ॥

महमूद खां का राजा के साम्हने आना और राजा का उसे मार गिराना।

कवित्त॥ निरषि राज प्रथिराज। दिट्ठ महमुंद करारिय॥
मुट्ठि बान मंडयौ। तक्कि ताजी उप्फारिय॥
बथ्थ तथ्थ चिंतिय समथ्थ। चहुआन मंनि मन॥
धरिय झलक सिंगिनिय। सुलल विषझाल काल फन॥
नंषयौ तानि हिंदू विहद। आवंतो सर मार मनि॥
षंचेवि हयौ केवर कहर। तुट्टै मड्डि निरुद्ध उन॥

छं० ॥ १५२१ ॥

पुंष भाग परि अग्र। उड्डि आयास बीनि पर॥
लागि बान सपंष। मनो बिन हंस धरा ढरि॥

---

(१) ए० कृ० को०-पार। (२) मो०—कहने।

(३) ए० कृ० को०-बंधानि सुषनि चहुआन धीर।

अग्रवान लगि छरनि । भयौ महमुंद सुरेसं ॥
बड़ौ अंग विहंग । मनो बिल उरग प्रवेसं ॥
महमुंद विकल तन परि अवनि । जानि कि नट्टह लाग सजि ॥
धन घंन्य सयल पंपिय सकल । विकल चित्त विभ्रम्म रजि ॥
छं० ॥ १५२२ ॥

कुंडलिया ॥ जिहि विध्यौ सुरतान दल । सो रुंध्यौ रन रष्पि ॥
गुरु गुरुतानो वज्जिया । बीर बिसाई भष्पि[1] ॥
बीर बिसाई भष्पि । सेन नंच्यौ पतिसाही ॥
गजकंधां आरोह । दिट्ठ दिट्ठै सिरताही ॥
राजबान उज्जान । समर तक्क्यौ करि संध्यौ ॥
सो रुक्क्यौ रन राज । जनही पति साह सु बंध्यौ ॥
छं० ॥ १५२३ ॥

महमूद के मरने पर ३१ मीर सरदारों का राजा पर आक्रमण करना ।

दूहा ॥ देष्यौ देव रल महयत । रन उट्ठौ चहुआन ॥
फिरि घेर्यौ गोरी सयन । मनो नछच नभान
छं० ॥ १४२४ ॥

कवित ॥ चिहुटे बाण विछुट्टि । दिट्ठि उन्निय सुठि भिन्निय ॥
कछु घन तारे घत्त । सगुन झंझारि बर धुन्निय ॥
कछु आवरदा सान । मास अठ्ठा दिन उन्निय ॥
टोप सहित सिंदूक । छुट्टि सुल्ली रहि झुल्लिय ॥
अलि अलिय बंध लग्गिय कहर । धरधमंक सुच्चिय धरह ।
एकतीस षान सुरतान सम । धरनि राज गह गह भरह ॥
छं० ॥ १५२५ ॥

लेहु बंध तुम हिन्दु[2] । राव बाराह करन भष[3] ॥
पैगंमर कै पास । बान हिंसान भरन लष ॥
हथ्थ मंडि आरज्ज । लइ मांमा महि छिन्निय ॥

(१) ए० कृ० को०—लष्पि । (२) ए० कृ० को०—हिन्दुअ तुम्म ।
(३) ए० नष ।

ऊँचंदा जल षाय। तेक तिस ऊपर किन्निय ॥
कै बार[1] हथ्थ दीया हिया[2]। अब लरूँभै पच्छौ किया ॥
इकतीस मसंद विसह फिरि। लेहु लेहु राजन जिया[3] ॥

छं० ॥ १५२६ ॥

मीर सरदारों का कहना कि कमान रखदो। राजा का न मान कर वाण चलाना पर चूक जाना।

दूहा ॥ कहहि मेछ मुह अग्गरे। वे काफर फरजंद ॥
वाह षान षुरसान की। सिंगिनि अप्पि नरिंद ॥

छं० ॥ १५२७ ॥

सह्यौ न बोल सम्मुह हयो। वाह षान षुरसान ॥
इह अपुब्ब संजोगि सुनि। दिन पलट्यौ चहुआन ॥

छं० ॥१५२८ ॥

दिन पलट्यो पलट्यौ न मन। भुज वाहै सव सच्च ॥
अरि भिंटन मिट्टै कवन। लिष्यौ विधाता पच ॥

छं० ॥ १५२९ ॥

श्लोक ॥ विधाता लेषितं यस्य। तन्न मुंचंति मानवाः ॥
श्लेछानां बंधनं हस्ते। सुविहानं दिलेश्वरं ॥

छं० ॥ १५३० ॥

[4]यत्र सुक्खं तत्र दुःखं। उभयोः प्राणबंधयोः ॥
नही सुक्खं नही दुःखं। प्रानं जं विधयो लयो ॥

छं० ॥ १५३१ ॥

कवित्त ॥ जो पलटै सुंदरिय। पैं जीय पालन पिय चायौ ॥
यों पलटौ प्रथिराज। सीस लग्गा गुन पायौ ॥
षां षुरेस सुध षप्प। गोन क्रम षट्ट सहसपत ॥
परो सीस कम्मान। षान लग्गीं सस सो गत ॥

(१) ए०— वांई। (२) ए० कृ० को०-दीना किया।
(३) ए०-कृ० को०—हिया। (४) मो०-कहां सुष्यं तहा दुष्यं।

श्रिरि भीर सीर पंतर सुगत । टरिय राज जिय गोपरी ॥
जाने कि द्रोन बलिभद्र ने । सुत पर जद्दव सम्सरी ॥
छं० ॥ १५३२ ॥

राजा का कटार निकालना और पकड़ा जाना।

एक बान कम्मान । साहि चहुआन कोप गहि ॥
घां ततार लहु बंध । कढ्ढे सुरंग बहि ॥
छोड़न नंषि नरिंद । वार कट्टिय कट्टारिय ॥
दिन पलट्यौ चहुआन । हथ्थ छुट्टै नह तारिय ॥
भावी विगत्ति भजंन घडन । दइ दुवाह इह न्निस्सयौ ॥
[1]पृथिराज गहन सुरतान कै । सुष जंपन बर सुम्मयौ ॥
छं० ॥ १५३३ ॥

होतव्यता की प्रभूति वर्णन ।

भरत वार दुरजोध । पानि संग्रहि रोरह वर ॥
नल सुक्कै भठ नट्ट । गोपि ग्राहत तन पंडर ॥
मलह सिंह कछि श्रदंग । गूजर राव श्रंगन ॥
सूर राह संग्रहन । दान छुट्टंत सो पुनि घन ॥
राजेस सूर संभरि धनी । श्ररि वसि परि मंचन सुगुर ॥
सामंत सूर सब्बैं परें । रह्यौ एक रूपे[2] पहर ॥
छं० ॥ १५३४ ॥

पुंजापै जपहार । बलिय बंकट बध नौरी ॥
जोगिनपुरिय सनाह । देव देवर रन वीरो ॥
दहिया जंगल राइ । चन्द्र सेनापति तारं ॥
भारी भारथ राइ । श्ररक करिवर उच्छारं ॥
ठंठरिय टाक चाटा चपल । चावहिसि रष्षे न्नपहि ॥
देवतिय तुंग चहुआन प्रभु । बिभ्भाइ भोयन जपहि ॥
छं० ॥ १५३५ ॥

रति वार्हा सोम्भँति ।-राइ जाजा गज चढ्ढे ॥

(१) ए०कृ० को०—सुरतान गहन पृथिराज को ।
(२) ए० कृ० को०—रूप्यौ ।

नग उप्पर हति परयौ । जानु तुट्टिय जिय कट्टै ॥
कमलाना बालंका । विरद् बाधों जिस ऊपर ॥
पहुपी नंगौ ढाल । क्रूर सुई जुग जुप्पर ॥
सुरतान काम सह समर । राज सध्य जद्दों वियन ॥
परिवार सु ओलो बोलनौ । बोलै डंकिनि याहि मन ॥

छं० ॥ १५३६ ॥

भूत होतव्यता का संकीर्तन ।

लोहानो आजान बाहु । पानी पति गहु ॥
लछुआ लौलह आइ । बीर बहां ही बहु ॥
पानी पन्न सु अन्न । धंन बसतर बासंदे ॥
हय लष्षी चय वाम । ग्रास उप्पर ग्रासं दे ॥
अग्याय स्वामि स्वानां गहै । चामंडो वेरी भरन ॥
दिभाई भीम भारथ भिरन । इय हना अग्गें लरन ॥

छं० ॥ १५३७ ॥

दिन चवथ्यि चतरंग । सेत सुरतान निपुट्टिय ॥
दिम्भाई भारथ्य । बान प्रथिराज विछुट्टिय ॥
ढरिय ढाल बेहाल । परिय पष्षार सुनारं ॥
धन धन धन चहुआन । देव सुरलोक उचारं ॥
प्राकम्म कथ्य संजोगि सुनि । दुह दिप्पी दिप्पी न कहुं ॥
पारस पतंग दीपक जवन । चाहुआन किस्सान सहु ॥

छं० ॥ १५३८ ॥

कारन राइ कुंडलिय । समर रावल वज्जीरं ॥
अनहल पुर आभन्न । राज रावत तिन भीरं ॥
धीरै धुम्मिल केस । राइ कन्हर कन्हर वै ॥
कूरंभी बलिभद्र । बंध आरज निड्डुर वै ॥
सुरतान ढान ढुंढत फिरै । रन वज्जित प्रथिराज लहि ॥
डंकिनिय दुसह दुज्जन समर । बोलिय बिद्रुम छंद कहि ॥

छं० ॥ १५३९ ॥

दूहा ॥ दस सत्ता सामंत रन । दहतिय एक मसंद ॥

अहर कलह बलहनि सुनि । है संजोगि नरिंद ॥
छं० ॥ १५४० ॥

जिहि गुर पंच विपंच लहु । संत विसोरह वंद ॥
डंकिनि डंवरु डहडहिय । रन हवि दुरगम छंद ॥
छं० ॥ १५४१ ॥

पृथ्वीराज को पकड़ने वाले मीर योद्धाओं के नाम।

दुर्गम ॥ इवि छथ्थ तथ्थ असीसनं । गल वाथन वथ्थ ग्रहीथनं ॥
भर भरनि भर सुर भारनं । क्रुम्मि क्रुम्मि होय सेहारनं ॥
छं० ॥ १५४२ ॥

धर धक्कि धमिक्किन धारनं । मिलि असुर स्हूर प्रहारनं ॥
पहुमोन मह मद आरनं । धकि जंग पान सुधारनं ॥
छं० ॥ १५४३ ॥

आलील आघुब षानयं । सारीर षां सुरतानयं ॥
पीरोज षान प्रमानयं । उज्जारि गाजी षानयं ॥
छं० ॥ १५४४ ॥

अरि वाह ईसफ षानयं । नारिंग नोचम जानयं ॥
चहुआन गहि वथ्थानयं । अविहात भूप रिसानयं ॥
छं० ॥ १५४५ ॥

घलि अलूषान सषानयं । कासिम्म कायम षानयं ॥
धर पंथ सेरन संचवी । महमुंद जैन सुने दवी ॥ छं० ॥१४४६॥
विपरी तभर भिरि मीरने । मुहिमाम षान सुधीरने ॥
अलि आल आलम काम को । आकूब सामिस नाम को ॥
छं० ॥ १५४७ ॥

दूहा ॥ इलि गज्जहि अज्जम सुवन । भिरि भिर हिंदुअ मिच्छ ॥
आलम बिन हिंदु आलमहि । साहन सहु ग्रह इच्छ ॥
छं० ॥ १५४८ ॥

नारंगि भैरौं भूत तन । अरि गिल आलम षान ॥
पुछि[1] पिरोज नौरोज नै । सुवर[2] चंप्यौ चहुआन ॥छं०॥१५४९॥

(१) ए० कृ० को०—पुष्टि । (२) ए० कृ० को०—सुबर ।

कवित्त॥ बान एक बाराह। पान ढाहे धर उप्पर॥
करन राय कलहंत। पिनक भिन्यौ सिर जुप्पर[1]॥
श्रौहट्टी हम्मीर। वीर विच्यौ वाहन वर॥
दस मसंद मसलिग। महंत श्रावध्वि करि उप्पर॥
सोवलिंग सिंघ पट्टन पती। मति सुमेर सुरतान सम॥
डंकनिय कहै संजोगि सुनि। संच पयंप्यौ सुमति इम॥
छं० ॥ १५५० ॥

वेलीद्रुम॥ डहडहति डंवरु डंकिनिय। कहकहति क्रूकह जोगिनिय॥
तहतहति तेग तरंगनिय। वहवहति वान विहद्दनिय॥
छं० ॥ १५५१ ॥

हरहरति वज्जन वज्जनिय। पलपलति श्रोन पलक्कनिय॥
थरथरनि सिर विन नंचियन। परपरति पंजुलि पंजियन॥
छं० ॥ १५५२ ॥

कवि करत कलह न कज्जियन। रस निरति नोपुर रंजियन॥
भंति राज राजल भज्जियन।....................॥ छं० ॥ १५५३ ॥

कसि साह मार मसंदयं। हुलि पार पच्छति छंदयं॥
उड़ि[2] हंस हंसनि हृंदयं। नत[3] अच्छरी प्रभु वंदयं॥
छं० ॥ १५५४ ॥

डंकनी का मुसल्मान योद्धाओं का पराक्रम वर्णन करना।

दूहा॥ छिति छत्री सह धरम। सुहह मंन समूल॥
वीर इष्ट संभारि करि। मंडि षग्ग सम सूर[4]॥ छं० ॥ १५५५ ॥

गाथा॥ पति अग्गिनि विरुभाई। वित चतुरथी समर सा वुद्धं॥
पंचमि कलह सगुर और। कथि कविचंद साइ निज धामं॥
छं० ॥ १५५६ ॥

कवित्त॥ आलम षाँ इक बान। इक्क बानह भुअ भेरूं॥
एक बान नारिंगनेस। जंगिय कुल केरूं॥
छचचोर सब्बान। नेज झंडे झकझोरिय॥

(१) मो०—सरजू पर। (२) मो०—उड्ड।
(३) ए० कृ० को०—तन। (४) ए० कृ०—कूर।

बाहु अरि अंकुरिय। तिष्ष तोरन तन तोरिय ॥
हिंडोल लोल छिन छिन फिरिग। कर कमान कंदल करह ॥
बारधि बिलोरि सुरतान दल। जदों जाजु अतुलित बलह ॥
छं० ॥ १५५७॥

अतुलित महमद महि ससंद। असु असन न रतिग ॥
सतुलित सारथि कर कमंध। जंबूर वए तगि ॥
मतुलित मीरां महिरवान। धुक्किय धर लंपिय ॥
धरपरंत सामंत। सार मारह करि हंकिय ॥
जग्गयो गाज आवाज सुनि। सजि परिंत गेवर घटिय ॥
हय हय जुसद्द त्रिभुवन त्रिपुर। वर बिमान कुलटह छुटिय ॥
छं० ॥ १५५८॥

पारि हारि पीपा प्रसिद्ध। सुरतान जु दिट्ठिय ॥
बिहर कुंत सासंत। अंत अंतरिय सुनट्ठिय ॥
पति पसाव पंडव जुरंत। हक्किय हक्कारिय ॥
उल हल्ले हलकारि। कुंद वंदन उच्चारिय ॥
बल बिषम सुषम स्वामित मतह। हित सुराज रंज्यौ रनह ॥
इय बाह वाह हिंदुअ तुरक। समर सरुच तुट्टिय तनह ॥
छं०॥ १५५९ ॥

दूसासन दिट्ठिय पंधार। आडौ पुर पारिय ॥
केस साहि उर चंपि। बीर बंबरि उच्चारिय ॥
षान आन चहुआन। बान वर धरनि पछारिय ॥
रे हिंदू रे मुसलमान। भिरि भिरि पुक्कारिय ॥
छंडौ जुगौइ छंडन जुगति। वर निसान बुल्लै मनह ॥
लक सिंघ नाद सिंघह गुरिग। गहर गिंभ सिंघौ घनह ॥
छं० ॥ १५६० ॥

घन घुरंत गोरिय सयन्न। पीरोज षान धपि ॥
तिहि टट्टर तकि तेग। बेग झारिय झनंक झपि ॥
षूब साहि साहाब। सनमान सुहन्निय ॥

नहि गप्पर[1] परिहार । चालु सम रन हुय अन्निय ॥
नीधक्क धाल डिग[2] सइर । छक्नंस निंडिग ग्रसन ॥
वाजी वनिंक करि कुथ्यरिय । मनों पोरिय पलछक्क सन ॥

छं० ॥ १५६१ ॥

ग्रानन चन जंबूर । वीर विद्दिग धर तुट्ट्यो ॥
तव वंकट वधनौर । राइ केएरि कर छुट्यौ ॥
गोरिय गज गुंजार । हसि हथ्थ हक्कारिय ॥
छल पुच्छै पच्छारि । याघ लगयौ वषकारिय ॥
नहनाय गरुग्र गेंवर मुरिग । ढाल घाल ग्रालम हरिय ॥
पल्हि अट्ट वलिय ग्रोनए अवनि । पति पवित्त कीनी धरिय ॥

छं० ॥ १५६२ ॥

जूनां चित्तह छूट । राम रावन भर भारौ ॥
समर सिंह की ग्रान । सादि छग्यौ ग्रह कारौ ॥
दान मान छुट्टैन । गरुग्र गेंवर गुरि हल्लिय ॥
ग्राउ ग्रह उग्रहिय । राए थुति तेंवर पल्लिय ॥
पर पुट्टि दिट्ठ नयनह पिसुन । वारर वर ग्राय वुट्टै ॥
सुरतान पान पंजर वल्हिग[3] । जग छध्यह जीवत रहै ॥

छं० ॥ १५६३ ॥

छनूफाल ॥ इति अंत कालनि इच्छ । सुरतान सुच्छिय गच्छि ॥
भै भीत जननिय लच्छि । परि भूय ग्रावलि कच्छि ॥

छं० ॥ १५६४ ॥

इसि असद पान कमान । निय नंषि दै अहुग्रान ॥
परिवार पारस क्षुक्षक्षि । दस दैव गति ग्रावुक्षिक्ष ॥

छं० ॥ १५६५ ॥

कवित्त ॥ इकतीसौ ग्रासह । मारि मसंद मह्याभर ॥
दह सत्ता सामंत । स्तूर जंजुरिग धरा बर ॥

---

(१) ए० कृ० को०—पप्पर ।
(२) ए० कृ० को०—मीडिग, मिंडिग ।
(३) ए० कृ० को०—पंगर ।

द्वै घायां कल्हरिय । सोम जीवत उप्पारिय ॥
अग्गासी अगिवान । राज वथ्थां पच्छारिय ॥
ए बथ्थ परं दादिट्ट मैं । भग्गा भग्गा इन हर्यौ ॥
सावन बदि पंचमि पंच कर । सांई सेछाइन धर्यौ ॥
छं० ॥ १५६६ ॥

संयोगिता का डंकिनी से कहना कि राजा का पराक्रम कह ।

दूहा ॥ हे डंकिन भष्षिन सुजन । मंस रुधिर सम अध्य ॥
कहिन पराक्रम राज कौ । सीर समाइत वथ्थ ॥
छं० ॥ १५६७ ॥

कै रामायन कष्पिबर । भारथ भीम न षुट्टि ॥
पिथ्थ पराक्रम पथ्थ सम । भावी दैव न छुट्टि ॥
छं० ॥ १५६८ ॥

सकल सूर सामंत रन । भए छिन भिन्न सरीर ॥
उदधि विषम सज्ज्यौ नृपति । हय गय नरनि अरीर ॥
छं० ॥ १५६९ ॥

पृथ्वीराज की वीरता पराक्रम और हस्तलाघवता का वर्णन ।

मोतीदाम॥ रुप्यौ रन राज सुरज्जिय अच्छि । मनों दसकंध सभा वलिबच्छ॥
रहे करि कुंडलि मिच्छ करेर । मनों लघू पब्बय सेवहि मेर ॥
छं० ॥ १५७० ॥

महा महि गोरि समुद्द मथन्न । मनो वड़वा नल रज्जि रयन्न ॥
चिह्न दिसि चंपहि बग्ग उठाय । ते दीप पतंग ज्यौं मध्य समाय ॥
छं० ॥ १५७१ ॥

झरप्पहि बाज ज्यौं सीर झझार । लुहार जल जिम बुड्डहि सोर॥
सिहद्द जलद्द ज्यौं भद्रव सूर । तरप्फहि बीज ज्यौं राज करूर ॥
छं० ॥ १५७२ ॥

गही कर संगिनि संभरि वार । मनो दल दंगति दीसय सार ॥

परे ढिढ सुट्ठि निहन्नत तक्कि । पराक्रम पिष्पि रहै सुर अक्कि ॥
छं० ॥ १५७३॥

भरीदार कन्न लगै तिन पार । धुकै धर यौं भर ज्यों पहतार ॥
सघिद्ध एयग्गय पष्पर घाइ । लगंत गिरंत फिलंग न पाय ॥
छं० ॥ १५७४ ॥

मयंद गयंद गिरै बल फारि । लगंत निपाग गिरंत चिहारि ॥
ढलंतिय ढाल सुभ्भंढ निहारि । मनों गिरि तैं गिरि सप वयारि ॥
छं० ॥ १५७५ ॥

पलंत अनी लगि टोप सिरन्नि । मनों रवि उड्डि उरग्ग धरन्नि ॥
करी तनयं हय हंनत तक्कि । बगत्तर पष्पर मंभ्भि सनक्कि ॥
छं० ॥ १५७६ ॥

नची धर धुंधि न सुभ्भय नैंन । श्रवन्न न सुन्निय सद्द सवेंन ॥
पहच्चरयं धर पल्लग सुभ्भि । मनों द्रव दंगल[1] गोधर वुभ्भि ॥
छं० ॥ १५७७ ॥

सिगाल रु स्वान ते षंत अलुभ्भि । मनों फंद पारधि पग्ग अरुझ्झि ॥
रही कर सिंगिनि पुट्टिय तोन । जितत्तित छुत्त दिप्पिय श्रोन ॥
छं० ॥ १५७८ ॥

किरवान कटी सुमनों डुहवारि । नचौ कर जोगिनि पष्पर डार ॥
दुहथ्थ नहंनत हथ्थिनि सीस । मनों दल लग्गिय पव्वय दीस ॥
छं० ॥ १५७९ ॥

भसुंडनि दंतनि टूक उडंति । ससि अप्प मनों जल रत्त बुडंत ॥
उठै बहु छिंछ करी निधरन्न । मनों भर वहुति नंन[2] धरन्न ॥
छं० ॥ १५८० ॥

घनं जिम वज्जहि घाय घनंकि । लगै तिन दंतन तरल छनंकि ॥
टुटे षग हैकर संगिय सज्जि । मनों बन षंड धनंजय रज्जि ॥
छं० ॥ १५८१ ॥

हनंतति तानति तामस मच्चि । मनौं बलिभद्रह लंपल पंचि ॥

(१) मो०—दल दंग । (२) ए० कृ० को०—नीन ।

किधौं हनवंत गदा कर कीन। हनौं दल दुंदुभि रावन भिन्न॥
छं० ॥ १५८२ ॥

रही नन अच्छरि इच्छि वरान। जयज्जय जंपहि देव विमान॥
चवंसठि नच्चिय रच्चिय रारि। रहै रस रच्चि घटं जटधार॥
छं० ॥ १५८३ ॥

निरत्तहि नारद पज्जिय तंत। उभं यति साचरु भूनि मंति॥
जुटे सब सस्त्रन आवध हथ्थ। वच्यौ बल राज समाहिय वथ्थ॥
छं० ॥ १५८४ ॥

धरें पग हथ्थ हनंत धरन्न। रजग्ग सिला पट पीठि वरन्न॥
गहै भर नंषत हथ्थिन ठेलि। मनौं मद गंध चलाइ चवेल॥
छं० ॥ १५८५ ॥

सिर सों सिर द्वैकर हंनत दीस। ज्यों जोगिय तुम्मर फोरत रीस॥
चढ़वा वढ़ि वाय सहाय ज्यौं दंग। [1]इसे न्नप इष्ट वलं रन रंग॥
छं० ॥ १५८६ ॥

सहै न मसंद सनंमुष जंग। मनो दल दानव ज्यों कपि पंग॥

पृथ्वीराज को पकड़ कर हाथी पर बैठा गजनी ले जाना।

परी मनि घेरन हथ्थिय गंस। सुत रावन ज्यौं चतुरानन पंसि।
छं० ॥ १५८७ ॥

परी चिहुं कोदह घेर नरिंद। कढे कर दंत ज्यौं भिल्लिय कंद॥
सुसंग्रहि संकट सूर निसंधि। लियौ न्नप गोरिय साहि सुरंधि॥
छं० ॥ १५८८ ॥

गजंभर ढाल बैठाय नरेस। चल्यौ गुरि गोरिय गज्जन देस॥
छं० ॥ १५८९ ॥

दूहा ॥ ग्रहे राज गज्जन चल्यौ। तब रन रत्ता सूर॥
अडु आवध वज्जि अत। संघारिग भर सूर॥
छं० ॥ १५९० ॥

कवित्त। गहत राज प्रथिराज। भोम कंपिय पायालं॥
भौ अंमर ग्रह पत्ति। पति अंमर संतालं॥

---

(१) मो०—इसे नृप इष्ट वलं च परंग।

गै अभंग लै वंड । भग्ग भग्गै अल लग्गो ॥
चरत चंपि वर पार । वीज छिंद्वान दिषग्गा ॥
छिंद्वान पंभ भग्गं उमै । समरसिंह चहुआन वर ॥
कालंघ सकल मगथ्यौ सुवौ । दीज चदनि कढि भग्ग धुर ॥
छं० ॥ १५९१ ॥

दूहा ॥ भग्गे दोय वियाल वर । सत भग्गा वल भग्ग ॥
चाहुआन सुरतान कर । परग घोर लग्ग ॥
छं० ॥ १५९२ ॥

गहि चहुआन नरिंद वर । चेत ढुंढि सुविहान ॥
भर प्रथिराष नरिंद कौ । गवन कीय ग्रह थान ॥
छं० ॥ १५९३ ॥

अक्कि परी प्रथिराज ग्रहि । जमुन नीर दल सज्जि ॥
तदिन साहि गोरी ग्रहन । वज्जे मंगल वज्जि ॥
छं० ॥ १५९४ ॥

पृथ्वीराज का बंधन सुनकर संयोगिता का सहसा प्राण त्याग देना ।

कवित्त । अनाधार परवर्यौ । पर्यौ यातिक सह क्षुत्तिक्षय ॥
हाहुलि राइ हम्मीर । साइ दोषी फिर बुक्कि क्षय ॥
सिव केसव करि भेद । भेद करि देवह नथ्यौ ॥
पंचतत्त प्रमग्गत । सत्त भजि साएस संध्यौ ॥
पहुपंग राइ पुत्रिय सुनहि । सुत्ति[1] विलंव न कंत सिखि ॥
षट मास वीस वासर विगत । लहित सोममंडल सुरुखि ॥
छं० ॥ १५९५ ॥

चोटक । हति हंतति हंतति हंत तिहं । डवरू डहकंतति योगिनियं ॥
भवरी वर हंसनि हंस तिनं । फुटि रंध्र दिसा पहुप्रान विनं ॥
अलि आलिनि आलिनि सोह सियं । .... छं० ॥ १५९६ ॥
चिग तंत अनंत सु मंच मनं । छलही छलछंत सुछंत छनं ॥
छं० ॥ १५९७ ॥

(१) मो० सुत्ति । (२) ए० कृ०–को० तिहि ।

पद्मा पद्मा संन आसनय[1] । पिय प्रेम प्रबंध सुवासनयं ॥
भरि ध्यान उमा मनसास लयं । उडि सिद्धि अयासन आसनयं ॥
छं० ॥ १५९८ ॥

कवित्त । संजोगिय आसनइ । जीव जंजरिग जरिय गत ॥
षंजरीट म्रगराज । इंद गय हंस भ्रिंग पति ॥
अप्प अप्प अप्पियन । सपन जंसन दिठि अप्पन ॥
त्रिभै राज गत[2] काज । काज किन्नौ क्रम चप्पन ॥
चिंतिय सुचिंत डंकनि उड़िय । षुडिय परंत परेव ग्रिह ॥
संचरिग जुद्ध सामंत दह । उगति बंध कविचंद कह ॥
छं० ॥ १५९९ ॥

न मिटै लिषित लिलाट । लिष्यौ ब्रह्मासिर अष्पर[3] ॥
असुर गह्यौ प्रथिराज । सुनत संजोगि परिय धर ॥
चंद्र सूर ग्रहरिष्य । इंद्र सुर नर असुराइन ॥
सिध साधक मुनि राइ । मंत तंतिय तारायन ॥
को सकै अवर आरंभ करि । जो विधिना बिधि गति भन्यौ ॥
निस्सान बात जुग जुग लगै । नह दिट्ठौ मिंटन[4] सुन्यौ ॥
छं० ॥ १६०० ॥

दूहा । बहु बिलाप सब मिलि करहि । नहि सुधि बुद्धि गियान ॥
प्रीय बचन अप्रीय सुनि । गये संजोगिय रान ॥
छं० ॥ १६०१ ॥

प्रान जात नह पल लग्यौ । सुनि संदेस विराग ॥
सुनत बचन प्रियजन कु कल । धन्नि चिया तो भाग ॥
छं० ॥ १६०२ ॥

दह सामंत परंत रन । ग्रह उग्रह न मरंत ॥
सत्त सुराजन ग्रहत जुध । मुरि मुरि मेछ मुरंत ॥
छं० ॥ १६०३ ॥

(१) मो०—बासनयं ।
(२) ए०कृ० को०—गज ।
(३) को०—इष्षर ।
(४) मो०—मिंतन ।

पृथ्वीराज के पकड़ जाने पर शाह का पड़ाव साफ करना।

कवित्त। आनि गह्यौ प्रथिराज। टंट टंटरिय टुक्कि दल॥
धं कि धार धाररिय। परत वार डह दिरद वर॥
उसम गरुअ गोरिय गुमान। भुअबल उप्पार्यौ॥
साईं काज संग्राम काम। धरति तिल तिल करि डार्यौ॥
सुरतान अग्र अग्रह कियौ। सुर गह संभु न दिप्पयौ॥
असमान आस असपत्ति अस। कसि कसि कंदल पिप्पयौ॥
छं० ॥ १६०४ ॥

कासमीर कामरूअ। टंकि टंकह उप्पार्यौ॥
भंड कराइ हमीर। धीर पच्छैं पति पारौ॥
साहि नह्न गिल करत। तेग झंझरिय न झिल्लत॥
छवि छत्रपति छत्र अस। भूमी गहि' मिल्लित॥
आलम लग्ग आलम न हुअ। आभन असमानहि धरत॥
रस रासि रसातल जाति गति। जौ न सूर इत्तौ करत॥
छं० ॥ १६०५ ॥

पैज बलिय पाहार। देव दहिया दल पिक्तह॥
ओछली ओछाय। घाय राजन इत उत्तह॥
चाय गरुअ चहुआन। राइ देवत्तिय दिवानौ॥
परत घाइ² घिंघ राइ। सहन तक्यौ सुरतानौ॥
वड़ व्रत्ति गत्ति छचिह्न तनिय। कुल घटि बढ़ि न वषान कुय॥
भंडार विधाता सुकृति दिय। लुट्टन हार सुलुट्टि सुय³॥
छं० ॥ १६०६ ॥

तव राजा गोरी जवाव। दीनौ हम्मीरां॥
औ हट्ठी गंभीर। राय पहु कर पहु भीरां॥
सांमि साच चल्लाह। सांमि अल्ला संनाही॥
ना जानो सें मिच्छ। तेक कैसी सां वाही॥

(१) ए० कृ० को०—महि।
(२) ए० कृ० को०—राइ।　　(३) मो०—लिय।

रे राजपुत्त राजंग छल । पलक भान रथ छंडि[1] रहि ॥
मंडलह भेद भेदिग सुचल । उर अलोक्क सब्बह सुकहि ॥
छं० ॥ १६०७ ॥

दूहा ॥ भर भिरि सुर मंडल भिदै । ग्रहि लीनौ सुरतान ॥
ए तीनो सोमंत ने । घर घल्लिय[2] सुविहान ॥
छं० ॥ १६०८ ॥

कवित्त ॥ इह भाष्यौ संभरिय । बात वज्जरिय दिसा दिस ॥
राइ केलि चहुआन । समर वित्तयौ गसा गस ॥
नील गात पग पीत । भीत भेरिय धुंधारिय ॥
तं वरिया पहु फुट्टि । श्रास श्रुल्लिय संसारिय ॥
निग्रह्यौ राज सुरतान छल । रुधिर धार छवि उच्छरिय ॥
चहुआन अनावध थान नह । सु कविचंद भनियन धरिय ॥
छं० ॥ १६०९ ॥

जिहि करिवर अरि जरहि । जर्यौ तिय कर तिहि कट्टति ॥
जिहि संकति सुह सकति । सकति पंचि न सक छंडिति ॥
जिहिं बाना बरि षान । प्रान कंपहि मधु सिंधुर ॥
तिन मद सिंधुर सुंडि । रुंड सिर छत्र चिपति पर ॥
जिमुष सहाब संमुहन सहि । तिहि सुप जंपत गह गहन ॥
प्रथिराज देव दुअ ननि ग्रह्यौ । रे छचो गुर ग्रब्बहन ॥
छं० ॥ १६१० ॥

सूर गहन टरि गयौ । क्रूर गह भयौ राज तन ॥
आरघ भर बित्तयौ । सार उत्तर्यौ भुअन यन ॥
हर हरानि मंडयौ । सार संभरि[3] तन तुट्यौ ॥
रे हिंदू रे मुसलमान । वग्गह षल षुट्टयौ ॥
संचरिग गल्ह संसार सिर । बरह संभ ग्रुभह भरिय ॥
घन घाय साहि चहुआन दिय । गज्जनेस दिसि संचरिय ॥
छं० ॥ १६११ ॥

---

(१) मो०—छोड़ि । (२) मो०—घर घल्यो ।
(३) ए० कृ० को०—संभरि

पर्थ्वाराज के पकड़ जाने पर शाह का पड़ाव साफ करना ।

कवित्त । आनि गह्यौ प्रथिराज । टंट ठंठरिय ठुक्कि दल ॥
घंकि धार धाररिय । परत वार डह्इ विरद् वर ॥
हसम गरुअ गोरिय गुमान । भुअवल उप्पार्यौ ॥
सांई काज संग्राम काम । धरति तिल तिल करि डार्यौ ॥
सुरतान अग्र अग्रह कियौ । सुर गह संभु न दिष्षयौ ॥
असमान आस असपत्ति अस । कसि कसि कंदल पिष्षयौ ॥
छं० ॥ १९०४ ॥

कासमीर कामरुअ । टंकि टंकह उप्पार्यौ ॥
भंड कराइ हमीर । धीर पच्छै पति पारौ ॥
साहि सब्ब गिल करत । तेग भंभरिय न भिल्लत ॥
छचि छत्रपति छत्र अस । भूभी गहि[1] मिल्लित ॥
आलम लभ्भ आलम न हुअ । आभन असमानहि धरत ॥
रस रासि रसातल जाति गति । जौ न ह्वर इत्तौ करत ॥
छं० ॥ १९०५ ॥

पैज बलिय पाहार । देव दहिया दल षित्तह ॥
ओछमी ओछाय । घाय राजन इत उत्तह ॥
चाय गरुअ चहुआन । राइ देवत्तिय दिवानौ ॥
परत घाइ[2] घिंघ राइ । सहन तक्यौ सुरतानौ ॥
वड़ व्रत्ति गत्ति छचिन तनिय । कुल घटि बढ़ि न बषाल कुय ॥
भंडार विधाता मुकति दिय । लुट्टन हार सुलुट्टि सुय[3] ॥
छं० ॥ १९०६ ॥

तब राजा गोरी जवाब । दीनौ हम्मीरां ॥
औ हट्ठी गंभीर । राय पहु कर पहु भीरां ॥
सांमि साच चड्डाह । सांमि अड्डा संनाही ॥
ना जानो मे मिच्छ । तेक कैसो सां वाही ॥

(१) ए० कृ० को०—महि ।
(२) ए० कृ० को०—राइ । (३) मो०—लिय ।

म्लेछ हिंदु उद्धम । भयौ गोरी चहुआनह ॥
भिरत पंच दिन पंच । रत्ति बित्ती सुविहानह ॥
लिष्षिय बसिच्छ हिंदुअ बयत । पित्त हयग्गय अयुत इछ ॥
[1]संग्राम कथन कथ्यह तनी । कहिय चंद कब्बी सुइछ ॥
छं० ॥ १६१७ ॥

दिल्ली में पृथ्वीराज के पकड़े जाने का समाचार पहुंचना और राजपूत रमणियों का सती होना ।

कुंडलिया ॥ चर आए ढिल्लिय नयर । दसमि सुदिन अंगार ॥
बुद्धवार[2] एकादसी । चली बरन सगदार ॥
चली बरन सगदार । सूर सामंत तीय वर ॥
सब परिगह प्रथिराज । भयौ मंगल मंगल भर ॥
षट सुरतिय चहुआन । अग्गि आलिंग अंगवर ॥
ष्यदु बंधि संजोगि । जोग संजोग कहै चर ॥ छं० ॥ १६१८ ॥
गाथा ॥ संचाह संझ रयनी । नच्चति विताह वीर वताहं ॥
दहकोह गिद्ध गोमं । रन थल थल रहिय पंच दीहाई ॥
छं० ॥ १६१९ ॥

पृथा का रावल जी के शस्त्रों के साथ तथा और राजपूतानियों का अपने पतियों के अस्त्रों के साथ सती होना ।

कवित्त ॥ निरषि निधन संजोगि । प्रिथी सज्जियसु सासि सय ॥
इक्कि हंस तत्तारि । बीर अवरिय प्रेम पथ ॥
साजि सकल श्रृंगार । हार मंडिय मुगतामनि ॥
रजि भूषन हय रोहि । जलज अच्छित उछारति[3] ॥
हैहया सद्द जंपत जगत । हरि हर सुर उच्चार वर ॥
सह गमन सिंघ रावर चले । तजि महि फूल[4] श्रीफल सुकर ॥
छं० ॥ १६२० ॥
प्रथा सथ्थ सह गवन । रवनि साजिय सुराज दह ॥
सघन कुसुम सुर बास । सिलिय मुष गुंज मुंज तह ॥

(१) ए० कृ० को०—संग्राम कथ्थ नथ्थह तनी । (२) मो०—बंबवीर ।
(३) मो०-उछारहि ((४) ए० कृ० को०—महिसुष ।

सुगता सनि उच्छार । ग्भार आगौ नु समुज्जल ॥
अंग रप्पि दुक्ष सत्त । तिकि आवरिय अप्पहल॥
विम्मान वान सुर अच्छरिय । पहु पंगलि पुज्जै सघन ॥
सुर रिप्प जप्प तंत्रिय धरन । कल कौतिग देषहि सुतन ॥
छं० ॥ १६२१ ॥

सहस पंच सह गवनि । अवर सामंत सूर भर ॥
चल्लिय मिल्लिय मन संधि । सकल निज नाह साह वर ॥
भूषन सवनि विराजि । साजि सिंगार सैल तन ॥
मन अनंत उद्धरिय । करिय हरि हरि जुदान दिय ॥
जहां जुथान सुनि प्रिय गवन । न करि विरस मन धरिय धुअ ॥
धनि धन्य रुह आयास हुअ । लषि कौतिग अनभूत खुअ ॥
छं० ॥ १६२२ ॥

चंदन मंदिर दार । रचिय वर दिग्घ लघ्घुद्दर ॥
विवह[1] कुसुम वर रोहि । सोहि पट बसन सुरह वर ॥
जिय जंबू नद दान । रथ्थ हय गय सुगता सनि ॥
विप्प वेद उच्चरहि । धेन सुरवर आयासनि ॥
किय[2] लोक लोक अंजुलि कुसुम । सजि विमान सुर सिर फिरहि ॥
संक्रमिय अप्प साहागवनि । संकि गवन हव्विहि हरहिं ॥
छं० ॥ १६२३ ॥

विविह तरुनि दिय दान । अवर सामंत सूर भर ॥
अप्प अस्त हय लीय । मिलिय रह हित धाम धर ॥
चित चिंतै रव रवनि । गवनि पावक प्रज्जारिय ॥
प्रेम प्रीति किय प्रेम । नेम नेमह प्रति पारिय ॥
उज्जलिय झाल आयास मिलि । हर हर सुर हर गोम भौ ॥
जहं जहां सुवास निज कंत किय । तहं तहां तिय पिय मिलन भौ॥
छं० ॥ १६२४ ॥

एकादस सें सत्त । पंच पंचास अधिकतर ॥

(१) ए० कृ० को०—विविधि ।
(२) ए० कृ० को०—दिय ।

सावन सुफल सुपष्य । बुद्ध एकादसि वासुर ॥
बज्र विद्धि रोहिनी । करन वालव धिक तै तल ॥
प्रहर सेष रस घटिय । आदि तिथि सकल पंच पल ॥
निश्चयरिय बत्त जुद्धह सयल । जोगिनि पुर वासुर विषम ॥
संपत्ति थान सरि सतिअ जुरि[1] । रह सुरग्गि कीनो विरस ॥
छं० ॥ १६२५ ॥

शाह का गजनी पहुंच कर पृथ्वीराज को हुजाब खां के सुपुर्द करना ।

गहि चहुआन नरिंद । गयौ गज्जनै साहि घर ॥
दिल्लिय हय गय द्रव्य । ताहि तन इह सुअप्पिधर ॥
बरस अद्ध तस अद्ध । सुद्ध कीनौ नयन्न बिन ॥
जम्म जम्म जुग अवर । जाय प्रथिराज इक्क पिन ॥
कह करै न्रपति ससुझ्झै मनह । अप उपाव सो बहु करय ॥
विधिना विचित्र निरम्यौ पटल । निमष न इक लिष्पित टरय ॥
छं० ॥ १६२६ ॥

तब सुसाहि गज्जनय । ग्रहियं जंगल पति तानह ॥
हथ्थ समप्पि हुजाव । सुविधि रप्यौ बल मानह ॥
मंडिय कोट महल्ल । अप्पि दिसि दष्पिन धामह ॥
तहां रष्पिय प्रथिराज । सुबल रष्षक सइमामह ॥
बिग्रह सुरष्पि पारस्स दस । बेनिय दत्त दबे सुसुष ॥
नन करय राज आहार कछु । कहिय तेज हुज्जाब रुष ॥
छं० ॥ १६२७ ॥

हुजाब का शाह से कहना कि पृथ्वीराज क्रूर दृष्टि से देखता है ।

निरदाबेलि बिरदाइ । पाय अंदू कर ढीले ॥
तामस बुझ्झवन काज । बोलि मधु वचन रसीले ॥
गढ़ गिलोल गज बाग । लागि सक्कै न डरहि उर ॥

(१) ए० कृ० को०—सर सुतिय जुरि ।

नीठ नीठ रष्षयौ । आनि उस्सौ जल ऊपर ॥
नरबदा तट कज्जली तुबन । गूथ हत्तिनि संभरिय ॥
पीय न उदक कबिचंद कहि । मद सिंधुर जिम बलभरिय ।
छं० ॥ १६२८ ॥

तब चिंतिय हुज्जाब । गयौ अप्पन गोरिय प्रति ॥
किय सलाम तिय वार । धरिय अंगुरि धनिय नति ॥
कीय अरज कर जोरि । सुनहु साहाब मन्नि धुअ ॥
बिन अहार चहुआन । पष्य सारद्ध तीन हुअ ॥
कलमलिय चित्त संभलि सुचिर । आप असुपति चहुआन गय ॥
आदह्यौ विकट रस न्त्रिपति वर । दिट्ठौ दिट्ठ करूर मय॥
छं० ॥ १६२९ ॥

दूहा ॥ प्रथुल पंभ साला प्रथुल । संकल प्रथुल परीभ ॥
वन आरोहिय सिंघ जनु[1] । अनुक्रम कज्ज ईभ ॥
छं० ॥ १६३० ॥

शाह का पृथ्वीराज की आखें निकलवाने की आज्ञा देना ।

कवित्त ॥ चमकि चित्त साहाव । सुनिय चहुआन सु अष्यह ॥
बोलि हुजाब सुआब । सेष कालंन समष्यह ॥
तुम कड्डहु चहुआन । नयन दिठ वंकन छंडय ॥
जो वंधन वंधियौ । तोइ संमुष द्रिग मंडय ॥
सिर धारि बोल कानै फिरिय । सहस मीर मिलि अप्प वग ॥
श्रम पारि तेन चहुआन गहि । बंधिय राजन कड्डि द्रिग ॥
छं० ॥ १६३१ ॥

नेत्रहीन होजाने पर पृथ्वीराज का पश्चाताप करना और ईश्वर से अपने अपराधों की क्षमा मांगना ।

भुजंगी ॥ पर्यौ बंधनं गज्जनै मेछ हथ्थं । बिचारै करी अप्प करतूति पिथ्थं ॥
हन्यौ दासि के हेत कैमास बानं । गजं षून चामंड बेरी भरानं ॥
छं० ॥ १६३२ ॥

(१) ए० कृ० को०—गुदरि ।
(२) ए० कृ० को०—दिष्षिय ।
(३) मो०—सम ।

बंधे कन्ह काका चर्प पट्ट गाढ़े । बिना दोस [1]पुंडीर से अत्त काढे।
बरज्जंत चंद चल्यौ ह्वं कनौज। तहां सूर सामंत कटि घट्टिफौज॥
छं० ॥ १६३३ ॥

लियें राज लोकं रमंतं सिकारं । अस केहरी कंदरा रिष्य जारं ॥
रह्यौ गैर महलं लियै राजलोकं । कटे सूर सामंत कीयौ न सोकं॥
छं० ॥ १६३४ ॥

भुलानौ सरूपं भयौ काम अंधं। निसा वासरं चित्त जानौ न संढं॥
दरब्बार मेटी अदब्बं बड़ाई । छरी ऊपरी सीस हम्मीर राई ॥
छं० ॥ १६३५ ॥

करन्नं पुजारं प्रजा पौरि आई । वरद्दाइ प्रोहित्त से विसराई ॥
षड़ आय साहाय काजं पुसानं । गयौ चूकि अवसान सनसुष्प जानं ॥
छं० ॥ १६३६ ॥

भई बुद्धि विपरीति इह होनहारं । छलं पारि सुविहान चप्पं विकारं।
पलट्यौ सुद्दीहं रही लग्गि तारी । भले राज गोविंद ग्रब्बाप्रहारी ॥
छं० ॥ १६३७ ॥

सही फूल की फूलनी नाहि नाय । तुरत्तं तरायौ जु माहीन हाय।
नही सूर सामंत परिवार देसं । नही गज्ज बाजं भंडारं दिलेसं ॥
छं० ॥ १६३८ ॥

नहीं पंगजा प्रान तें अत्ति प्यारी।नही गोष महिला इतं चित्तसारी॥
नहीं चिम्म अग्गें सुनंषे परदा। नहीं क्षोक हम्माम गरसी[2] सरदा ॥
॥ छं० ॥ १६३९ ॥

नही रेसमं के दुलीचे गिलम्मे । नहीं हिंगु बाटं सुवन्नं हिलम्मे॥
नहीं सीरषं रूप रंके उसीसा। नहीं पम्समी तक्किये पल्लिंग पोसा॥
छं० ॥ १६४० ॥

नहीं गद्दियं सुष्यरी भूपि छोरा । नहीं सेन बतीन के दीप जोरा॥
नहीं डंमरी योंन आवै सुगंधा । नहीं चौसरं फूल बंधे अबंधा ॥
छं० ॥१६४१ ॥

नही मृग्ग नयनी चरन्नं तलासै । नहीं कूककोका सबद्दं उलासै ॥

(१) ए० कृ० को.—पून। (२) ए०—गरमी।

नहीं पातुरं चातुरं न्त्यकारी। नहीं ताल संगीत आलापचारी ॥

छं० ॥ १६४२ ॥

नहीं काव्यकं सब्य जंपै कहानी। पयं लप्परं छत्त लग्गै सुहानी ॥

नहीं पारदानं पवालं हजूरी। सबै मंडली मेछ लग्गे करूरी ॥

छं० ॥ १६४३ ॥

नहीं रूपकं राग रंगं उचारं। सुनों कान सावद्द वंगं पुकारं ॥

नहीं चोम मौजं कारूं लप्प दानं। नहीं भट्ट चंदं विरद्दं वषानं ॥

छं० ॥ १६४४ ॥

चष मंजरी के रखे चौगिरद्दं। दवं दंग ज्यों लग्गि देही दरद्दं ॥

कहा हाल रनं कुमारं धरत्ती। कहां कौन सों कौन आनै निरत्ती ॥

छं० ॥ १६४५ ।

निराधार आधार करतार तूंही। वन्यौ संकटं आय मो जीव सोंही॥

कली कूड़ संग्राम वृंदावनी कों। संभालौ नहीं तौ कहा औधनी क्यों ॥

छं० ॥ १६४६ ॥

करै उंच नीचं कृतं दास काजैं। भए सारथी पारथं के न लाजै ॥

प्रसू रप्पि भारथ्य मैं इंड साजै। प्रहलाद भभ्भीषनं भू निवाजै ॥

छं० ॥ १६४७ ॥

स्त्रिया द्रूपदी सीत कों मेटि दुष्पं। गजं गोप गोवर्द्धनं धारि रष्पं ॥

चरावंत धेनं वनं अग्गि लग्गी। करयौ पान दावनलं होय अग्गी॥

छं० ॥ १६४८ ॥

हन्यौ कंस राजं दियौ उग्रसेनं। प्ररयौ पारधी फांद में कड्ढि एनं ॥

पचाए पजावै मँजारी कुभारं। उग्गारे इसै दास केइ हजारं ॥

छं० ॥ १६४९ ॥

न्त्रप आठ से बीस हज्जार पासे। जरा सिंध कौ वंदी में ते निकासे॥

रषे अंबरीकं परीषत्त चेनं। अजामेल उद्धारि राजीव नैनं ॥

छं० ॥ १६५० ॥

भए अर्जुनं नारदं आप दीनं। नलं कूवरं फेरि सा रूप कीनं ॥

डस्यौ पन्नगं नंद कों मग्ग जाते। दई गत्ति गंध्रव्व कों लात घाते ॥

छं० ॥ १६५१ ॥

दुजं दीन गोदान फिरि पच्छ आयं। गिरे बूपकं न्त्रिग लग्गं बसायं॥
स्वयं पूतनो विष्ण दाता तिराई। गजतम्म नारी सिला कीनि पाई ॥
छं० ॥ १६५२ ।
पढ़ावंत ल्हआ सुरं रघुराई। गनिका गयन्नं विमानं चढाई ॥
जरासंध घोजी किये अग्र फौजं। तिरे तीकमं तक्कि चरनं सरोजं ॥
छं० ॥ १६५३ ॥
जरा नाम व्याघात करि घात पग्गें। सुकंदं सुकत्ती दई तीर लग्गे
पवारे गिलाजं कहां लग्गि तोरे। करों बीनती इत्तनी हथ्थ जोरैं॥
छं० ॥ १६५४ ॥
विसार्यौ न बिश्वंभरं विश्व सारौ।अना अप्पराधं अहं क्यो विसार्यौ।
अबे होय निरदै न देषौ तमासौ।ग्रह्यौ ग्राह ज्यों गज्जसाई निकासयौ ।
छं० ॥ १६५५ ॥
बिना राज आजं सरै कौन काजं। निबाहौ बिरुद्धं गरीबं निवाजं॥
सदाई कहाऔ करुना निधानं। करौ आय साहाय कत्ति पाहुआन।
छं० ॥ १६५६ ॥
करुना करे फेरि अथ्यौ संभार्यौ। हरै पित्त धूम्मं दियौ सों विचार्यौ॥
ग्रह्यौ बार वेरां सु आलंम बंदी। श्रिया मान अभिमान नष्यो निकंद।
छं० ॥ १६५७ ॥
ग्रह्यौ तेन दिल्ली सुरं काल गत्तं। इवं मेघनादं हनूमान तत्तं ॥
तिनं लंक जाली प्रजाली सकालं।ग्रह्यौ साहि गोरी तिनं काल चालं ।
छं० ॥ १६५८ ॥

पृथ्वीराज को विष्णु भगवान का स्वप्न में दर्शन देकर समझाना ।

गाथा—संभरि पाले सवदे, संभरि दीन श्री धरं सुपनं ॥
ब्रह्मा विश्णु महेसं, मूरती तीन एकयं देवं ॥
छं० ॥ १६५९ ॥
पद्धरी ॥ संभरि परि पति सबद्दं । संभरि जेपि श्रीधरं रामं ॥
सुपनंतर दे संभं। समझायौ आय राइ दिल्लेसं ॥
छं० ॥ १६६० ॥

---

(६५) विवाह सम्यो।

(पृष्ट २१०३ से २१०४ तक)

(६६) बड़ी लड़ाई रो मस्ताव

(पृष्ठ २१०५ से २३८५ तक)